प्रकाशक : ग्र. वा सहस्रवृद्धे, मंत्री, श्रिल्लि भारत सर्व-सेवा-संघ वर्घा (वम्बई राज्य )

पहली बार: ५००० प्रगस्त, १६५७ मूल्य: एक रुपया पचास नये पेसे ( डेढ़ रुपया ) प्रजिल्द: दो रुपया

मुद्रक : पं॰ प्यारेलाल भागव राजा प्रिटिंग प्रे<sup>ट्री</sup> कमच्छा, वाराग्रसी-**?** 

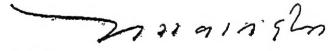
### सुनिये

सारा जगत् सचाई की चादर में लिपटा हुग्रा है। सचाई जगत् का जीवन है। सचाई हवा की तरह हर क्षरा के लिए जरूरी है। पर जिस तरह शुद्ध हवा मिलना मुश्किल है, मुश्किल क्या, ग्रसंभव है, वैसे ही खालिस सचाई मिलना ग्रसंभव है। क्योंकि जगत् सचाई की चादर को मैला करता ग्राया है, कर रहा है ग्रीर करता रहेगा।

जगत् की मैली की हुई सचाई की चादर भी काफी सफेद है—इतनी सफेद कि उससे ज्यादा सफेद शायद कोई दूसरी चीज नहीं। यही कारण है कि उस पर पड़ा हुग्रा जरा-सा घट्या भी उस ग्रांख को चमकने लगता ग्रोर खटकने लगता है, जो पक्षपात की ऐनक को उतारकर फेंक देती है।

खुले दिल ग्रीर खुली ग्राँखों से यह किताव लिखी गयी है। लेखक की इच्छा है कि लोग इसे दिल खोलकर ग्रीर ग्राँख खोलकर ही पढ़ें। तव भी कुछ खटके, तो लेखक उसे ग्रपनी ही कमी मानेगा, पाठक की नहीं।

ग्रव निवेदन है कि पोथी खोलिये ग्रौर पिढये।



राजघाट, काशी २६ जून, १६५७ ∽ म्रापाड़, १८७६

# क्या कहाँ

<b>?</b> .	सत्य क्या है ?	•••	•••	\$
₹.	सत्य कैसे खोजा जाय	•••	•••	१=
₹.	सत्य का सिंगार क्यों ?			78
૪.	सत्य की वफादारी	•••	•••	80
ሂ.	सत्य की वरदाश्त	•••	•••	४६
ξ.	सत्य ग्रीर गुलामी	•••		. ६=
૭.	मानसिक गुलामी	•••	•••	·- 58
۲.	सत्य ग्रोर ग्रन्य-विश्वास	•••	•••	११०
3	दुविघा यानी दो राहें	•••	•••	१३०
₹0.	सत्य ग्रीर धर्म	•••	•••	१५३
११.	सत्य ग्रीर चमत्कार	•••	•••	१७४
१२.	सत्य ग्रीर देवता	•••	•••	१६०
₹₹.	सत्य ग्रीर सर्वज्ञता	•••	•••	१६८
१४.	सत्य ग्रीर सुख-दुःख	•••	•••	२१०
የሂ.	सत्य ग्रौर रीति-रिवाज	•••	••••	२२५
१६.	ग्रनुभव, सत्य, ईश्वर सव	एक ः	•••	२४८
919.	सत्य क्या कहता है ?			255

# सत्य की खोज

#### : ? :

## सत्य क्या है ?

वच्चे-बूढ़े सभी जानते हैं कि "जो वात जैसी हो, उसको वैसा ही कह देना" सच है। क्या इतना भी मैं नहीं जानता ? जानते हुए भी यह मानता हूँ कि सच वोलना सत्य की परछाई है। परछाई की वात किसीको खटके, तो यह कह देता हूँ कि सच वोलना सत्य की एक ग्रादमी के वरावरवाली मूरत की कानी उँगली का एक पोरा है। मैं सच वोलकर समाज को एक फी सदी फायदा पहुँचा सकता हूँ, पर सत्य को समक्तकर, उतना ही सच वोलकर, समाज को २० फी सदी, ३० फी सदी या ग्रीर भी ज्यादा फायदा पहुँचा सकता हूँ।

हो सकता है, गाँघीजी के जीते जी, हिन्दुस्तान में, दिसयों-वीसियों ऐसे रहे हों, जो गाँघीजी से कहीं ज्यादा इस वात का ध्यान रखते हों कि उनके मुँह से कोई वात ऐसी न निकले, जो सच न हो या सच को मदद देनेवाली न हो, पर इससे क्या? उनमें से हरएक से समाज को अलग-अलग एक फी सदी या उससे भी कम फायदा पहुँचता रहा और वह भी ऐसे वरवाद जाता रहा, जैसे नदी या सागर में डाली मिश्री की डली की मिठास। हो सकता है, में तो मानता हूँ और होना ही चाहिए कि गाँधीजी ने राजकाजी-जैसे गन्दे अखाड़े में उतरकर अनेक वार ऐसे वचन वोले हों, जो सच वोलने की आम आदिमयों की कसौटी पर पूरे न उतरें, पर इससे क्या? उन्होंने सत्य को हम लोगों से कहीं ज्यादा समक लिया था, उसे अपना लिया था, तभी तो उनके सच की कसौटी पर पूरे-पूरे न उतरनेवाल सच से भी समाज को २० फी सदी ही फायदा पहुँचता था।

कोई मनचला कह सकता है कि वाह जी वाह ! गाँधीजी से यह फायदा तो इसलिए पहुँचा कि उनको उनके भक्तों ने मशहूर कर दिया था ग्रौर देवता वना दिया था। सत्य के समभने की वात तो कोरी खींचतान है। इसके जवाव में सिर्फ इतना कहना पड़ेगा कि मशहूर होनेवाला वह सोना, जो नये मंदिर के नये कलश के रूप में लोगों को तमाशे के लिए इकट्ठा करता है, भीड़ में ५-१० के पाँव ही कुचल देता है, उस सोने के मुकावले में कुछ भी नहीं, जिसने फुँककर किसी मरते-मरते एक (रोगी) में भी जान डाल दी हो। प्रसिद्धि ग्रच्छी चीज नहीं, तो बुरी चीज भी नहीं। कलश के सोने की तरह कुश्ते के सोने को भी प्रसिद्धि मिल सकती है ग्रौर फिर फायदे का फी सदी कहीं-से-कहीं पहुँच सकता है!

हाँ, तो सत्य क्या है ग्रीर उसका समभना क्या है ? इसका जवाव सुनने से पहले एक ग्रापवीती सुनिये।

में रहा होगा ७ वर्ष का । इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि हर वच्चा सच वोलने में ग्रपने माँ-वाप दोनों से बढ़-चढ़कर होता है। फिर मैं तो सच वोलने में ग्रपने माँ-वाप से वढ़-चढ़कर था ही। ग्रव जरा मेरी तरफ से इतना ग्रीर मान लीजिये कि हर वच्चा सत्य के समभने में ग्रपने माँ-वाप से वहुत ही पीछे होता है। मैं भी वहुत पीछे था। मैं सच वोलता था, यानी सच का नाटक करता था। माँ-वाप सच वोलते थे, तो सचमुच सच वोलते थे। मेरे सच का समाज के लिहाज से कुछ भी मोल न था, पर मेरे माँ-वाप के सच का मोल तो मैं ग्राज भी नहीं ग्राँक पाता।

हाँ तो सुनिये !

'भगवानदीन, देखो इस वच्चे के लिए चौके में रखे कटोर-दान से एक रोटी लाग्रो !'

'ग्रम्मा, इसमें तो कोई रोटी नहीं है!'

'कोई रोटी नहीं है ? एक तो होनी चाहिए।'

'ग्रम्मा, एक तो है, पर वह तो पहली रोटी है भगवान् के नाम की, वह तो मालिन की है।'

'हाँ, वेटा, वही लाग्रो।'

'ग्रम्मा, वह तुम इसको कैसे दे सकती हो ?'

'क्यों ?'

'क्योंकि तुम हमें कभी नहीं खाने देतीं!'

'तुम इतने भूखे नहीं होते, जितना यह वालक ।'

'ग्रम्मा, हम कितने ही भूखे हों, तव भी तुम यह कहकर रोक देती हो कि 'हैं, कहीं भगवान् की रोटी खाते हैं!'

'पर तुम्हें रोटी की जगह खाने को कोई चीज तो दे देती हूँ।'

'तो ग्रीर चीज इसको क्यों नहीं दे देती ?'

'यह वीमार है, दो दिन का भूखा है, पकवान खायेगा, तो ग्रीर वीमार हो जायेगा।'

'तो भगवान् की रोटी इस वच्चे को दे दूँ ?'

'हाँ, दे दो वेटा, इस वच्चे में भी भगवान् हैं।'

'ग्रीर मुभमें भी?'

'हाँ, तुममें भी?'

'तो मैं भगवान् की रोटी खा सकता हूँ?'

'क्यों नहीं ? पर श्रभी नहीं, जव तुम समभदार हो जाग्रो ।' 'ग्रम्मा, यह वच्चा समभदार है ?'

'नहीं, इसको तो मैं दे रही हूँ। तुम्हें कोई समभदार दे दे, तो खा लेना।'

ग्रव एक सुनी सुनिये !

श्रारा के एक सज्जन थे। देवेन्द्रप्रसाद उनका नाम था। इलाहावाद में किसी कालेज में पढ़ते थे। खाते-पीते घराने के थे, घर किराये पर लेकर रहते थे। उनकी माँ उनके साथ रहती थीं। जिन दिनों की वात है, उन दिनों उनकी माँ की उमर ४५-५० के वीच रही होगी।

जाड़े के दिन थे। एक दिन देवेन्द्रप्रसाद ७-८ वरस के किसी

ग्रनाथ भिखारी लड़के को सड़क पर सिकुड़ता पड़ा देख ग्रपने साथ ले ग्राये। घर ग्राकर सोच में पड़ गये, क्योंकि घर में दरी तो फालतू थी, पर रजाई गिनी-गिनायी दो थीं। माँ ने ताड़ लिया, वोलीं:

'वेटा देवेन्द्र, क्या सोच रहे हो ?'
'यही कि ग्राखिर यह वच्चा ग्रोढ़ेगा क्या ?'

'ग्रोढ़ेगा क्या ? मेरे साथ मेरी रजाई में सो जायगा।' 'तुम्हारे साथ ?'

'हाँ, क्यों ? तुम जब इतने बड़े थे, तो श्राराम से मेरे पास सो लेते थे या नहीं ?'

देवेन्द्रप्रसाद की साँस ऊपर की ऊपर ग्रौर नीचे की नीचे !

देवेन्द्रप्रसाद सच्चे थे, सच वोलते थे, समाज-सेवा में जुटे रहते थे; पर सत्य को उतना नहीं समभ पाये थे, जितना उनकी माँ।

वस, सत्य वह प्रकाश है, जो हम सवमें है और सात परदों में छिपा है। उसके अनेक परदों में से एक-एक परदा फाड़ते चिलये, वह समभ में आता जायगा। पूरा-का-पूरा कव किसकी समभ में आयेगा, कौन जाने। अभी तक किसीकी समभ में पूरा-पूरा आया नहीं। क्योंकि अगर आ गया होता, तो उसने सवको वता-समभा दिया होता। फिर क्या दुनिया का वह हाल होता, जो अब है!

सच वोलनेवालों की तादाद दुनिया में कम नहीं। जितनी है वह वहुत काफी है। सच वोलनेवाले सत्य को समफ लें, तो

सव दुःख मिट जायँ। जव-जव ग्रविद्या की घटाएँ घटाटोप कर देतीं ग्रीर ग्रादमी को ग्रपना भाई ही गैर दिखाई देने लगता है—वह जानवर वनकर उसीके खून पर उतारू हो जाता है, तव-तव सत्य के समभनेवाले जुगनू की तरह चमककर, तारों की तरह दमककर कुछ रोशनी करते हैं ग्रीर दो-एक की जान वचाकर ही समाज को वह फायदा पहुँचा जाते हैं, जो ग्रागे कई गुना वढ़कर समस्त पट में छाये खोंत को रफू करता रहता है।

हाँ, तो सच वोलना ग्रीर वात है, सत्य का समभना ग्रीर वात ! सत्य कैसे समभा जाय, यह श्रागे देखिये।

#### सत्य कैसे समफों

सत्य कैसे समभें ? वस, जरा डर से न डरकर ! कैसे संमभें ? वस, जरा ग्रविद्या से न दवकर ! कैसे समभें ? वस, जरा पापों, भूलों के सोच में न पड़कर !

क्या मतलव ? मतलव यह कि डर तुम साथ तो लाये थे, पर इतना थोड़ा कि जिसे 'डर' नाम देना ग्रपने को डराना है। जो डर ग्राज ग्रपनाये हुए हो, वह तो तुमने कमाया है ग्रौर उसकी खातिर सत्यधन गँवाया है। कुछ डर तुम पर ठूँसा गया है। उन्होंने ठूँसा है, जो तुम्हारे वड़े प्यारे ग्रौर वहुत भला चाहने-वाले थे। उन्होंने शायद यह समभकर ही तुम्हारे सिर मड़ा था कि तुम उस डर की मदद से सत्य को समभोगे। पर उन्हें यह कहाँ मालूम था कि डर ग्रपने-ग्राप सत्य का एक परदा है। जव तुम पैदा हुए, तव मौत से डरते न थे। फिर शेर, साँप, विल्ली, ग्राग, पानी से डर कैंसा ? जव तुम पैदा हुए, तव

गरीवी से डरते न थे। फिर चोरी, भूठ, जुर्माने, घर जल जाने या ढह जाने का डर कैसा ? जव तुम पैदा हुए, तव भगवान् से डरते न थे। फिर भूठ, चोरी, हिंसा, परिग्रह, अब्रह्म से डर कैसा ? उस समय तो तुम सबके थे ग्रीर सब तुम्हारे। फिर किसकी हिंसा करते, किसलिए भूठ वोलते, क्यों चोरी करते, क्यों सेंत-सेंत कर रखते और क्यों किसीको वासना की आँख से देखते ? उस समय तो डर को तुमसे डर लगता था ! जब तुम्हें ग्रपने-पराये का ज्ञान कराया गया, तव तो हिंसा, भूठ, चोरी, ग्रवह्म ग्रीर परिग्रह ग्रपने-ग्राप तुम्हारे मन में ग्रा दाखिल हुए ग्रीर ग्रव उन्हीं माँ-वाप को, जिन्होंने तुम्हें ग्रपने-पराये का ज्ञान कराया था, भगवान् से डरना, मौत से डरना ग्रौर गरीवी से डरना सिखाना पड़ा। यह सिरथुपा डर फेंककर ही सत्य समभ में ग्रायेगा ग्रीर ग्रपने-पराये का परदा हट जाने से वह चुटकी-वजाते तुम्हें छोड़कर भाग जायगा।

एक ग्रापवीती सुनिये !

'मैं ६ वरस का था। रात को पेशाव लगी। वोला, ग्रम्मा, पेशाव!'

'उठो ग्रौर वाहर जाकर पेशाव कर ग्राग्रो।' 'ग्रम्मा, तुम साथ चलो।' 'क्यों?' 'डर लगता है, ग्रम्मा।'

'डर कैसा ?'

'भूतों का।'

'तुमने कभी भूत देखे ?'

'देखे नहीं, मेरे क्लास में सब लड़के कहते थे कि भूत होते हैं। उनके वड़े-बड़े दाँत होते हैं ग्रीर चाहे जैसे वन जाते हैं!'

'हँसी-हँसी में कहते होंगे! नहीं तो सपने की वात करते होंगे।'

'नहीं ग्रम्मा, सचमुच की वात कहते थे। वड़े भैया ग्रीर वड़ी जीजी भी कहती थीं कि भूत होते हैं।'

'पर तुम्हारे वड़े भैया श्रीर वड़ी जीजी तो डरती नहीं। वे तो श्रकेले श्रैंघेरी रात में कहीं भी चले जाते हैं?'

'ग्रम्मा, वे वड़े हैं।'

'तो भूत वड़ों से डरते हैं ?'

'ग्रम्मा चलो न, मुफ्ते पेशाव लगी है।'

'मैं यहीं से देख रही हूँ, जाग्री।'

मैं डरता, कुछ अपने को सँभालता, कुछ हिंम्मत वाँघता अकेला गया और जल्दी-जल्दी पेशाव करके वापस आ गया। वापस आने पर माँ पुचकार कर वोलीं: वेटा, भूत कुछ नहीं होते और जो भूत वड़ों से डरते हैं, वे उनके वच्चों से तो और भी डरेंगे। तुमने नहीं देखा, ग्वाले का छोटा लड़का गाय-भैंस को छोटी-सी लाठी लेकर किस तरह हाँक ले जाता है, गाय-भैंस उससे कितनी डरती हैं! भूत की वातें सव हँसने और मन वहलाने को करते हैं।

'म्रच्छा वेटा, एक वात वताग्रो, तुम्हारे लालाजी वड़े या तुम्हारे लालाजी का घोड़ा वड़ा ?' 'ग्रम्मा, लालाजी वड़े ।<sup>'</sup>

'क्यों ?'

'लालाजी तो उस पर सवार हो जाते हैं। उसकी लगाम पकड़कर जिघर चाहें उघर ले जाते हैं।'

'जैसे तुम कभी-कभी मेरी गोदी में चढ़कर मुक्के कहीं भी ले जाते हो।'

'नहीं ग्रम्मा, तुम तो प्यारी ग्रम्मा हो।'

'हाँ, प्यारी तो हूँ, पर बड़े तुम ही रहे। मुभे तुम वड़ी ग्रम्मा भी नहीं, बड़ी ग्रम्मा तो तुम्हारी वे हैं, जो तुम्हें वाजार ले जाती ग्रीर मिठाइयाँ खिलवाती हैं। बड़ी ग्रम्मा वे हैं, तो छोटी ग्रम्मा मैं। मैं छोटी, तुम बड़े। ग्रव तुम वड़े हो, तुमसे भी भूत डरेंगे।'

श्रम्मा ने श्रपनी समभ में मेरा डर विलकुल दूर कर दिया, पर वह विलकुल तो नहीं, वहुत कुछ दूर हो गया। जो थोड़ा वना रहा, वह १४ वरस की उमर में निकला। कुदरती डर के श्रलावा सारे डर सत्य के समभने में रुकावट डालते हैं। यह तो मेरी खुशकिस्मती थी कि मुभे ऐसी माँ मिल गयी थीं, जो पढ़ी-लिखी तो नाम को थीं, पर पैदाइशी मास्टरनी थीं।

हाँ, तो डर से डरकर सत्य समभ में न श्रायेगा, उसे तो जैसे वने, दूर करना ही होगा।

जव तुम पैदा हुए थे, तो श्रविद्या साथ लाये थे। पर उसे 'श्रविद्या' कहना निरी श्रविद्यापन की वात समभी जायगी। तुम्हारी पैदाइशी श्रविद्या का श्रर्थ था, विद्या का न होना यानी जानकारी का न होना । यह तो वड़े काम की चीज थी । प्रकृति ने सोच-समभकर ही तुम्हें ग्रजानकार पैदा किया था। मान लो, ग्रगर तुम पैदा होते वक्त पेट भरे होते तो रोते क्यों? ग्रगर न रोते, तो माँ तुम्हें दूध देने की वात कैसे सोचती? फिर तुम्हारा क्या हाल होता, कौन जाने ? तुम खाली पेट पैदा हुए, इसलिए तुममें खुराक लेने की वड़ी जोर की इच्छा थी। ठीक इसी तरह तुम्हारा दिमाग जानकारी से खाली था र्यार तुममें ज्ञान की खुराक लेने की वड़ी जोर की स्वाहिश थी। तो, वह पैदाइशी अविद्या वुरी कहाँ थी? वह तो वड़ी भारी देन थी। हाँ, वह अविद्या थी, सत्य का परदा था, पर चिक जैसा। उसमें होकर तुम्हारा ग्रात्मा ज्ञान लेता था ग्रीर तुम्हारा मन उस चिक की तीली तोड़ता रहता था। वुरी तो वह ऋविद्या थी, जो तुम्हारे माँ-वाप या तुम्हारे भला चाहनेवालों ने तुम पर लादी थी। उन्होंने वह यह समभकर लादी थी कि वह तुम्हें सत्य का रूप समभने में मददगार सावित हो। पर उन्हें यह कहाँ मालूम था कि विघान नामधारी अविद्या खुद सत्य का एक परदा है। वह चिक जैसा परदा है, जिससे होकर साफ-साफ दिखाई नहीं दे सकता। यह भी कहाँ मालूम था ग्रविद्या का वह भीना परदा अपने-आप धीरे-धीरे इतना गाढ़ा होता रहता है कि कुछ दिनों में ही मोमजामा जैसा वन जाता है, उसमें होकर श्रात्मा मेहनत करने पर भी कुछ नहीं देख पाता ग्रीर फिर मन उसे फाड़ने के लिए जोर लगाना भी छोड़ वैठता है।

वस, तुम्हारे वचपन की ग्रविद्या में ग्रीर बड़ेपन की ग्रविद्या में यही ग्रन्तर है कि वह ग्रविद्या नहीं है, यह सचमुच ग्रविद्या है। उस ग्रविद्या से तुम दवते न थे, इससे तुम दवते हो ग्रीर दवकर भी सत्य को समभने की जगह जो थोड़ा-बहुत ठीक से समभे हुए हो, उस पर भी हरताल फेर देते हो।

एक ग्रापवीती सुनिये!

में जब छोटा था, तो बुग्रा से पूछ बैठा: 'बुग्रा, चंदा में वह काला-काला क्या है ?'

'इसमें एक बुढ़िया बैठी चरखा कात रही है।' बुआ ने वड़े प्यार से और इस खयाल से कि मेरी अविद्या कुछ, कम हो, मुभे समभा दिया।

मैं समभा, मैंने कुछ जाना।

एक दिन यही बात माँ से पूछ वैठा। हो सकता है, मेरे मन के किसी कोने में माँ की परीक्षा लेने की बात रही हो, पर वैसा याद नहीं पड़ता।

'ग्रम्मा, चंदा में यह काला-काला क्या है ?'

'वेटा, मैं तो नहीं जानती, ग्रपने लालाजी से पूछना, वह ठीक-ठीक वतायेंगे।'

'ग्रम्मा, वुत्रा तो कहती हैं, चाँद में एक बुढ़िया बैठी चरखा कात रही है। क्या यह तुम्हें नहीं मालूम ?'

'वेटा, मालूम तो है, पर वह ठीक नहीं लगता।'

'तो बुग्रा ने क्यों कहा ?'

'तुम्हारा दिल वहलाने को, मन खुश करने को।'

'तो वुढ़िया वहाँ नहीं है ?'

'होगी, मुभे नहीं मालूम । मैंने कहा न कि श्रपने लालाजी से पूछना ?'

लालाजी से डरते-डरते पूछा, तो उन्होंने न जाने क्या-क्या वताया। कहीं चन्दा की पीठ पर गौतम ऋषि की घोती के निज्ञान और कहीं चन्दा में भील, तालाव और न जाने क्या-क्या?

मेरी याद की पट्टी पर तो बुग्रा की वात लिख गयी ग्रीर मेरे ध्यान की पट्टी पर ग्रम्मा की वात उकिर गयी। वड़े होने पर ग्रम्मा की वात में किल्ले फूटे ग्रीर बुग्रा की वात धीरे-धीरे सूख-कर मुरभा गयी। वह याद तो ग्रव भी है, पर उसके वट तो जली रस्सी की तरह देखने भर के हैं।

मैं बुग्रा की सीख से ग्रविद्या के वोभ से जितना दवा था, ग्रम्मा की सीख से उतना ही दवने से वच गया।

इस तरह की अनेक अविद्याएँ हमारे प्यारे माँ-वाप हमारे भले के लिए हम पर लाद देते हैं। इन अविद्याओं से दवे हुए हम सच वोलते हैं, पर सत्य नहीं; क्योंकि उसे हम समभते ही नहीं। सच अगर जैसा देखना-सुनना वैसा वोलना है, तो तर्क के रास्ते जैसा समभना वैसा कहना भी है।

तर्क ने ही अविद्या को जन्म दिया और अव वही अविद्या की रथी वनाकर ज्ञान-चिता की आग में भस्म कर देगा। मानव-समाज ने अपने वचपन में जो तर्क खड़े किये, उसके जवाव भी तो उसे उसी वचपन ने दिये। वह ग्रविद्या से भरे नहीं ता ग्रीर क्या हो सकते थे ?

एक ग्रापवीती ग्रौर सुनिये !

में जब छोटा था, तो मेरी माँ मेरे बीमार पड़ने पर मेरा इलाज भी करती थीं। क्योंकि वे नाड़ी देखना बहुत ग्रच्छा जानती थीं ग्रौर दवा-दारू करना कामचलाऊ। वे जादू-टोना भी करती थीं, उसमें भी उनका विश्वास था। एक तरह से वह हिन्दू-मुसलमान, जैन ग्रौर बुद्धवादी सभी की खिचड़ी थीं। उनको 'समभावीं' भी कह सकते हैं।

जादू-टोना यह होता था कि मेरे वीमार पड़ने पर कुछ पैसे वह मेरे ऊपर फेरकर कहीं ताक में रख देती थीं ग्रीर मेरे ग्रच्छे होने पर उन पैसों की मिठाई मँगाकर बाँट दी जाती थी। मैं जब इतना बड़ा हुग्रा कि ताक में पाँव रख खूँटी पकड़ ऊपर के ताक से वे पैसे ले सकूँ, तो उन्हें यह मौका ही न देता था कि उन पैसों की मिठाई बाँटी जा सके। उनकी मिठाई में खुद खा जाता था ग्रौर ग्रपने साथियों को भी बाँट देता था। यह जानकर माँ मुक्त पर बहुत मीठी नाराजी दिखा उसे एकदम भुला देती थीं। ऐसा कभी न करतीं कि ग्रौर पैसे की मिठाई मँगायी जाय ग्रीर बाँटी जाय।

वीरे-धीरे यह जादू-टोना भी माँ के दिमाग से कम होता गया।

एक वार मेरे गलसुए फ़ूल गये। जादू-टोने के रूप में माँ ने मिट्टी की पाँच गोलियाँ वनाकर और मेरी कनपटी पर फेरकर एक ताक में रख दीं। मैं जव अच्छा हो गया, तो माँ को उनकी याद आयी। वे ताक में न मिलीं।

'वेटा भगवानदीन, वे मिट्टी की गोलियाँ ताक से कहाँ गयीं, मुभे उन्हें तालाव में डलवाने के लिए भेजना है।'

'ग्रम्मा, वह तो मैंने ले लीं।'

'किसलिए?'

'वन्दरों को मारकर भगाने के लिए।'

'जा, तू तो ग्रौतारी है, तेरे लिए जादू-टोना वेकार है।' उस दिन के बाद से में जादु-टोने से हमेशा के लिए वच

गया ।

एक पन्थ दो काज इसे कहते हैं।

माँ ग्रौर मेरा, दोनों का ग्रविद्या का एक-एक परदा सत्य पर से ग्रचानक ही हट गया। तर्क ने ही उस ग्रविद्या के परदे को डाला था ग्रौर उसीने उसे उठा लिया।

ग्रविद्या का परदा एकदम न हटेगा, पर उसके नीचे गर्दन तो देनी चाहिए।

जय तुम पैदा हुए थे, तव तुम पाप करते थे, खूव पाप करते थे। कुछ वड़े होकर भूलें भी खूव करने लगे, पर उनका सोच नहीं करते थे, इसलिए सत्य को समभने के लिए तुम्हारा मन, मस्तक दोनों तैयार थे। यह दूसरी वात है कि तुम्हें न तो ऐसे माँ-वाप मिले थे ग्रीर न गुरुजन, जो तुम्हें सत्य की सीख दे सकते या सत्य को ठीक-ठीक समभा सकते। उन दिनों पाप ग्रीर भूलें न तुम्हें ग्रखरती थीं न खटकती थीं, न सताती थीं ग्रीर न सुस्त वनाकर सोच में डालती थीं। माँ-बाप ने पापों से डराकर, भूलों पर घमकाकर, पापों की परछाई को देहवाला वना दिया ग्रीर भूलों की केशर को काँटे में बदल दिया। उन्होंने पाप से डराया तो भले के लिए था ग्रीर भूल पर धमकाया भी भले के लिए, पर उन्हें क्या मालूम कि डराना-धमकाना खुद सत्य के ग्रागे परदा वनकर खड़े हो जायँगे।

व्यास ग्रौर सूर, दोनों ने वड़ी कोशिश की कि दुनिया पाप ग्रौर भले के सोच में पड़ना छोड़ दे। इसके लिए उन्होंने कृष्ण-लीला ग्रौर कृष्णभक्ति के जिरये कृष्ण का वालपन ऐसा दिखाया कि पढ़ते ही वनता है, पर व्यास ने उसे लीला के ग्रौर सूर ने भक्ति के रस में इतना डुवाया कि दुनिया उससे उल्टी ग्रविद्या ही ले पायी, सत्य न समभ पायी।

पाप और भूल एक चीज है, पाप और भूल के सोच से अविद्या वढ़ेगी; उन्हें करते रहने से अविद्या और बढ़ेगी। पाप और भूल से सीख लेनी चाहिए, वह सत्य के समभने में मदद देगी। राई भर भूल या राई भर पाप अविद्या के साथ मिलकर पहाड़ भर भूल और पाप हो जाते हैं।

ग्रापवीती सुनिये !

एक दिन मैंने एक लड्डू चुपके से मटके में से निकालकर खा लिया। यह वात मैंने बुग्रा को वता दी। वह बोली: भगवान-दीन, यह तो तूने चोरी की ग्रीर वड़ा भारी पाप किया। भारी पाप की वात सुनकर मैं घवरा गया। ६ वरस का मैं, भारी पाप से न दव जाता, तो क्या करता? वोला— 'बुग्रा, ग्रव?'

'ग्रव क्या, ग्रव ग्रम्मा से जाकर वताग्रो, वही कुछ वतायेंगी ।'

'ग्रम्मा, एक वात वताऊँ ?'

'हाँ, वताग्रो।'

'ग्राज मुभसे एक वड़ा भारी पाप हो गया है।'

'कैसा पाप ? तू पाप क्या समभे ?'

'श्रम्मा, मैंने मटके में से एक लड्डू चुराकर खा लिया, श्रम्मा कुछ कहे कि मेरी नजर एक मकड़ी पर जा पड़ी, जो जाल में फैसी मक्खी को पकड़ कर खाने को ही थी। मैं दौड़ा श्रौर मक्खी को जाले से निकाल दिया। वह श्रपना जोर लगाकर जाले को तोड उड़ गयी। मैं लौटकर श्रम्मा से वोला:

'ग्रम्मा, मैंने मक्खी को छुड़ा लिया।'

'ग्रच्छा किया।'

'ग्रम्मा, ये मकड़ियाँ इतना पाप क्यों करती हैं कि मक्खी को खा जाती हैं ?'

'वेटा, वह पाप नहीं करतीं?'

'क्यों ग्रम्मा, वह मक्खी की जान ले लेती हैं ग्रीर पाप नहीं करतीं ?'

'यह मक्खी की जान भी नहीं लेती।'

'यह कैसे ग्रम्मा ?

'बेटा, मकड़ी न तो यह जानती है कि जान क्या होती है ग्रीर न यह जानती है कि मक्खी में जान है। वह तो उसे ग्रपनी खुराक समभती ग्रीर खा जाती है।' 'देखा, जैसे तुम्हारा मन चला कि लड्डू खाया जाय या तुम्हें भूख लगी ग्रौर तुमने मटके में से एक लड्डू निकालकर खा लिया, यह कोई चोरी नहीं है ग्रौर न पाप ही है।'

'ग्रम्मा, बुग्रा तो कहती हैं, वड़ा भारी पाप हुग्रा।'

'वुग्रा हँसी में कहती होंगी।'

'नहीं ग्रम्मा, हँसी में नहीं, उन्होंने तो कहा, ग्रम्मा से कहना। वह वतायेंगी, यह पाप कैसे दूर हो।'

'ना वेटा, यह पाप नहीं है, न चोरी। फिर जब तुमने बुग्रा से कह दिया ग्रौर फिर मुभे वता दिया, तव तो तुम्हारे लालाजी यह भी न कहेंगे कि भगवानदीन ने लड्डू ग्रम्मा के पूछे विना ले लिया।'

'तो ग्रम्मा, पाप नहीं हुग्रा ?'
'विलकुल नहीं।'
'ग्रम्मा, तू तो वड़ी ग्रच्छी ग्रम्मा है।'
'ग्रीर तू भी तो मेरा वड़ा ग्रच्छा वेटा है।'

वस, तो पाप ग्रौर भूलों के सोच में पड़कर हम सत्य से कोसों दूर जा पड़ते हैं ग्रौर हमारे माँ-बाप ग्रपनी ग्रजानकारी से हमें उनसे डराकर हमारे ग्रौर सत्य के वीच एक मोटी दीवार खड़ी कर देते हैं।

सत्य को समभने के लिए पाप ग्रौर भूलों का सोच तो मिटाना ही होगा।

0 0

#### सत्य कैसे खोजा जाय

हमारे जीवन में भूलें भरी पड़ी हैं। भूलों से ही हमारा जीवन वना है।

हमारे जीवन में ग्रन्धेरा है। हम ग्रन्धेरे में ऐसे जी रहे हैं, मानो उजाले में हों।

इस भूलभरे श्रीर श्रन्धेर में वीतनेवाले जीवन में एक ही खूवी है कि इन भूलों श्रीर श्रन्धेर में जिसे ढूंढते फिरते हैं, वह वेहद चमकदार है श्रीर वही तो सत्य है। यह भी श्रच्छा ही है कि सत्य श्रीर हमारे बीच पड़े हुए पर्दे धीरे-धीरे उठते हैं। वे वारी-वारी से न उठते, तो हम एकदम सत्य की चमक देख श्रन्धे हो जाते श्रीर कुछ भी न देख पाते।

हमारे मस्तक की मालदारी इसीसे नापी जाती है कि हमारी सत्य की जानकारी कितनी है। मालदार वनना किसे नहीं सुहाता! इसलिए मालदार वनने के लिए इससे वड़ा श्रौर कौन घंघा हो सकता है कि हम सत्य की खोज में लग जायँ।

#### सत्य श्रीर उन्नति एक चीज

तरक्कीदेवी की हिंडुयाँ सत्य की बनी हैं। उनकी मजा ग्रीर चरबी सत्य की बनी है। उनकी माँस-पेशियाँ सत्य की बनी हैं। उनमें सत्य की बनी हैं। उनमें सत्य का ही खून वहता है। उनके कान, ग्राँख, नाक, जीभ सब सत्य हैं ग्रीर सत्य ही उनकी जान है। सत्य ग्रीर उन्नति एक ही चीज है। यह सुनकर ग्रचरज न होना चाहिए कि

हम सवको पैदा होते ही सबसे पहले सत्य की भूख लगती है ग्रौर वह मरते दम तक कभी नहीं मिट पाती, वढ़ती ही रहती है। उस भूख को मिटाने के लिए जब कभी एक करा मिल जाता है, तो हमारी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। उस सत्य के एक करा से ही हम बुरे से भले वन जाते हैं, नीचे से ऊँचे उठ जाते हैं, ग्रपवित्र से पवित्र वन जाते हैं। हमारा ग्रादमी के रूप में पैदा होना सफल हो जाता है।

श्रव एक श्रापवीती सुनिये !

सन् १८६६ का जिक्र है। मैं था वारह वरस का। मंदिर में शास्त्र-सभा हो रही थी। उसमें मैं ही सबसे छोटा था। मुभसे वड़ा एक ग्रीर लड़का था, जो सोलह वरस का होगा। भादों का ग्राखिरी दिन था। उस दिन प्रतिज्ञा लेने का रिवाज पुराना है। रिवाज की रस्म निभाने के लिए शास्त्र-सभा के खतम होने पर प्रतिज्ञा लेने का नंवर आया। सोलह वरस के उस लड़के ने तो यह प्रतिज्ञा ली कि वह एक महीने तक दिया न जलाया करेगा। उसकी यह प्रतिज्ञा सुनकर उसका वाप हँस पड़ा और लोग भी हँस दिये। वाप तो यों हँसा कि दूकान का दिया जलाने का काम उस लड़के के सुपुर्द था श्रीर वस, वही एक काम उसके सुपूर्द था। उसने उस एक काम के न करने की प्रतिवा लेकर उससे भी छुट्टी पा ली। इस काम की वजह से शाम को खेल में वाघा पड़ती थी, इसलिए वह इसके सिवा ग्रीर क्या प्रतिज्ञा लेता ? ग्रीर लोग यों हँसे कि वे यह समभ ही न पाये कि यह ग्रनोखी प्रतिज्ञा किसलिए ली जा रही है।

ग्रव मेरी वारी ग्रायी। मैंने उस दिन के लिए निर्जल व्रत रखने की प्रतिज्ञा की। यह वात दिन के नी वजे की है। शास्त्र-सभा से पहले मैंने नाश्ते के तौर पर भी कोई चीज न ली थी। उस दिन घर में मैं, मेरी माँ ग्रौर मेरी वड़ी वहन थी; ग्रौर कोई घर पर नहीं था। माँ ग्रौर वहन पहले से ही उस दिन कुछ न खाने का व्रत लिये हुए थीं, इसलिए ज्ञास्त्र-सभा में जाने के पहले मेरे लिए हलुवा, पूड़ी ग्रौर शाक वनाकर तैयार कर दिया गया था। पर ग्रव में भी प्रतिज्ञा ले चुका था, इसलिए उस खाने का कोई उपयोग न रह गया।

मंदिर में जिस वक्त मैंने प्रतिज्ञा ली थी, मेरी माँ ग्रौर वहन, दोनों ही वहाँ मौजूद थीं। पर उनमें से किसीने मुफ़े प्रतिज्ञा लेने से नहीं रोका, क्योंकि ऐसा करना समाज की नजर में बुरा समक्ता जाता है। घर ग्राकर वहन ने तो कुछ समक्ताया-बुक्ताया भी, पर माँ ने एक शब्द भी नहीं कहा।

मेरे ऊपर व्रत का वड़ा गहरा रंग चढ़ा ग्रांर इतना गहरा चढ़ा कि मैं ग्रपने साथियों के साथ खेलने तक न गया। घर में बैठे ही धर्म की कितावें पढ़ता रहा। तीन वजे तक कोई तकलीफ नहीं हुई। उसके वाद से पित्त वढ़ना गुरू हुग्रा ग्रांर पीले रंग की हल्की-सी कै हुई। वहन दांड़ी-दौड़ी ग्रायी ग्रांर उसने मुफे कुल्ला कराना चाहा। पर मैंने कुल्ला करने से इनकार कर दिया, क्योंकि में समभता था कि कुल्ले के वहाने पानी मुँह में जाना भी व्रत तोड़ना है। इसलिए मैंने हाथ धोकर होंठभर पोंछ लिये। एक कै से ही मेरी तवीयत निढाल हो गयी। वहन ने मेरे लिए चारपाई विछा दी। माँ यह सब देख रही थी, पर वह कुछ न बोली। ग्राथ घंटे के वाद फिर कै हुई। फिर भी बहन ने ही सँभाला, उस के के वाद थोड़ा चैन मिला। घंटेभर के वाद फिर कै हुई ग्रीर खूव पित्त गिरा। ग्रव माँ पास ग्राकर खड़ी हो गयी, पर ग्रीर सब काम बहन ही करती रही। जब फिर मैं चारपाई पर लेट गया, तो माँ ने मेरी बहन को किसी काम के लिए किसीके घर भेज दिया ग्रीर उसके चले जाने के बाद वह मुक्ते समकाने बैठ गयी।

'देखो वेटा, तुमने कल पाँच वजे खाना खाया था, उसके बाद ग्रव तक खाना नहीं खाया। ग्रव पाँच वजे हैं, पूरे चौवीस घंटे हो गये। चौवीस घंटे का एक दिन होता है, इसलिए तुम्हारा एक दिन का व्रत पूरा हो चुका।'

'पर ग्रम्मा, व्रत तो मैंने नौ बजे लिया। कल नी बजे चौबीस घंटे होंगे।'

'यह तो ठीक है, पर तुम्हारी तबीयत इतनी निढाल हो गयी है कि व्रत में चित्त में जितनी शांति रहनी चाहिए, उतनी ' शांति तुम ग्रपने मन में नहीं रख सकोगे।'

'ग्रम्मा, यह तो तुम ठीक कह रही हो। पर वृत तो दुःख मानकर ही निभाये जाते हैं। शास्त्र में तो सारी कथाएँ ऐसे ही पढ़कर सुनायी जाती हैं।'

'वेटा, यह तो तुम ठीक कहते हो। पर व्रत का भ्रानंद तो उस वक्त चल देता है, जब चित्त व्रत से डिगने की वात सोचने लगता है। ग्रव तुम ही वताभ्रो, क्या तुम्हारे मन में इस वक्त यह बात नहीं आ रही कि अगर कोई न हो, तो तुम चुपके से और कुछ न मिले, तो पानी ही पी लो।

'हाँ ग्रम्मा, ऐसी बात तो मन में ग्रा रही है। मेरा जी तो बार-वार कुछ खाने को भी मचलता है।'

'तो मैं शरवत लाऊँ !'

'ना ग्रम्मा, शरवत पीने से तो व्रत टूट जायगा।'

'हाँ, टूट तो जायगा, पर तुम्हारे मन ने तो व्रत बहुत पहले से तोड़ रखा है। तुम्हारी चालाकी व्रत का खेल कर रही है।'

'श्रम्मा, मैं तुम्हारी वात तो नहीं समक्ता, पर इतना जरूर जानता और कह सकता हूँ कि मेरा मन खाने के लिए बहुत मचल रहा है। श्रम्मा, मैं सच-सच कहता हूँ कि मैं तुमसे तो विल्कुल नहीं डरता। तुम्हारे सामने तो मैं शरवत क्या, खाना भी खा सकता हूँ, पर जीजी के सामने ऐसा नहीं कर सकता। जीजी चाहे मेरी हँसी न भी उड़ाये, पर यह वात मेरे साथियों तक जरूर पहुँचा देगी। फिर मेरे साथी मुक्ते क्या समकोंगे ? मेरी खिछी उड़ायेंगे। खमानी, जिसने दिया न जलाने की प्रतिज्ञा ली है, तो मुक्तसे कहीं श्रागे वढ़ जायगा श्रीर मेरी हँसी करेगा।

'तो क्या तुम, हँसी के डर से और तारीफ के लोभ से अपने मन को विगड़ने दोगे ? यह ठीक है कि अगर तुम चाहो, तो में तुम्हारी वात किसी तक न पहुँचने दूँगी । पर मैं इस वात में तुम्हारा भला नहीं समभती । हाँ, यह ठीक है कि मैं जीजी की तरह तुम्हारी वात तुम्हारे साथियों से नहीं कहूँगी । मैं जिस तरह कहूँगी, उससे तुम्हारे साथियों में तुम्हारी इज्जत घटेगी

नहीं। सचाई से कहीं इज्जत घटती है, उससे तो इज्जत श्रीर वढ़ती है।

'ग्रम्मा, तो क्या तुम भी मेरे साथियों से मेरे खाने-पीने की वात कह दोगी ?'

'नहीं, तुम चाहोगे, तो नहीं कहूँगी। पर मैं नहीं चाहती कि तुम यह चाहो कि मैं तुम्हारे साथियों से यह बात न कहूँ।'

'श्रम्मा, जब तुम उनसे कहोगी, तो क्या वे मेरी हँसी नहीं उड़ायेंगे ?'

'मैं जिस तरह कहूँगी, उससे तो ऐसा मालूम होता है कि वे तुम्हारी हँसी नहीं उड़ायेंगे! ग्रगर वे तुम्हारी हँसी उड़ायें भी, तो क्या तुम हँसी उड़ाने से बचने के लिए भूठ बोलना पसंद करोगे? फिर बत का क्या फायदा रह जायगा?'

'ग्रम्मा, तुम वात तो विलकुल ठीक कहती हो, पर मेरा मन भूठं वोलने से इतना नहीं डरता, जितनी ग्रपनी हँसी उड़ती देखने से ।'

'वेटा, इस बुरे धर्म का रिवाज पड़ गया है ग्रीर इसी रिवाज की तुम्हें भी ग्रादत है। इसीलिए भिभक होती है। जब सच वोलने की ग्रादत हो जायगी ग्रीर हँसी उड़ने की वरदाश्तं तुममें ग्रा जायगी, तो फिर भूठ वोलने में भिभक हुग्रा करेगी ग्रीर हँसी उड़ने का कोई डर न रह जायगा। देखो, ग्रव तुम सोचो नहीं, शर्वत पीकर ग्रपना वत पूरा कर लो। फिर यह वत तोड़ना भी कहाँ है? चौवीस घंटे तुम्हें हो ही गये। एक दिन पूरा हो गया। वस, ग्रव तुम शर्वत पी लो। दो-एक घंटे के वाद रवड़ी जैसी चीज खा लेना।

'ग्रम्मा, तुम तो मेरा मन ललचा रही हो।'

'ना वेटा, ऐसा नहीं। मैं तुम्हें सच का पाठ दे रही हूँ। मैं ग्रपने वेटे का मन क्यों ललचाने लगी?'

'ग्रम्मा, तो जीजी नहीं हँसेगी ?'

'जरूर हँसेगी। पर जब मैं उसे समभा दूँगी, तो वह नहीं हँसेगी।'

'ग्रीर मेरे दूसरे साथी न हँसेंगे ?'

'वे भी जरूर हँसेंगे। उन्हें भी समभाना पड़ेगा।'

'ग्रौर तुम समभती हो कि तुम उन्हें समभा लोगी।'

'हो सकता है, वे मेरे समभाये न समभें ! पर इससे क्या ? वे समभें या न समभें, मुभे तो ग्रपने वेटे को समभाना ग्रीर उसे सच्चा ग्रीर पक्का बनाना है। ग्रव तुम वताग्रो कि तुम भी मेरी वात समभ गये या नहीं ?'

'ग्रम्मा, मैं समभा तो कुछ नहीं। हाँ, मेरा मन तुम्हारे कहने से शर्वत पीने ग्रीर रात को कुछ खा लेने के लिए भी तैयार है।'

'हाँ, यह तुम्हारे लिए मुिश्तिल है कि तुम समभने ग्रीर समभ जाने पर भी यह समभ सको कि तुम समभ गये हो। यह तो ग्रीर भी मुश्तिल है कि तुम मुभे वता सको कि तुम समभ गये हो। पर मैंने यह समभ लिया है कि तुम्हारा मन सचाई को समभ गया ग्रीर यह सचाई मन से नीचे उतरकर वहाँ जा पहुँची, जहाँ से ग्रव वह जल्दी भागनेवाली नहीं।'

'ग्रम्मा' न जाने तुम क्या कहती हो। मेरी समभ में नहीं

ग्राता। में तो इतनी ही वात जानता हूँ कि मैं तुम्हारे कहने से खा-पी लूँगा ग्रौर मेरे साथी जव मुफसे पूछेंगे, तो मैं डरे विना उनसे सच-सच कह दूँगा। फिर भी वे मेरी हँसी उड़ायेंगे, तो मैं कह दूँगा कि मैं कुछ नहीं जानता; वस, ग्रम्मा का कहना मानना जानता हूँ। ग्रम्मा ने कहा ग्रौर मैंने खा लिया।

'ग्रपने साथियों के साथ तुम्हारा यह तर्क तो ठीक रहेगा ही, पर क्या तुम्हारे मन में ऐसी बात नहीं उठती कि तुम भूठ न बोलकर ग्रव निडर होकर सच बोल सकोगे।'

'श्रम्मा, यह तुम कह रही हो, इसलिए मान लेता हूँ। मेरे मन पर तो श्रभी वृत न तोड़ने का धर्म ही सवार है।'

'वेटा, यों नहीं, यों कहो कि मेरे मन पर तो श्रभी वृत न तोड़ने का 'भूत' ही सवार है।'

श्रम्मा की यह बात सुनकर मैं एकदम खिल उठा। पर उस वक्त यह नहीं समभ पाया कि मैं क्यों खिल उठा। मैं श्रम्मा के उस उपदेश का पूरा-पूरा तत्त्व तव समभ पाया, जव मैंने धर्म के एक वड़े ऊँचे ग्रन्थ में यह लिखा देखा कि—'जोश में श्राकर बालबुद्धि से या कम जानकार गुरुष्ठों के उपदेश से या गुस्से में श्राकर जो प्रतिज्ञाएँ कर ली जायँ, उन्हें तोड़ते हुए श्रगर डर लगे, तो यही सममना चाहिए कि धर्म का सच्चा श्रद्धान तुममें नहीं हैं।'

#### तर्क से सत्य की खोज

में नहीं जानता, मेरी अनपढ़ माता में इतना ऊँचा तर्क कहाँ से और कैसे आ गया। मैं इसके सिवा क्या कह सकता हूँ कि उनमें सत्य के समभने की सहज बुद्धि थी। एक नहीं, ग्रनेक वार उन्होंने मुभे ऐसी सीख दी, जिनको में उस वक्त तो माँ के नाते ही मान लेता था। पर बड़े होकर ही मैं समभ पाया कि मेरी माँ की सीख हर तरह से इस योग्य थी कि उनका गुरु की सीख के समान ग्रादर किया जाय ग्रीर वैसा ग्रादर मैंने किया भी। उन्हीं सीखों के वल पर ग्राज मैं विना किसी भिभक के यह कह सकता हूँ कि ग्रपने-ग्राप ग्रपने ग्रन्दर तर्क करने से सत्य जरूर खोजा जा सकता है। हमारे तजुर्वे सत्य की खोज में बड़े मददगार सावित होते हैं। सत्य खोज की चीज है ग्रीर वह खोजने से ही मिलती है।

सत्य के खोजने में किसी योग्यता की शर्त लगाना, खोजी को खोज से रोकना है। हर श्रादमी को श्रपनी योग्यता के श्रनु-सार सत्य की खोज में लगने देना चाहिए। जब तक इस रास्ते में समाज व्यक्ति को पूरी श्राजादी नहीं देगा, तब तक व्यवहारी सचाई का कुछ हिस्सा भले ही श्रादमी के हाथ लग जाय, पर पारमार्थिक सत्य का एक श्रंश भी उसके हाथ न लग पायेगा।

जिस ग्रादमी को किसी तरह की रोक नहीं है, जिसके लिए कोई वात छिपी नहीं है, जिसे कुछ भी करने की मनाही नहीं है, वह पारमायिक सत्य को जितनी जल्दी पा सकता है, उतनी जल्दी कोई नहीं पा सकता। पुराए हमें चिछा-चिछाकर यही इशारा कर रहे हैं कि पुराय के कमल पाप की कीचड़ से ही खिलते हैं। ग्रन्थेर से घवराकर ही हम प्रकाश की ग्रोर भागते हैं। ग्रन्थेरा हममें प्रकाश की चाह पैदा करता है। जो सत्य ऐसा है, जिसके समभने की किसीके लिए भी मनाही है, वह सत्य ही नहीं हो सकता। जिस देवता के पास किसी एक को भी जाना मना है, वह देवता नहीं, वनावटी देवता है।

#### मन-मस्तक के साथ हाथ-पैर भी साधन

वस, सत्य की खोज में लगनेवाले को यह समक्क ही लेना चाहिए कि वह खोज के रास्ते में इस लोक ग्रौर परलोक के दण्ड से कभी न घवरायेगा। इतना उसे ग्रौर समक्क लेना चाहिए कि पारमाथिक सत्य कोई ऐसी चीज नहीं है, जो एकान्त में वैठकर, पहाड़ों की गुफा में ग्रासन लगाकर, वे-मतलव सर्दी, गर्मी, वर-सात के दु:ख सहकर सिर्फ मनन-चिंतन से हाथ ग्रा जाय। उसके लिए तो उसे मस्तक-मन के साथ-साथ तन से जुड़े हाथ ग्रौर पैरों से ऐसा ही काम लेना पड़ेगा, जैसे मजदूर ग्रपने पेट के लिए, रोटी जुटाने के लिए, उनसे काम लेता है। मजदूर जिन हाथों से रोटी जुटाता है, सत्य का खोजी मस्तक ग्रौर मन की मदद से उन्हीं हाथों से सत्य को खोज निकालेगा।

यह ठीक है, सभी संत- महन्तों ने ग्रौर सभी महापुरुषों ने सत्य खोजने के लिए हजारों वर्ष से चले ग्राये रिवाज के ग्रनुसार पहाड़ों की गुफाग्रों में ग्रासन जमाकर, शिलाग्रों से ग्रपना माथा टकराया है। पर ग्रन्त में वे इसी नतीजे पर पहुँचे हैं कि उनका वह चिंतन समय का वर्बाद करना ही रहा। सत्य तो उन्हें समाज के भीतर प्रवेश करके ही हाथ ग्राया। एक ऋषि ने क्या ही ग्रच्छा कहा है कि इच्छाग्रों पर काबू पाना ही तपस्या है, देह की तपस्या तो देह को वेकार कष्ट देना है।

इच्छाएँ कावू में ग्रायीं नहीं कि मस्तक खिला, मन में विशालता ग्रायी, उदारता ने जगह पायी ग्रीर हाथ ग्रीर पाँव में सरसराहट ग्रायी ग्रीर फिर वह इस ढंग से बढ़े कि सत्य का कोई-न-कोई हिस्सा उनके हाथ लगा।

. . .

#### सत्य का सिंगार क्यों ?

सत्य को सजाने की जरूरत नहीं। सजाने से सत्य की सुन्दरता कम हो जाती है। सत्य से सुन्दर जगत् में दूसरी चीज नहीं। 'सत्यम्, शिवम् सुन्दरम्' का यह अर्थं नहीं कि ये तीन अलग-अलग चीजें हैं। इसका अर्थं है, सत्य शिव और सुन्दर है। सत्य को ईश्वर कहा जाता है, तब वह शिव सुन्दर नहीं होगा, तो और क्या होगा?

भूठ न सुन्दर होता है, न हो सकता है। जिन कितावों में काम की चीज कम रहती है, उनकी दूकानदार वड़ी खूवसूरत जिल्द बनाते हैं, उस पर सोने से बेलबूटे निकालते हैं। भूठ वाजार में सजधज के विना नहीं ग्रा सकता।

भूठ को यश की चाह होती है। उसे वर्दी पहनकर, पगड़ी वाँधकर सामने ग्राना पड़ता है। भूठ ऐसा न करे, तो वह दुनिया में जगह नहीं वना सकता। भूठ के सजधजकर ग्राने की वजह कुछ लोग सत्य को सजाने लगे हैं। इससे सत्य को, फायदा न होकर, नुकसान हुग्रा है। सजधज की वजह सत्य को ग्रव कोई यों ही सत्य नहीं मान लेता, कसौटी पर कसकर देखता है। इसका मतलव है, सत्य सजावट की वजह ग्रादमी की पहली निगाह में भूठ जँचता है। सजने की भूठ को जरूरत है। सजे हुए सत्य को परीक्षा की श्राग में होकर निकलना ही पड़ेगा। यह ठीक है, सत्य परीक्षा में खरा उतरता है, पर उसे परीक्षा की जरूरत पड़े, यह शोभा नहीं देता।

सजावट ने, जिसकी भूठ के लिए जरूरत थी, सत्य की कम-कदरी कर दी; उसे भूठ की पंगत में विठा दिया।

दुनिया में ईमानदार, विचारवान् कम हैं श्रीर बुद्धिमान् भी कम पाये जाते हैं। श्राज दुनिया का काम बहुमत से चल रहा है। तब सत्य को जगह कहाँ ? यों सत्य को सजाकर लाने का रिवाज चल पड़ा। इस रिवाज से सत्य की भलाई नहीं हुई। हाँ, भूठ की भलाई जरूर हुई। सत्य दव गया श्रीर भूठ सारी दुनिया में फैल गया। इस भूठ से भरी दुनिया में ग्रगर बहुमत की पर्वाह की जाय, तो सत्य कभी हाथ नहीं लग सकता। इसलिए ईमानदार, समभदार, बुद्धिमान् सत्य के मामले में बहुमत की पर्वाह नहीं करते। वे सत्य को कहे जाते हैं, दुनिया के सामने वरावर रखते हैं, भले ही सत्य वोलने, सत्य विचार फैलाने या सत्य समभाने से उन पर कितनी ही श्राफत क्यों न श्राये ?

कुछ माँ वाप, सत्य की कदर करने पर भी, ग्रपने छोटे वच्चे से सत्य को न जाने क्यों छिपाये रखना चाहते हैं या छिपाये रखते हैं। उनका छोटा वच्चा भूठ-विचारों में फँस रहा होता है, फँसने को होता है या फँसने की संभावना में होता है ग्रीर वे देखते रहते हैं। इसे ग्राप मेरा सौभाग्य समिभये कि मुभे ऐसी माँ मिली थी, जो सत्य को मुभसे इस वक्त भी छिपाकर न रखना चाहती थी, जव मैं वारह वरस का था। वह सत्य वात क्या थी, उसे सुनिये।

#### मन्दिर का पट वन्द क्यों ?

भादों के महीनों में पर्व गुरू होने से पहले एक-दो दिन ऐसे होते थे, जब दोपहर के वक्त छोटे वच्चों को मंदिर में नहीं ग्राने दिया जाता था। दो-चार ग्रधेड़ ग्रीर वड़े-बूढ़े मंदिर के ग्रंदर रहते थे। वे ग्रन्दर से दरवाजा वन्द कर लेते थे। तीन-चार घंटे वरावर वच्चों के लिए ग्रंदर ग्राने की मनाही रहती थी। मैं वारह वरस का था, पर उमर के लिहाज से काफी समभदार था। मुभे भी ग्रन्दर नहीं ग्राने दिया जाता था। यह रोक-टोक मुभे वहुत ग्रखरती थी।

इस रोक-टोक के वारे में मैं ग्रपने ग्रौर साथियों से पूछता, लेकिन वे कुछ न वता पाते । सोलह-सतरह वरस के लड़के भी कुछ न वताते । या तो वे जानते न हों या जानवू ककर वात छिपाते हों । वड़े-वूढ़ों से जब यह वात पूछी गयी, तब फटकार हाथ ग्रायी । वे लोग, जो मन्दिर में वंद होकर काम करते थे, मेरे करीवी रिश्तेदार होते थे । मुक्ते प्यार करते थे, मुक्ते ग्रच्छा लड़का समक्ते थे, पर वे भी यह न वताते थे कि किसलिए मंदिर में वंद रहते हैं । नहीं वताते थे, इतना ही नहीं, नाराज होकर कह बैठते "क्या पूछते हो ?" यह सुनकर में ग्रपना-सा मुँह लेकर रह जाता ।

में था तो वारह वरस का, पर भूत-प्रेत में विलकुल विश्वास न करता था। मेरे माँ-वाप को छोड़कर सारा मुहल्ला भूत-प्रेत का विश्वासी था। मुहल्ले के दो खाते-पीते घराने भूत-प्रेत बुलाने का काम करते थे। उनमें से किसी एक घर में होली-दिवाली को जरूर भूत बुलाये जाते थे। इस काम के लिए जो सभा लगती थी, उसे 'श्रा हा' कहा जाता था। ऐसे श्रा हां में, जहाँ तक वने, वचों को नहीं ग्राने दिया जाता था। लेकिन ग्रगर कोई वच्चा ग्रा ही जाय, तो उसे निकाला नहीं जाता था। उसे उस मिठाई से भी वंचित नहीं रखा जाता था, जो श्रा हो में भूतों के ग्राने पर सभा को वाँटी जाती थी। मुभे इस मिठाई का वड़ा लालच रहता ग्रीर किसी-न-किसी तरह वहाँ पहुँच जाता।

एक वार एक लड़के से भूत के वारे में वहस हो जाने पर मैं यह कह वैठा, "ग्राज तुम्हारे वाप के सिर पर कोई भूत न ग्राने दूँगा।" उस लड़के का वाप ग्रखाड़े में भूत वुलाने का काम करता था। उस लड़के से शर्त हो गयी। दिवाली का दिन था। रात काफी ठंडी हो चुकी थी। में एक कपड़ा ग्रोड़कर ग्रीर वांस की एक खपच्ची में एक सूई वांधकर ग्रपने कपड़े में छिपाकर उस लड़के के साथ, जिसे मैंने चुनौती दी थी, उसके घर पहुँचा। ग्रखाड़े में ठीक उसके वाप के पीछे बैठ गया। वह लड़का मेरे वरावर वैठ गया। ग्रखाड़े में लालटेन न थी। कोठरी के एक कोने में एक दिया जल रहा था। वह ऐसी जगह था, जहाँ से वह मेरे ऊपर लड़के के वाप की परछाई डाल रहा था, यानी में कुछ ग्रँधेर में था। ग्रखाड़े के ग्रांर लोग मुक्ते ठीक-ठीक न देख सकते थे।

मेरे पहुँचने के दो मिनट वाद लड़के के वाप ने एक भूत वुलाया। जैसे ही लड़के के वाप ने सिर हिलाना गुरू किया, मैंने चुपके से खपची में वँघी सूई पीछे से लड़के के वाप के वदन में चुभा दी। खपची चट नीचे छिपा ली। सिर हिलना बंद हो गया। लड़के के वाप ने दाँयें-बाँयें गुस्सा होकर देखा, पर कुछ न समभा, फिर भूत बुलाया गया। वह ग्राया, मैंने फिर सूई चुभायी, वह फिर भाग गया। फिर उसी तरह दाँयें-वाँयें निगाह डाली गयी, फिर भी कोई कुछ न समभा। ग्राघ घंटे की कोशिश के वाद लड़के के वाप को यह कहना पड़ा कि ग्राज भूत सिर न ग्रायेगा।

दूसरे दिन सारा भेद खुल गया। उस दिन के वाद से मुभे कभी श्रखाड़े में शामिल नहीं होने दिया गया। शायद यह भी एक कारएा हो कि मुभे मंदिर में उस वक्त न श्राने देते हों, जब किसी श्रीर लड़के को वहाँ श्राने की इजाजत न थी।

जव मैं सब जगह से निराश हो गया, तब अपनी माँ से पूछ बैठा, 'माँ, हम बच्चों को मंदिर में ये लोग क्यों नहीं आने देते ?' माँ बोलीं, 'मंदिर तो तुम रोज जाते हो, कोई रोकता नहीं। कब किसने तुम्हें रोका ?' मैं बोला, 'हर साल भादों की पूजा गुरू होने से पहले दो-तीन दिन दोपहर को कुछ लोग मंदिर में दरवाजा बंद करके बैठ जाते हैं, हम लड़कों को अन्दर नहीं आने देते। दो-एक दिन की बात होने से मैं हर साल तुमसे पूछना भूल जाता था, इस साल भी कल ऐसा ही हुआ। आज भी अभी मैं मंदिर से आ रहा हूँ, कोई दरवाजा नहीं खोलता, कोई कुछ बताता भी नहीं। अम्मा, यह बात क्या है?'

श्रम्मा हँस पड़ीं, वोलीं, 'श्रच्छा यह वात है ? वेटा, वात कुछ नहीं, लोग दरवाजा वंद करके पूजा के लिए मंदिर की सफाई करते हैं, इसलिए वच्चों को नहीं श्राने देते ।' में वोला, 'ग्रौर बच्चे न सही, मैं तो सफाई के काम में पूरा हाथ वटा सकता था। जब वे वेदी सजाते हैं, तो मुभसे काम लेते हैं, ग्रौरों से भी लेते हैं।'

ग्रम्मा वोलीं, 'पर इस वक्त वे वेदी नहीं सजा रहे हैं।' भगवान् की मूर्तियाँ साफ कर रहे हैं।'

में वोला, 'यह काम भी में ग्रच्छा कर सकता था।'

ग्रम्मा वोलीं, 'तुम ग्रच्छा तो कर सकते थे, पर कहीं से कोई मूरत टूट-फ़ूट जाती तो क्या होता ?'

मैं वोला, 'ग्रीर उनसे टूट-फ़ुट जाय तो ?'

ग्रम्मा वोलीं, 'वे वहुत होशियारी से काम करते हैं। इतनी वड़ी जिम्मेदारी का काम तुम्हें नहीं सींप सकते।'

में वोला, 'यह ठीक, वे मुक्ते काम न दें, पर अन्दर क्यों नहीं ग्राने देते ? देखने क्यों नहीं देते ? ग्रीर सफाई की तरह वह भी एक सफाई है। ग्रीरों में ग्राने देते हैं, तो इसमें क्यों रोकते हैं?'

ग्रम्मा वोलीं, 'वजह यह है कि धातु की मूर्तियों की सफाई करते वक्त उनको टेढ़ा-सीधा कर मांजना पड़ता है। कभी जरूरत पड़ जाय, तो पाँव का जोर भी लगाना पड़ता है। इसलिए वहाँ बच्चों को नहीं रहने देते।'

में वोला, 'इसमें न रहने देने की क्या वात है ?'

ग्रम्मा वोलीं, 'वच्चे मूर्तियों का इस तरह माँजना देखकर मूर्तियों को खिलीना समभने लगेंगे ग्रौर सारा ग्रादरभाव खो वैठेंगे। भगवान् मानना छोड़ देंगे ग्रौर कभी ग्रकेले में छोटी-छोटी मूर्तियों के साथ ऐसे ही खेलने लगेंगे, जैसे ग्रौर खिलीनों के साथ।' में वोला, 'तो वह भगवान् नहीं हैं ?' ग्रम्मा वोलीं, 'भगवान् नहीं, भगवान् की मूरत हैं।' मैं वोला, 'भगवान् की मूरत जैसे लालाजी की तसवीर।'

ग्रमा वोलीं, 'तसवीर नहीं, जैसे लालाजी की मूरत । लालाजी की मूरत को, ग्रगर वैसी कोई मूरत तुम्हारे घर में होती, तो तुम ग्रच्छी तरह सँभालकर रखते या नहीं ?'

में वोला, 'सँभालकर तो रखता, पर घोक (साष्टांग नमस्कार) न देता।'

श्रम्मा वोलीं, 'घोक तो तुम लालाजी को भी नहीं देते। पर भगवान् श्रगर तुम्हारे लालाजी की तरह जीते-जागते तुम्हारे सामने श्रा जाते, तो तुम घोक देते या नहीं ?'

में बोला, 'हाँ, तव तो घोक देता।'

ग्रम्मा वोलीं, 'वस, यही वात भगवान् की सूरत की है। उन्हें रगड़ते-माँजते देख वच्चों में सूर्तियों का ग्रादर कम हो सकता है। ग्रपने लालाजी को तुम रोज देखते हो। उनसे थोड़ा-वहुत डरते भी हो। पर भगवान् को तुमने कभी नहीं देखा, उनका नाम सुना है, उनकी कथा सुनी है। ग्रपने लालाजी से ग्रौर मुभसे तुमने भजन सीखे हैं, प्रार्थना सीखी है। भगवान् की मूर्तियों को घोक देना सीखा है, पर सव सुना सीखा है। यह सुनी-सीखी वातें तुम्हारे दिल से निकल सकती हैं, ग्रगर तुम किसीको मूर्ति से पाँव लगाते या बुरी तरह उलटते-पुलटते देख लो।'

में वोला, 'ग्रम्मा, मंदिर के भगवान् हमें इम्तिहान में पास नहीं करा सकते ?' ग्रम्मा वोलीं, 'नहीं, कभी नहीं करा सकते, इम्तिहान में पास तो तुम मन लगाकर पढ़ने से होगे, तुम्हारे लालाजी तुम्हें पढ़ाकर पास करा सकते हैं। उनकी तसवीर या मूरत तुम्हें पास नहीं करा सकती, क्योंकि वह तुम्हें पढ़ा नहीं सकती। तुम ग्रपने लालाजी की तसवीर को नमस्कार करके खुद खुश हो सकते हो, मुभे खुश कर सकते हो, ग्रच्छे लड़के समभे जा सकते हो। पर उस तसवीर से पैसे माँगकर, पैसे नहीं पा सकते। इस तसवीर से कुछ पूछो, तो जवाव नहीं पा सकते।

'ग्रम्मा, तो भगवान् से हमें कुछ नहीं मिलेगा ?'

ग्रम्मा वोलीं, 'कुछ क्यों नहीं मिलेगा ? उनकी कथा मुनने से तुम्हारे ग्रंदर तुम्हारा मन भलाई करने के लिए जोर मारेगा। इतना मिलना क्या कम है ? देखो, मुहल्ले के सब लड़के गाली देते हैं, तुम कभी गाली नहीं देते, क्योंकि तुम्हारे पिताजी कभी गाली नहीं देते, मैं गाली नहीं देती। देखो, तुम्हारे स्कूल के लड़के गिलोल रखते हैं, वेमतलब चिड़ियाँ-कौए मार डालते हैं। गिलोल तुम्हारे पास भी है, पर तुम वैसा नहीं करते; क्योंकि तुम्हारे लालाजी वैसा नहीं करते, मैं वैसा नहीं करती। तुम ग्रपने घर के नौकर को वैसा नहीं करने देते, हम सब ऐसा इस वास्ते नहीं करते कि हमारे भगवान् ऐसा नहीं करते थे। हमने यह वात उनकी कथा सुनकर सीखी, तुम्हें सिखायी। उन्हीं भगवान् की मूरत मंदिर में है। हम सब उनको घोक देते हैं, ठीक करते हैं। उनसे ग्रीर क्या चाहिए ?'

में वोला, 'हम सव तो यह समभते थे कि मंदिर के भगवान्

सव-कुछ कर सकते हैं। श्रम्मा, जव भूल से मैं उनकी तरफ पीठ कर देता था, तो रात को वड़े-वड़े डरावने सपने श्राते थे। ऐसा क्यों होता था?'

ग्रम्मा वोलीं, 'डरोगे तो डरावने सपने ग्रायेंगे, किसीको डरायेंगे तो डरावने सपने ग्रायेंगे। किसीको डराने की सोचोगे तो डरावने सपने ग्रायेंगे। जो सपने डरावने तुम्हें ग्राये, वे डरने से ग्राये।'

मैं बोला, 'तो ग्रम्मा, हमें भगवान् से नहीं डरना चाहिए ?' ग्रम्मा बड़े प्यार से बोलीं, 'भगवान् से डरने का क्या काम ? वे हमारा डर दूर करने के लिए पैदा हुए हैं। उनकी कथा सुन-सुनकर हमारे कितने ही डर भाग गये। भगवान् से डरा नहीं करते। डरना चाहिए किसीको दु:ख पहुँचाने से, किसीका जी दुखाने से किसीकी चीज छीन लेने से ग्रीर इसी तरह के ग्रीर काम करने से।'

श्रम्मा की इन वातों का श्रसर उस उमर में तो कुछ मालूम न हुश्रा। इन वातों के बाद भी सब काम वैसे ही चलते रहे, जैसे हमेशा चलते थे। हाँ, उमर पाकर उस वात में श्रंकुर फूटे श्रीर सत्य के समभने में खूब मदद मिली।

#### सत्य छिपाना भी श्रमत्य

सत्य छिपाना ग्रसत्य है। पर ग्रगर किसीका कोई मेद तुम्हारे पास है, ग्रीर ग्रगर उसे न छिपाकर किसी दूसरे से कह दो, तो यह न छिपाना ग्रसत्य होगा। व्यवहार में जो सत्य ग्रा रहा है, इस किताव में हमने उसे 'सच' नाम दिया है। पर जो गहरी ग्रसिलयत है, उसे हम 'सत्य' कहकर लिखते हैं। वही ग्रसिलयत-वाला सत्य छिपाने की चीज नहीं। सवको वताने की चीज है। मेरी माँ ने ग्रपनी बुद्धि के ग्रनुसार, जितना सत्य वह जानती थीं, सव-का-सव वड़े मीठे ग्रीर सीधे ढंग से मुभे समभा दिया। में सत्य समभ गया ग्रीर कोई ऐसी बुराई मुभमें न ग्रा पायी, जो दूसरी तरह समभाने से ग्रा जाती।

सत्य के मामलें में किसीका खयाल रखने से या बहुमत की पर्वाह करने से, या सिद्धान्तों पर ग्रड़ जाने से काम नहीं चलता। सत्य हमारी बुद्धि के ग्रनुकूल जँचना चाहिए।

जव सत्य खोजने के लिए निकले, तो उसे हर जगह खोजना चाहिए। जहाँ वह मिले, वहीं चले जाना चाहिए। उसके लेने में सुख मानना चाहिए। ईमानदारों का यही रास्ता है। ईमानदारी इसी राह गयी है। बुद्धिमानी इसी राह चलकर कुछ पा सकी।

दुनिया में श्रादमी ने हर जगह सत्य की खोज की। इतिहास इन खोजियों की कथा से भरा पड़ा है। सत्य की खोज की खातिर श्रादमी ग्रन्थ पढ़ता है, उसकी हर वात में फँसकर नहीं रह जाता। सोने का खोजी जमीन खोदता-खोदता सोने के पास रुकेगा। वीच की चीजें छोड़ता चला जायगा। सत्य का खोजी इसी तरह श्रागे वढ़ता चला जायगा। पर रास्ते में श्राये श्रसत्य को सत्य सममकर श्रपनी खोज छोड़ न वैठेगा।

#### सत्य को सजाना : उसे लजाना

तरह-तरह के विज्ञानवेत्ता ग्रपनी-ग्रपनी खोज में लगे हैं। एक सत्य के वाद दूसरे सत्य पर जाते उन्हें जरा भिभक नहीं होती। वे सव तरफ से सत्य का संग्रह करते हैं ग्रीर जो मार्के की वात उनके हाथ लगती है, उसे दुनिया को दे डालते हैं। ऐसा करने से उनका साहस ग्रीर वढ़ जाता है।

'जो ग्रब इस दुनिया में नहीं हैं, वे क्या कह गये हैं ? जो ग्राज हैं, उनके क्या विश्वास हैं ?' सत्य के खोजी इन सबको ज्यों-का-त्यों नहीं मान लेते । उन सब बातों को ग्रपनी कसौटी पर कसते हैं । ईमानदारी से उन वातों के बारे में ग्रपने विचार सबके सामने रख देते हैं । जो सत्य के मित्र हैं, ध्यान से वह उनकी सुनते हैं । जो सत्य के शत्रु हैं, वे उनकी वात न खुद सुनते हैं, न ग्रोरों को सुनने देते हैं । जो ऐसा करते हैं, उन्हें स्वार्थी समफ्ता चाहिए । यह समफ्ता चाहिए कि वे बेहयाई की पगड़ी वाँषकर दुनिया को घोखे में रखना चाहते हैं ।

यह कहना कि मेरा सोना ऐसा है कि मैं इसे कभी श्राग में नहीं रखने दूँगा, यह वताता है कि सोना खरा नहीं। वैसे ही किसीका यह कहना कि मेरे सिद्धान्त ग्रीर मेरे ग्रन्थ इतने पिवत्र हैं ग्रीर ऐसे ग्रादमी के कहे हुए हैं, जो सव-कुछ जानते थे, इसलिए मैं किसीको उन सिद्धांतों के विषय में कुछ न कहने दूँगा, इस वात का सबूत है कि वे सिद्धान्त खोटे हैं। इसीसे परीक्षा के विना उन्हें खरे ग्रीर पिवत्र कहलवाना उन ग्रन्थों की इज्जत वढ़ाना नहीं, उनके वारे में संदेह पैदा करना है।

सोना सजाता है, सजता नहीं। सत्य सजाता है, सजता नहीं। सत्य को सजाना सत्य को लजाना है।

# सत्य की वफादारी

श्रपने सिवा श्रीर की वफादारी में दासता न रहे, ऐसा हो नहीं सकता। दासता के दाग से श्रात्मा को वचाने के लिए हर श्रादमी को श्रपने लिए वफादार होना पड़ेगा। जो श्रादमी श्रपने लिए वफादार यानी ईमानदार नहीं है, वह श्रपनी श्रात्मा यानी श्रपने भीतर जगमगाते प्रकाश के लिए कैसे ईमानदार हो सकता है ? उसी प्रकाश का दूसरा नाम है, सत्य। उसी सत्य को कुछ लोग 'परमेश्वर' कहकर पुकारते हैं।

## सत्य की वफादारी का अर्थ

ग्रव सत्य के लिए कौन ईमानदार होना पसंद न करेगा? जो सत्य के लिए ईमानदार है, वह दुनियाभर के धर्मों को, उनके सिद्धान्तों को ग्रपनी मस्तक की परीक्षा-शाला में जाँच किये वगैर न मानेगा। कोई ग्रसलियत उसके लिए ग्रसलियत ही नहीं, जब तक उसकी कसौटी पर ठीक न उतरे। जो सचाई उसे तर्क से ठीक नहीं जँचती, उसे चाहे वह ग्रसत्य न भी कहे, पर सत्य कहकर कभी मान नहीं सकता। तर्क की कसौटी पर कसे सत्य को ही मानना, उसीसे प्यार करना सत्य के प्रति वफादार रहना है। यही वफादारी बुद्धि की पवित्रता कहलाती है, ग्रादिमयत नाम पाती है, स्वतंत्रता का पद पाती है। ग्रसल में स्वाधीन मनुष्य का मानसिक ग्रुए। यही है।

किसी वालक ने श्राग को तव तक गरम नहीं माना, जव तक उसने श्रपनी उँगली उसमें नहीं जलायी। तव कोई वात सिर्फ इसलिए क्यों ठीक मान ली जाय कि उसे कोई धर्म-संस्था ठीक मानती है या पुरोहितों, मीलवियों श्रीर मुल्लाश्रों का दल उसे ठीक समभता है या राजाज्ञा भी उसे ठीक समभती है। देवताश्रों के नाम पर लिखी किताबें, इलहामी या श्रपौरुषेय माने जानेवाले ग्रंथ कव किसकी तसल्ली कर पाये हैं? किसीने उनमें श्रपनी तसल्ली मान ली, तो सिवा धक्के खाने के उसके हाथ श्राया भी क्या है?

एक दिन मैं अपनी माँ से पूछ वैठा कि 'अम्मा, गुरुजी की वात सची होती है या अम्मा की ?' अम्मा वोलीं, 'सच तो दोनों ही होती हैं, पर मानने और अमल करने के लिए सच वही है, जो तुम्हें भी सच जँचे और सच सावित हुई हो।' मैंने कहा, 'अम्मा, तुमने तो मुफ्ते चक्कर में डाल दिया!' मैं उन दिनों था १२ वरस का। इस सवाल की तह में थी एक वात!

स्कूल के रास्ते में एक पेड़ था। मास्टरजी ब्राह्मण थे, भूत-प्रेतों में विश्वास करते थे। एक दिन क्लास के सव लड़कों से बोले कि 'सड़क के किनारेवाले पीपल पर भूत रहता है, उसे ज्याते-जाते हाथ जोड़ लिया करो।' ग्रम्मा से जब मैंने यही वात पूछी, तो वह बोलीं, 'हुश, पेड़ों पर कहीं भूत रहते हैं?' वात ग्रायी-गयी हो गयी। ग्रम्मा की कहानियों के वल पर में डीठ वन गया ग्रीर यह समभ वैठा था कि देवी-देवता होते तो हैं, पर उनसे डरना नहीं चाहिए। डरने से वे उल्टे सताते हैं, न डरो

तो काबू में हो जाते हैं। इसी विश्वास पर मैं यह प्रएा ले वैठा कि रोज उस पीपल के पेड़ में दो ईंट मारूँगा। पर प्रगा इस वात का सबूत तो है ही कि डर मन में था ग्रीर उसे छिपाने का ईंट फेंककर पेड़ पर मारना ग्रच्छा वहाना रहा। एक दिन रात के नी वजे श्रकेले उस पेड़ के पास से गुजरना पड़ा। दवा हुआ डर अव ऊपर आ गया। कहानी के जरिये पायी सीख के वल पर दो ढेले उठाये। ग्राँखें वन्द कीं ग्रीर दीड़ते-दीड़ते निशाना जमाया। एक ढेला खाली गया, दूसरा पत्तों के भुरमुट पर लगा । लगते ही फड़-फड़ ग्रावाज ग्रायी, रोंगटे खड़े हो गये। तुरंत ही पता लग गया गिद्ध उड़ा, जो उस पर वैठा ग्राराम कर रहा था। स्कूल के पास वोडिंग पर जाकर दम लिया। वात मास्टरजी तक पहुँची । कुछ उल्टी-सीधी वातें सुनने को मिलीं। इसीलिए यह सवाल अम्मा से पूछा गया था। अव अम्मा के जवाव से तसल्ली क्या होती ? ग्राखिर सवाल साफ-साफ ग्रम्मा के सामने रखना पड़ा।

'ग्रम्मा, मास्टरजी कहते हैं कि स्कूल के पास के पेड़ पर भूत रहता है, तुम कहती हो वहाँ भूत नहीं रहता। ग्रव बताग्रो, कीन ठीक कहता है ?'

श्रम्मा वोलीं, 'मास्टरजी ने देखा होगा, यों वह ठीक कहते होंगे। मैंने कभी नहीं देखा, यों मैं ठीक कहती हूँ।'

'तो मैं क्या मानू" ?'—मैं वोला।
'क्या तुमने कभी पेड़ पर भूत देखा ?'—ग्रम्मा ने पूछा।
'मैंने तो कभी नहीं देखा!'—मैंने जवाव दिया।

'तव तुम यह मानो कि उस पर भूत नहीं रहता ग्रीर जिस दिन देख लो, उस दिन मेरे पास ग्राना । फिर मैं समभूँगी, कैसा भूत देखा ग्रीर मैं भी देखने चलूँगी।'--माँ ने समभा दिया।

'ग्रम्मा, मैं हूँ तो पक्का, पर थोड़ा-थोड़ा डर तो लगता ही है।'-मैंने ग्रपने मन की वात साफ-साफ कह डाली।

'भूत को जब देखा ही नहीं, तब डर कैसा ग्रीर जब देख भी लोगे, तो डर कैसा ? वह जब तुम्हें कुछ मारे-पीटे, तव डर की वात आयेगी।'--- अम्मा ने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए ग्रौर डर को भगाते हुए कहा।

'ग्रम्मा, तो फिर मैं मास्टरजी की वात न मानूँ ?'—मैं पूछ वैठा।

'हाँ, विल्कुल मत मानो, जब तुम ग्रपनी ग्राँखों कुछ न देख लो। ग्राँखों ही नहीं, समभ की ग्राँखों, ग्राँखें तो कुछ-न-कुछ देखती ही हैं।'--- श्रम्मा ने मेरी तसल्ली करते हुए कहा।

'ग्रम्मा, मास्टरजी हमें डराते क्यों हैं ?'—मैं वोला।

'मास्टरजी का डराना ठीक तो नहीं है, पर शायद वह तुम्हें डर दिखाकर यह चाहते होंगे कि तुम ग्रपनी शरारत से उसके पत्ते वेमतलव न तोड़ो। पीपल के नये पत्ते वालकों को वड़े प्यारे लगते हैं। जब तुम उनकी कोपलें तोड़ना चाहते हो, तो गरमी में वह लुड़-मुड़ रह जायगा श्रीर फिर तुम उसकी छाया भी न पा सकोगे।'-माँ ने समभाया।

'यह वात है, तो फिर मास्टरजी साफ-साफ क्यों नहीं कहते ?'

—में ऐंठकर वोल पड़ा।

'साफ-साफ कर्ह देते, तो तुम मुभने इतनी वात क्यों पूछते ?' —वह पुचकारकर वोली।

'ग्रम्मा, तो फिर हम किसीकी वात न मानें ?'—मैंने कहा। 'यह मैं कहाँ कहती हूँ, मैं तो यह कहती हूँ, जिन्हें तुम ग्रपनी १२ वरस की बुद्धि पर कस सकते हो, उन्हें उस पर कसकर मानो। मुभे ही देखो, मैं करवा-चौथ का व्रत तुम्हारे लालाजी की खातिर ही तो रहती हूँ; पर वे भी जब ग्राकर यह कह देते हैं कि चाँद निकल ग्राया, तो मैं उतावली वनकर खाना नहीं खा लेती। छत पर जाकर ग्रपनी ग्रांखों चाँद देखती हूँ, ग्रपनी मन की करती हूँ। जब इतनी छोटी-छोटी वात हम सोच-समभकर करते हैं, तब ग्रीर वातें भी सोच-समभकर क्यों न करें ?'—माँ बड़े प्यार से सब मुभको समभा गयीं।

'ग्रम्मा, यह करवा-चीथ की कहानी क्या है ?'—मैं पूछ वैठा। 'ग्ररे, वह तो तुम जानते हो, कई वार सुन चुके हो कि एक भाई ने मोह में ग्राकर श्रपनी वहन के लिए नकली चाँद वनाकर पेड़ की डालियों में से दिखा दिया था ग्रीर उसे चाँद निकलने से पहले खाना खिलवा दिया था। उसकी वजह से उस वहन का पति मर गया। पर कहानी की सीख इतनी है कि हर काम समक्ष की ग्राँख से देखकर करना चाहिए।'

ठीक यही है कि हर श्रादमी श्रपने-श्राप सोचे, श्रपनी श्रात्मा की श्रावाज सुने श्रीर उसीकी सुनकर खोज में लगे। यही है सत्य के प्रति वफादारी। श्रव श्रगर कोई उसे डरा-धमकाकर खोज करने से रोकता है, तो वह मनुष्य-समाज को नीचे गिराने का काम करता है।

#### पत्तपात से वर्चे

सत्य की वफादारी सवसे कीमती हीरा है। हमें कवीर के शब्दों में गठ-गठियाकर रखना चाहिए और किसीकी वातों में ग्राकर उसे फेंकना नहीं चाहिए। लगाव-दुराव से ग्रलग रहकर ही किसी नये सवाल पर विचार करना चाहिए, नहीं तो बुद्धि सत्य तक कभी पहुँच न सकेगी । वृद्धि वदनाम भले ही हो, पर उसे सत्य से कभी घोखा नहीं हुम्रा है। ग्रसत्य से जिस वुद्धि को जव भी धोखा होता है, वह उस समय राग-द्वेष से दवी होती है। धोखा पक्षपात से होता है, बुद्धि से नहीं । तर्क का भी यही मत है । वह उधर को ही चल देता है, जिधर तर्क से काम लेनेवाले की तवीयत होती है। पक्षपात में यह वड़ा ऐव है कि वह तर्क की तराजू को उस ग्रोर भुका देता है, जिस ग्रोर कोई वड़ा ग्रादमी, नामी ग्रन्थ, जोरदार रीति-रिवाज या कोई पुराना सिद्धान्त होता है। पक्षपात-रहित बुद्धि ऐसी किसी चीज की परवाह नहीं करती। वह सीधी सत्य तक पहुँचती है ग्रीर उसीकी वफादार रहती है।

सचाई ग्रौर वफादारी की राह में पक्षपात की तरह ग्रभिमान ग्रौर द्वेष कुछ कम नहीं हैं, उनसे वचना वहुत जरूरी है।

नये-पुराने, दोनों में से किसीका भी अगर खोजी को अभिमान है, तो सचाई हरगिज याद न आयेगी। हर मरे हुए आदमी को सिद्ध पुरुष समभ वैठना या हर जीवित आदमी को सूरख मान लेना सत्य के प्रति ना-वफादार होना है। सत्य की वेइज्जती इससे ज्यादा क्या हो सकती है कि किसी वात को सिर्फ इसलिए सत्य मान लेना कि वह एक राजा के मुंह से निकली है या इसलिए सत्य मान लेना कि वह किसी पुरानी या ऐसी किताव में है, जिसे सैंकड़ों-लाखों पूजते हैं। जो सत्य-युद्धि की कसोटी पर अपनेग्रापको नहीं धिसवाना चाहता ग्रीर सिर्फ व्रतों पर सत्य वना रहना
चाहता है कि वह किसी ग्रवतार या वड़े पैगम्बर, सन्त के मुँह से
निकला है, तो मूर्खों में ही उसकी गिनती होगी। सोने को घिसे
जाने, छेदे जाने, तपाये जाने ग्रीर पीटे जाने से कभी इनकार नहीं
होता, जिस तरह ग्रादमी को यह वताने में कि वह क्या पढ़ा-लिखा
है, क्या-क्या वात जानता है, किस गुरु से क्या पढ़ा है, वताने में
कोई एतराज नहीं होता। सत्य, जो ग्रादमी के मुँह से निकला होता
है, उसकी परीक्षा से इनकार क्यों? सत्य के प्रति वफादार ग्रादमी
हर वात को वृद्धि की कसौटी पर कसता है, ग्रपनी समक्ष की
ग्राँख से देखता है।

### वहुमत की कसौटी धोखे की

'वहुत ग्रादमी क्या कहते हैं', इस कसीटी पर कसा हुग्रा सत्य वड़े घोले की चीज है । वहुत ग्रादिमयों की वातें ही ग्रगर सत्य की कसीटी मानी जाती रही, तो ग्राज हम ग्रविद्या के गड्ढे में ऐसे ही पड़े होते, जैसे हमारे देश में ही हमारे भाई गोंड, भील, संथाल ग्रीर नागा लोग पड़े हैं।

हम पहले कह चुके हैं कि सत्य का पता श्रभी तक न किसीको लगा है श्रीर न यह उम्मीद है कि वह जल्दी ही किसीको लग जायगा। जो सत्य हम जानते हैं, उसे सत्य कहना ग्रपने-श्रापको घोले में डालना है। इस घोले से वचने के लिए हमने 'सत्य' श्रीर 'सच', दो शब्द श्रपनाये हैं। सत्य हम उसे कहते हैं, जिसका ग्रभी तक किसीको पता नहीं लगा है ग्रीर जिसकी खोज में हमसे पहले हमारे वाप-दादे श्रनगिनत निकल चुके हैं ग्रीर ग्राज भी ग्रनेक उसी सत्य की खोज में घर छोड़कर जंगलों की खाक छानते फिरते हैं। ग्रागे भी न जाने कितने ग्रुगों तक हमारी ग्रुगली सन्तानें इसी सत्य की खोज के लिए निकलेंगी ग्रीर न जाने क्या लेकर लौटेंगी। यही वह सत्य है, जिसके लिए हम ग्राज की सन्तान पर जोर दे रहे हैं ग्रीर यह कह रहे हैं कि वह उसकी खोज में निकले।

'सच' हमने उसे नाम दिया है, जिसे ग्राज हम ग्रपने ज्ञान की खोज से पा चुके हैं। हमने ग्राज जो कुछ जाना है, उसे हम 'सच' की कोटि में ही डालते हैं, 'सत्य' की कोटि में नहीं। ग्रसली सत्य हमारा ग्रादर्श है, रहा है ग्रीर ग्रागे भी वना रहेगा। उसे ग्रादर्श वनाये रखने में हमारा यही फायदा है कि हम ग्रविद्या के भवर से ग्रपनी बुद्धि की नाव को खे ले जाते ग्रीर इस तरह ग्रसत्य से वच जाते हैं। फिर जो कुछ हमारे हाथ लगता है, वह पूरा सत्य न भी हो, पर ग्रसत्य नहीं होता। वस, इस ग्रपूरे ग्रसत्य का नाम ही हमने 'सच' रख छोड़ा है। सच का मतलव है, सापेक्ष सत्य यानी कामचलाऊ सत्य। इसी कामचलाऊ सत्य का नाम हमने सुभीते के लिए 'सच' रख लिया है।

यह सुभीतेवाला सच भी ग्रगर वहुमत की कसीटी पर कसकर ग्रपनाया जाने लगे, तो फिर हम कहीं के न रह जायें। यह किसे नहीं मालूम कि ग्राज की जनता ईश्वर के वारे में न जाने क्या-क्या विचार वनाये वैठी है। वच्चे से लेकर बूढ़े तक, ग्रपढ़ से लेकर पढ़े-लिखे तक ग्रीर नासमभ से लेकर समभदार तक, सभी ग्रपने-ग्रपने ढंग से ग्रीर ग्रपने-ग्रपने मतलव के ईव्वर वना वैठे हैं। ऐसी जनता के बहुमत से क्या कोई भी वात तय की जा सकती है ? इसीलिए हमें सत्य की जाँच करने के लिए बहुमत की कसीटी को कहीं न ग्रपनाना चाहिए।

## धर्मग्रन्य भी सच की कसौटी नहीं

कोई किताव न इलहामी हो सकती है श्रीर न सर्वज्ञ की रची, क्योंकि जो-जो धर्म इस वात का दावा करते हैं कि उनके धर्म-ग्रन्थ ईश्वर या सर्वज्ञ के कहे हैं, वे जब भी किसीको ग्रपने धर्म में लाने की कोशिश करते हैं, तव उसके सामने यह दलील नहीं रखते कि वह उनके ग्रन्थों की सचाई सिर्फ इस वजह से स्वीकार कर ले कि वह सर्वज्ञ के कहे हैं या किसी ईश्वर के मुँह से निकले हैं। वह तो उस ग्रादमी से यही कहते हैं कि भाई, तुम हमारे ग्रन्थों की सचाई को ग्रपनी बुद्धि की कसीटी पर कसो ग्रीर ग्रगर वह ठीक उतरे, तो तुम उसे ग्रपना लो ग्रीर हमारे धर्म में शामिल होकर हमारे रीति-रिवाज मानो । वे दूसरे धर्म-वालों से श्रद्धा से नहीं, बुद्धि से ग्रपील करते हैं। सव धर्मवालों का यही हाल है, फिर चाहे वह हिन्दू-धर्म हो, वौद्ध-धर्म हो, जैन-धर्म हो, ईसाई-धर्म हो, इसलाम-धर्म हो या नये धर्मी में से कोई हो।

त्रगर धर्म पर ईमान लाने के लिए सर्वज्ञ, ईश्वर या पैगम्बर के शब्द काफी हुआ करते, तो फिर संसार में न नये-नये धर्म जन्म लेते और न शास्त्रार्थ जैसी चीज कहीं देखने को मिलती। शायद फिर विज्ञान की यह तरक्की भी हमारी आँखों के सामने न ग्रा पाती, जिसका ग्राज हमारी सारी इन्द्रियाँ ग्रपने-ग्रपने ढंग से उपयोग कर रही हैं। इसलिए ग्रपौरुषेय, इलहामी ग्रौर सर्वज्ञों के कहे हुए पुकारे जानेवाले ग्रन्थ ऐसे नहीं हो सकते, जिन्हें ग्रपनी बुद्धि की कसौटी पर कसे विना माना जा सके।

### पोथो की नहीं, हृदय-मस्तिष्क की चीज

थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाय कि कोई श्रादमी सर्वज्ञ हो सकता है श्रीर कि ईश्वर खुद या किसी ऋषि, संत, पीर-पैगम्वर के लिए वोल सकता है, तब भी यह नहीं कहा जा सकता कि वैसे ग्रन्थ भी ज्यों-के-त्यों मान लिये जायँ, क्योंकि भाषा श्रीर लिखने की कला इतनी श्रघूरी है कि वह कभी उस सत्य को ज्यों-का-त्यों प्रकट नहीं कर सकती, जो ग्रनिगनत पहलुश्रों-वाला है। यह ग्रपनी श्रांखों कौन नहीं देखता कि एक वेद में, एक ऋचा में श्रीर एक ही मन्त्र में दो पण्डित ग्रलग-ग्रलग अर्थ करते हैं श्रीर ग्रलग-ग्रलग भी ऐसे कि एक-दूसरे-से विलकुल मेल नहीं खाते। यही हाल 'वाइविल' के भजनों का है श्रीर 'कुरान' की श्रायतों का भी।

किसे नहीं मालूम कि भगवान् कृष्ण की कही गीता को लेकर गाँघीजी ने सत्याग्रह नाम की वेदी पर अनेकों की विल दे दी, उसी गीता को वगल में दवाकर हिंदुस्तान ही नहीं, सारी दुनिया में अहिंसा का डंका वजा दिया और उसी गीता को लेकर मनचले नौजवान ने गाँघीजी को गोली का निशाना वना दिया। क्या यह इस वात का सबूत नहीं कि भाषा और लिखने की कला इतनी निकम्मी श्रीर श्रघूरी है कि इनमें वैठकर कोई सर्वज्ञ सर्वज्ञ नहीं हो सकता श्रीर कोई ईश्वर ईश्वर नहीं रह सकता। सत्य ऐसी श्रनोखी चीज है कि वह मनुष्य के हृदय श्रीर मस्तक में ही ज्गह पा सकती है, पोथियों श्रीर वोलियों में नहीं। वोली श्रीर श्रक्षरों में श्रगर इतनी योग्यता होती कि वे सापेक्ष सत्य को भी यानी सच को भी ठीक-ठीक दरशा सकें, तो दुनिया के सारे वकील श्रीर वड़े-वड़े भाष्यकार व्यर्थ हो जाते। पर श्राज की कानून की एक धारा के दो पण्डित दो श्रथं लगाते हैं श्रीर इसी वृते पर हाईकोर्ट श्रीर सुप्रीमकोर्ट से वड़े-वड़े मुकदमे जीतते हैं, यह वात किसीसे छिपी नहीं है। कानून की एक ही धारा का एक जज कुछ श्रथं करता है, तो दूसरा कुछ।

यह सव कहकर हम इतना ही कहना चाहते हैं कि हम सत्यं की खोज में लगने पर किसी वात को सिर्फ इसलिए सत्य नहीं मान लेंगे कि उसका वर्णन किसी ऐसे ग्रन्थ में मिलता है, जिसे लोगों ने ईश्वर या सर्वज्ञ का कहा हुग्रा मान रखा है।

### स्वाधीन मनुष्य के लिए वृद्धि भी स्वाधीन रहे

फिर यह सवाल उठ सकता है कि जव हमें अपनी बुद्धि पर ही छोड़ा जा रहा है, तो क्या वह इतनी मँभी, पैनी और चमकदार है कि खूव गहरी जा सके और सत्य को ढूँढ़ ले?

वेशक यह सवाल ठीक है, पर ऐसा हम सोचें भी क्यों ? हमारी बुद्धि मँभी, पैनी और चमकदार न हो, तव भी तो हमें उसी पर उस सत्य को जगह देनी है, जिसे सर्वज्ञ या ईश्वर का कहा हुआ वतलाया जाता है। तब फिर हम उस बुद्धि

क्षेक़ है कि सत्य के वल पर ही सत्य की खोज क्यों ने क्रूरेंगरे क्यू हमारे हाथ न लगेगा, पर हमारी हुई सत्ये की भीज में कुछ दूर ग्रागे तो जरूर वढ़ गयी ग्रीग्री यह भी काँ की वात है!

हर ग्रादमी को जैसे ग्रन्थ-ग्रन्थ पूर्व हुए हैं ग्रीर उनसे वह पैदा होने के वाद जल्दी-से-जल्दी-कार्म लेने की कोशिश करता है-चलना श्रौर श्रागे वढ़ना सीख जाता है-श्रौर जिस तरह हर ग्रादमी को दो हाथ मिले हुए हैं ग्रीर उनसे वह जल्दी-से-जल्दी काम लेने लगता है, वैसे ही उसे बुद्धि भी मिली है, उससे वह जल्दी काम लेना क्यों न सीखे। जव वह ग्रीरों के पैरों के वल एक जगह से दूसरी जगह नहीं पहुँच सकता ग्रीर ग्रीरों के हाथों के वल पर ग्रपनी जरूरतें पूरी नहीं कर सकता, तव ग्रीरों की बुद्धि के वल पर सत्य को कैसे पा सकता ग्रीर ग्रसलियत कैसे जान सकता है ? जिस तरह उसे ग्रपना शारीरिक ग्रस्तित्व वनाये रखने के लिए हाथ-पाँव मिले हैं, वैसे ही उसे अपना मानसिक ग्रस्तित्व वनाये रखने के लिए वृद्धि मिली है। जैसे दूसरे के कन्धों पर चढ़कर और दूसरे की कमायी हुई रोजी खाकर श्रादमी शारीरिक ग्रस्तित्व खो वैठता है, वैसे ही दूसरे की सोची वात को ग्रपनाकर, दूसरे के खोजे सत्य पर विश्वास करके ग्रपनी वृद्धि के ग्रस्तित्व को भी खो वैठेगा। ग्रन्थ मील के पत्थर का काम करते हैं। ग्रन्थ ग्रादमी की बुद्धि की इस तरह की सिल्ली वन सकती है--ज्यादा-से-ज्यादा ग्रन्थ वुद्धि के लिए सत्य के महल तक पहुँचाने के वाहन हो सकते हैं, पर वे कभी इस योग्य नहीं हो

4411

सकते कि उन्हें ज्यों-का-त्यों ग्रपना लिया जाय ग्रीर बुद्धि को जंग लगकर सड़ने-गलने के लिए छोड़ दिया जाय।

पराधीन मनुष्य की पराधीन बुद्धि इस तरह की वेइज्जती वरदाक्त कर सकती है, पर स्वाधीन मनुष्य की स्वाधीन बुद्धि वैसी वेइज्जती वरदाक्त करने के लिए कभी तैयार नहीं हो सकती। जब कोई वालक ठोकरें खाकर ग्रीर गिरकर न चलना छोड़का है ग्रीर न माँ की गोदी में चढ़कर ग्रपने लक्ष्य तक पहुँचना चाहता है, तब कोई बुद्धिमान मनुष्य ठोकरें खाने से क्यों डरेगा? सत्य तक पहुँचने में ग्रन्थों का सहारा क्यों लेगा?

## सत्य की खोज से बुद्धि मँभती है

बुद्धि का स्वभाव ही यह है कि सत्य की खोज में चलने से
मँभती है, ग्रड़चनों से टकराकर पैनी होती है, ग्रुत्थियों को सुलभाकर चमकती है ग्रौर फिर उसे ग्रागे से ग्रौर ग्रागे वढ़ने में ग्रानंद
ग्राने लगता है। ठीक इसी तरह बुद्धि जव ग्रन्थों में घुसकर
उसमें लिखी वातों को ज्यों-की-त्यों मान लेती है, तो उसपर मैल
ग्रौर काई चढ़ने लगती है। जव वह ग्रड़चनों में पड़ने से भागती
है, तो ग्रपना पैनापन खो वैठती है ग्रौर मोथरी हो जाती है।
उलभी गुत्थियों से वचकर भागने से वह ग्रादमी की गाँठ की चमक
भी खो वैठती है। तव उसके हाथ ग्रन्थ में लिखी जो सचाई
भी ग्राती है, वह सचाई न रहकर ग्रसत्य का काम करने लगती
है; क्योंकि उसका ग्रागे वढ़ना रुक जाता है। वस, उस ग्रादमी का
वही हाल हो जाता है, जो मील के पत्थर को पकड़कर वैठ जाय
ग्रौर यह समभने लगे कि यही वह स्थान है, जहाँ मुभे पहुँचना है।

इसीलिए इस तरह की शंका हमें ग्रपने मन में खड़ी नहीं करनी चाहिए कि हमारी बुद्धि इस योग्य नहीं है कि वह सत्य को खोज सके। हमें सोचना यह चाहिए कि ग्रगर हमारी तरह ही हमारे वाप-दादे ग्रपने वाप-दादों की खोज से चिपक जाते, तो क्या हम कभी इतने भी ग्रागे वह सकते, जितने ग्रव हैं?

#### विज्ञान की तेज दौड़ का यही रहस्य

सत्य तक हम पहुँचे नहीं हैं। पहुँचे नहीं, इतना ही नहीं, हमें यह तक नहीं मालूम कि अभी हमें कितने पड़ाव पार करने हैं। ऐसी हालत में हमें यह शोभा नहीं देता कि किसी चीज से चिपक-कर बैठ जायँ। विज्ञान की एक-एक शाखा हमें पुकार-पुकारकर कह रही है—चले आओ, चले आओ, दिल्ली अभी दूर है!

यह 'सत्य' नहीं था कि जमीन थाली की तरह गोल है, उसके वीच सुमेरु पर्वत है ग्रीर एक से ज्यादा सूरज ग्रीर चन्द्रमा इस सुमेरु पर्वत का चक्कर काट रहे हैं। पर 'सच' जरूर था, नहीं तो उस समय के पंडित कैसे यह वता सकते कि कब ग्रह्गा पड़ेगा ग्रीर कब कोई ग्रह डूबेगा ?

इसके वाद यह भी 'सत्य' नहीं था कि हमारी यह छोटी-सी पृथ्वी केन्द्र है ग्रीर सारे ग्रह, यहाँ तक कि सूर्य भी उसीका चक्कर काट रहे हैं। पर यह 'सच' जरूर था, क्योंकि हम सत्य के रास्ते में कुछ ग्रागे वढ़े थे। यह वात तो थी ही कि उन दिनों के पंडित भी सूर्य-ग्रहण, चन्द्र-ग्रहण का ठीक-ठीक वक्त वता सकते थे ग्रीर ग्रहों के दूवने ग्रीर ग्रागे-पीछे होने के लिए ऐसी दलीलें पेश कर सकते थे, जो उन दिनों के लोगों को मनलगती मालूम होती थीं।

पूरा-पूरा 'सत्य' यह भी नहीं है कि सूरज वीच में है ग्रीर सारे ग्रह ग्रीर पृथ्वी उस सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं। पर यह भी 'सच' जरूर है, क्योंकि हम सत्य की राह से पहले ही बहुत ग्रागे वढ़ ग्राये हैं। यह यों भी सच है कि ग्राज के ज्योतिणी पहले के मुकावले वड़ी ग्रासानी से यह वात वता देते हैं कि कव सूर्य ग्रीर चन्द्र-ग्रहण होगा ग्रीर कव कौन-सा ग्रह ग्रागे-पीछे होगा। ज्योतिष का हिसाव लगाने में ग्राज जितनी ग्रासानी हो गयी है, उतनी पहले कभी न थी। ज्योतिष की ग्रुरू की जितना तो इतनी कम हो गयी है कि ग्राज के १०-१०, १२-१२ वरस के वच्चे भी वड़ी ग्रासानी से यह वात समभ लेते हैं, जो पहले वड़े-वड़े पंडितों को बड़ी मुश्कल मालूम होती थी।

ज्योतिष की तरह विज्ञान की हरएक शाखा का यही हाल है। हर शाखा तेजी से वढ़ती चली जा रही है श्रीर यह नहीं कहा जा सकता कि वह कव किस तरफ को मुड़ जायगी।

दर्शनशास्त्र, ग्राचार-शास्त्र, नीतिशास्त्र, कथाशास्त्र ग्रीर धर्मशास्त्र, सव-के-सव नये-नये रूप लेते रहे हैं, ले रहे हैं ग्रीर लेते रहेंगे। इन शास्त्रों ग्रीर विज्ञान के शास्त्रों में कोई खास ग्रंतर नहीं है। पर इन दोनों की उस चाल में वड़ा भारी ग्रंतर है, जिस चाल से ये दो तरह के शास्त्र सत्य की तरफ दौड़े चले जा रहे हैं। 'विज्ञान' नाम के शास्त्र दो-ढाई सौ वर्ष में इतने तेज दौड़ गये हैं, जितने 'धर्म' नाम से पुकारे जानेवाले शास्त्र कई हजार वर्षों में भी नहीं वढ़ पाये।

ं इस वढ़वारी में जो अन्तर है, उसका एक ही कारएा है,

ग्रीर वह यह कि विज्ञान के रास्ते में हर ग्रादमी सोचने के लिए पूरा स्वाधीन तो नहीं, पर इतना स्वाधीन जरूर है कि ग्रगर वह जरा भी कोशिश करे, तो ग्रागे की राह निकल ग्राती है। धर्म की राह में वह बहुत कम स्वाधीन है। हिम्मत करनेवाले हजारों में से कोई एक ही स्वाधीन इतना मजबूत सावित होता हैं कि वह ग्रपनी जान पर खेलकर ऐसी राह सुभा जाता है, जिससे दो-एक कदम ग्रागे वढ़ा जा सके। वस यही कारण है कि धर्म की राह में हम लोग इतना ग्रागे नहीं बढ़ पाये, जितना विज्ञान के पथ पर।

इस वेढंगी तरक्की का यह नतीजा हो सकता है कि विज्ञान हमें ऐसी जगह ले जा पटके, जहाँ पहुँचकर हम अपनी उस सव तरक्की से हाथ धो वैठें, जो हम अब तक कर पाये हैं। इसलिए यह विलकुल जरूरी है कि हम सत्य के लिए इतने वफादार वनें, जितने दुनियादारी के लिए वफादार हैं।

0 0

# सत्य की वरदाश्त

सत्य से वढ़कर मीठी चीज कोई नहीं। मीठी चीज खाते वच्चे नहीं घवराते। सव धर्म सत्य को भला कहते हैं। सत्य न कभी वदनाम हुआ, न है, न होगा। सत्य को सभी चाहते हैं। सत्य में ऐसे अनेक गुरा हैं कि उसकी तरफ सवको खिचना पड़ता है। उसे वरदाश्त करने और न सह सकने की जितनी कथायें सुनने को मिलीं, वे इतनी भयानक हैं कि उन पर विश्वास करना मुश्किल है।

समक्त में नहीं ग्राता कि वे कैसे लोग होंगे, जिन्होंने 'सुकरात' जैसे सच्चे ग्रादमी को जहर देने की वात सोची ग्रीर फिर जहर पिला दिया। वे लोग भी कैसे होंगे, जिन्होंने उस 'गेलेलियो' को दुःख देने की वात सोची, जिसकी सचाई ग्राज ज्योतिषियों का सहारा है। वे लोग सच न सुन सकते, तो न सही, पर सच वोलनेवालों की जान के गाहक क्यों वन गये? सत्य जैसी प्यारी चीज की वरदाश्त कैसे खो बैठे?

एक ग्राप-वीती सुनिये ! मेरी माँ कई काम जानती थीं। नाड़ी देखना उन्हें ग्रच्छा ग्राता था। मोच ठीक करना, उतरी हड्डी चढ़ाना वे खासा जानती थीं। चरखे का तकुवा सीधा करने का काम उन्हें इतना श्रच्छा ग्राता था कि दिन के तीन घण्टे में दो-एक ग्रादमी तकुवा सीधा कराने ग्रा ही जाते थे। यह सव काम वह सेवा समभकर करती थीं, इसलिए कभी-कभी रात-विरात में भी उठना पड़ता था। छोटी-मोटी दवाएँ भी तैयार कर लेती थीं ग्रौर वाँटने का काम खुद ही करती थीं। इससे ग्रन्दाजा लगा सकते हैं कि वे मुहल्लेवालों की कितनी प्यारी रही होंगी ग्रौर लोग उनका कितना ग्रादर करते होंगे!

जाड़ों के दिन थे, वे श्रांगन में वैठी मेरे छोटे भाई को तेल लगा रही थीं। इतने में मुहल्ले का एक समभदार तीस- पैंतीस वरस का अघेड़ आया और वड़ी बुरी तरह माँ को फटकारने लगा।

'कुछ आता-जाता है नहीं, वन वैठी हैं हकीमनी।'

ग्रभी वह श्रागे कुछ न वोल पाया था कि मैं वुरी तरह विगड़ खड़ा हुग्रा। बोल पड़ा, 'चले जाग्रो यहाँ से।'

मैं आगे न जाने क्या-क्या कहनेवाला था कि माँ ने मुभे फौरन डाँटकर कहा, 'सच सुनना सीखना चाहिए।'

माँ की वात खतम होते ही ग्राये हुए ग्रादमी का गुस्सा जरा ढील पड़ा, पर ग्रावाज उतनी ही जोर की थी, ग्रीर शब्द वैसे ही गुस्ताखी भरे थे। पहले जैसे वह वकने लगा।

'हकीमनीजी! श्रापको कुछ पता है, श्राप मेरे बच्चे को क्या दवा दे श्रायी हैं ? उसके दस्त ही नहीं रुकते, श्रगर उसे कुछ ऐसा-वैसा हो गया, तो मैं जब तुम पर दावा कर दूँगा, तब सब श्रकल ठीक हो जायगी। चलो, श्रव उसे देखों श्रीर सँभालो।'

माँ वोलीं, 'मैं ग्रभी हाथ धोकर, कपड़े बदलकर ग्राती हूँ। ग्राप चिलये।'

उस ग्रादमी के चले जाने के बाद माँ मुक्तसे बोलीं, 'तुम जब सच बात सुन भी नहीं सकते, तब सच बोल कैसे सकोगे? वेटा, तच बोलना तुम्हारे कुछ काम नहीं ग्रायेगा, ग्रगर तुम सच सुनना नहीं सीखोगे। सच कभी-कभी बहुत कड़्वा लगता है। वह कड़्वा होता तो नहीं, पर बैसा ही कड़वा लगता है, जैसे उस रोज तुम्हें बुखार में वर्षी कड़वी लगी ग्रीर तुमने थूक दी थी।'

'श्रम्मा, वह श्रादमी सचँ कहाँ वोलता था? तुम क्या उसके वच्चे को बुरी दवा दे सकती थीं?'

'यह सच नहीं है तो क्या है ? उसके बच्चे को दस्त हो रहे हैं, यह देखकर उसे घवराहट हो रही है, श्रीर उस घवराहट से उसका मन विगड़ बैठा है। वही मन मुक्त पर विगड़ रहा है। श्रगर वह तुम्हारी समक्त में सच नहीं बोल रहा था, भूठ बोल रहा था, तो सच्चे श्रादमी को भूठ सुनने की भी बरदाश्त होनी चाहिए। हो सकता है, गुरू में जो भूठ है, वह पूरा होकर सच निकले। देखो, श्राज यही हुश्रा या नहीं ? उसकी बात सच निकली या नहीं ?'

'ग्रम्मा, तो क्या तुम्हें कोई गाली देता रहे ग्रौर हम सुनते रहें ? हमसे ऐसा नहीं होगा।'

'मैं यह नहीं कह रही हूँ कि तुम मुभ पर क्या, किसी पर भी ग्रन्याय होते देखो ग्रौर टुकुर-टुकुर देखते रहो। पर ग्रन्याय की वात ग्रीर दु:ख की वात में तुम भेद नहीं कर सकोगे, ग्रगर तुममें सुनने की वरदाश्त न हो। मैं एकदम जल्दी वोल उठने को रोक रही हूँ, सोव-सममकर वोल उठने को कहाँ रोकती हूँ?'

'ग्रम्मा, तुम्हारी बात समभ में तो नहीं ग्रायी, पर ग्रम्मा हो, इसलिए मान लेता हूँ।'

यह उस वक्त की वात है, जव मैं ग्यारह-वारह वरस का था।

ग्रम्मा जव उस वच्चे को देखने चलीं, मैं उनके साथ हो लिया। जव हम दोनों उस ग्रादमी के घर पहुँचे, तो एक वैद्यजी उस वच्चे की नाड़ी देख रहे थे। वह माँ को खूव जानते थे ग्रीर उन्हें 'भाभी' कहकर वोलते थे।

वैद्यजी श्रम्मा को देखकर नाड़ी छोड़ खड़े हो गये, श्रौर वोले, 'भाभीजी, श्राप श्रच्छे वक्त से श्रा गयीं, नाड़ी देखिये श्रौर वताइये क्या दवा दूँ?'

'म्रव म्राप देख रहे हैं, देखिये। मैं म्रन्दर वैठती हूँ, चाहे जव देख लूँगी।'

'भाभीजी, श्राप रहते मैं यह ढीठता नहीं कर सकता, इस शहर में कौन ऐसा हकीम-वैद्य है, जो यह नहीं जानता कि श्राप सबसे श्रच्छा नाड़ी देखना जानती हैं। यह ज्ञान तो मैंने श्रापसे ही सीखा है।

'मुभसे ही सीखा सही, पर चेले तो गुरु से वड़े हो जाते हैं ?' 'हो जाते हैं सही, पर मैं ग्रभी नहीं हुग्रा।'

'देखो देखो, तुम्हीं देखों', यह कहती हुई ग्रम्मा ग्रन्दर चल-कर वैठ गयीं ग्रीर मैं उनके पास बैठ गया। में नहीं जानता कि वैद्यजी श्रीर श्रम्मा की इन वातों का उस श्रादमी पर क्या श्रसर हुश्रा, पर थोड़ी देर में वैद्य ने वच्चे की नाड़ी देखकर जीभ श्रीर पेट की जाँच करने के वाद उस श्रादमी से यह कहा कि श्रव डरने की कोई वात नहीं, प्रकृति ने खुद ही इसका पेट साफ कर दिया, दो चार दस्त होकर श्रपनेश्राप एक जायँगे श्रीर वच्चे को नींद श्रा जायगी। दवा देने की जरूरत नहीं। कल सुवह तक वालक श्रपने-श्राप खेलने लगेगा। फिर भाभीजी यहाँ मौजूद हैं, श्रगर वह दवा की वात कहें, तो मेरे पास चले श्राना, मैं दवा दे टूँगा। वैद्य यह कहकर चल दिया, उस श्रादमी ने चुपके से दो रुपये वैद्य के हाथ में थमा दिये श्रीर वह उन्होंने ले लिये।

माँ उठीं, वच्चे को देखा, उसके माँ-वाप को तसल्ली दी ग्रीर घर के लिए चल दीं। चलते वक्त पहले वच्चे की माँ ने मेरी माँ के पाँव लागे ग्रीर फिर वच्चे के वाप ने पाँव छूये ग्रीर वोला, 'माफ करना, हम घवरा गये थे, सो कुछ-का-कुछ कह गये।'

माँ बोलीं, 'ऐसे मौके पर ऐसा हो ही जाता है, मैं बुरा थोड़े मानती हूँ। तुम भी मेरे बच्चे का बुरा न मानना।' मुभसे बोलीं, 'इन्हें हाथ जोड़कर 'जोहार' करो, ग्रब ऐसा न करना।'

#### वरदाश्त एक वरदान

शाम को उन्होंने यह ग्रच्छी तरह समफा दिया कि सच को सुनने की वरदाश्त जरूरी है ही, भूठ सुनने ग्रीर ग्रन्याय देखने की वरदाश्त भी वहुत जरूरी है। उसके विना कोई ग्रादमी उन्नति नहीं कर सकता।

उस उमर में वह वात पूरी-पूरी तो समक्त में नहीं श्रायी, पर वीजरूप से हृदय में जम गयी, जड़ पकड़ गयी। वड़े होने पर उसमें से ग्रंकुर निकले। ग्रव तो वह पेड़ वन गयी है, तभी तो श्राज याद है।

अगर आदमी के लिए सच अच्छी चीज है और ईमानदारी से विचार करना और दिल खोलकर लोगों से वरताव करना भली वात है, तो दूसरों के लिए भी यह भली वात है, कि वे उसके साथ भला वरताव करें, ईमानदारी से रहें और सच्चे रहें। जैसे ही सुनने की वरदाश्त वढ़ेगी, वैसे ही सत्य कहने की लोगों को आदत होगी। फिर भगड़े अपने-आप कम हो जायेंगे। आज आदमी में जो यह हिम्मत नहीं रह गयी कि वह ईमानदारी से अपने विचार लोगों के सामने रख सकें, इसकी वजह यही है कि जनता से वरदाश्त की ताकत चली गयी, इसलिए कोई इक्का-दुक्का ही सर में कफन वाँधकर सच कहने के लिए तैयार होता है। नतीजा यह हुआ कि जनता का जितना भला होना चाहिए था, उतना न हो सका।

जिस तरह मेरी माँ ने मुक्तमें वरदाश्त के वीज वो दिये, वैसे ही ग्रगर ग्राज के माँ-वाप ग्रपने वच्चों का खयाल रखें ग्रौर उन्हें यरदाश्त करने दें, तो दस-वीस वरसों में ही दुनिया कहीं-की-कहीं पहुँच जाय।

### भूठ वोलने से सच दवाना बुरा

भूठ वोलने से दुनिया का बुरा होता है सही, पर इतना बुरा नहीं होता, जितना सत्य विचारों को दवा देने से ; क्योंकि सत्य के दव जाने से ईमानदारी उठ जाती है, ईमानदारी न रहने से भूठ ग्रपनी जड़ जमा लेगा। सत्य विचारों को दवाने-वाला समाज से ग्रपने लिए तो ग्राजादी चाहता है, पर दूसरों को ग्राजादी देना नहीं चाहता। यह उसका स्वार्थ नहीं तो क्या है? स्वार्थी में दया, शरम नाम को नहीं रह जाती। ऐसे ग्रादमी से समाज का जो नुकसान हो, वह थोड़ा। स्वार्थी ग्रादमी वरदाश्त की ताकत खो वैठता है ग्रीर उसकी वजह से समाज के मामूली ग्रादिमयों में वरदाश्त कम होने लगती है।

सत्य-विचारक को ग्रपने विचार ईमानदारी से प्रकट करने का हक है, पर उन विचारों को किसी पर ठूँसने का हक नहीं। यह ऐसी ही जवरदस्ती है, जैसी उस ग्रादमी की, जो सत्य-विचारों को दवाने का काम करता है।

कभी-कभी समाज में भूठ इतना ग्रादर पा जाता है कि उसकी पूजा होने लगती है। पूजा के कार्ण समाज को भूठ-विचार से ममता हो जाती है। फिर समाज उसे इतना पितृत्र मानने लगता है कि किसी ग्रादमी को वह उस विचार के वारे में वोलने देना नहीं चाहता। यह ऐसी बुरी वात है, जिससे समाज की बढ़वारी एकदम रुक जाती है। यह तो ऐसी वात हुई कि कोई पीतल को सोना कहे ग्रीर दूसरा कोई मोल ले ले, तो कसोटी पर भी न कसने दे। जब उसे इतना भी सहन नहीं होता, तो यह कैसे कहा जा सकता है कि उसे पितृत्रता से प्रेम है। सत्य पितृत्र है ग्रीर सत्य विचार वह सुनना नहीं चाहता। सत्य-किया वह करने देना नहीं चाहता। फिर यह कैसे कहा जाय कि वह पितृत्रता का प्रेमी है ? फिर यह भी कैसे मान लिया जाय कि

उसके पास जो विचार है, वह पिवत्र है। जिस विचार को कोई ग्रादमी यह भी न जान सके कि वह सत्य है या नहीं, उसे कोई पिवत्र कैसे मान ले ?

कुछ लोगों का कहना है कि स्वतंत्र विचार से धर्म का ग्रपमान होता है। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि स्वतंत्र विचारों को कितनी ही ईमानदारी से क्यों न प्रकट किया जाय, उसमें खोट रहती ही है, क्योंकि वे विचार ग्रादमी के होते हैं ग्रीर इनका धर्म ईश्वर के मुँह से निकला हुग्रा है। इसलिए स्वतंत्र विचार करनेवाला नास्तिक ही हो सकता है। ऐसा सोचनेवालों की वजह से जब-जब किसीने सत्य का दीपक जलाना चाहा, तव-तव वह नावरदाश्त की हवा से युक्ता दिया गया।

सत्य का दूसरा पहलू वोलने की स्वतंत्रता है। क्योंिक वोलकर ही वह दूसरों तक पहुँचता है ग्रौर तभी लोग उसे कसीटी पर कसकर ग्रौर उसकी चमक देखकर ग्रपनाते हैं। सत्य हमेशा यही चाहता है कि लोग उसे पहले परखें, पीछे ग्रपनायें। सत्य की दोस्ती स्वतंत्रता, ईमानदारी, हिम्मत, परख से हैं, उसे खुली हवा पसन्द हैं, इसलिए लोगों के मन पर यह जल्दी चढ़ जाता है। पर कुछ लोग जवरदस्ती उसे लोगों के मन तक नहीं पहुँचने देते। जहाँ वह एक वार पहुँचा कि विचार एकदम चारों-खाने चित गिर पड़ते हैं। वेमतलब के उत्पात खतम हो जाते हैं ग्रौर ग्रादिमयों की बुद्धि एकदम चमक उठती है।

सत्य अपने ढंग का अलग देवता है। यह अपनी तारीफ के

गीत नहीं सुनना चाहता, यह अपनी सूरत वनवाकर मंदिर में वैठना नहीं चाहता कि कोई उसके सामने लेटकर दंडवत करे और मरे साँप का नाटक खेले। यह इन सव वातों को ढोंग मानता है। वह समभता है कि जो भी ऐसा करता है, वह सत्य का निरादर करता है, सत्य के खिलाफ बगावत या विद्रोह करता है। इसका कहना है कि आदमी के अंदर जो देवता वैठा है, वह इतना वड़ा और ऊँचा है कि सव तरह के पत्थरों को उसके आसन वनने में अभिमान होता है। फिर वे पत्थर कितने भी क्यों न हों और किसी भी शकल के क्यों न रहें।

सत्य श्रादमी को देवता वनाना चाहता है, देवता जैसी स्वतंत्रता देना चाहता है। सत्य के सामने सृष्टि में ग्रकेला ग्रादमी ही ऐसा प्राणी है, जो देवता वन सकता है। वन्दर हाथी, शेर, सुग्रर, गाय जैसे पशु ; चील, कौवा, हंस, नीलकंठ, गरुड़ जैसे पक्षी ; मगर, व्हेल, कछुवा, मछली जैसे पानी के प्राग्गी ; वेल, पीपल, पाकर, गूलर, नीम, श्राम जैसे पेड़ श्रीर हीरा, सोना, चाँदी, पीतल, पत्थर जैसी जमीन से मिलनेवाली चीजें, सव इस योग्य हैं कि ग्रादमी नामी देवता के ग्रागे नाचें, उसकी सवारी वनें, उसकी हर तरह सेवा करें ; तरह-तरह की ग्रावाजें निकाल-कर उसका मन प्रसन्न करें, उसके वनाये चिड़िया-घर में रहकर उसका मन वहलायें ग्रीर जिनसे हो सके, वह उसका ग्रङ्ग वन-कर ग्रपना धन्य भाग समभें, उसे फल दें, उसके ग्रासन वनें उसके ग्राराम की चीज वनें, उसके ईंघन के काम ग्रायें, उसके जेवर वनें, उसके ग्रीजारों में खपें, उसके मकान वनें ग्रीर हो

सके, तो उस ग्रादमी नामी देवता के चरणों की भूल वनकर ग्रपना जन्म सुधारें।

सत्य को यह पसन्द नहीं कि श्रादमी नामी देवता की सवारियाँ ग्रीर श्रासन खुद देवता वनकर उसे धोखा दें ग्रीर उसका सिर भुकाये।

ग्रादमी की भलाई इसीमें है कि वह किसीकी न सुनकर सत्य की सुने, क्योंकि सत्य उसे सही सुना देगा, ग्रीर ठीक-ठीक सुना देगा।

ग्रादमी की भलाई इसीमें है कि वह किसीसे न डरकर सत्य को निकाले, क्योंकि सत्य उसके लिए सव कुछ निकालेगा।

ग्रादमी की भलाई इसीमें है कि वह 'क्यों, किसलिए, कैसे, कहाँ' कहना सीखे। क्योंकि यही वह जगह है, जहाँ सत्य छिपा रहता है।

श्रादमी की भलाई इसीमें है कि वह श्रपने मन को ईमानदार श्रीर उदार वनाये, क्योंकि सत्य को ईमानदारी श्रीर उदारता का श्रासन पसन्द है। वह श्रीर श्रासनों पर नहीं वैठता।

श्रादमी की भलाई इसीमें है कि वह स्वाधीन होकर ईमान-दारी के साथ ग्रपने विचारों को जाहिर करना सीखे, क्योंकि सत्य वन्द कोठरी में जरा देर में घुटकर मर जाता है। उसे श्रादमी का फूटा सिर भाता है, पर वह सिर उसे पसन्द नहीं, जिसमें ग्रच्छे-ग्रच्छे विचार दम घुट-घुटकर जान तोड़ रहे हों।

अव क्या आदमी अपना मला नहीं चाहता ? अगर हाँ, तो सत्य की इस अच्छी सलाह से वढ़कर और कौन सलाह हो सकती है ?

### याँखवाली श्रद्धा श्रीर श्रन्धी श्रद्धा

श्रादमी को मस्तक इरालिए मिला है कि उराका विकास हो। वह ग्राजाद होकर सोचे ग्रीर ग्रपने ग्रीर जग के भले की हर वात सीखे। श्रादमी को वोली इसलिए मिली है कि वह श्रादमी के विचारों को श्रपने पंख पर विठाकर सारी दुनिया की सैर कराये । श्रादमी को प्रतीति, श्रद्धा इसलिए मिली है कि उसे श्रगर ग्रपनी खोज में त्रागे की गली न मिलती हो, तो जिस तरफ उस खोज का वहाव हो, उस तरफ एक गली मान ले श्रीर श्रागे वढ़ने की कोशिश करे। ग्रादमी को श्रद्धा इसलिए नहीं मिली कि जिघर कोई उसे गली बता दे, उधर दौड़ने लगे। श्रद्धा में श्रपनी दोनों ग्राँखें हैं, पर श्राम तीर से वह उन्हें तभी खोलती है, जब कोई खोजी ग्रागे की राह नहीं पाता। श्रद्धा उस वक्त ग्रपनी र्श्रांखें विलकुल वन्द रखती है, जब कोई किसी दूसरे की बतायी गली में चलने को तैयार हो जाता है। जो वालक श्रागे नदी में जाने से डरता है कि श्रागे पानी डुवान है श्रीर वह डूव जायगा, तव ग्रगर वह उस भाई की वात पर श्रद्धा करके, उसके कहने पर कुछ ग्रागे बढ़े, तो बालक की श्रद्धा ग्रांखें खोल देगी ग्रीर ग्रागे वढ़ाने में उसकी खुद भी मदद करेगी। लेकिन ग्रगर किनारे पर बैठा तैरना न जाननेवाला, पानी में पाँव रखते डरने-वाला, महान् ज्ञानी संत उसी वच्चे से यह कह दे कि वेटा, डरने की कोई वात नहीं, ग्रगर राम ने तुम्हारे भाग्य में इस समय डूवना नहीं लिख रखा, तो तुम न डूवोगे। तो यह सुनकर वालक दोनों ग्राँखें मूँद लेगा, साहस फूल उठेगा, अन्धी श्रद्धा सिकुड़कर

दुवली हो जायगी ग्रीर एक-न-एक दिन वह बालक ग्रनुचित साहस के नशे में श्रपनी जान दे वैठेगा। सत्य श्रद्धा को ग्रन्धी नहीं देख सकता, वह साहस के घोड़े को वगटुट नहीं दौड़ने देता, वह साहस के जहाज को वेमल्लाह नहीं हिलने देता, सत्य श्रद्धा की ग्रांखें खोलकर साहस के घोड़े की वाग श्रद्धा के हाथ थमा देता है।

ग्रन्थश्रद्धा ग्रौर ग्रांखवाली श्रद्धा में इतना ही ग्रन्तर है— सत्य श्रद्धा की ग्रांखें खोलकर ग्रादमी के रास्ते में ग्रायी वाधाग्रों को जीतना सिखा देता है। ग्रन्धी श्रद्धा ग्रगर मूले-भटके एकग्राध वार किसी रोग को ग्रन्छा कर लेती है, तो ग्रांख-खुली श्रद्धा ग्रनेक रोगों को बहुत कम भूलकर ग्रन्छा कर सकती है। ग्रन्थ-श्रद्धा दुःख पाकर, ग्रौरों को सताकर, या दुःख देकर ग्रगर कभी एक रोग ठीक कर लेगी, तो ग्रांख-खुली श्रद्धा ग्रनेक रोगों को विलकुल दुःख न होने देकर ग्रन्छा कर लेगी। ग्रांख-खुली श्रद्धा जीवन को मजेदार बना देगी, हरा-भरा कर देगी, ग्रौर उमर बढ़ेगी, यह नफे में।

कहाँ ग्रांखवाली श्रद्धा ग्रीर कहाँ ग्रन्थश्रद्धा !

0 0

## : ६ :

# सत्य और गुलामी

श्रादमी जय पैदा हुश्रा, तब सच के सिवा कुछ न जानता था। जब उसमें कल्पना-शिवत पैदा हुई, तो उसकी मदद से उसने जो सोचा, उसमें चाहे सत्य की भलक सबसे कम रही हो, सचाई सी फी सदी थी। श्रादमी की बुद्धि ने जब सरकना सीखा, तो उसने सत्य की खोज शुरू की। चारों तरफ नजर डालकर कुछ नतीजे निकाले। उन नतीजों से श्रनुमान की सीढ़ी तैयार की। श्रनुमान की सीढ़ियों के सहारे उसने सत्य के महल पर चढ़ने की कोशिश की। यह कोशिश श्राज तक जारी है।

सत्य की खोज से बिह्या बात श्रादमी के लिए श्रीर क्या हो सकती है, पर ऐसी बिह्या बात बुराई में बदल गयी, जब श्रादमी में मामूल से ज्यादा स्वार्थ पैदा हो गया। सत्य की खोज के साथ-साथ स्वार्थ बढ़ता रहा, बढ़ रहा है श्रीर बढ़ता रहेगा, श्रगर उसे घटाने की कोशिश न की जाय।

### जीवन के बढ़ते काँटे

इसमें शक नहीं कि ग्रादमी में क्रोघ, मान, माया, लोभ हमेशा से हैं। यही हाल हास्य, श्ररित, रित, शोक, भय, नफरत, कामवासना, डाह ग्रादि का है। गुलाव के पीदे में कांटे की तरह ग्रादमी में कोघ, मान ग्रादि रहने जरूरी हैं। लेकिन ग्रगर गुलाव के पौदे के काँटे इतनी जगह घेर लें कि न पत्तों को जगह रहे, न फूल को, तो वह पौदा या तो उखाड़ फेंका जायगा या उसके वढ़े काँटे मुनासिव हद तक पहुँचा दिये जायँगे। ग्रादमी के कोघ, मान, माया, लोभ इतने वढ़ गये हैं कि उन्होंने ग्रादमी की सारी समाजी ग्रीर राजकाजी दुनिया को घेर लिया। जो थोड़ी-वहुत घामिक दुनिया बची थी, उस पर भी वह छाये जा रहे हैं। ग्राज ग्रादमी इस काविल नहीं रह गया कि समाजरूप से इतने हेलमेल के साथ रह सके, जितना पहले रहता था। ग्रव या तो ग्रादमी दुनिया के पर्दे से नष्ट हो जायगा या उसे ग्रपने कोघ-मान के काँटों को ग्रपनी पैदाइशी हद तक लाना होगा।

सचाई इससे ज्यादा क्या हो सकती है कि हम इन क्रोध-मान-माया-लोभ को पहचान लें ग्रीर समभ ले कि ये हमारे साथ रहकर किस हद तक वढ़ सकते हैं। लोग ग्रपना वक्त परमेश्वर की खोज में देने के लिए तो तैयार हो जाते हैं, लेकिन ग्रपने इन काँटों की वढ़वारी की तरफ से वेफिकर रहते हैं। ग्रगर उन्होंने परमेश्वर की वजाय इस तरफ ध्यान दिया होता, तो हो सकता है, परमेश्वर हाथ लग गया होता। सत्य या परमेश्वर कभी हाथ न लगेगा, ग्रगर इन काँटों को इसी तरह वढ़ने दिया जाय, जिस तरह कि वे वढ़ रहे हैं।

### 'मान' से सर्वनाश

हमारा मान यानी घमण्ड यह चाहता है कि दुनिया हमें वड़ा माने, पर हमारे मान को यह क्यों नहीं दीख पाता कि जव सारे ग्रादमी हम जैसे हैं, तो उनके ग्रन्दर भी मान रहता होगा श्रीर वे भी चाहते होंगे कि सारी दुनिया उन्हें वड़ा समभे । श्रव श्रगर दो मान टकरा गये, तो मान-भंग के सिवा क्या रह जायगा ? मान की टक्करें जितनी श्राज हैं, उतनी उस समय न श्री, जब मानव-समाज बच्चा था । क्यों ?

सोचने पर हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि उन दिनों ग्रादमी के मान की सेवा करने के लिए पशु-पक्षी इतने ज्यादा थे कि उसे ग्रादमी की जरूरत न थी। उन दिनों ग्रादमी के मान को ग्राये दिन ऐसे-ऐसे दैत्य, दानवों ग्रीर जंगली पशुग्रों से टक्कर लेनी पड़ती थी, जो उससे मुठभेड़ करके यह सावित करते रहते थे कि ग्रादमी उनके खाने की चीज है। ऐसी हालत में ग्रादमी के पास सिवा इसके क्या चारा था कि वह ग्रपने भाइयों के साथ प्रेम करता ग्रीर हिल-मिलकर रहता। यह दूसरी वात है कि उन दिनों ग्रादमियों के ग्रावम-ग्रावम भुण्ड थे ग्रीर उनकी ग्रापस में टक्कर हो जाया करती थी, पर जल्दी ही वे दोनों भुण्ड मिल-मिला-कर एक हो जाते ग्रीर दोनों ग्रपने मान की पूजा ग्रासपास के दैत्यों, दानवों ग्रीर जंगली पशुग्रों से लेने लगते थे।

ग्राज ग्रादमी का यह हाल है कि उसके घर में न गाय-भेंस मिलेगी, न ग्रीर कोई जानवर। कुछ दिनों पहले फीज में घोड़े रखने का रिवाज था। ग्रादमी उन पर चढ़कर ग्रपने घमंड को कुछ खिला-पिला लेता था। ग्रव वह घोड़े खतम हो गये, उनकी जगह ले ली लोहे के घोड़ों ने। इन लोहे के घोड़ों पर चढ़कर मान को साँस लेने के लिए हवा मिल जाती है, पीने को पानी मिल जाता है, पर खुराक विलकुल नहीं मिलती। जो हवा-पानी मिलता है, वह रोज-रोज कहाँ ? शुरू के दो-चार-दस दिन। ग्राज का सिपाही मोटर-साइकिल पर वैठकर दो-चार दिन यह समभता है कि उसने किसी चीज को कावू में कर रखा है, उसके वाद उसे मालूम हो जाता है कि यह कोरी मशीन है! इस पर क्या काबू पाना, ग्रीर क्या न पाना ! घोड़ा सँभालने में यह वात न थी। उसे कदम-कदम पर घोड़ेरूपी एक ऐसी मशीन को सँभालना पड़ता था, जो उसीकी तरह नित-नये तरीकों से उसे अपनी पीठ से फेंककर उससे अपने मान की पूजा कराने की कोशिश में लगी रहती थी। अब सिपाही के मान के लिए न दैत्य रह गये, न जंगली जानवर, न पालतू पशु । फिर वह श्रादमी पर सवारी न लाये, तो क्या करे ? उस श्रादमी पर, जो उसीकी तरह बुद्धि रखता है और उसीकी तरह अपना घमंड रखता ग्रीर उसीकी तरह सोचता है। इसका नतीजा मानव-समाज का सर्वनाश नहीं, तो क्या होगा ?

#### परमात्या की गुलामी भी एक शस्त्र

वच्चा-वच्चा समभता है कि गुलामी बुरी चीज है।
गुलामी एक भावना है, जो संसार से मिटाये नहीं मिट
सकती। ग्रव यह गुलामी किसके सिर पर चढ़कर रहे? उस
गुलामी को किसीके सिर पर चढ़े रखने के लिए उन समभदार
ग्रादिमयों ने, जो वेहद घमंडी हो गये थे, एक तरकीव निकाली।
वह तरकीव थी, परमात्मा की गुलामी। उन घमंडियों ने खुद
जो परमात्मा की गुलामी की, उनका कोई नुकसान न हुआ।
क्योंकि ग्रसल में उन्होंने परमात्मा की गुलामी की ही नहीं,

उन्होंने उस विचार की गुलामी की, जिसने उनके लिए परमात्मा गढ़कर दिया था। हाँ, उन लोगों ने जरूर गुलामी की, जिन्होंने उन लोगों के कहने से परमात्मा की गुलामी शुरू कर दी। जानते हैं, इसका नतीजा क्या हुआ ? जिन्होंने परमात्मा की गुलामी इने-गिने बुद्धिमानों के कहने से शुरू की, वे परमात्मा की जगह हर वात में उन बुद्धिमानों के गुलाम वन वैठे। यही बुद्धिमान् चाहते थे। उन्हें गुलामों की जरूरत थी ग्रीर गुलामी की भावना को ग्रादिमयों के सिरों की। दोनों काम हो गये। जिन्होंने परमात्मा की गुलामी दूसरे के कहने से श्रपनायी, वे उन्हीं श्रादिमयों के पास पहुँचे ग्रीर वात-वात में उनसे सलाह लेने लगे।

धीरे-धीरे घमण्ड के उन पुजारी बुद्धिमानों ने यह कहना शुरू कर दिया कि परमात्मा उनसे वातें करता है और उन वातों को उन्होंने शब्दों में गूँथ डाला। वे ही शब्द सीवे-सादे आदिमयों के लिए अपीरुषेय या इलहामी नाम पा गये। अब एक ऐसा तरीका निकल आया, जिसके आधार पर वाकायदा दूकानदारी चल सकती थी और वह चल भी रही है। अब आदिमी के मान को, जितनी पूजा धर्म के क्षेत्र में मिल सकती है, दूसरे क्षेत्र में नहीं। अपीरुषेयवाद और इलहामवाद यानी धर्म का यह तत्त्व कि 'यह वात परमात्मा की या ऐसे आदिमी की कही हुई है, जिसके भीतर वैठा परमात्मा दूध से धुलकर इतना पवित्र हो गया था कि वह सव कुछ जान गया था', गुलामी की जड़ है। आदिमी किसी-न-किसी रूप में इस जड़ को पानी देता रहता है।

# विचारों की गुलामी का समान वितरण

गुलामी को मिटाने की कोशिश उसी दिन से जारी है, जिस दिन अपीरुषेयवाद, इलहामवाद या सर्वज्ञवाद ने इसे जन्म दिया, पर होता यह रहा कि इस पेड़ के पत्ते कटते रहे, जड़ को पानी दिया जाता रहा। गुलामी अमिट है, उसे मिटाने की कोशिश वेकार है। इंसान की कोशिश यह होनी चाहिए कि इस गुलामी को समान रूप से सारी दुनिया में वाँट दे। अकेले धन-धरती के वँटवारे से काम न चलेगा। जब तक विचारों की गुलामी वनी रहेगी, वह दु:ख देती रहेगी। गुलामी अपने-आप दुखदायी नहीं, समान रूप में वँटी भी दुखदायी नहीं। वह दुखदायी तभी होती है, जब समाज में कहीं गुलामी के टीले खड़े हो जाते हैं और कहीं गुलामी की खाइयाँ खुद जाती हैं।

ग्रमेरिका ग्राज दुनिया में मशहूर है कि उसने गुलामी मिटा दी, गुलामी मिटाने के नाम पर लड़ाई लड़ी; पर विचारों की सबसे ज्यादा गुलामी ग्रमेरिका में मौजूद है ग्रौर वह वरावर वनी रहेगी। काले-गोरों का भेद जितना वहाँ है, उतना ग्रौर कहीं नहीं। वह वना रहेगा, उसीके साथ गुलामी वनी रहेगी।

राजकाजी गुलामी मिटाने से गुलामी-पेड़ के पत्ते श्रीर डालें कटती हैं, जड़ को कोई नुकसान नहीं पहुँचता। जड़ को श्रीर पानी ही मिलता है। वाइविल, कुरान, वेद या श्रीर कोई सर्वज्ञ के कहे ग्रंथ वगल में दवाकर श्रगर गुलामी मिटाने की कोशिश की जायगी, तो गुलामी मिटने पर भी गुलामी की जड़ हरी रहेगी। गुलामी की जड़ इसमें है कि श्रादमी श्रपने-श्राप न सोचकर श्रपने

सोचने का काम वेद, कुरान, वाइविल, जेंदावेस्ता ग्रादि को सींप दे। ग्रादमी गुलामी की जड़ से तब तक छुटकारा न पा सकेगा, जब तक उसे इस योग्य न बना दिया जाय ग्रीर यह न समभा दिया जाय कि दुनिया के सारे घर्म-ग्रंथ उसी जैसे ग्रादमी के कहे ग्रीर लिखे हैं। जैसा उनमें लिखा है, वैसा वह खुद भी सोच ग्रीर लिख सकता है।

जिस श्रादमी में श्रपना वेद, श्रपना कुरान, श्रपनी वाइविल, श्रपनी जेंदावेस्ता या श्रपना धर्मग्रंथ लिखने की कावलियत नहीं, दुनिया की कोई ताकत उसके दिल से गुलामी नहीं निकाल सकती। वह किसीका गुलाम रहने में ही सुख मानेगा। वह किसी वेवकूफी की खातिर जान देने में श्रपनी मुक्ति समभेगा. श्रीर इस तरह जान देने पर उसे एक छोटा-मोटा दल ऐसा मिल जायगा, जो मरने के वाद उसे पुजवा दे। जब इस तरह वेवकूफी की पूजा होती रहेगी, तो गुलामी मरेगी या पनपेगी?

यह किसे नहीं मालूम कि हर धर्म का माननेवाला ग्रपने धर्मग्रन्थ के वारे में किसी तरह का तर्क वरदाश्त नहीं कर सकता; क्योंकि वह उसे परमात्मा का कहा समभता है। उसकी इस धार्मिक गुलामी ने उसे यह सोचने के काविल नहीं रखा कि जैसे उसे यह हक हासिल है कि वह ग्रपने धर्मग्रन्थ को तर्क से परे समभे, वैसे ही दूसरे को भी यह हक हासिल है कि वह ग्रपने धर्मग्रन्थ को तर्क से परे समभे। जिस दिन वह यह सोचने लगेगा, उसी दिन उसकी समभ में ग्रा जायगा कि कोई धर्मग्रन्थ परमात्मा का कहा हुग्रा नहीं है।

दुनिया में ऐसा एक भी ग्रादमी न मिलेगा, जो परमात्मा के

कहे धर्मग्रन्थों पर तर्क न करता हो, जो उनको गलत न मानता हो। वस, वात इतनी मिलेगी कि हिन्दू कुरान पर तर्क करता मिलेगा, उसे गलत मानता होगा, ग्राँर मुसलमान वेद पर तर्क करता होगा ग्रीर उसे गलत मानता होगा। फिर परमात्मा के कहे ग्रन्थों पर तर्क करने से बचा कौन? दूसरे धर्मों के ग्रन्थों पर तर्क करने से बचा कौन? दूसरे धर्मों के ग्रन्थों पर तर्क करने की ग्राजादी के साथ-साथ ग्रपने धर्मग्रन्थों की गुलामी जरूरी है। ग्रपने धर्मग्रन्थों की गुलामी गयी कि विचारों की ग्राजादी ग्रायी। विचारों की ग्राजादी ग्रायी। विचारों की ग्राजादी ग्रायी कि गुलामी का सारी दुनिया में समान रूप से बँटवारा हुग्रा। दुनिया में समान रूप से गुलामी का वँटवारा हुग्रा कि हर ग्रादमी में यह ताकत ग्रायी कि वह ग्रपने-ग्रपने वेद, वाइविल, कुरान लिख सके। ग्रपने-ग्रपने धर्मग्रन्थ लिखने की कावलियत ग्रायी कि पूंजीवाद, लड़ाईवाद, गुरुडमवाद, ग्रहश्यवाद ग्रादि खतम।

#### सेवारूपी गुलामी

दुनिया में ऐसी हालत लाने के लिए ग्रादमी को एड़ी-चोटी का जोर सबसे पहले विचार की गुलामी हटाने में लगाना होगा। यही वह कोशिश है, जिससे गुलामी की जड़ ग्रपनी मुनासिब मुटाई पर ग्रा जायगी। पहले कह चुके हैं कि हम गुलामी का नाश नहीं करना चाहते। हम मानते हैं कि गुलामी के वगैर समाज जिन्दा नहीं रह सकता, पर जिस गुलामी की समाज को जीते रहने के लिए जरूरत है, वह दूसरे किस्म की गुलामी है। ग्रादमी ने उसका नाम ग्रलग रख छोड़ा है। उसका नाम है, खिदमत; उसका नाम है, सेवा। यह सेवा माँ-वाप ग्रपने वेटे की करते हैं, गुरु अपने चेलों की करते हैं, नेता अपने अनु-यायियों की करते हैं, दोस्त दोस्तों की करते हैं। इस सेवा या गुलामी के वगैर समाज कहीं आगे वढ़ सकता है? जैसे-जैसे सेवा-नामी गुलामी की समक्ष आती जायगी, वैसे-वैसे गुलामी या दासता-नामी सेवा का अन्त होता जायगा। यह सब उस वक्त तक किसी तरह न हो सकेगा, जब तक आदमी परमात्मा की गुलामी न छोड़े।

गुलामी के मानी हैं, हर वात के लिए मालिक पर निर्भर रहना। सेवा के मानी हैं, अपनी मेहनत की किसी पर मेट चढ़ाना। ईश्वर से प्रार्थना करके रोटी माँगना या दुनिया का कोई सुख माँगना गुलामी है और यह वहुत बुरी चीज है। ईश्वर को मानकर या यह समभकर कि ईश्वर श्रादमी के श्रन्दर है, खूव मेहनत में लगना, खेती करना, फल उगाना, कपड़े बुनना, मकान वनाना और उस मेहनत के फल को दूसरों को वाँट देना सेवा है, वहुत श्रच्छी चीज है। पर यह सेवा उन्हें नहीं सूभ सकती, जिन्होंने श्रपनी सोचने की ताकत के वारे में यह सोच रखा है कि वह उन्हें ईश्वर या धर्मग्रन्थों से मिलेगी।

# गुलामी पशु से भी नीचे गिरा देती है

गुलामी में क्या बुराई है ग्रीर सेवा में क्या ग्रच्छाई? गुलामी हमें कहाँ जा पटकेगी ग्रीर सेवा कहाँ पहुँचा देगी, यह समक्ष लेना जरूरी है।

किसने नहीं देखा, कौन नहीं जानता कि जो जिसका नीकर है, वह हमेशा यह सोचता रहता है कि ग्रगर मैंने भूल की,

तो मेरा मालिक मुभे सजा देगा या किसीसे सजा दिलवायेगा। अगर मैंने अच्छा काम किया, तो मालिक मुभे इनाम देगा या किसीसे इनाम दिलवायेगा। इस सोच-विचार में नौकर वहुत कोशिश करने पर भी भूलें कर जाता है। असल में होता यह है कि मालिक की निगाह में कोई काम ऐसा हो ही नहीं सकता, जो भूल से खाली हो। इस बात में सचाई है, पर गुलामी गुलाम को इस सचाई तक नहीं पहुँचने देती। ग्रगर उसे इस सचाई का पता लग जाय, तो फिर यह वात बिलकुल साफ हो जाय कि वह गुलाम रहते कभी अच्छा काम कर ही नहीं सकता, कभी इनाम पा ही नहीं सकता। वह जव कभी श्रच्छे काम के लिए इनाम पाता है, तो वह काम उतना ही भूलों से भरा होता है, जितना उसका वह काम, जिसे उसके लिए सजा मिली थी। उसे यह पता नहीं कि मालिक इनाम देता है श्रपनी खुशी पर। मालिक के वेटे के जन्म पर नौकरों को इनाम मिलता है। वहाँ ग्रच्छे काम का सवाल कहाँ है ? वादशाह के यहाँ पुत्र जनमने पर कैदी छोड़ दिये जाते हैं, कैदियों के काम से कोई सरोकार नहीं।

ऊपर की वात से यह नतीजा निकलता है कि गुलामों यानी दासों के सोचने का तरीका ऐसा है कि जब वे मालिकों की दुनिया से धर्म की दुनिया में प्रवेश करते हैं, तो ईश्वर को मालिक समसकर ग्रपने पाप की सजा की ग्राशा करने लगते हैं ग्रीर पुण्य के इनाम की। फिर उनके लिए यह जरूरी हो जाता है कि ग्रांख वन्द कर नरक ग्रीर स्वर्ग मान लें। गुलामी में एक सबसे वड़ी बुराई यह है कि वह हमारे ग्रन्दर की खुशी खो देती है। हमारे विचारों का पतन कर देती है, हमें यह भुला देती है कि हमारा परमात्मा हमारे ग्रन्दर है। इस तरह गुलामी हमें ग्रादमी नहीं रहने देती, पशु से नीचे गिरा देती है।

## सेवक अपनी खुशी में मस्त 🕓

ग्रव सेवा को लीजिये। सेवा करते वक्त ग्रादमी के दिमाग में यह रहता ही नहीं कि वह किसीको खुश करने का काम कर रहा है। सेवा होती ही तव है, जव ग्रादमी का मन ग्रीर बुद्धि एक सुर हो जाते हैं। मन में भावना उठी कि बुद्धि ने उसकी पूर्ति करने के श्रीजार दिये कि देह उन्हें लेकर काम में लगी। श्रादमी का ग्रात्मा खुश होना शुरू हुग्रा। ग्रव वह किसी दूसरे से क्या ख़ुशी माँगेगा ? सेवक तो ग्रपनी ख़ुशी में इतना मस्त होता है कि जिसकी वह सेवा कर रहा होता है, ग्रगर वह उस सेवा के वदले उसे गाली दे वैठे या मार वैठे, तव भी उसकी खुशी को वहुत कम धक्का पहुँचता है। ऐसा न होता, तो क्या कोई माँ ग्रपने मांस के लूथडे जैसे वच्चे को इस योग्य वना सकती कि वह एक दिन महापुरुष कहलाने लगता। सेवा में सेवक को यह पता लग जाता है कि परमात्मा मेरे अन्दर मीजूद है, मौजूद क्या, मैं हीं परमात्मा है। श्रव वताश्रो श्रपने को परमात्मा माननेवालां सेवक कैसे यह सोचेगा कि उसे कोई भूल की सजा देगा या कैसे यह सोचेगा कि उसके अच्छे काम का कोई इनाम देगा। वात किसी तरह सच नहीं हो सकती कि परमात्मा को सजा ग्रीर

इनाम की जरूरत है। सेवक नरक-स्वर्ग की वात कैसे सोच सकता है?

ग्रव यह किसकी समभ में नहीं ग्रा सकता कि सेवक ग्रौर गुलाम के घर्म कभी एक न होंगे। स्वर्ग ग्रौर नरक की वात उसीको सूभ सकती है, जो घमण्ड के नक्षे में चूर है ग्रौर दुनिया के ग्रादिमयों से ग्रपना काम लेना चाहता है, ग्रपने पाँव पुजवाना चाहता है। उसीको यह सूभ सकता है कि वह ग्रपने कुछ साथी भाइयों से कहे कि "तुम्हारा काम मेरी सेवा करना है, ग्रगर तुम घर्मग्रन्थों को पढ़ने की वात सोचोगे या पढ़ने लगोगे, तो तुमसे ईश्वर नाराज होगा ग्रौर तुम नरक भेज दिये जाग्रोगे। ग्रगर तुम पढ़ने के योग्य होते, तो ईश्वर तुमसे ही ग्राकर वात न करता? उसने हमें ही योग्य समभा है, इसलिए घर्म की वात तुम हमसे पूछो ग्रौर जानो।"

#### धर्म के चकर में !

ऊपर के उपदेश का नतीजा यह हुन्ना कि गुलामी की वड़ी मजेदार सीढ़ियाँ वनती चली गयीं। जिसने यह सुना कि ईश्वर कान में त्राकर वात कह जाता है, एक दिन उसके जी में न्ना गया, उसने कह डाला कि ईश्वर उसके कान में न्नाकर कुछ कह गया। त्रव उसके कुछ भक्त वन गये, नया धर्म खड़ा हो गया।

धर्मों का यह सिलसिला जारी है और जारी रहेगा। हर धर्म अपने अनुयायियों को समभाता रहता है कि उसके धर्म में हर तरह की आजादी है, हर तरह का बुद्धिवाद है, विचारों की पूरी आजादी है। पर जब उपदेश देने बैठता है, तब ऐसा कहता मालूम होता है कि बुद्धि ऐसी चीज है, इसे हरगिज मन में जगह न देना। ग्राजादी वला है, इसे परमात्मा की गुलामी करते हुए कभी ग्रपने पास न फटकने देना। इन्हीं वातों को कहा जाता है: 'सदाचार, सम्यक्चरित्र, सच्ची जानकारी, सम्यक्जान, सच्ची श्रद्धा, सम्यक्दर्शन।'

# भ्रमवाद और ईश्वरवाद

घर्मी के चक्कर में पड़कर ग्रीर पीढ़ियों से उनमें फँसे रहने से ग्रादमी की बुद्धि चकरा गयी है। उसका नाम है, भ्रम। यह भ्रमवाद ईश्वरवाद से बढ़कर है। इस भ्रम से ग्रादमी बेहद फायदा उठाने लगा है। वह कभी-कभी ऐसी वातें सोच जाता है, जो जरा गहरे सोचने पर कुछ-की-कुछ मालूम होंगी। ग्राम ग्रादमी बहुत कम ग्रन्दर पैठने की सोचते हैं। इने-गिने, जो ग्रन्दर जाने की सोचते हैं, बहुत गहरे न जाकर थोड़ा गोता लगा पाते हैं। उनके हाथ जो बात ग्राती है, वह दुनिया में फैंले मामूली सत्य से कई गुना ग्रच्छी ग्रीर चमकदार होती है। पर ग्रसली सत्य के मुकाबले में वह एकदम मिथ्या होती है। उससे गहरे सत्य के मुकाबले में उसकी चमक फीकी पड़ जाती है।

# मूर्ति-पूजा से घमंड ट्रटा या वढ़ा ?

उदाहरण के लिए मूर्ति-पूजा ले लीजिये। पत्थर को पूजकर आदमी अपने मन को और अपने आसपास के लोगों को यह समभाना चाहता है कि देखो, वह कितना भला आदमी है कि उसने अपने घमण्ड को, मान-अपमान को यहाँ तक कम कर दिया है कि वह पत्थर को सिर भुका देता है। पर उसे यह पता नहीं कि जब वह अपना घमण्ड तोड़ने की बात कहता है, तो वह घमण्ड का महल बनाता रहता है। उसे यह पता ही नहीं कि वह दूसरों को सिर भुकाने से बचने के लिए अपने विचार को सिर भुकाने की एक तरकीव निकाल बैठा है। जिस मूर्ति को वह नमस्कार कर रहा है, वह उसने अपने विचार की बनायी है। इसलिए वह अपने विचार को नमस्कार करता है यानी अपने को भुकता है और औरों को भुकने से वचता है। इसमें घमंड का महल गिरा या ऊँचा गया ?

शिव का भक्त राम की मूर्ति नहीं पूजेगा, कोई जैन हिन्दुस्रों के राम-मंदिर में नहीं जायगा, जब कि हरएक जैन यह मानता है कि राम की मुक्ति हुई ग्रीर राम सिद्धि की हैसियत से उसके पूज्य देवता हैं। पर चूंकि राम को उसके मंदिर में किसी वजह जगह नहीं, इसलिए वह उसे नहीं पूज सकता। श्रव घमण्ड कहाँ टूटा ? दिल्ली के किसी मशहूर किन के नारे में यह नात प्रसिद्ध है कि वे श्रकवर वादशाह को नमस्कार करना शान के खिलाफ समभते थे। यही नहीं, वे सिवा पत्यर की मूर्ति के किसीको नमस्कार न करते थे। यह भी सुना गया है कि एक वार जब वे मजबूर किये गये कि अकवर से मिलने आयें, तो सुनते हैं कि वे एक ऋँगूठी में भ्रपने भगवान् की मुरत वनाकर ग्रपनी उँगली में पहन गये ग्रौर ग्रकवर को सलाम करते वक्त उन्होंने यह समभकर ग्रपना जी खुश कर लिया कि वे ग्रकवर को नहीं, भगवान को सिर भुका रहे हैं। इस जोश में उन्हें यह पता ही

न चल पाया कि वे श्रपने मान श्रीर माया यानी घमंड श्रीर फरेव, दोनों को घी पिला-पिलाकर मोटा कर रहे हैं।

इसी तरह कुछ श्रादमी समभ लेते हैं, ईश्वर के दास वनने से श्रभिमान कम होता है। पर वे यह वयों नहीं सोचते कि डिप्टी कलेक्टर का चपरासी वनकर जो यह कहे कि वह श्रपना श्रभिमान लोने के लिए चपरासी बना है, श्रौर उसकी बात को दो-एक सच मान लें, तो उस चपरासी के गाँववाले या श्रौर जान-पहचानवाले कैसे सच मान लें कि वह श्रभिमान छोड़ने के लिए चपरासी बना है? क्योंकि वे तो रोज उसे देखते हैं कि वह उन्हें बक्का देकर कचहरी से निकाल देता है श्रीर रोज उन्हें बताता रहता है कि वह उनसे बहुत बड़ा है।

# गीता के ईश्वर-प्रमर्पण का रहस्य

एक दूसरे किस्म के श्रादमी हैं, जिन्हें गीता ने यह सिखा दिया है कि जो काम करो, उसे भगवान् के चरणों में श्रपंण कर दो। इसलिए तुम कर्तापने के श्रिभमान से वच जाश्रोगे। ईश्वर के दास वन जाश्रो, जिस तरह श्रर्जुन कृष्ण भगवान् का दास वन गया था। इसमें शक नहीं कि ज्ञान-सागर में काफी गहरी डुवकी लगाकर यह तत्त्व हाथ श्राया है, श्रीर दूसरे तत्त्वों की श्रपेक्षा खूव चमकदार है, पर इससे गहरे तत्त्व के श्रागे इसकी चमक फीकी पड़ जाती है श्रीर पूर्ण सत्य के सामने यह कुछ नहीं रह जाता।

जिस गीता से यह तत्त्व लोगों तक पहुँचा, वह गीता व्यास की लिखी महाभारत का एक अध्याय है। इस महाभारत के विषय में लोगों की ग्रजीव-ग्रजीव राय हैं। समभदारों की राय है कि 'महाभारत' नाम का युद्ध हुग्रा हो या न हुग्रा हो, लेखक ने यह ग्रन्थ ग्रध्यात्म पर लिखा है। इसमें उसी युद्ध का वर्णन है, जो ग्रादमी के ग्रन्दर नित्य होता रहता है। ग्रव गीता के कृष्ण ग्रलग कोई परमेश्वर नहीं रह जाते। हमारे ग्रन्दर वैठा ग्रात्मा ही कृष्ण है। हमारा मन ग्रजुंन है ग्रादि। ग्रव ग्रपने किये कर्मों को ग्रपने लिए समर्पण करने का क्या ग्रथं रह जाता है? इस तत्त्व से किसी एक-दो को लाभ पहुँचा हो, तो पहुँचा हो ग्राम जनता ने इससे या तो लट्ठवाजी करने का पाठ लिया या वड़ों का सिर काट लेने का सवक सीखा। जव हमारे ग्रन्दर वैठा परमात्मा सव कुछ है, तव हम किसी दूसरी तरफ क्यों ग्रांख उठाकर देखें?

#### मुक्ति भावात्मक नहीं

श्रादमी सबसे ज्यादा मुक्ति का इच्छुक है। मुक्ति गुलामी से उल्टा भाव है। हम यह कह चुके हैं कि गुलामी न कभी संसार से हटेगी, न कभी व्यक्ति के दिल से। लेकिन समफने की खातिर हम यह माने लेते हैं कि मुक्ति मिलती है, पर वह तो किसी दूसरे से नहीं मिलेगी। जरा गीर से समफने पर पता लग जाता है कि मुक्ति ऐसी चीज है, जो कुछ है ही नहीं, गुलामी का श्रमाव है। एक गाय रस्सी से बँघी है, वह बंघन में है, रस्सी खोल दीजिये मुक्त हो गयी। इसमें मुक्ति क्या मिली? जब मुक्ति ऐसी चीज है कि जो मिल नहीं सकती, तो फिर माँगी कैसे जा सकती है? फिर मुक्ति के लिए प्रार्थना करने का क्या श्रयं रह जाता है? जब लोग ईश्वर से यह नहीं पा सकते, तब श्रीर कुछ माँगने का श्रयं ही नहीं रह जाता।

# मानसिक गुलामी

श्रादमी में जिस दिन से सोचने की ताकत श्रायी, उसी दिन से उसकी विचार-शक्ति ने दो राहें पकड़ीं: एक सत्य श्रीर दूसरी मिथ्या। श्रागे चलकर सत्य राह फिर दो राहों में बँट गयी: एक दर्शन, दूसरी विज्ञान। राहें श्रागे चलकर श्रीर फटीं, पर उन्हें छोड़ हमारे काम की इस वक्त दो राहें हैं—सत्य श्रीर मिथ्या।

#### सत्य की राह

सत्य की राह से मतलय है, श्रादमी का प्रकृति की किसी खास घटना को देखना श्रीर ठीक कारण जानने की कोशिश करना। यह राह श्रपनाकर उसने दो चीजों को जन्म दिया—एक विज्ञान, दूसरा दर्शन। उसने श्रनुमान लड़ाने में कल्पना से इतनी ज्यादा मदद ली, जितनी उसे नहीं लेनी चाहिए थी। नतीजा यह हुश्रा कि दर्शन ने उसके सामने एक ऐसी चीज खड़ी कर दी, जिसका वह खुद गुलाम वन गया। विज्ञान की राह में यह वात नहीं हुई। उस राह में हर घटना के कारण सोचने में कल्पना की मदद तो उसने ली, पर कल्पना उसकी वनकर रही श्रीर जरूरत से ज्यादा श्रागे न वढ़ पायी। यह न हो पाया कि कल्पना उस पर सवार हो जाती। वह विज्ञान से इतना फायदा उठा सका कि उसकी मदद से उसने ऐसी चीजों तैयार कर लीं, जिनसे वह वैसे

ही अपने दास-दासियों का काम ले सके, जैसे अपने भाइयों से लेता था। एक तरफ विज्ञान ने मानव-समाज की गुलामी की जड़ पर जोर का कुठाराघात किया। आज देखने में ऐसा मालूम होता है कि विज्ञान लोगों को गुलाम वनाने की ओर वढ़ता चला जा रहा है, पर इसमें विज्ञान का जरा कसूर नहीं, किसी दूसरी चीज का कसूर है, जिसका जिक्र फिर कभी करेंगे। हाँ, दर्शन ने किसी ग्रंश तक आदमी में मानसिक दासता पैदा की, पर वह इतनी नहीं, जिससे आदमी छुटकारा न पा सके। हाँ, जो दासता उसे मिथ्या राह चलने से हाथ आयी, वह इतनी गहरी घर कर गयी कि उसका मिटाना मुश्किल ही नहीं, असम्भव हो गया है।

#### मिथ्या राह

मिथ्या राह से हमारा मतलव है, वह राह चलना, जिसमें या तो कार्य-कारण ठीक-ठीक नहीं मिलाये जाते या ग्रगर वे ठीक रहे हों, तो यह जानने की कोशिश नहीं की जाती कि वे किसी एक वक्त के लिए ठीक हैं, हमेशा के लिए नहीं । इस तरह कार्य-कारण से पैदा हुए ग्रंध-विश्वास जव ग्रादमी के मन में जगह वना लेते हैं, तब ग्रादमी उनका दास वन जाता है । फिर उसकी यह हिम्मत नहीं होती कि उन विश्वासों की दासता छोड़ सके । दर्शन की राह पर चलकर ग्रपनी कल्पना की दासता जो उसने सीखी, उसने इस मिथ्या राह पर चलने में वड़ी मदद की । दर्शन की दासता में छुटकारा था, इस मिथ्या दासता में वह न रहा । दर्शन की दासता की तह में कहीं ठीक-ठीक कार्य-कारण का

मिलान था, पर मिथ्या राह की दासता में कहीं कोई मिलान नहीं। इस मिथ्या राह में सबसे वड़ी खरावी यह ग्रा गयी कि ग्रादमी दुःख की सम्भावना का एक जेलखाना खड़ा कर लेता है। दुनिया इतनी दुःखमय है कि कहीं-न-कहीं दुःख उससे ग्रा टकराता है। वह यह नहीं समभ पाता कि यह दुःख उस कार्य का कारण नहीं, जिसे उसने समभ रखा है। विल्क उस कार्य का कारण है, जो उसने दुःख का जेलखाना वनाकर मान रखा है।

#### सिगरेट का अंध-विश्वास

ऊपर की वात साफ करने के लिए हम एक विलकुल

ताजा उदाहरए। देंगे । दुनिया की दूसरी वड़ी लड़ाई के वाद, जो ग्रभी सन् '४५ में खतम हुई, इंग्लैंड में यह ग्रन्ध-विश्वास चल पड़ा है कि एक दियासलाई से तीन सिगरेट नहीं जलानी चाहिए । ग्रगर ऐसा किया जायगा, तो तीन ग्रादिमयों में से कोई एक मर जायगा । यह श्रंध-विश्वास इतनी तेजी से वढ़ रहा है कि कितनों को उसने मानसिक गुलामी में फँसा दिया है। उसी मानसिक गुलामी के वल पर किसीके मर जाने का कारए। यह बता दिया जाता है कि कभी उसने अपनी सिगरेट उस दियासलाई से जलायी थी, जिसमें दो श्रौर सिगरेट जली थीं। इस मानसिक गुलामी को जितनी घटाने की कोशिश की जाती है, उतनी ही ग्रीर वढ़ती है। इसके बढ़ने का जबरदस्त कारएा यह है कि ग्रादमी इस बुराई को छिपाने की इसी तरह कोशिश करता है, जिस तरह गर्मी, सुजाक, प्रमेह, सफेदे की वीमारी को । मानसिक गुलामी को हर ग्रादमी मानता है ग्रौर गुलामी बुरी चीज होती है, फिर वह

सवके सामने कैसे कबूल कर दे कि वह मानसिक गुलाम है। वड़ी उम्र के ग्रादमी की शान के खिलाफ है कि वह यह कहे कि वह भूत से डरता है। सारी मानसिक गुलामियों का यही हाल है। वे घटाने पर घटी नहीं, वढ़ी हैं। वे उस वक्त तक न घट सकेंगी, जब तक दर्शन की गुलामी ग्रौर दर्शन के खड़े किये देवताग्रों की गुलामी का ग्रन्त न होगा।

तीन सिगरेट एक दियासलाई से जलाने से बुरा होता है, इसकी तह में क्या वात है या क्या सचाई है ? उस ग्रोर न कोई जाता है, श्रीर न कोई जाने की सोचता है; क्योंकि वह सैकड़ों ग्रन्यविश्वासों को जानता है ग्रीर उनमें पहले से फँसा हुग्रा है। उसने देख ग्रीर समभ लिया है कि इन ग्रन्धविश्वासों के न इतिहास मिलते हैं, न कारएा, न उनकी सचाइयों का किसीको पता है। उसने यह सोचने की कभी कोशिश नहीं की कि हर श्रन्थविश्वास श्रपने पीछे एक सचाई रखता है। ग्रगर नहीं रखता, तो उस ग्रन्धविश्वास को खतम करने के लिए किसी सचाई की कल्पना की जा सकती है। हमारा यह विश्वास है कि वह सचाई की कल्पना ६६ फी सदी अन्धविश्वासों में ठीक निकलेगी। सिगरेट जलाने का श्रन्धविश्वास श्रभी ताजा है। उसका इतिहास है। उसे जान लेना चाहिए ग्रीर उस ज्ञान से उसे खतम कर देना चाहिए, पर यह सव करे कीन ? क्या वे पंडित, मीलवी ग्रीर पादरी करें, जो इन ग्रन्घविश्वासों के पेड़ को पानी देकर नित-नये फल हासिल करते रहते हैं ? या वह सरकार, जो अन्धविश्वासों से फायदा उठाकर फौज के सिपाहियों को वेवकूफ वने रहना

पसन्द करती है, जो यह जानती है कि ग्रंघविश्वासी प्रजा पर शासन करना कहीं ग्रासान है, वनिस्वत उस प्रजा के, जो ग्रंध-विश्वासों से वहुत ज्यादा वची हुई है। एक दियासलाई से तीन सिगरेट जलाना बुरा होता है, यह चला लड़ाई के मैदान से। फीजी दफ्तर से एक वार हुक्म जारी हुग्रा कि कोई ग्रादमी एक दियासलाई से तीन सिगरेट न जलाने पाये। फीजी हुक्म था। उस पर तुरन्त ग्रमल होने लगा। ग्रव इस हुक्म के ऊपर ग्रन्ध-विश्वास का हाशिया चढ़ा ग्रीर वह यह हो गया कि ऐसा करने से तीन में से कोई एक मर जायगा या दो ग्रीर तीनों भी मर सकते हैं। जव यह वात ग्रफसरों तक पहुँची, उन्होंने इस ग्रन्यविश्वास में कुछ भलाई समभी। उसकी तह में जो सचाई थी, उसे न वताने में ही भला समभा। सचाई इतनी थी कि जव रात में फीजें कहीं छावनी डाले पड़ी होतीं ग्रीर उस वक्त यदि कोई म्रादमी एक दियासलाई से तीन सिगरेट जलाता, तो दियासलाई देर तक जलाये रखनी पड़ती, जिसकी वजह से दुश्मन के सिपाही को निशाना जमाने के लिए काफी समय मिल जाता श्रौर वह उन सिपाहियों पर श्रचूक वार कर सकता। एकग्राध को मार गिराता। ऐसी सचाई उन ग्रंघिवश्वासों में न ढूँढ़ी जा सके, जो वहुत पुराने हैं, तो न सही, पर ऐसी सचाई की कल्पना तो की जा सकती है। हम ग्रागे कोशिश करेंगे कि कुछ सचाइयाँ पढ़नेवालों के सामने रखें। अगर न कहीं पा सके, तो नयी तैयार करके दे दें। नयी तैयार करने की बात हम इसलिए हिम्मत के साथ कह रहे हैं कि हमने ऐसा करके अपने मित्रों, भाईवन्दों

ग्रीर रिक्तेदारों को वहुत-से ग्रंधिवक्वासों से छुट्टी दिलवायी है ग्रीर उनकी मानसिक गुलामी को किसी हद तक दूर किया है।

#### कुछ उदाहरण

सीढी के नीचे निकलना बुरा समभा जाता है। सीढ़ी के नीचे न निकलना समभ का काम है, अगर यह काम उस वक्त किया जाय, जव सीढ़ी पर चढ़कर कोई ग्रादमी पुताई का काम कर रहा हो या ऐसी कोई चीज लेकर चढ़ रहा हो, जो अगर निकलनेवाले पर गिर पड़े, तो चोट लगने या मरने का खतरा हो। लेकिन ग्रगर कोई खाली सीढ़ी के नीचे निकल जाय ग्रीर फिर यह वहम पैदा कर ले कि वस, ग्रव कोई ग्राफत उसके सिर ग्रानेवाली है, तो इससे वड़ी बेवकूफी क्या हो सकती है ? यह होगी मानसिक दासता । इसका यह नतीजा होगा कि ग्रगर उस सीड़ी के नीचे निकलनेवाले ग्रादमी को कहीं मामूली ठोकर भी लग जाय, तो वह उस ठोकर के कारएा को ठीक-ठीक न ढूँढ़कर सीढी के नीचे निकलना सममेगा और ठोकर खाने की ग्राटत वढ़ा लेगा, क्योंकि ठोकर खाने के ग्रानन्द को उसने कभी जानना नहीं चाहा। श्रादमी के जीवन में ऐसा दिन शायद ही कोई हो, जिस दिन उसे छोटी-मोटी ग्राफत से मुकावला न करना पड़े। अव से सौ-सवा सी वरस पहले आदमी की जान रोज खतरे में रहती थी। ग्रव भी शेरनी को वहुत कम ग्राशा रहती है कि उसका शेर शाम को जीता-जागता वापस आ जायगा। कोई वकरी अपने वच्चे के वारे में यह नहीं सोच सकती कि एक घंटे वाद वह उसे देख सकेगी। इस तरह दु:खों से भरी दुनिया में यह सावित कर देना कहाँ मुक्किल है कि जो तकलीफ ग्रायी, वह सीढ़ी के नीचे निकलने से ग्रायी। किसी समभदार ने सीढ़ी से नीचे निकलना उन बच्चों को बुरा वताया होगा, जिन्हें ऐसी शरारत ग्रक्सर सूभ बैठती है कि वे उसी वक्त सीढ़ी के नीचे निकलते हैं, जब कोई उस पर चढ़कर पुताई का काम कर रहा हो।

श्रादमी कितना वहम-पुजारी हो गया है, इस विपय में हम श्रपने जीवन की एक घटना देते हैं। एक वार सोचा गया कि विवाह कराने में पुरोहितों से मदद न ली जाय। चट एक नयी विवाह-पद्धति कर ली गयी। विवाह कराने का काम हमें खुद ग्रपने हाथ लेना पड़ा। एक जगह विवाह के लिए पहुँचे। उसके यहाँ जव विवाह के काम के लिए चौकी माँगी, तो घर में न मिली। हमने कहा, 'चौकी नहीं, एक छोटा-मोटा वकस ले ग्राग्रो।' वह वकस ले ग्राया। हमने उससे चौकी का काम ले लिया। विवाह की रस्म पूरी कर दी गयी। इस विवाह के कुछ दिनों वाद हम एक दूसरा विवाह कराने पहुँचे । वहाँ जव चौकी माँगी, उसने चीकी लाकर हमारे सामने रख दी। उसके घर में एक छोड़ कई चौिकयाँ थीं। थोड़ी देर में विवाह का काम खतम हो गया। उसके वाद उस घर का मालिक यानी लड़की का वाप वहुत दु:खी चेहरा वनाकर हमारे सामने भ्रा वैठा, वोला, 'कसूर माफ हो, तो मैं एक वात पूछूँ ?' हम उसका चेहरा देख वड़े घवराये। वोले 'हाँ, जरूर पूछिये।' वह बोला, 'ग्रापने हमारी लड़की का विवाह इतनी ग्रुच्छी रीति से नहीं किया, जितनी ग्रच्छी तरह से वह विवाह किया था, जिसमें मैं शामिल हुग्रा

था।' हम कुछ न समभ पाये। हमने कहा, 'इससे ग्रापका क्या मतलव ?'

वह उसी तरह दुःखी चेहरा वनाये वोला, 'महाराज, उस विवाह में आपने वकस मँगवाया था और वकस पर रखकर सारी विधि की थी। हमारी वेटी के विवाह में आपने वकस नहीं मँगवाया। हमने उसे पहले से बनाकर तैयार कर रखा था। मैंने अपनी वेटी का विवाह तो ज्यों-त्यों देख लिया, पर जव भी मेरी नजर उस वकस पर जाती है, तब मेरा जी काँप उठता है कि न जाने मेरी लड़की पर कब क्या आफत आ जाय?'

हम उसकी यह वात सुनकर हँस दिये। हमारी हँसी ने उसकी ग्राँख में ग्राँसू पैदा कर दिये ग्रीर वह कह बैठा, 'महाराज, ग्राप मेरे मन की तकलीफ को नहीं जानते, नहीं तो इस तरह न हँसते।'

हमने उसे समभाया, 'भाई, जिस विवाह को तुमने पहले देखा, उस घर में कोई चौकी न थी और सामग्री का सामान ऊँचा रखने के लिए किसी चीज की जरूरत थी। इसलिए हमने उससे वकस माँग लिया और सामग्री का ऊँचा रखने का काम पूरा हो गया। तुम्हारे घर में एक छोड़ कई चौकियाँ हैं, फिर हम वकस का क्या करते ?'

वह यह सुनकर चुप हो गया, पर हमें विश्वास है, हम उसका वहम दूर न कर पाये।

इस दुनिया को इतना वहम-पुजारी वनाया किसने ? उसी दर्शन ने, जिसने कल्पना के वल पर ग्रनेक ऐसे देवता खड़े कर लिये हैं, जो श्राये दिन श्रादमी के सिर पर सवार रहते हैं। उसी दर्शन की कुछ फलक पाकर श्रादमी ने उससे भी ज्यादा मजबूत श्रन्धविश्वास गढ़कर श्रपने श्रापको मानसिक गुलामी में फँसा लिया है सीर दिन-व-दिन उस गुलामी को वढ़ाता चला जा रहा है।

यह गुलामी किस तरह वढ़ रही है ? श्रीर यह श्रन्थविश्वास किस तरह एक से दस, दस से सौ श्रीर सो से हजार होते चले जा रहे हैं, इस वारे में हम श्रपने जीवन की एक घटना श्रीर सुनाते हैं।

जव हम इम्तहान देकर लीटे, यह इम्तहान शायद तीसरी-चीथी क्लास का था, जिसका नतीजा दूसरे दिन सुनाये जाने को था, ग्रठारह-वीस घंटे कैसे सन्तोष करते ? घर ग्राकर खाना खाने के वाद गेंद हाथ में ली ग्रीर खेलने लगे। गेंद खेलते-खेलते इम्तहान की याद या गयी। घर की एक दीवार में सूराख था, जिसमें चिड़ियाँ कभी-कभी घोंसला रख लेती थीं। उस दिन उसमें घोंसला न था। इधर चिड़ियों के वारे में माँ ने वड़ी श्रद्धा विठा रखी थी। उस श्रद्धा ने चिड़िया के घोंसले के सूराख को मंदिर का रूप दे दिया। ग्रीर हम वड़ी श्रद्धा-भिक्त से उस सूराख में श्रपनी गेंद फेंकने लगे। हमने श्रपने मन में यह सोच लिया कि पाँच वार फेंकने में ग्रगर गेंद उस सूराख में चली गयी, तो हम जरूर पास हो जायँगे। वह तीसरी वार ही चली गयी। दूसरे दिन हमें मालूम हुआ, हम पास हो गये। हमने ग्रपने पास होने की वात के साथ-साथ ग्रपने दोस्तों को गेंद फेंकने की वात वतायी। उसके वाद यह हाल हुआ कि वह चिड़िया का सूराख हमारे सव दोस्तों के लिए गुन की चीज वन गयी। कई वरस यह हाल रहा कि हमारे दोस्त जैसे ही इम्त-हान देकर ग्राते, सवसे पहले ग्रपनी-ग्रपनी गेंद लेकर हमारे घर पहुँचते ग्रीर ग्रपनी किस्मत ग्राजमाते। यहाँ इतनी बात ग्रीर समभ लेनी चाहिए कि ग्रपनी-ग्रपनी गेंद लाने का रिवाज यों चला कि एक मर्तवा एक लड़के ने दूसरे की गेंद से शगुन देखा ग्रीर वह भूठा सावित हुग्रा। इन सव वहमों की जड़ में वही दर्शन-शास्त्र की कल्पना है, वही मिथ्या राह चलने की ग्रादत है। हमें ग्रच्छी तरह याद है कि हमारे गेंद फेंककर इम्तहान का नतीजा जानने की जड़ में वह पाँसा फेंककर किसी किताव में से किसी होनेवाली वात का नतीजा निकालना था, जिसे हमारे माँ-वाप ग्रक्सर किया करते थे। ग्रपनी-ग्रपनी धर्म-कितावों से शगुन या फल निकालने की वात कीन नहीं जानता ? ग्रव कहिये, श्रगर इस तरह के वहमों को न रोका गया, तो हमारी मानसिक गुलामी हमें कहाँ ले जाकर पटकेगी, इसका कोई भ्रन्दाज लगाया जा सकता है ?

कार्यकारएा भाव में, जो ज्ञान की शाखा तर्क से सम्बन्ध रखते हैं, किसी हद तक यह वल है कि इन पर सवार होकर आदमी की बुद्धि भूत-भविष्य की सैर कर सकती है। जरा-सी इस ताकत ने आदमी के अन्दर तरह-तरह की आशाएँ जत्पन्न कर दी हैं। इसी कार्यकारएा ने फलित ज्योतिष को जन्म दिया, श्रानु देखने की नींव डाली, हरएक आदमी में भविष्य-वनता वनने की इच्छा पैदा की, यहाँ तक की इसके वल-बूते तर्क ने श्रादमी को जीते-जी सर्वज्ञ वना दिया। सर्वज्ञ वन जाने की वात कहे तर्क-शास्त्र को हजारों वरस हो गये, पर वह श्राज तक ऐसा श्रादमी पैदा न कर पाया, जो ठीक-ठीक यह वता दे कि कल क्या होगा ? फिर भी तर्क का सर्वज्ञ है, श्रीर हर जगह है।

तर्कबुद्धि ने कार्यकारण की तरफ ग्रादमी का व्यान खींचा। श्रादमी की इस इच्छा ने कि मैं मरने से पहले क्या था श्रीर मरने के वाद क्या होऊँगा, तर्कबुद्धि में जान डाली। कार्यकारण के श्राधार पर श्रादमी ने कोशिश शुरू कर दी कि वह गलत या सही ऐसी सीढ़ी तैयार करने लगा, जिसके डंडों पर पाँव रखकर वह श्रासानी से जब चाहे तव भविष्य के देश में जा पहुँचे या भूत के देश में जा धमके। भूत के देश में पहुँचकर उसने ग्रपने ग्रनेक जन्म का हाल लिख डाला। जन्मों के हाल लिखने में पुनर्जन्म के सिद्धान्त ने वड़ी मदद की। जिसे ग्राज का ज्ञानी विकास नाम देता है, उसे पुराना दार्शनिक पुनर्जन्म कहकर पुकारता है। पुनर्जन्म जब अपने पुराने जन्मों की बात कहता है, तो जहाँ-जहाँ वह विकास-सिद्धान्त से मेल नहीं खाती, वहाँ-वहाँ वह ह्रास-सिद्धांत से ग्रपनी वात पूरी कर लेता है।

इसी कार्यकारएा की वनायी सीमा से जव वह भविष्य में जाता है, तब स्वर्ग, नरक ग्रीर मोक्ष तैयार कर लेता है। नरक में वह इस दुनिया की तकलीफों को कई गुना बढ़ाकर ग्रपना मन समभा लेता है ग्रीर स्वर्ग में सुखों को कई गुना बढ़ाकर ग्रपनी तसल्ली कर लेता है। नरक में जब वह नारकीयों को बड़ी-बड़ी तकलीफों देने लगा, तो उसे मीत का ध्यान ग्रा गया ग्रीर मौत के

साथ-साथ ग्रादमी के उमर की वात याद ग्रायी। इन दोनों ने मिलकर कोशिश की कि आदमी के सोचे हुए इस सिद्धान्त को ढा दे कि नरक में हजारों तकलीफें उठानी पड़ती हैं, तो वह मर क्यों नहीं जाते ? हजारों वर्ष तकलीफ देने के लिए नारकीयों की देह इस किस्म की बना ली गयी कि अगर वे कोल्ह में पेले जायँ, तो मरने न पायें। ऐसी देह वनाने के जोश में इस वात का ध्यान न रहा कि दुनिया में मौत उस वक्त ग्रा जाती है, जब दु:ख सहा नहीं जाता। फिर नरक में दु:ख देने पर ग्रगर मौत नहीं होती, तो वह दु:ख दुनिया के दु:खों से वड़कर कैसे हो सकता है ? इसी तरह जो स्वर्ग गढ़े, उनका तर्क इसी तरह पोच है, जिस तरह नरकों का। यह बात किसीसे छिपी नहीं कि ग्रादमी खाना खाता है, तो कुछ निकालता भी है, पानी पीता है, तो उसका भी कुछ हिस्सा वाहर फेंकता है। पसीना, कान का मैल, श्रांख की कीचड़, नाक की सिनक, मुंह का थूक, स्तनों का दूब, टट्टी, पेशाव, यहाँ तक कि माहवारी लाल पानी ग्रादमी के जिस्म से निकलता रहता है। इन सवके विकास में ग्रादमी हल्के-हल्के मुख का अनुभव करता है। सबसे ज्यादा मुख आदमी वीर्य के निकालने में मानता है ग्रीर इसी तरह का सुख स्त्री उन ग्रन्थियों से रस वहाने में मानती है, जो उसके गर्भाशय के श्रासपास हैं। इन सबसे यह नतीजा निकला कि ग्रादमी खाना खाने में ग्रानन्द मानता है श्रीर वह भी इसलिए कि खाना खाते वक्त उसकी जीभ ग्रीर मुँह की ग्रन्थियाँ कुछ रस निकालती हैं यानी ग्रानन्द ग्रहरा करने ग्रौर निकालने में है। इस ग्रहरा ग्रौर निकास की क्रिया का नाम ही आनन्द है ग्रीर इसमें जितनी तेजी ग्रायेगी, उतना ही ज्यादा ग्रानन्द मिलेगा। कोकीन ग्रीर मदक के नशे में यही होता है। वच्चे को गुदगुदाने से ग्रन्थियों की क्रिया शुरू हो जाती है, इसलिए वह हँसता है। ग्रव ग्रादमी ने स्वर्ग के देवताग्रों को खड़ा करते वक्त विज्ञान की इस मामूली वात को एकदम भुला दिया। वह करता भी क्या? उस समय का ग्रादमी इतना विज्ञानी नहीं वन पाया था, जितना ग्राज का। ग्रार ग्राज का ग्रादमी नरक ग्रीर स्वर्ग का नक्शा वनाने वैठे, तो पुरानेनरक ग्रीर स्वर्ग से ग्रपने ढंग का विलकुल ग्रलग होगा। उसमें कोई ऐसी वात न होगी, जो ग्राज के विज्ञान पर कसी न जा सके।

## मोच की कल्पना

यादमी ने मोक्ष वनाकर तो अपनी कल्पना को ऐसी जगह पहुँचा दिया, जिससे यागे उसके लिए कोई रास्ता न रह गया। मोक्ष भी यादमी ने तरह-तरह का वनाया। एक यादमी ने मोक्ष वनाने में उस समय के सारे विज्ञान से मदद ली। विज्ञान ही यकेला ऐसा सच्चा ज्ञान है, जिसके सिद्धान्त उन कार्यकारण पर निर्भर हैं, जो यादमी की इन्द्रियों ग्रीर वृद्धि की हर तरह पहुँच के यन्दर हैं। इसलिए वह यटल है, उनमें कभी कोई यन्तर नहीं याता। वे जो हजारों वर्ष पहले थे, याज भी ज्यों-के-त्यों हैं। पानी पहले भी नीचे की तरफ वहता था, याज भी वैसे ही वहता है। याग हमेशा उपर को उठती रही है ग्रीर ग्रव भी वैसा ही करती है। पानी से हलकी चीज पानी पर तैरती

है, पानी से भारी चीज पानी में डूव जाती है। इसलिए मोक्ष की जो-जो वातें विज्ञान के श्राघार पर खड़ी थीं, वे ज्यों-की-त्यों हैं भीर जो कल्पना के ग्राघार पर थीं, वे ऐसी वेतुकी हैं कि ग्राज उन पर बच्चे को भी हँसी श्रा सकती है। लोक की जानकारी जितनी म्राज है, पहले उतनी नहीं थी। पर 'म्रनन्त' शब्द ग्रादमी की ऐसी ग्रनोखी ईजाद है, जो हमेशा से है ग्रीर हमेशा तक रहेगा। जिस ग्रनन्त को कभी कोई न नाप पायेगा, उस ग्रनन्त के मामले में पुराने-नये विज्ञानी सव एक हैं, पर जितने हिस्से में लोक को सान्त माना, उतने हिस्से में आज का विज्ञान उससे विलकुल मेल नहीं खाता। ग्राज लोक का सारा नक्शा इसी तरह श्रजायवघर की चीज वन गया है, जिस तरह पाँच सी वरस पहले का दुनिया का नक्शा। पहले ग्रादिमयों का लोक ग्रादमी की तरह लम्वा खड़ा था, ग्राज का लोक गोल है ग्रौर चारों तरफ फैला हुग्रा है ग्रीर ग्र-लोक जैसी कोई चीज नहीं रह गयी है। पहले की दुनिया चपटी थी ग्रीर वह श्रचला थी। पृथ्वी का 'ग्रचला' नाम ग्रव ग्रजायवघर की चीज है या ग्रलंकार-शास्त्र का विषय है। ग्रव पृथ्वी घुमती है ग्रीर हजारों मील फी घंटे की चाल से घूमती है। वह ऋपनी कीली पर भी घूमती है ग्रौर सूरज के चारों तरफ भी घूमती है।

त्राज की त्राग की लपट पहले की ग्राग की लपट की तरह सीघी मोक्ष की तरफ नहीं, नरक की तरफ भी जाती है। इसी तरह ग्राज के पानी का स्वभाव विगड़ गया है, वह सिर्फ नरक की तरफ नहीं, स्वर्ग ग्रीर मोक्ष की तरफ भी जाता है।

कोई यह न समभे कि हम उस आग और पानी का जिक कर रहे हैं, जो सुनार अपनी फुंकनी से आग की ली नीचे की तरफ कर देता हैं या जिसे पानी के कारखानेवाले फुहारे के जरिये पानी को ऊपर फेंककर दिखा देते हैं। हम उस ग्राग ग्रीर पानी का जिक कर रहे हैं, जो एक ही वक्त में हिन्दुस्तान ग्रीर श्रमरीका में विपरीत स्वभाव से काम करते हैं। श्रव कीचड़ से लिपटी तुम्वी हर जगह पानी में पड़कर कीचड़ धुल जाने पर स्वर्ग या मोक्ष की तरफ दोड़ेगी, कहीं वह नरक की तरफ श्रीर कहीं स्वर्ग की तरफ, क्योंकि श्रव तो हमारी पृथ्वी के चारों तरफ ग्राकाश है, उसके चारों तरफ ज्योतिषी देव हैं। ग्राज के ज्योतिपी देव तरक्की कर गये हैं। ग्रव वे सुमेरु पर्वत का चक्कर नहीं काटते, नरक के नीचे होकर श्रीर स्वर्ग श्रीर मुक्ति-शिला के ऊपर होकर ग्राते हैं, इसलिए ग्राज की सिद्ध-शिला, जहाँ मुक्तजीव रहते हैं, पहली सिद्ध-शिला से करोड़ों-ग्ररवों गुनी वड़ी होनी चाहिए। अगर यह मान लिया जाय कि सारे जीव भारतवर्ष से ही मोक्ष जाते हैं, तो भी उन्हें मुक्ति-शिला तक पहुँचने में दिक्कत होगी, क्योंकि ग्राज का भारतवर्ष, जो रात के वक्त सूरज से उल्टी दिशा में होता है ग्रीर ग्राज की पानी की तह की तूंवी सूरज से विपरीत दिशा में जाती है, इसलिए ग्राज का मुक्त ग्रात्मा सिद्ध-शिला से विपरीत दिशा में चला जायगा। पर ग्राज के ग्रादमी को इन सब वातों से क्या लेना-देना ? ग्राज वह ग्रनेक ऐसी कल्पनाएँ कर रहा है, जो ग्राज के विज्ञान की कसौटी पर वहुत हद तक ठीक

उतरती हैं, पर उससे परे जाकर वह भी अपना रास्ता भूल जाती हैं। हमें यहाँ सिर्फ इतना कहना है कि ग्रादमी की इस इच्छा ने कि वह पैदा होने से पहले क्या था ग्रौर मरने के वाद क्या हो जायगा, ग्रनेक वहमों को जन्म दे दिया है। उन्हें सत्य मानकर ग्रादमी सचाई के रास्ते पर ग्रागे नहीं वढ़ सकता। जव वह वहमों को वहम मान लेगा, तो इनकी तह में रहनेवाली सचाई उसके हाथ लग जायगी ग्रौर कल्पना के हाथ की चढ़ाग्री कलई या मुलम्मा दूर हो जायगा।

#### फलित ज्योतिप वड़ी वला है

फलित ज्योतिष सवसे वड़ी वला है। इसने पढ़े-लिखे ग्रीर ग्रपढ़, सभीका दिमाग खराव कर रखा है। हमने पूर्वी ग्रीर पश्चिमी, दोनों तरह के ज्योतिष-ग्रन्थों को कई वरस वहुत ध्यान से पढ़ा। हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि दोनों में से कोई ५०-१०० वरस ग्रागे-पीछे की वात वताना तो एक ग्रोर, कल की नहीं वता सकता, पाँच मिनट वाद की नहीं वता सकता, पाँच मिनट वाद की नहीं वता सकता, पाँच मिनट पहले की नहीं वता सकता। हाँ, जो घटनाएँ कार्य-कारएा के ग्राधार पर वतायी जाती हैं, उनके वारे में ठीक-ठीक ग्रनुमान लगाया जा सकता है। पर उन ग्रनुमानों के लिए फलित ज्योतिप के ग्रन्थ विलकुल वेकार रहेंगे। जैसे, कढ़ाई में राँगा डालकर ग्राग पर चढ़ा दिया जाय ग्रीर यह पूछा जाय कि क्या होगा, तो एक रसायनशास्त्री जितना ठीक वता सकेगा, उतना एक फलितज्योतिपी नहीं। ठीक इसी तरह

एक फिलतज्योतिषी ग्रह्ण के वक्त को इतना ग्रच्छा नहीं वता सकता, जितना एक गिएतज्योतिषी ।

फिलत ज्योतिप में जो सिद्धांत माने गये हैं, उनके पीछे सचाई नहीं। यह कह देना कि ज्ञानि ग्रीर सोमवार को पूर्व की तरफ दिशाशूल रहता है, ग्रपने पीछे कोई सचाई नहीं रखता। क्योंकि इसके साथ-साथ उसी फलित ज्योतिप में यह वात मिलेगी कि पड़वा ग्रौर नीमी को पूर्व में दिशाशूल होता है। ग्रव जिस दिन गुक्त है, उस दिन दिन के खयाल से पूर्व में दिशाशूल नहीं है और ग्रादमी पूर्व की तरफ जा सकता है, पर ग्रगर उस दिन पड़वा या नौमी में से कोई है, तो श्रादमी पूर्व में नहीं जा सकता। ग्रव ग्रादमी पड़वा या नौमीवाले ज्योतिपी को माने या शनि ग्रौर सोमवारवाले को ? फलित ज्योतिष का यह खुल्लमखुल्ला घोखा न जाने क्यों पढ़े-लिखों के गले नहीं उतरता ? सारा फलित ज्योतिप इसी तरह की उल्टी वातों से भरा पड़ा है। तिथि का नतीजा कुछ है, उसी दिन के नक्षत्र का नतीजा कुछ है, उसी दिन के योग का नतीजा कुछ है, उसी दिन के वार का नतीजा कुछ है, उसी दिन की उदय राशियों का नतीजा कुछ है। दुनिया में कोई ज्योतिपी ऐसा नहीं और न हो सकता है, जो उन सवका ठीक-ठीक मेल विठा दे। दुनिया के कोई दो ज्योतिषी किसी एक वात पर कभी एकमत नहीं हो सकते। अव रही यह वात कि ज्योतिपियों की कोई-कोई वात सच क्यों निकल आती है ? यह ज्योतिपियों की ही क्यों, पागलों की भी सच निकल ग्राती है,। हर ब्राद्मी की एक-दो नहीं, सौ में से पचास वातें सच

निकल सकती हैं और हर रोज निकलती हैं। उदाहरएा के लिए आसमान पर घटा छाने दीजिये और सी आदिमियों से पूछिये कि यह वरसेगी या नहीं और लोगों को अपनी मर्जी से जवाव देने दीजिये, तो सी में से पचास आदिमियों की बात जरूर ठीक निकलेगी। अब एक ही आदिमी से सी बार घटाएँ छाने पर वरसनेन वरसने की बात पूछिये, तो उस एक आदिमी की बात भी पचास बार ठीक निकलेगी। इसलिए हरएक आदिमी इतना फिलत-ज्योतिषी है, जितना वह आदिमी, जो फिलतज्योतिषी का बाना पहने हुए है।

घटा छोड़ ग्राप पाँसे को ले लीजिये, जिसमें एक-दो-तीन-चार ग्रंक पड़े हैं ग्रीर किसी ग्रादमी को ग्रपने सामने विठा लीजिये। पाँसा फेंकने से पहले यह पूछिये कि एक-दो-तीन-चार में से कौन सा नम्बर श्रायेगा ? सौ वार पांसे डालिये, वह श्रादमी सी में से पचीस वार या एक दो कम-ज्यादा विलकुल ठीक वता देगा। भ्रव भ्राप सौ भ्रादमी इकट्टे कर लीजिये भ्रीर एक वार ही पाँसा डालिये ग्रीर उन सबसे पूछिये कि एक-दो-तीन-चार में से क्या नम्बर श्राया है, तो उनमें से पचीस श्रादिमयों की वात ठीक निकलेगी। थोड़ी वहुत कमी-वेशी भी हो सकती है। श्रव एक ऐसा दाना लीजिये, जिसके छह पहलू हैं श्रीर उनमें १-२-३-४-५-६ तक नम्बर पड़े हैं। ग्रव उस पाँसे को डालिये ग्रौर किसी एक ग्रादमी से सौ वार पूछिये, तो वह १६-१७ वार जरूर ठीक वता देगा। श्रव सौ श्रादमी इकट्टे कर लीजिये श्रीर उनसे पूछिये ग्रीर एक ही वार पाँसा डालिये, तो सी में से

१६-१७ ग्रादमी विलकुल ठीक वता देंगे कि कीन-सा नम्बर ग्राया है। सट्टो का जुग्रा इसी ग्रनुपात के वल पर खड़ा है। सट्टा बुरा समभा जाता है। सरकारों की कोशिश रहती है कि सट्टा वन्द किया जाय। पर फलित ज्योतिप, जिसमें सी में से क्या, हजार में से एक का भी ग्रनुपात नहीं ग्रा सकता यानी हजार वातों में से एक वात भी सच नहीं निकल सकती, यह सट्टा ग्रीर जुग्रा नहीं तो क्या है? सट्टो ग्रीर जुए से वढ़कर इस घोखेवाजी को सरकार क्यों नहीं रोकती? उन सरकारों ने कहीं-कहीं फलित ज्योतिप के स्कूल खोल रखे हैं ग्रीर वह दोषी कहाँ है? जैसी रूह वैसे फरिश्ते! जैसी जनता वैसी सरकार!

## इस्तरेखा-शास्त्र भी भूड

फलित ज्योतिष की तरह रमल विलकुल भूठ होता है। वह फिलित ज्योतिष का हिस्सा है। यही हाल हस्तिवद्या यानी हाथ देखने का है। वह फिलित ज्योतिष की एक शाखा है। उसमें उन्हीं ग्रह-नक्षत्रों से काम लिया जाता है, जिनसे ज्योतिषी ज्योतिष में विना किसी सच्ची दलील के किसी ग्रह को बुरा श्रीर किसीको भला मान बैठे हैं। हमारे पढ़नेवाले श्रगर किसी ज्योतिष की किताब को जरा उठाकर देखें, तो उन्हें मालूम हो जायगा कि सारे ग्रह बुरे ही बुरे हैं, भला कोई रह ही नहीं जाता। सूरज जैसा ग्रह, जो इतने काम का है, जिसके वगैर दुनिया एक दिन जिन्दा नहीं रह सकती, उस तक को फिलित ज्योतिष ने बुरा मान रखा है। हो सकता है, फिलित ज्योतिष का जन्म ऐसे महीने श्रीर ऐसे देश में हुश्रा हो, जहाँ खूब गर्मी

पडती हो ग्रीर जेठ-वैसाख की लूचल रही हो। ग्रव इस तरह के मनमाने सिद्धान्तों के वल पर कोई ग्रादमी कैसे रमल के जिरये या हाथ देखकर यह वता सकता है कि कल क्या होगा ? रही यह वात कि इन रम्मालों ग्रीर हाथ देखनेवालों की कोई-कोई वात सच क्यों निकल ग्राती है? हम ऊपर लिख चुके हैं कि इस तरह के रम्माल ग्रीर हाथ देखनेवाले हम सव भी हैं। हममें से कोई अगर किसीका हाथ देखकर कुछ वताने बैठ जाय, तो उसकी दो-चार वातें सच निकल ग्रायेंगी। लेकिन हम पढ़नेवालों की ग्रीर भी ज्यादा मदद करना चाहते हैं। वह यह कि दुनियादारों में से हर श्रादमी को दुनिया से कुछ ऐसी शिकायतें हैं, जो दुनिया के दूसरे ग्रादिमयों को भी हैं। यानी दुनिया के सब श्रादिमयों को दस-बीस एक-सी शिकायतें हैं ग्रीर सारे ज्योतिपी, रम्माल ग्रीर हाथ देखनेवाले इस ज्ञान से फायदा उठाते हैं, दुनिया को घोखा देते हैं श्रीर ग्रपने पेट के लिए पैसा कमाते हैं। वे वातें हम सुभीते के लिए नीचे दिये देते हैं।

किसीका हाथ देखकर कोई श्रादमी वड़ी श्रासानी से यह कह सकता है कि तुम कमाते वहुत हो, पर तुम्हारे पास पैसा टिकता नहीं। यह वात सौ फी सदी ठीक निकलेगी। श्रमीर-गरीव सवको यह शिकायत वनी है। श्रव रह गया कोई इक्का-दुक्का कंज्रस, वह किसीसे छिपा नहीं रहता। उसके वारे में कोई क्यों ऐसी भविष्यवाणी करने लगा?

कोई ग्रादमी किसीका हाय देखकर या जन्मपत्री देखकर

वड़ी ग्रासानी से यह कह सकता है कि तुम जिसके साथ भलाई करते हो, वही तुम्हारे साथ बुराई करता है। यह भी दुनिया की ग्राम शिकायत है। यह बात भी सी फी सदी ठीक निकलेगी। ऊपर वतायी हुई बात ग्रीर यह बात कहकर ग्राप बहुत जल्दी ग्रपने ग्राहक पर ज्योतिषी होने का ग्रसर डाल देंगे।

किसीकी जन्म-कुण्डली या हाथ देखकर यह वात भी यासानी से कही जा सकती है कि ग्राप ग्रच्छे वनने की कोशिश करते हैं, पर सफल नहीं हो पाते। यह वात चाहे ग्रापने भूठ कही हो ग्रीर चाहे ग्रापका ग्राहक सिर से पैर तक दिन ग्रीर रात वदमाश वनने की कोशिश में लगा हो, पर वह ग्रापकी इस वात को विलकुल सच मान लेगा। क्योंकि दुनिया के सव चोर, डाक्न, उचक्के, वदमाश, रिश्वती यही समभते हैं कि वे जो कुछ कर रहे हैं, दुनिया की भलाई के लिए ग्रीर भले वनने के लिए करते हैं; फिर न जाने क्यों दुनिया उनको भला नहीं समभती! इसलिए यह वात भी सौ फी सदी ठीक निकलेगी।

किसीकी जन्म-कुण्डली देखकर वेखटके कहा जा सकता है कि तुम वालकपन में काफी वीमार रहे हो। ग्रगर किसीको वैद्यक की थोड़ी जानकारी हो, तो वह यह भी कह सकता है कि किस उम्र में ज्यादा वीमारी रही। यह कौन नहीं जानता कि जब बच्चे के दाँत निकलते हैं, तो वह ग्राधा वीमार तो हो ही जाता है। इसलिए यह वात भी सब दुनियादारों पर समान रूप से लागू होती ग्रीर सो फी सदी ठीक वैठ सकती है।

फिर जो ग्रादमी ज्योतिषी का पेशा कर बैठते हैं, वे इघर-

उघर की और वातें भी इकट्ठी कर लेते हैं और उनसे फायदा उठाते हैं। नीचे हम एक अपने मित्र ज्योतिषी की सुनाई वात कहते हैं।

हम एक दिन अपने मित्र ज्योतिषी से पूछ वैठे कि 'हम ज्योतिष को ठीक नहीं मानते। फिर तुम किस तरह इस भूठी विद्या से कमा खाते हो ?'

वह हँसकर वोला, 'हम ज्योतिष से नहीं कमाते, ज्योतिष के वाने और ग्रादमी की मानसिक कमजोरी ग्रीर मानसिक दासता से कमाते हैं।'

हमने पूछा, 'कैसे ?'

वह वोला, 'सुनिये। एक दिन मैं बनारस में गंगा के किनारे स्नान कर रहा था। मुक्त कुछ दूर एक भ्रादमी भौर स्नान कर रहा था। वह नहाने के वाद जव घोती वदलने गया, तो श्रपनी ग्रंटी में से रुपये निकालकर उसने तखत पर रखे। मैंने ग्रंदाज लिये, पचास रुपये हैं। उसने घोती वदलकर फिर उन रुपयों को ग्रंटी में लगा लिया। वह चल पड़ा। मैं उसके पीछे-पीछे हो लिया। वह काशी स्टेशन पहुँचा। वहाँ उसने टिकट लिया। मैंने मुगलसराय का टिकट खरीदा। मैं उसके साथ हो लिया। जिस डिक्वे में वह बैठा, उसीमें मैं वैठा। थोड़ी देर में उसी डिक्वे का एक श्रीर मुसाफिर मुक्ते मेरे वाने से पहचानकर वोला, ज्योतिषीजी, श्रापको हाथ देखना ग्राता है? मैंने कहा, में यही काम करता हूँ ग्रीर उसका हाथ देखने लगा। वह मुसाफिर, जिसका मैं गंगा घाट से पीछा कर रहा था, एकदम फट पड़ा

ग्रीर वोला, ग्ररे देख लिये वहुत-से ज्योतिपी ! तू हाथ देखकर नया खाक वतायेगा ? तू कल की वात तो पीछे वताना, पहले यही वता कि मेरी ग्रंटी में कितने रुपये हैं ? मैं वोला, सेठजी, ग्रापको ऐसे-वैसे ज्योतिषियों से पाला पड़ा है, कभी कोई सच्चा ज्योतिषी ग्रापको मिला नहीं, इसलिए ग्राप ज्योतिषियों को गाली दे सकते हैं, इन भूठे ज्योतिषियों ने हम सच्चे ज्योतिषियों को वदनाम कर रखा है।

'रही यह वात कि ग्रापकी ग्रंटी में कितने रुपये हैं, यह वताना हम जैसे सच्चे ज्योतिषियों के लिए वायें हाथ का खेल है, पर सेठजी, यह किहये कि श्रगर मैंने सच-सच वता दिया, तो फिर क्या होगा ? सेठजी वोले, हम ग्रभी तुम्हें एक रुपया देंगे। में वोला, सच्ची वात के लिए ग्रीर एक रूपया ! सेठजी जोश में ग्राकर वोले, ग्रच्छा पाँच सही । मैंने कहा, भ्रच्छा दिखाइये हाय । उनका हाथ देखा । एक-दो मिनट इसमें लगाये । फिर ग्रपना पत्रा निकाला, एक कागज निकाला । उस पर कुण्डली वनायी । उसमें एक से लेकर वारह तक लिखा ग्रीर उस पर सेठजी की ग्रँगुली रखवायी । थोड़ी देर सोचा ग्रीर वता दिया कि ग्रापकी ग्रंटी में पचास रुपये हैं। अव क्या कहना था! सेठजी लट्टू हो गये। पाँच रुपये तुरत मेरे हाथ में थमाकर वोले, तुम कहाँ जा रहे हो ? मैंने कहा, मुगलसराय । वोले, हमारे साथ ग्रारा क्यों नहीं चलते ? हम तुम्हारे लिए मुगलसराय से आगे का टिकट खरीद लेंगे ग्रीर वहाँ तुम्हारी खूव ग्रामदनी करा देंगे। ऐसे सच्चे ज्योतिपी कहाँ मिलते हैं ! मैं उनकी वात मान गया। थोड़ी

देर में उस डिब्बे में ही मैंने दो रूपये ग्रौर सीवे कर लिये। श्रारा पहुँचकर मैं सेठजी के घर एक महीना रहा ग्रौर पूरे तीन सौ रुपये कमाकर घर लौटा। यह है हमारा ज्योतिष।

वस, ग्राजकल के ज्योतिषी इस तरह ग्रादमी की कमजोरी का फायदा उठाते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि फलित ज्योतिष जहाँ तक पहुँच चुका है, उसके ग्राधार पर थोड़ी बुद्धिमानी के साथ भ्रादिमयों की जिन्दिगियाँ पढ़-पढ़कर एक भ्रादिमी के लिए भ्रन्दाज से भ्रलग-ग्रलग लाखों कुण्डलियों के फल लिखे जा सकते हैं श्रीर उनमें वहत-से ऐसे निकल सकते हैं, जिनका दसवाँ-वीसवाँ हिस्सा किसीके जीवन पर पूरा ठीक वैठ सकता है, जिस तरह ग्राजकल की लिखी हुई कहानियाँ या उपन्यास । पर क्या इससे यह सावित हो सकता है कि फलित ज्योतिष-विद्या ठीक है ? दुनियादारों की जीवनी भी इनी-गिनी किस्मों की हो गयी हैं। जिस तरह सिनेमा के सव खेल कुछ किस्मों में वाँटे जा सकते हैं, इसी तरह दुनिया के दो ग्ररव ग्रावादी के ग्रादिमयों की जीवनियाँ कुछ किस्मों में वाँटी जा सकती हैं। वे थोड़ी वहुत सबके लिए ठीक निकल सकती हैं और उसके वल पर ग्रादमी की पैदाइशी कमजोरी से फायदा उठाया जा सकता है। मानसिक दासता ने ज्योतिप, रमल ग्रीर हाथ देखने को ही पनपने नहीं दिया, सैकड़ों श्रीर वहमों को जन्म दिया ग्रीर पनपाया है। इसलिए इससे ऐसे ही पीछा छुड़ाना पड़ेगा, जैसे ग्रीर दासताग्रों से ।

छींक हो जाने पर दूसरे के घर न जाना, विल्ली रास्ता काट जाने पर जाते-जाते लौट ग्राना, काली चिड़िया के दायें-वायें वोलने पर सगुन-ग्रसगुन समभना, तेली के सामने ग्रा जाने से ग्रसगुन हो जाना ग्रीर पानी का घड़ा सिर पर लिये किसीके ग्रा जाने पर सगुन बन जाना या सामने से मुर्दा ग्राने पर ग्रच्छा समभना, इस तरह के ग्रनगिनत वहम ग्रादमी ने ग्रपने सर बाँध रखे हैं। उसी ग्रादमी से यह छिपा नहीं है कि समय-समय पर बुद्धिमानों ने ग्रादमियों के इन वहमों को काट फेंकने के ग्रीजार बनाये ग्रीर वे ही ग्रीजार कुछ ग्रादमी ग्रपनाकर ग्रपनी पेट की कमाई का जिर्या बना बैठे हैं ग्रीर उनसे उन वहमों को न काटकर उन वहमों की जड़ को पानी दे रहे हैं।

जिस तरह छींक हो जाने पर जरूरी काम पर जाने से न रुकने के लिए सममदारों ने छींक का वहम मिटाने की यह तरकीव निकाल दी कि छींक होने के बाद पानी पीकर चला जा सकता है, इसी तरह अगर दिशाजूल हो, तो उससे एक दिन पहले किसी दूसरे ग्रादमी के घर ग्रपना कोई कपड़ा पहुँचा देने से चाला उसी दिन की हो जायगी श्रीर फिर दिशाशूल के दिन चला जा सकता है। ठीक इसी तरह बिल्ली के रास्ता काटने पर पाँव के जूते वदलकर या दो-चार कदम उल्टे चलकर आगे का रास्ता लिया जा सकता है। ये सब बातें यह बता रही हैं कि इन सगुनों की तह में कोई सचाई नहीं, महज वहम है। वहम को दूर करने के लिए एक नये वहम को जन्म देना पड़ा और वह एक नयी विद्या वन वैठा । इसलिए वहम का सिलसिला दूटने की जगह ग्रीर वढ़ा। यह उस वक्त तक बना रहेगा, जब तक आदमी को सचाई से पूरी मोहब्बत न हो । जब तक वह सत्य को ही परमेश्वर न

माने ग्रौर सत्य के सिवा ग्रौर सव देवी-देवताग्रों को ग्रपने दिमाग से निकाल वाहर न कर दे।

यह ठीक है, वहम हमारे अन्दर इतने गहरे घर कर गये हैं कि हम यह कहकर भी 'हमने वहम छोड़ दिये', वहमों से छूट नहीं पाते। पर इससे हमें घवराने की जरूरत नहीं। वहमों के न मानने की वात कहकर हम कुछ आगे जरूर वढ़े हैं। एक दिन ऐसा आकर रहेगा कि हम इतने आगे वढ़े मिलेंगे, जब वहमों का कोई असर हमारे दिल पर न रह गया होगा। या अगर होगा, तो इतना हल्का कि वह काबू से वाहर न होगा।

. . .

#### · सत्य श्रोर श्रन्ध-विश्वास

विश्वास ग्रच्छी चीज है, पर ग्रन्ध-विश्वास नहीं। ग्रन्ध-विश्वासी को सत्य चुभता है ग्रौर जब कोई चीज चुभती है, तो कोध ग्रा जाना बड़ी वात नहीं। कोध ग्राने पर भगड़ा खड़ा हुए बगैर नहीं रहता। नतीजा यह होता है कि सत्य की चाल या तो रुक जाती या धीमी पड़ जाती है।

यह वात किसीसे छिपी नहीं है कि उस वंदर ने क्या गजव ढाया था, जिसने जुगतू को ग्राग की चिनगारी मान लिया था। वह ग्रपने ग्रन्थ-विश्वास में इतना मस्त था कि उसे वया की सीख ऐसी चुभी, मानो उसके कोई वर्छा चुभा रहा हो। उसने गुस्से में ग्राकर वया का घोंसला तोड़ डाला। इस तरह की वातें ग्राये दिन हर मुल्क में हो रही हैं, होती रही हैं। नतीजा यह होता है कि सत्य इने-गिने ग्रादिमयों में रह जाता है, जनता तक नहीं पहुँच पाता। फिर किसी ग्रादमी को सुभता है, वह कोई सत्य लेकर खड़ा होता है। जैसे ही वह उसे जनता तक पहुँचाने में सफल होता है, कोई ग्रादमी वंदर की तरह ग्रा कुदता ग्रीर उसके वने-वनाये घोंसले को तोड़ डालता है।

# श्रन्ध-विश्वास कैसे छोंड़ दें ?

ग्रंध-विश्वास के खिलाफ हमेशा श्रावाज उठती रही है।

ग्रंघ-विश्वास श्रपनी जगह इसलिए नहीं छोड़ पाता कि सैकड़ों पंडितों, मीलवियों, पादरियों का यह ग्रन्नदाता वना है। ६०-६५ फी सदी पंडित, मौलवी और पांदरी खुद उस ग्रंध-विश्वास में फँसे नहीं होते, पर पेट के खातिर उसके नाश की वात नहीं सोच सकते। जब किसी देश पर विदेशी का राज होता है, तो पेट के खातिर लोग विदेशियों की नौकरी कर लेते हैं। कुछ दिनों में उसी राज के इतने विश्वासी हो जाते हैं कि ग्रगर उनसे स्वराज्य की वात कही जाय, तो काट खाने को दौड़ेंगे, जिस तरह वंदर वया पर भापटा था। पर क्या मुल्क को भ्राजाद करनेवाले उनकी परवाह करेंगे ? वह उनकी घुड़िकयों, धमिकयों ग्रीर नोच-काट सब वरदाश्त करके अपना देश श्राजाद करेंगे ही। ग्रंध-विश्वास हमारे दिलों पर विदेशी राज की तरह जमा है, तो क्या सत्य के पुजारी इन ग्रंघ-विक्वासियों की मारकाट से डरकर चुप वैठे रहेंगे ? सत्य को उन तक न पहुँचायेंगे ? जरूर पहुँचायेंगे। सत्य ग्रागे वढ़ा है, वढ़ रहा है ग्रीर वढ़ता रहेगा। हमें उसकी चाल तेज करनी होगी। उसे तेज करने के लिए हर वात साफ-साफ कहने की जरूरत है। एक वार नंगा सत्य जनता के सामने ग्राना ही चाहिए। यह किसे नहीं मालूम कि . जो श्रासमान को लक्ष्य करके तीर छोड़ता है, उसका तीर सबसे ऊँचा जाता है। जब हम नंगा सत्य लेकर खड़े होंगे, तो वह श्रपने श्राप दूर तक जनता के दिलों में पहुँचेगा।

वंदर को गलत विश्वास नहीं होजा। कोई ग्रादमी विश्वास को निगाह में रखकर अपने जीवन पर नजर डाल जाय, तो उसे अनेक उदाहरण मिल जायेंगे, जहाँ उसने बंदर जिसी भूल की होगी। हमें अपने जीवन की एक वात याद आ गयी। में उन दिनों वारह वरस का था। मेरी दिनचर्या थी: सुबह उठा, मुँह-हाथ धोया, एक लड्डू खाया, स्कूल चल दिया। अगर उस दिन स्कूल न हुआ, तो घर पर ही स्कूल के काम में या खेल में लग गया। अगर स्कूल गया, तो ग्यारह वजे वापस आने पर खाना खाया, खेलने चल दिया, नौ बजे दूध पिया और सो गया। यह सब काम मशीन की तरह चलता था। एक दिन स्कूल की छुट्टी थी। मैं मुँह-हाथ घोकर स्कूल के काम में लग गया। नौ वजे के करीब मां को याद आयी कि आज मैंने लड्डू नहीं खाया। मां लड्डू लेकर आयी। मैं एकदम वोल पड़ा, 'मैं खा चुका।'

माँ ने कहा, 'नहीं खाया।'

मैंने फिर कहा, 'मैं खा चुका।'

त्राखिर वड़ी मुश्किल से माँ मुभे यह विश्वास करा पायी कि मैंने लड्डू नहीं खाया। जैसे ही विश्वास हुआ कि भूख चेत गयी। इससे पहले भूख न थी। वताइये, ग्रंघ-विश्वास छोड़ना कितना मुश्किल है ?

## श्रन्ध-विश्वास में बुराई क्या है ?

सवाल उठ सकता है, इस ग्रन्ध-विश्वास में बुराई क्या है ? ग्रगर एक ग्रादमी ने विना खाये यह विश्वास कर लिया कि उसने खाना खा लिया ग्रौर उसका पेट भर गया, तब फिर क्यों उसे विश्वास कराया जाय कि उसने खाना नहीं खाया ? सवाल ग्रन्छा है, पर इसकी तह में जो बुराई है, उसकी तरफ भी ध्यान जाना चाहिए। पहले यह देखने की जरूरत नहीं कि ग्रंध-विश्वास से क्या फायदा हुग्रा, देखना यह है कि विश्वास उसने भूठ वात पर किया ग्रीर क्या भूठ का विश्वास ग्रच्छी चीज है? ग्रगर भूठ बुरी चीज है, तो उसका विश्वास ग्रीर भी बुरा। मेरे खयाल से दुनिया का कोई ग्रादमी, चाहे किसी धर्म का क्यों न हो, न भूठ पसन्द करेगा, न भूठे विश्वास को।

रही यह वात कि उस भूठ-विश्वास से फायदा है। वह फायदा ऐसा है, जैसे कोई श्रादमी रोटी की जगह खालिस पानी से पेट भरकर यह समफ ले कि उसका पेट भर गया या पानी की जगह मिट्टी खाकर समफ ले कि उसका पेट भर गया। पेट भर जाने का फायदा वेशक है, लेकिन क्या ग्राप समफते हैं कि वह पानी या मिट्टी उसकी देह बनाने का काम दे देगी? ठीक इसी तरह ग्रगर माँ मुफे लड्डू न खिलाकर मेरे मिथ्या विश्वास को न हटाती, तो मेरी देह को खाने से जो फायदा होता, उससे मुफे वंचित रखती। पर वह ऐसा कैसे कर सकती थी? इसी तरह सत्य के विश्वासियों को जब यह मालूम होता है कि कोई ग्रन्थ-विश्वासी वनकर जी रहा है ग्रीर वे यह भी समफते हैं कि ग्रन्थ-विश्वास जीवन का सच्चा सहारा नहीं, तव क्या वे उस श्रन्थ-विश्वासी से ग्रन्थ-विश्वास दूर करने के लिए कुछ न कहेंगे?

एक वार एक मशहूर पत्रकार ग्रपने पिताजी के पास जालंधर में वीमार पड़ गये। एक वैद्य का इलाज चालू हुग्रा। इलाज से थोड़ा फायदा हुग्रा। हफ्तों इलाज चला, पर पूरा फायदा न हो सका। ग्रव डॉक्टरों की मदद ली गयी। ढॉक्टरों ने एक्सरे लिया

श्रीर उस एक्सरेकी तसवीर के वल पर वताया कि उनको टी० वी० हो गया है और एक फेफड़ा विलकुल खराव हो गया है। उन्होंने समभ लिया, उन्हें टी० वी० है। इतना ग्रच्छा था कि डॉक्टर का इलाज शुरू न हुम्रा था। इलाज वैद्य के हाथ में था। वैद्यजी जैसे ग्राये, उनको बताया गया कि डॉक्टरों का कहना है, इनको टी० वी० है । वैद्यराज एकदम चींक पड़े । वोले, 'मेरी समभ में टी० वी० नहीं। 'पर जब सारे घरवालों ने कहा कि टी० वी० है, तब वैद्य ने मजबूर होकर कह दिया, 'मेरी राय में टी० वी० है नहीं, पर श्राप सव कहते हैं, तो मैं टी० वी० का इलाज शुरू करता हूँ। उस दिन से इलाज वदल गया, सोने की गोली चलने लगी। सोना टी० बी० का माना हुग्रा इलाज है। इघर टी० बी० का इलाज चला, उधर उनकी देह घुलनी गुरू हुई। एक दिन लेने के देने पड़ गये। कफन की तैयारियाँ हो गयीं। किसी तरह फिर दम ग्राया। उसी दिन लाहौर मेडिकल कॉलेज का वाइस प्रिन्सिपल, जो जालंघर का रहनेवाला था, जालंघर ग्राया था । उसे दिखाने के लिए बुलाया गया। उसने एक्सरे की तसवीर देखकर कहा, 'यह तसवीर ठीक श्रायी ही नहीं, इससे कुछ नहीं कहा जा सकता। तुम मुभको रोगी का थूक दे दो, उसे लाहीर ले जाऊँगा, वहाँ जाँच करके वताऊँगा कि इन्हें टी० वी० है या नहीं ?' इस वात का थोड़ा ग्रसर रोगी पर हुग्रा, वैद्यजी को वल मिला, पर दवा न वदली गयी । प्रिन्सिपल का लाहीर पहुँचने के वाद पाँच-चार दिन तक कोई पत्र न मिला। वीमारी फिर बढ़ी। एक दिन रात के ग्राठ वजे यह तय हुग्रा कि कोई ग्रादमी लाहीर जाकर उनसे जवाब लाये। जाने की तैयारी

हो चुकी थी कि अचानक प्रिन्सिपल का तार मिला। उसमें तीन शब्द थे—"नो टवरकल वेसिलि" यानी क्षयरोग का कोई कीड़ा नहीं। यह तार सुनकर रोगी का मिथ्या विश्वास ऐसे भाग गया, जिस तरह सूरज से अँधेरा। उसके दूसरे मिनट उसे जो नींद ग्रायी, तो सुबह पाँच वजे ग्रांख खुली। नौ घंटे की एक नींद! दूसरे दिन से वे उठने-बैठने लगे, सात दिन में ठीक हो गये।

ग्रन्ध-विश्वास ग्रीर मिथ्या विश्वास से यह फायदा तो हुग्रा कि सारा घर सतर्क हो गया ग्रीर दौड़-धूप शुरू हो गयी, पर ग्रगर यही विश्वास बना रहता, तो ग्राठ-दस दिन में या पन्द्रह-वीस दिन में रोगी को जीवन से हाथ घोना पड़ता ग्रीर उसे वद-नाम कर जाते, जिसका इलाज चल रहा था। ग्रन्ध-विश्वास कितना ही ग्रच्छा क्यों न हो, जिंदगी को इस तरह खाता रहता है, जिस तरह लकड़ी को घुन। ऊपर पता नहीं चलता, ग्रन्दर लकड़ी खोखली होती रहती है।

#### विश्वास के लिए लालच

विश्वास कराने के लिए लालच देने का रिवाज पुराना है। जब भी किसी नये धर्म ने जन्म लिया, तब उसने अपने सिद्धान्तों पर विश्वास कराने के लिए पहले धर्म से वढ़कर लालच दिया। धर्मों में इस तरह लालच देकर अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाना एक रिवाज वन गया है। इस ओर किसीकी नजर नहीं जाती कि इसमें क्या-क्या बुराइयाँ हैं। कुछ धर्म हैं, जो ब्रह्मचर्य पर बहुत जोर देते हैं। ब्रह्मचर्य बहुत अच्छी चीज है। अगर हम

स्वर्ग को विलकुल न मानें ग्रीर ब्रह्मचारी रहने का श्रभ्यास करें, तो इस दुनिया में ही इतना सुख पा सकते हैं कि स्वर्ग की कभी याद न श्राये। पर धर्मवाले हमें ऐसा करने का मौका नहीं देते। वे वचपन से हमारे कान में यह वात डाल देते हैं कि ग्रगर हम ब्रह्मचारी रहेंगे, तो हमें स्वर्ग में देवांगनाएँ मिलेंगी। जो धर्म ईश्वर के कर्तापन में विश्वास करते हैं, उनका काम वगैर ऐसी देवांगनाग्रों के चल नहीं सकता। हाँ, नामों में फर्क होगा। कहीं वह 'हूर' के नाम से पुकारी जायँगी, कहीं किसी ग्रौर नाम से। कहीं वह किसी तरह के कपड़े पहनेंगी, कहीं किसी तरह के। कहीं उनका शिष्टाचार कुछ होगा, कहीं कुछ, पर मूल वात में कोई ग्रन्तर न होगा। कर्तावादी ऐसा करते तो करते, ग्रक्तांवादी भी इस वला से न वच पाये।

सव अकर्तावादी दुनिया में रहते हुए सत्य, अहिंसा, अचौर्य, व्रह्मचर्य और अपरिग्रह पर जोर देते हैं, इसीको धर्म बताते हैं। सचमुच यह धर्म है भी। समाज इन पाँचों में से किसी एक के वगैर एक कदम आगे नहीं चल सकता। फिर न जाने किसलिए अकर्तावादियों को ऐसे स्वर्ग और नरक की जरूरत पड़ गयी, जहाँ इन पाँचों व्रतों में से कोई एक व्रत भी ठीक-ठीक नहीं मिल सकता।

इस पर जब हम विचार करने लगे, तो हमें अपनी बुआ की और माँ की याद आ गयी। हमें ऐसा मालूम हुआ कि हमारी हुआ पूरी कर्तावादी थीं और माँ एकदम अकर्तावादी।

े बुग्रा जब भी हमसे कोई काम लेना चाहती, तो जोर का

लालच देतीं, पेटभर मिठाई का नहीं, पेटभर दही-वड़े का लालच । दही-बड़े के लालच में हम यों ग्रा जाते थे कि हमारे माँ-वाप दही-वडे कभी पेटभर न खाने देते थे। हमारी बुग्रा इस लालच से सभी तरह का काम लेती थीं। हमें मंदिर जाने के लिए तैयार होने में इस लालच का उपयोग किया जाता था। जव कभी यह लालच फेल होता, तव डरावे से काम लिया जाता। उस डरावे में पाप लगना, रात को बुरे-बुरे सपने ग्राना, डर लगना, भूतों का ग्राना ग्रीर कोई वहुत वड़ी वात हुई, तो नरक में दु:ख पाना शामिल हो जाता। जव उनका यह उपाय फेल हो जाता, तो वे सीये उपाय से काम लेतीं, जो उन्होंने हमारे पिताजी से सीख रखा था यानी मारपीट । हमारी माँ इससे एकदम उलटी थीं। उन्होंने हमें कभी न इनाम का लालच दिया, न डर दिखाया। हाँ, वे इतना जरूर करतीं कि कभी किसी खास मौके पर श्रपनी सहेलियों में हमारा जिक्र कर देतीं कि हमारा लड़का वड़ा ग्रच्छा है ग्रीर वड़ा काम करता है । हमें याद नहीं पड़ता कि कभी हमारी माँ ने हमें कोई चीज देकर हमसे काम लिया हो। जब चीज देतीं, तव चीज देतीं, जव काम करातीं, तव काम करातीं। उनका हुक्म हम वड़ी खुशी से मानते थे, बुग्रा का हुक्म मानने में श्रानाकानी करते थे। कभी जान-वूक्तकर श्रानाकानी करते थे, वह इसलिए कि वैसा करने से कुछ-न-कुछ लालच हमें जरूर मिलता। मां के हुक्म के लिए ऐसा करने को हमारे दिल के किसी कोने में कोई जगह न थी।

माँ का हुक्म मानने में ग्रन्दर से ऐसी खुशी होती थी, मानो

हमारे ग्रन्दर कोई वैठा हमारी सारी देह गुदगुदा रहा हो। विलक्ल ऐसा मालूम होता, मानो हम अपना काम अपने-आप कर रहे हों। यह बात बुग्रा का हुक्म मानकर काम करने में नहीं होती थी। बुग्रा का काम कर लाने के वाद हमारा सारा ध्यान इस तरफ चला जाता था कि दही-वड़े खाने के लिए पैसे कव मिलेंगे। जब तक पैसे न मिलें, तब तक बुग्रा से तकाजा चलता था। करीव-करीव सारा दिन इसी भंभट में निकल जाता; क्योंकि दही-वड़ों की चाट शाम को ही खायी जाती। जव हम छोटे थे, तव तो हम बुग्रा ग्रीर माँ के हुक्म में तमीज न कर पाये। तीस वरस के होकर जव हमने वाहर ग्रीर श्रन्दर के सुख में फर्क करना श्रपने श्रनुभव से सीखा, तव दही-वड़े खाने का श्रानंद श्रौर श्रन्दर से वदन फूलने का श्रानंद, दोनों हमारे सामने ग्राकर खड़े हो गये। तव हम समभ पाये कि लालच के लोभ में किये काम अपने लिए भले नहीं होते। लालच भ्रन्दर का सुख नहीं दे सकता। यह हुई हमारे लिए वात, इससे हमारी वुग्रा कोई सवक थोड़े ले सकती थीं ! उनके लिए तो उनका तरीका ठीक था। उन्होंने समक्त रखा था, वह हमसे खूव काम लेना जानती हैं, उम्रभर उन्होंने उस तरीके को छोड़ा नहीं।

यह ग्राप-वीती लिखकर हम कहना चाहते हैं कि ग्रादमी ने ग्रपने इस रिवाज को ज्यों-का-त्यों घर्म के मामले में ग्रपना लिया है। यह विलकुल हमारी वुग्रा की नकल करता है। वह पहले घर्म के मनवाने में स्वर्ग का लालच देता है, ग्रगर उससे काम नहीं चलता, तो नरक का डर दिखाता है ग्रीर उससे न चले, तो डंडे से काम लेता है। जैसे हमारी वुग्रा थप्पड़ से काम लेकर यह समभती थीं कि वह हमारा भला कर रही हैं, वैसे ही धर्मवाले ग्रादिमयों को धर्म की खातिर वड़ी-वड़ी सजाएँ देकर यह समभते हैं कि वह उनका भला कर रहे हैं। ग्रधिमयों की जान लेकर वे यह समभते हैं कि वहुत भला कर रहे हैं, वदले में उन्हें ईश्वर की तरफ से वहुत विद्या इनाम मिलेगा। ग्रव, जव लोगों ने ऐसे विश्वास को ग्रपने ग्रन्दर जगह दे रखी है, तब यह ग्राशा करना कि दो धर्म ग्रापस में नहीं लड़ेंगे, बेकार की ग्राशा है। दो धर्मों के लड़ने की वात छोड़िये, पहले एक धर्मवाले ग्रपने उस सहधर्मी को सताना छोड़ें, जो सच्ची या नयी वात कहने खड़ा होता है।

ग्रंध-विश्वास में यह ऐसी वुराई है, जो सुख की खेती को कीड़ा वनकर खाती रहती है। सच्चा ग्रादमी तब तक किसी वात पर विश्वास नहीं कर सकता, जब तक कि वह ग्रपने दिल की तसल्ली न कर ले कि वैसी वात पर विश्वास करने के लिए उसे क्यों मजबूर किया जाता है? सच्चे ग्रादमी में जिस तरह ऐसा हठ होता है, वैसे ही उसमें दूसरा गुरा भी होता है। वह यह कि वह कभी किसीको किसी वात पर विश्वास करने के लिए नहीं कहता, जब तक कि वह उस वारे में उसकी पूरी तसल्ली न कर दे।

## लालच दिखानेवाले धर्म से कोसों दूर

हमारे एक मित्र थे। उनके वाप 'फ्रीमेसन' थे। उन्होंने कई वार ग्रपने वेटे से 'फ्रीमेसन' हो जाने को कहा, पर वे कभी राजी न हुए, क्योंकि उनके वाप उन्हें यह वताने के लिए तैयार न थे कि 'फ्रीमेसन' के क्या सिद्धान्त हैं। उनके वाप का कहना था, 'फ्रीमेसन' हो जाना बड़ी अच्छी वात है श्रीर 'फ्रीमेसन' हो जाने से वे खुद वहुत फायदे में रहे ग्रीर 'फ्रीमेसन' होकर ग्रनेक भंभटों से वचा जा सकता है। कभी कोई दुनियादारी की ग्राफत ग्रायेगी, तो 'फ्रीमेसन'वाले उन्हें बचा लेंगे। यह सव लालच उनके मन को न भाये। इसे हम अपने मित्र का भाग्य या उनकी बुद्धिमानी ही समभ सकते हैं, नहीं तो उनके वाप ने उन्हें लालच देने में कोई कमी न रखी थी। ग्रगर वे जरा कमजोर दिल के होते, तो फँस गये होते। यहाँ हम यह नहीं कहना चाहते कि फीमेसनरी के सिद्धान्त बुरे हैं। हम तो यह कहना चाहते हैं कि फीमेसनों में यह वहुत वड़ी वुराई है कि किसीको वह ग्रपने सिद्धान्त वताये विना श्रपनों में मिलाते हैं । इससे हरएक श्रादमी को यह कहने का हक हो जाता है कि उनके सिद्धान्त भूठे ग्रीर वाहियात हैं। अगर ऐसे नहीं हैं, तो कम-से-कम ऐसे तो जरूर हैं, जो फ़ीमेसनों को उन ग्रादिमयों पर जुल्म ढाने के लिए मजवूर कर देंगे, जो फ्रीमेसन नहीं हैं।

जो धर्म स्वर्ग का लालच या नरक का डर वताकर किसीको मुक्ति में, ईश्वर में या ग्रौर किसी ग्रहश्य शक्ति में विश्वास कराना चाहता है, वह धर्म सत्य से कोसों दूर है। वह धर्म ग्रादमी को उस ताकत का विश्वास नहीं करा सकता, जो ग्रादमी के ग्रन्दर मौजूद है या जिसे ग्रादमी पैदा होते वक्त ग्रपने साथ लाता है।

#### स्वतंत्र विचार से रोकना हत्या से वड़कर

जो धर्म या ग्रादमी, ग्रादमी के ग्रंदर वैठी विचार-शक्ति को दवाकर कुछ सिखाना चाहता है, वह अन्यायी है। उसे इसी तरह सजा मिलनी चाहिए, जिस तरह उसे, जो एक ग्रादमी को मार डालता है। किसी हालत में सम्भव है, ग्रादमी की गर्दन काट दी जाय ग्रीर उसका कुछ न विगड़े, मगर यह किसी तरह सम्भव नहीं कि ग्रादमी की ग्राजादी से सोचने की ताकत दवा दी जाय ग्रीर उसका कुछ न विगड़े। किसीको ग्राजादी से विचार करने ग्रौर जाहिर करने से रोकना उसे जीते जी मार डालना है। किसीको अपने विचारों के जाहिर कर डालने पर गुस्से से मार डालने से कई गुना बुरा है, उसके विचारों को जाहिर न होने देना । पर दुनिया में रिवाज यह है कि श्रादमी का सिर काटनेवाले को सजा मिलती है ग्रौर ग्रादमी के ग्रन्दर वैठे ज्ञान का सिर काटनेवाले को कोई सजा नहीं मिलती। ग्रादमी का सिर काटने का काम वे लोग करें तो करें, जो यह नहीं मानते कि ग्रादमी के ग्रंदर वैठा कोई ग्रात्मा भी है, पर जव वे लोग करते हैं, जो यह मानते हैं कि ग्रादमी के ग्रंदर श्रात्मा है, तो हमारे श्रचरज का ठिकाना नहीं रहता। श्रगर गहराई से देखा जाय, तो सिर काटने का काम'ग्राम तौर से ग्रात्म-वादी ही करते हैं। अनात्मवादी तो स्वतन्त्र विचार के पक्षपाती होते हैं। वे कभी किसीको ऐसी वात पर विक्वास करने के लिए मजबूर नहीं करते, जिसे वे ग्रच्छी तरह समक्ता न दें।

ये ग्रात्मवादी ग्रपने-ग्राप ग्रपने जाले में मकड़ी की तरह

फँस गये हैं। उन्होंने श्रात्मा को श्रकाट्य, श्रमर, ग्रच्छेद्य मानकर श्रादमी की देह की कदर करना छोड़ दिया। उन्हें श्रादमी की जान लेते कोई डर नहीं लगता। ये श्रात्म श्रीर परमात्मवादी ही हैं, जिन्होंने श्रूद्रों की रचना की, जिन्होंने श्रृद्धतों की एक नयी जमात खड़ी कर दी, जिन्होंने कुछ लोगों के लिए ऐसे कठोर नियम बनाये, जिनके लिए यह नहीं कहा जा सकता कि वे मनुष्यों के योग्य हैं श्रीर न यही कि वे मनुष्यों के रचे हैं। इन श्रात्म श्रीर परमात्मवादियों में यह सोचने की समभ ही नहीं रह गयी कि किसी श्रादमी को श्राजादी से विचार करने से रोकना उसका गला काटने से ज्यादा बुरा है।

# महापुरुषों का सिद्धान्त सत्य-रचा

यह किसे मालूम नहीं कि वीसवीं सदी का गांधी ग्रपनी जान देने पर उतारू हो जाता था, जव उसे ग्रपने विचार प्रकट करने से रोका जाता था। यह किसे नहीं मालूम कि लोकमान्य तिलक ने यह पसन्द किया कि उनकी देह जेलखाने की कोठरी में वंद कर दी जाय, पर यह पसन्द नहीं किया कि उन्हें उन विचारों को प्रकट करने से रोका जाय, जिन्हें वे ठीक समभते थे। उन्होंने कभी ग्रपने किसी चेले को लालच देकर या डर दिखाकर ग्रपनी वात मानने के लिए मजबूर नहीं किया। वे ग्रपनी दलीलें देते थे। ग्रपने शिष्य की तसल्ली करके ग्रपनी वात उसके गले उतारते थे। वे खूव जानते थे कि ग्रादमी के ग्रन्दर वैठे ग्रादमी को हर तरह पूरा स्वाधीन होना चाहिए, फिर चाहे उस

स्वाधीनता की खातिर वाहर रहनेवाले आदमी को कम या ज्यादा तकलीफ ही क्यों न सहनी पड़े।

जितने महापुरुष हुए हैं, उनके सिद्धान्तों से अगर कोई हिंसा हूँढ निकाले या असत्य बोलना सावित कर दे, तो यह सिर्फ खींचतान ही न होगी, महापुरुषों के सिद्धान्त को उलट देना होगा। सब महापुरुषों का एक सिद्धान्त होता है, सत्य की रक्षा। आरे सत्य की रक्षा इसके सिवा क्या हो सकती है कि हर आदमी को अपने विचार प्रकट करने की पूरी स्वाधीनता हो। कोई आदमी किसी वात पर विक्वास करने के लिए मजबूर न किया जाय। अगर उसे किसीने घोखा देकर यानी कोई लुभावा देकर या कोई डरावा दिखाकर किसी वात में विक्वास करने के लिए मजबूर हो कि वे सच्ची दलील देकर उस आदमी को उस विक्वास से हटा दें।

# पुराणों में हिंसा का समर्थन क्यों ?

पुराणों में ग्रौर कहीं-कहीं महापुरुषों के कामों में ऐसी वातों मिल सकती हैं, जो सीधे हिंसा का समर्थन करती हों। पर जहाँ तक हमारा खयाल है, वह हिंसा का समर्थन उन ग्रादिमयों के लिए नहीं होगा, जो कोई सत्य विचार प्रकट करते थे। विक्त वह इसलिए की गयी होगी कि वे लोगों को सत्य-विचार करने से रोकते होंगे, उन्हें कष्ट देते होंगे, उन्हें मारते होंगे। गांधीजी के मारनेवाले को फाँसी इसलिए नहीं दी गयी कि वह सत्य विचार करता था, विक्त इसलिए कि उसने एक सत्य-विचार प्रकट करनेवाले की जान ली। कान्तिवादियों ने जिन ग्रंग्रेज ग्रफसरों की जानें लीं, वह इस वास्ते नहीं लीं कि वे सत्य-विचारक थे या सत्य विचारों को प्रकट करनेवाले थे। वित्क इसलिए कि वे ग्रफसर उन ग्रादिमयों को सजा देते थे या मार डालते थे, जो यह सत्य-विचार प्रकट करते थे कि हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का है, ग्रंग्रेज उसके मालिक नहीं।

जो किसीकी जान लेता है, दुनिया का कानून उसकी जान लेगा। लेकिन पाँच व्रतरूपी धर्म जान लेनेवाले की जान न लेगा, क्योंकि उस घर्म यानी उस घर्म के घर्मी को यह ग्रच्छी तरह ज्ञान होता है कि ग्रादमी जव किसीकी जान लेता है, तो वह किसी-न-किसी अन्ध-विश्वास से दवा होता है। वह यह भी जानता है कि ग्रादमी का ग्रन्ध-विश्वास का दवाव किसी ग्रादमी की जान ले लेने के वाद दूसरे क्षरण से कम होना गुरू हो जाता है। इसलिए अगर उसे माफ कर दिया जाय श्रीर उस पर कुछ कोशिश की जाय, तो वह ग्रन्य-विश्वास छोड़कर सत्य-विश्वास को ग्रपना सकता है, ठीक विचारक वन सकता है ग्रीर दुनिया को वहुत फायदा पहुँचा सकता है। अहिंसावादी ने यह वात कुछ यों ही नहीं मान ली है। इस दुनिया में ग्रनेक हिंसक ग्राद-मियों को ग्रहिंसक वनते देखा है, सुना है, यह भी सुना है कि वहुत पहले जमाने में यह वदलाव होता रहा है। इसलिए वह श्रगर जान लेनेवाले की जान नहीं लेता, तो किसी हद तक ठीक करता है।

क्रान्तिकारी ग्रंग्रेजों को मारकर हिन्दुस्तान को ग्राजाद करना चाहते थे। यह ठीक है कि वे किसीके विचारों का गला नहीं घोट रहे थे। वे तो अन्यायी की गर्दन काटना चाहते थे। पर इस वात को भी तो ठीक मानना चाहिए कि वे इतने योग्य नहीं थे कि अन्यायियों का दिल वदल सकते । वे इतने योग्य इसलिए नहीं थे कि उनमें यह अन्ध-विश्वास था कि ग्राजादी की खातिर लड़ाई लड़ने में मर जाने से स्वर्ग मिलता है श्रीर जीते रहने से राज्य मिलता है। इस वात के लिए वे ग्रन्ध-विश्वासी थे कि दुइमन को मार डालने से कोई पाप नहीं लगता। उन्होंने दुश्मन की जान ली, पर सत्य-विचारों का गला नहीं घोंटा। उनकी इतनी ग्रच्छाई ग्रौर देशों के लिए भी वड़ी भली सावित हो गयी, क्योंकि जैसे ही म्रादिमयों के मन वदलने में विश्वास रखनेवाला ग्रौर ग्रहिंसा का सच्चे-दिल से पुजारी हिन्दुस्तान को ग्राजाद करने के लिए मैदान में कूदा, वह सव उसके साथी हो गये, जब कि कायदे से वह ग्रहिंसा का पुजारी क्रान्तिकारियों का दुश्मन होना चाहिए था, क्योंकि वह उनकी मान्यता का विरोधी था। पर क्रान्तिकारी तो विचार का गला षोंटने के पक्षपाती न थे, इसलिए वे अहिंसक को अपना दुश्मन क्यों समभते ? इतना ही नहीं, जो विचारों का गला नहीं घोंटता, वह दूसरे के विचारों को ध्यान से सुनता है, उसकी दलीलों पर गौर करता है, उसकी दलीलें ग्रगर मन-लगती होती हैं, तो उन्हें मान लेता है श्रीर उसीका वन जाता है। ऐसा ही इन समभ-दार क्रान्तिकारियों ने किया ग्रौर वह उस ग्रहिसक के जी-जान से साथी वन गये। हिन्दुस्तान भ्राजाद हो गया। गुलामी का साँप ग्रपने-ग्रापं भाग गया । न साँप मरा, न लाठी टूटी ।

ऊपर के उदाहरएा हमने इसलिए दिये हैं कि कहीं कोई आदमी पुराणों की हिंसा या महापुरुषों के कामों की हिंसा से कोई गलत पाठ लेकर अन्ध-विश्वासी न वन वैठे और हिंसा- अहिंसा पर स्वतंत्र विचार करने की योग्यता न खो वैठे। हमारा ऐसा खयाल है कि दुनिया ने जिस दिन स्वतंत्र विचारों की कदर करना सीखा, उस दिन अपने-आप दुनिया पर सत्य और अहिंसा का राज्य हो जायगा। सत्य के साथ अहिंसा को कहने का रिवाज- सा ही पढ़ गया है। केवल सत्य काफी है। इसलिए यह कहकर भी काम चल सकता है कि दुनिया पर सत्य का राज्य हो जायगा। सत्य का दूसरा नाम है परमेश्वर। परमेश्वर को ही कुछ लोग राम कहकर वोलते हैं, इसलिए सत्य के राज्य को 'रामराज्य' कहा जा सकता है।

# विचारों की स्वतन्त्रता सरकार की कसौटी

स्वतंत्र विचार की ग्राजादी ऐसी कसौटी है, जिस पर दुनिया की सरकारें कसी जा सकती हैं ग्रौर यह वताया जा सकता है कि सरकारें किस हद तक जनतावादी हैं। ग्राज ऐसा कौनसा देश है, जो इस वात का ग्रिभमान कर सकता है कि उसके यहाँ विचारों की पूरी ग्राजादी है। जिस देश में विचारों की ग्राजादी नहीं, उस देश में ग्राजादी ही नहीं, फिर वहाँ रामराज्य कैसा ? दुनिया के सब राजकाजी लोग एक मामले में विलकुल ग्रन्ध-विश्वासी होते हैं, वह यह कि ग्रगर विचारों की स्वाधीनता की घोड़ी की लगाम ढीली कर दी गयी या विलकुल उतार दी गयी, तो दुनिया में ग्रराजकता फैल जायगी। वे ग्रपने इस विश्वास को ग्रगर स्वतंत्र विचार की कसीटी पर कसें, तो उन्हें साफ मालूम हो जायगा कि वे इस बात पर विश्वास नहीं करते कि हर ग्रादमी के ग्रन्दर परमात्मा मौजूद है ग्रीर वही परमात्मा खास मौकों पर जागकर या ग्रवतार लेकर, काम को सँमाल लेता है। यह कौन नहीं जानता कि ग्रराजकता में से सुराजकता वड़ी जल्दी जनम ले लेती है। ग्रगर विचारों की स्वाधीनता को लेकर ग्रराजकता ग्रुष्ट हुई, तो हमारा विश्वास है कि वहुत कम हिंसा होकर या विलकुल हिंसा न होकर ग्रराजकता ग्रपनी उमर विता सकती है ग्रीर मरकर सुराजकता को जनम दे सकती है।

#### विचार की बाजादी से अधर्म का राज्य नहीं

दुनिया की सरकारों की तरह दुनिया के सारे धर्म यह विश्वास लिये वैठे हैं कि जैसे ही लोगों को विचार-स्वाधीनता दी गयी कि ग्रधर्म का राज्य स्थापित हो जायगा। उनकी समक्ष में यह वात ग्रा ही नहीं सकती कि विचार-स्वाधीनता खुद एक धर्म है ग्रीर सब धर्मों का धर्म है। उनको यह नहीं मालूम कि उनका ग्रपना धर्म भी किसी स्वाधीन विचारक की देन है।

मेरी माँ करीव सब धमों को मानती थीं ग्रीर धमों के क्रियाकांडों में विश्वास रखती थीं। विश्वास रखने की बात मैं लिखने के लिए लिख रहा हूँ, ग्रसल में मुफ्ते कहना यह चाहिए कि वह सब धमों के क्रियाकांड कर लेती थीं। उनमें एक वड़ी खूबी थी कि मुफ्ते किसी क्रियाकांड के करने पर मजबूर न करती थीं। मजबूर करना तो एक ग्रोर, ग्रगर मैं उसके क्रियाकांड को रोक देता, तो वह मुफ्ते कभी नाराज न होतीं। कभी नाराज

होतीं, तो इतना खुश चेहरा बनाकर कि उल्टे मेरी हिम्मत बढ़ती कि मैं उनके किसी क्रियाकांड को कभी रोक सकूँ। कई वार मेंने दशहरे, दीवाली, होली-सलूनो के त्योहारों के मौके पर उस समय होनेवाले क्रियाकांड को नहीं होने दिया या कोई वदलाव कर दिया, तव इतना ही नहीं कि उन्होंने मुभे भिड़का नहीं, उन्होंने मेरा साथ दिया ग्रौर मेरे क्रियाकांड को ठीक समभा। क्या में ग्रपनी माँ के इस व्यवहार को यह नहीं कह सकता कि वह मुभे स्वाधीन विचार करने की शिक्षा दे रही थीं ? यह ठीक है, वे पढ़ी-लिखी न थीं ग्रौर पढ़ी-लिखी होतीं तो सम्भव है, जो काम वे स्वभाव से कर रही थीं, उसे जान-बूभकर और बुद्धि-पूर्वक करतीं। शायद तव मुभे कई गुना फायदा हो जाता। पर मुभे यह कहते डर लगता है कि ग्रगर वह कहीं पढ़ी-लिखी होतीं, तो अजव नहीं किसी अन्धविश्वास में फँस गयी होतीं या फँसा दी गयी होतीं, श्रीर फिर मैं उनके साथ इतनी श्राजादी न ले पाता, जितनी ले रहा था। ये वातें भी मैं अपने अनुभव पर कह रहा हूँ। २७ वरस का होकर जव मैंने ग्रपने धर्म-ग्रन्थ पढ़ने शुरू किये, तव मैं पक्का ग्रन्ध-विश्वासी वन गया ग्रौर उसी ग्रन्ध-विश्वास में मेरी पहली तीर्थयात्रा हुई। उस यात्रा में में एक तरफ तो फलित ज्योतिष का पूरा ग्रविश्वासी था ग्रौर ज्योतिषी के कहने पर मैंने ग्रपने इरादे में एक मिनट का अन्तर न पड़ने दिया, दूसरी स्रोर इस वात का पूरा ग्रन्ध-विश्वासी था कि तीर्थ के दर्शन वड़े भाग्य से होते हैं। ग्रभागों की ग्रांखें तीर्थ पर पहुँचकर वन्द हो जाती हैं ग्रीर उन्हें दर्शन नहीं हो पाते । मैं इस वात का विश्वासी या कि जिसको दर्शन हो जाते हैं, उसके लिए मुक्ति की रिजस्ट्री हो जाती है। उस अन्ध-विश्वास को लेकर जब मैं सब यात्रियों को छोड़कर अकेला तेजी से पहांड़ पर चढ़ा, तब मेरी मन की उमङ्गों का ठिकाना न था। पर जैसे ही पहाड़ की चोटी पर पहुँचकर मन्दिर का ताला वन्द मिला, वैसे ही एकदम मेरा वह हाल हो गया, मानो मैं मर गया हूँ। मैंने समफ लिया, मैं अभागा हूँ, देवताओं ने मुफ्ते दर्शन से रोकने के लिए ताले वन्द कर दिये हैं। निराश होकर मैं दूसरे रास्ते नीचे उतरा। दो-चार फर्लांग चलने के वाद सामने से एक आदमी आता दिखाई दिया। उसने पूछा, 'तुम यहाँ कहाँ?' मैंने कहा, 'मैं वड़ा अभागा हूँ, मेरे भाग्य में भगवान के दर्शन न थे।' वह बोला, 'चावियाँ मेरे पास हैं, चलो, मैं दर्शन कराता हूँ।' वह मन्दिर का माली था और इससे मेरी आँखें खुल गयी।

जितनी देर दुःख रहा, वह सव अन्य-विश्वास की देन थी और उस दुःख के मिटाने का काम उस मामूली जानकारी ने किया, जिसे सत्यसागरी एक वूँद का हिस्सा नहीं कहा जा सकता।

उसके वाद अन्ध-विश्वासों का ताँता दिन-व-दिन कम होता गया। अब धर्मग्रन्थों के पढ़ने की मेरी दृष्टि ही वदल गयी। जो धर्मग्रन्थ मेरे लिए अन्ध-विश्वास के भंडार वने थे, अब वे मेरे सामने नित-नया सत्य रखने लगे। ये ग्रन्थ अपना सत्य मेरे हाथ हर्गिज न सींपते, अगर मेरी माँ ने मुभे वह आजादी न दी होती, जो वचपन में जरूरी थी, और मुभमें आजादी से सोचने की काबलियत पैदा कर दी थी। • •

# दुविधा यानी दो राहें

'दुविघा' शब्द के अर्थ हैं दुःख, पीड़ा, चिन्ता आदि। हमें इन अर्थों से कुछ लेना-देना नहीं। हम दुविघा का अर्थ करते हैं, दो तरह का और इसी अर्थ में विचार करेंगे।

# सारी दुनिया दो तरह की

दुनिया दो तरह की, दुनिया की सव चीजें दो तरह की।
यही हाल हमारे जीवन का। काल, कहने के लिए तीन हैं—भूत,
वर्तमान, भविष्य; पर व्यवहार में दो हैं—भूत ग्रीर भविष्य।
वर्तमान वीच में खिची लकीर जैसा इतना पतला है कि रेखागिएात की रेखा की तरह उसमें लंबाई है, चौड़ाई नहीं। वर्तमान
नाम के लिए है, व्यवहार के लिए नहीं।

जीवन के दो रास्ते हैं: एक इहलोक का, दूसरा परलोक का।

इहलोक के माने हैं, लोगों से हिल-मिलकर चलना, खाने-पीने-पहनने का सुभीता करना, तन, मन, मस्तक, तीनों के लिए खुराक जुटाना ग्रीर इनके ग्रलावा हमारे ग्रन्दर जो एक ग्रहश्य काम कर रहा है, उसके सुख का पूरा-पूरा खयाल रखना। ग्रहश्य ग्रांख से परे है यानी ग्रांख की पहुँच में नहीं ग्रा सकता। पर मन के परे नहीं। मन की पहुँच उस तक है, इसलिए वह इह-लोक की चीज है। परलोक के माने हैं, उस जीवन के लिए जीना, जिसका कोई ठीक चित्र हमारे सामने नहीं है। जो है वह खिचा मिला है, उसके वारे में जो हमें सुनने को मिलता है, वह सब इसी लोक के सुख ग्रीर दु:ख का बढ़ाकर खींचा हुग्रा चित्र है। उसके वारे में जितनी हमारी जानकारी है, उससे ज्यादा ग्रजानकारी है। परलोक का मार्ग कैसा है? उसका ठीक-ठीक हाल ग्राज तक किसीने नहीं वताया। हाँ, यह तय है कि उस मार्ग पर चलकर इस लोक के सब सुख त्यागने पड़ेंगे। पूजा, प्रार्थना करनी होगी ग्रीर किसी ऐसे प्राणी की मदद की जरूरत होगी, जो ग्रव इस दुनिया में नहीं है। कहा जाता है, वह कभी इस दुनिया में था।

#### इहलोक श्रीर परलोक : एक तुलना

इहलोक के रास्ते में हमारी देह जो काम करेगी, उसका
तुरत फल देखने को मिलेगा श्रौर इतनी जल्दी मिलेगा, जितनी
भाड़ू लगाने से सफाई, जितना दिया जलाने से प्रकाश । इस
लोक में हमारा मन जो काम करेगा, उसका फल भी तुरत
मिलेगा, यही हाल हमारे मस्तक के काम का होगा । इहलोक
में विचार काम श्रायेगा, वह खोज में लगेगा । श्रांख, कान, नाक
श्रादि से वह देखने, सुनने, सूँघने का ही काम लेगा, उनमें से कुछ
निकालेगा । उनसे इहलोक की हमारी जिन्दगी सुधारेगा,
उठायेगा श्रीर चमकायेगा । श्रपने दूसरे साथियों की सेवा करने
का वल देगा ।

परलोक के रास्ते पर चलकर विचार की वहुत कम जरूरत

रह जायगी, शायद विलकुल न रह जाय। वहाँ जिस चीज की जरूरत है, वह है विश्वास, वह है अनुगामीपन यानी किसीके पीछे-पीछे चलना या ज्यादा-से-ज्यादा उँगली पकड़कर चलना। वह भी ऐसे आदमी के पीछे और ऐसे आदमी की उँगली पकड़-कर, जो न दिखाई देगा, न जिसके पाँव की आहट सुनाई देगी, न जिसका उँगली का हाथ में होने का हमें तिनक भी भान होगा।

इस लोक के रास्ते चलकर हमारे वन्यु-वान्घव हमारे साथ होंगे, हमारी स्त्री हमारे साथ चल सकेगी, हमारे लड़के-लड़की हमारे काम ग्रा सकेंगी। एक तरह से हमें यह भी पता रहेगा कि हम किसके लिए जी रहे हैं, क्यों जी रहे हैं?

परलोक के रास्ते चलकर हमें क्या करना पड़ेगा, यह हम पहले वता चुके। किसके लिए करना होगा, यह जानना वाकी है। कहते हैं, परलोक के रास्ते चलकर हम उन सवकी भलाई कर सकेंगे, जो कभी हमारे कुटुम्व के—हमारे कुल के रहे हैं या उनके सहायक रहे हैं। यानी हम उनकी मदद कर सकेंगे, जो मरकर भूत या प्रेत वन गये हैं। हम उनमें ऐसे जा मिलेंगे, जिस तरह ग्राजकल हम दूकान से लौटकर घर पर ग्रपने वाल-बच्चों से ग्रा मिलते हैं। इसी परलोक के जीवन के वारे में यह भी विश्वास दिलाया जाता है कि जव हम परलोक में पहुँचेंगे, तो हमारे वे कसूर माफ कर दिये जायँगे, जो हमने ग्रव किये हैं या कभी भी किये हैं, क्योंकि वहाँ हमारे कुल के वहुत ग्रादमी पहले से मौजूद होंगे, वे हमारी सिफारिश जरूर करेंगे। जो वात परलोक के वारे में कही गयी है, वह कुछ ग्रंश में इस लोक में

जरूर मिलती है, जैसे इस लोक में जो ब्रह्मचर्य या संयम पालता है, वह उतना ही रित का ग्रानन्द ले सकता है, या जो जितना लम्बा उपवास करता है, उतना ही भोजन का स्वाद पा सकता है। वैसे ही इस लोक के संयम के वदले परलोक में हमें खूब ग्रसंयम से रहकर सुखी रहने को मिलेगा।

इस लोक में हर वात किताब के पन्नों की तरह खुली मिलेगी। परलोक का जीवन विताने में हर वात मुट्टी में वंद किसी चीज की तरह होगी यानी हमें यह नहीं वताया जायगा कि मुट्टी में क्या है ?

इस लोक का जीवन विताने में हमें ग्रधिकार हासिल होगा कि हम ग्रपनी बुद्धि का दिया जलता रखें, उसकी रोशनी में ग्रागे वढ़ें ग्रौर ठोकर खाने से वचते हुए ग्रपना रास्ता ग्रासान वना लें। परलोक के रास्ते में बुद्धि का दिया बुक्ताकर चलना होगा, क्योंकि वहाँ उँगली पकड़कर चलना है ग्रौर उँगली पकड़-कर चलने में ग्रांखें वन्द कर चलने में ही सुभीता होता है। कहा जाता है, उस रास्ते में जो रुकावटें हैं, वे इस किस्म की हैं कि वहुत वड़ी मालूम होती हैं, पर जिसकी उँगली पकड़कर हम चलेंगे, उसके लिए वह कुछ भी नहीं। इसलिए उस रास्ते में ग्रांखें वन्द कर लेने से हम उस डर से वच जायँगे, जो हमें उन ग्राफतों के देखने से होता।

इस लोक का रास्ता सुगम है, ईमानदारी का ग्रीर ग्रपने मन की वात को साफ-साफ दूसरों के सामने रख देने का है। ईमानदारी के वल पर खड़े होकर ग्रांख उठाकर चलने का है, निडर रहने का और नरक की तरफ से एकदम वेपरवाह रहने का है। परलोक का रास्ता हमें जो वता दिया गया है, उसे मानकर चलने का है और अगर समक्त में न आये, तो उस पर कोई अश्रद्धा न करने का है। अगर कोई हमसे पूछे, तुम्हें इस रास्ते चलकर क्या फायदा हो रहा है, तो ईमानदारी फेंककर, सचाई ठुकराकर कह देना कि इस रास्ते चलकर वड़ा आनंद आता है।

इस लोक के रास्ते ग्राँर परलोक के रास्ते लोग हमेशा से जाते-ग्राते रहे हैं ग्राँर जाते-ग्राते रहेंगे। परलोक के रास्ते जाने-वालों को बुरा-भला कहने से हमें कोई फायदा न होगा। दोनों रास्ते जानेवालों को बुरा-भला कहने से हमें कोई फायदा न होगा। दोनों रास्ते हरएक के सामने हैं। जो जिसे भला लगे, वह उस रास्ते को चुन ले।

इस लोक के रास्ते में सचाई, ईमानदारी, प्रेम, सन्तोष, स्वाभिमान, ग्रपने पर भरोसा, शील, संयम, इन सवकी जरूरत हैं। इनके फल से हम सव वाकिफ हैं। हममें से हरएक यह जानता है कि समाज-व्यवस्था बनाये रखने के लिए ये सब वेहद जरूरी हैं। ये ही सब सुख-चैन देनेवाले हैं। जो लोग परलोक के रास्ते चलते हैं, वे ईमानदार ग्रौर संयमी को चुरा कहने की हिम्मत नहीं कर सकते। वे जो कभी-कभी ऐसी वात कह बैठते हैं, जो ईमानदारी की कसौटी पर ठीक नहीं उतरती, तो वे उसे ईमानदारी की वात नहीं वताते, क्योंकि उन्हें ईमानदारी इतनी ही पसन्द है, जितनी इस लोक के रास्ते चलनेवालों को।

परलोक का रास्ता, तपस्या का रास्ता है, त्याग का रास्ता है। ग्रपने ढंग का तप ग्रीर त्याग इस लोक के रास्ते पर चलनेवाले भी करते हैं, पर उनका तप, त्याग परलोक के रास्ते वहुत कम कपड़े पहनकर, या विलकुल नंगे रहकर जाड़ा, गर्मी, वरसात सहना, वड़ी तपस्या मानी जाती है। उनकी नजरों में एक माँ का महीनों ग्रपने वच्चे के खातिर जागना, उसे सूखे में सुलाकर खुद गीले में सोना, उसकी भूख मिटाने के लिए खुद भूखे रहना, उसकी प्यास बुभाने के लिए प्यास से सूखे अपने होठों को पानी की एक बूँद से भी तर न करना कोई तपस्या नहीं, क्योंकि माँ जो तकलीफ सहती है, वह मोहवश सहती है ग्रीर वह मोह एक प्राग्गी से है। परलोक के रास्ते पर चलनेवाले जो तपस्या करते हैं, उनका मोह स्वर्ग से भले ही हो, पर स्वर्ग तो प्राणरहित चीज है। इसलिए उनकी तपस्या हर तरह उस तपस्या से वड़ी है, जो इस लोक के रास्ते पर चलकर करते हैं।

परलोक के रास्ते पर चलनेवाले यह खूव समभते हैं कि इच्छाग्रों का रोकना वड़ा भारी तप है, पर काया को क्लेश देना वे इससे भी भारी तप मानते हैं। वे यह भी समभते हैं कि ममता ही परिग्रह है, पर वह घर में न रहकर जंगल में रहकर घर से ममता छूटी मानते हैं। फिर परलोक के रास्ते चलनेवाले इतना भी नहीं करते कि रास्ते के लिए वगल में तोपा रखें। "वगल में तोषा तो राह का भरोसा" यह कहावत इस लोक की राह चलनेवालों की है, परलोक की राह चलनेवालों की नहीं। उन्हें जहाँ तोपे की जरूरत हुई कि सीधे इहलोक में

त्रा पहुँचे ग्रीर जैसे तोषे का काम पूरा हुग्रा, परलोक की राह जा लगे।

परलोक की राह इहलोक की राह से कम पुरानी नहीं। हाँ, परलोक की राह चलनेवालों की गिनती हमेशा इहलोक की राह चलनेवालों से कम रही ग्रीर संभव है, ग्राज भी कम हो।

परलोक की राह जब इतनी पुरानी है, तब ऐसी चीज नहीं, जो हँसी-खेल में उड़ा दी जाय। उस रास्ते चलकर कभी-न-कभी कुछ-न-कुछ फायदा समाज को जरूर पहुँचा होगा। वह फायदा कितना पहुँचा? क्या अब भी पहुँचता और पहुँच सकता है? इस पर एक नजर डालने की जरूरत है।

# समाज की वचपन की धारणाएँ

इतिहास के जानकारों को ग्रच्छी तरह मालूम है कि मनुष्य-समाज ग्रपने वालकपन में जिस चीज को दुः खदायी या सुखदायी देखता श्रीर जिसके दुः ख से वचना ग्रपनी शक्ति से वाहर समभता, उसे 'देवता' कह वैठता था। उस समय हमारे वाप-दादों ने ग्रपनी समभ में उस दुः ख से छुट्टी पाने में कोई कसर न रखी।

वे मजबूर थे कि इस वात को चुपचाप दलील किये विना मान लें कि इस लोक से परे एक लोक और है और वही परलोक है। उनका सारा सुख-दु:ख उसी परलोक और उसी परलोकवालों के हाथ में है। आज की दुनिया में अनेक जगह ऐसी हैं, जहाँ के रहनेवाले अपनी खेती के लिए मेह के पानी पर भरोसा कर सकते हैं। अगर मेह न वरसे, तो वे परलोकवालों पर न विगड़ें,

तो क्या करें ग्रीर ग्रगर ठीक-ठीक वरस जाय, तो उन परलोक-वालों से खुश न होकर क्या वे कृतघ्न वनें ? या अगर वहुत वारिश से उनकी खेती खराव हो जाय, तो क्या वे परलोकवालों को मूरख भी न कहें ? इसी तरह हमारे वाप-दाग्रों ने परलोक से इतना गाढ़ा रिश्ता जोड़ लिया था। दिखाई न देने पर श्रीर हर तरह समभ से परे रहने पर भी वह परलोकवालों को ऐसे ही घर के ग्रादमी वना वैठे, जैसे जीते-जागते ग्रपने भाई-वन्दों को । वे मरे ब्रादमी को ब्राज की तरह मरा नहीं समभते थे। इतना ही समभते थे कि उसने एक लम्बी नींद ले ली है श्रीर उसी लम्बी नींद का मुहावरा श्राज तक मौत के मानों में चला श्रा रहा है। वे मुर्दे के साथ काफी खाना रखकर उसे घरती माता के सुपुर्व कर देते थे। जव मुर्दी के साथ उनका यह हाल था, तव भूत-पितरों को ग्रौर परलोकवासियों को, जिन्हें वे ग्रपने घर का ग्रादमी मानते थे, कैसे भूखा रख सकते थे ? इस ग्रपनेपन की वजह से वे परलोकवासियों से खुश हो लेते थे, नाराज हो लेते थे, रूठ जाते थे, उन्हें भला-बुरा कह लेते थे। श्रपनी समभ से उन्होंने जो कुछ किया, वहुत ठीक किया।

उन्होंने अपनी आँखों आग को अपनी लपट ऊपर फेंकते देखा, घुआँ दूर तक उड़ाते देखा । और आग उनकी इस लोक की देवता भी थी। उन्होंने यह देखा कि पानी ऊपर से आता है। घूप-चाँदनी ऊपर से आती है, विजली ऊपर चमकती है, गड़गड़ाहट ऊपर होती है, सुख-दु:ख के सभी साघन ऊपर से आते

हैं। ग्रव यह उनकी कितनी ऊँचे दर्जे की सूफ थी कि उन्होंने परलोकवासियों तक खाना पहुँचाने का काम ग्रग्नि देवता से लिया। अव जव यह रास्ता खुल गया और अग्नि देवता के मार्फत परलोक को खाने की पार्सलें जाने लगीं, तो छोटे-बड़े पैमाने पर यज्ञ शुरू हो गये ग्रीर वे ग्राज तक जारी हैं। प्रार्थनाएँ इसी क्रिया का एक हिस्सा है। व्रत रखना, उपवास रखना, यहाँ तक कि वाकायदा रोना-पीटना यज्ञ का ही ग्रंग है। श्रादमी यह कभी नहीं मानता था कि परलोकवासी है ही नहीं । वह तो ऊपर ग्रासमान में ऐसी वस्तियाँ मानता था, जैसे इस लोक में उनकी श्रपनी थीं। वह जो इस लोकवासियों के लिए करता, वही परलोकवासियों के लिए। यहाँ के वैद्य से वह अपनी वीमारी दूर करा सकता था, तो परलोक के वैद्य से लम्बी उम्र माँगता था। वह यहाँ के वेटी-वेटों से या ग्रपने माँ-वाप से मासूली सुख चाहता, तो परलोक के रिक्तेदारों से ग्रनंत सुख की माँग करता।

कुछ दिनों वाद उसकी समभ में यह आया कि जिस तरह इस लोक का राजा है, उसी तरह उस लोक का राजा होना चाहिए और वह राजा फिर ऐसा ही वना, जैसा इस देश का था। यानी पूरा आजाद, जो जी चाहे कर सके, क्योंकि उन्हें ऐसे राजा की जरूरत थी। आदमी ने उन दिनों यह कभी नहीं सोचा कि में यह परलोक वनाकर या परलोक का एक राजा खड़ा कर ऐसा काम कर रहा हूँ, जैसे कोई खरगोश कल्पना का एक शेर वना बैठे और अपने-आपको उसके दोनों पंजों में फँसाकर अपनी पीठ उसके मुँह में दे दे। पर श्रादमी कर ऐसा ही वैठा, श्रीर वह इसके सिवा कर भी क्या सकता था? जैसे वह श्रपने राजा का डर मानता था, वैसे ही परलोक के राजा से डरने लगा।

कुछ समय वाद उसकी समभ में यह भी श्राया कि परमात्मा बुराई नहीं कर सकता, किसीको दुःख नहीं दे सकता, पर दुःख तो उसे मिलता था, इसलिए उसने शैतान या दानवों की कल्पना कर ली श्रीर श्रव वह शैतान श्रीर दानव को बुरा समभने लगा श्रीर ईश्वर को भला। वह उसता दोनों से था। शैतान की पूजा वह इसलिए करता था कि वह उसे इस लोक में दुःख न पहुँचाये श्रीर ईश्वर की पूजा इसलिए कि परलोक में पहुँचकर वह उसका कृपापात्र वन सके। यह भी मानता था कि जितने देवी-देवता हैं या जितनी प्रकृति की ताकतें हैं, वे समान रूप से ईश्वर श्रीर शैतान के तावे हैं।

सूरज उसे घूप देता था, चन्द्रमा चाँदनी। दोनों उसके काम के थे, दोनों उसके देवता वन गये। चाँद के पन्द्रह दिन छोटे होने ग्रीर पन्द्रह दिन वड़े होने को तो उसने किसी तरह सह लिया। पर ग्रचानक पूर्णिमा के दिन चन्द्रग्रहण पड़ने से वह घवरा उठा ग्रीर ऐसे ही रोने लगा, मानो उसका कोई ग्रयना ग्रादमी मर रहा हो। तव उसने उसी तरह दान-पुण्य किया, जैसे ग्रपनों के लिए करता। थोड़ी देरमें चन्द्रमा ग्रहण से निकल गया ग्रीर उसने यही समभा कि यह सव उसके दान-पुण्य का प्रभाव है। यही हाल उसका सूरज ग्रहण के समय हुगा। ग्राँची, तूफान ग्रीर ऐसी ही ग्राफतों के वारे में वह इसी

तरह के फैसले करता था। जितनी उसकी वृद्धि थी ग्रीर जितनी उसकी जानकारी थी, उस बुद्धि ग्रीर जानकारी के वल पर वह वहुत ठीक ग्रीर वहुत ग्रच्छा फैसला करता था।

#### विचार ने दिशा बदल दी

हमारे जिन पूर्वजों ने ऊपर वतायी मान्यताओं को मान दे रखा था, उन्होंमें से कुछ लोगों ने ग्रांख खोलकर देखना गुरू किया। उनके मन को यह वात ज्यादा ग्रच्छी नहीं जँची कि विना सममे यों ही किसी वात को मान लिया जाय ग्रीर फिर उससे डरा जाय। उन्हींमें से कुछ सूरज, चन्द्रमा श्रीर नक्षत्रों को वड़े ध्यान से देखने लगे। जिस दिन उन्हें यह पता लगा कि इन सवकी चाल में कोई कम, कोई ढंग, कोई तरीका है, उस दिन से वे उसके पीछे लग गये ग्रीर जल्दी ही उन्होंने यह पता लगा लिया कि ग्रहरा कव श्रौर कैसे पड़ता है। जव उन्होंने पहले से चन्द्रग्रहण की वात वता दी, तव उनके सावी उन्हींको जादूगर मानने लगे। कुछ दिनों में ऐसा हुग्रा, चन्द्रग्रहण की वात वहुत लोग जान गये और घीरे-घीरे हमारे बाप-दादास्रों ने यह तय किया कि चन्द्रग्रहण के समय चन्द्रमा को न कोई देवता खाता और न उगलता है, यह सिर्फ पृथ्वी की परछाई है, जो चन्द्रमा पर उस समय पड़ती है, जब सूरज, पृथ्वी ग्रीर चन्द्रमा एक सीध में होते हैं। उन्हीं लोगों ने यह वताया कि सूरजग्रहरा उस वक्त पड़ता है, जव पृथ्वी ग्रीर सूरज के वीच में चन्द्रमा होता है ग्रीर तीनों एक सीघ में होते हैं।

#### नये और पुराने विचारों की खींचातानी

ग्राज के लिहाज से मनुष्य-समाज के काफी वालकपन में नक्षत्रों का ज्योतिप पूरी तरह तैयार हो ग्रया था ग्रीर उसकी जानकारी दिसयों को नहीं, सैकड़ों को थी। नक्षत्रों के वल पर दिन के घंटे, घड़ी बताना, महीना ग्रीर तिथियाँ तय करना इससे भी पुरानी बात है।

जैसे-जैसे श्रादमी श्रांख खोलकर देखने लगा श्रीर स्वतंत्र रीति से विचार करने लगा, वैसे-वैसे उसकी पुरानी मान्यताश्रों को घक्का पहुँचता रहा; पर हुश्रा यह कि मनुष्य-समाज का बहुत वड़ा हिस्सा उन्हीं मान्यताश्रों में पहले की तरह ज्यों-का-त्यों फँसा रहा । इसमें कारण हुए वे पंडित श्रीर पुजारी, जिन्होंने पुरानी मान्यताश्रों के वल पर पूजा-पाठ को ही श्रपना रोजगार वना लिया ।

वीच का समाज, जो थोड़ा ग्राजाद था ग्रीर हर तरह ग्रपने ऊपर निर्भर था, वह नये सोचनेवालों का साथी वन बैठता था ग्रीर समाज के नीचे का वह हिस्सा, जो ग्रपने हर काम के लिए दूसरों पर निर्भर था, वह पुराने पंडितों ग्रीर पुजारियों का भक्त बना रहता ग्रीर पुरानी मान्यताग्रों को जीवित रखता था।

मनुष्य-समाज का ऐसा कभी कोई समय नहीं रहा, जिसमें पूरी तरह पुरातनवादियों का जोर रहा हो, हमेशा सुघारक होते रहे। सुधारकों का इसके सिवा कोई काम न था कि वह समाज के सदस्यों को ग्राजादी से विचार करने की तालीम दें। ग्रपनी ग्रांसों से देखना ग्रीर ग्रपने कानों से सुनना सिखायें। ग्रपने-

ग्राप प्रकृति का निरीक्षण करना जानें। ये सुधारक वे लोग थे, जो समय-समय पर ऐसी पाठशालाएँ खोलते रहे, जिनमें ऐसी तालीम दी जाती थी, जिसमें मान्यताग्रों पर कम-से-कम जोर दिया जाता था ग्रीर बुद्धि पर ज्यादा-से-ज्यादा।

### सुधारक श्रौर उनकी चाह

जिस तरह पुरातनवादी हमारे वाप-दादा थे, उसी तरह सुधारक भी हमारे वाप-दादा थे। हम कद्र दोनों की करेंगे, क्योंकि दोनों की मेहनत से हम ग्राज कुछ वने हैं। पर मान्यता हम उन सुधारकों को देंगे, जो हमें ग्राजादी से विचार करने का उत्साह देते हैं। एक तरह सुधारक न ग्रपनी पूजा चाहते हैं ग्रीर न ग्रपने ग्रन्थों की, वे तो इसी बात में खुश हैं कि वह हमें इसी युग में इसी तरह ग्राजादी से विचार करते हुए देखें, जिस तरह वे ग्रपने युग में खुद ग्राजादी से विचार करते थे। वे इसीमें ग्रपनी खुशी समभेंगे कि हम पुरातनवादियों का मुकावला करें, जिस तरह वे ग्रपने युग में निर्भीक हो खेलकर पुरातनवादियों का मुकावला करते थे।

हर सुधारक, फिर चाहे वह हजारों वर्ष पुराना, सैकड़ों वर्ष पुराना हो, कल का हो या ग्राज का हो, यही चाहता है कि मनुष्य-समाज का हर ग्रादमी सत्य का पुजारी वने ग्रीर उसी तरह सत्य का शोध करे। वह उसी तरह सत्य के खातिर जोखम उठाने को तैयार रहे, जिस तरह हर सुधारक ग्रपने-ग्रपने समय में सत्य की पूजा करता रहा है ग्रीर हर तरह जोखम उठाने के लिए तैयार हो रहा है। उसी सुधारक

का यह उपदेश है कि दो तरह के मार्ग में से इस लोक का मार्ग ऐसा मार्ग है, जिस पर चलकर विना किसी दिक्कत के परलोक के मार्ग की वतायी वातें ऐसी ग्रासानी से समभ में ग्रा जायँगी, जिस तरह इस लोक की वातें।

#### विज्ञान की गति

जिस विज्ञान ने इस घर श्रीर पर घर का भेद मिटा दिया, इस मोहल्ले और पर मोहल्ले का भेद मिटा दिया, इस गाँव ग्रीर पर गाँव का भेद मिटा दिया, इस देश ग्रीर परदेश का भेद मिटा दिया भ्रौर जो म्राज इस ग्रह भ्रौर परग्रह का भेद मिटाने पर तुला है, वह इस लोक ग्रीर परलोक का भेद मिटाकर रहेगा। विज्ञान जिस तेजी से ग्रागे वढ़ रहा है ग्रीर जिस तेजी से अन्य-विश्वासों और मिथ्या विश्वासों को ढाता जा रहा है, उससे यह ग्राशा की जा सकती है कि वह हमें सत्य की ग्रसलियत तक पहुँचा देगा। विज्ञान सत्य ही सोचता, सत्य ही वोलता ग्रौर सत्य ही करता है। यह ठीक है कि वह सत्य की ग्रसलियत नहीं जान पाया ग्रीर सत्य की ग्रसलियत माने पूर्ण सत्य। पूर्ण सत्य को हम क्या, सभी ने ग्रादर्श मान रखा है ग्रीर ग्रादर्श तक ग्रादमी कभी पहुँच सकेगा, यह नहीं कहा जा सकता। इसलिए सत्य की खोज हमेशा जारी रहेगी। विज्ञान में यही खास वात है कि वह धर्म की तरह किसी चीज को पकड़कर नहीं बैठ जाता। पकड़कर बैठना सत्य के खिलाफ है। जब पूर्ण सत्य किसीके पास नहीं, तव किसी भी चीज को कैसे पकड़कर बैठा जा सकता है। सीढ़ी का हर डंडा ग्रपने-ग्राप में सत्य है, पर जो भी ग्रादमी सीढ़ी पर चढ़ता है, वह एक डंडा छोड़कर चढ़ता है। इसलिए एक समय का सत्य दूसरे समय में छोड़ना ही पड़ेगा, तभी वढ़ा जा सकेगा।

# अन्ध-विश्वास मिटने का युग

ग्राज ऐसे ग्रादिमयों की तादाद कम नहीं, जिन्होंने देवताग्रों के होने में सन्देह करना शुरू कर दिया है। कम-से-कम इतना तो मानने ही लगे हैं कि ग्रादमी के किसी काम में उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। फलित ज्योतिष कितना ही क्यों न फैल रहा हो, पर समभदारों में वह जितनी तमाशे की चीज है, उतनी विक्वास की नहीं। गिएत ज्योतिष तरक्की पर है और वह तो विज्ञान का ग्रंग है। ग्राज दुनिया की कोई चीज ऐसी नहीं रह गयी, जिसके वारे में विज्ञानियों ने कार्यकारएा को नहीं खोज निकाला, फिर चाहे वह इस दुनिया की हो या उन दुनियाग्रों की, जिन तक हमारी सीधी पहुँच नहीं है, यंत्रों के द्वारा पहुँच है। इस वात ने ग्रादमी के पुराने विक्वासों को इस बुरी तरह भक्तभोरा है कि वह हमें विलकुल वेतुके मालूम होने लगे हैं। इसी वास्ते उन विश्वासों ने डरकर हमारे काम में दखल देना वन्द कर दिया है।

दिनोदिन ग्राज जो स्कूल खुल रहे हैं, उनमें जो तालीम दी जाती है, वह ग्रीर दृष्टि से कितनी ही बुरी क्यों न हो, इस दृष्टि से बड़ी ग्रच्छी है कि वह हमारे वालकों में 'क्या, क्यों ग्रीर कैसे ?' की चेतना जगा देती हैं। परलोक में विश्वास घटाने का काम ये स्कूल बड़ी तेजी से कर रहे हैं। पर साथ ही वे परलोक

को ग्रपने यंत्रों के जिर्ये जानने की कोशिश में लगने की जोर से प्रेरणा दे रहे हैं। ग्रव मिथ्या-विश्वास ग्रीर ग्रन्थ-विश्वास की वात खतम होती जा रही है ग्रीर उसीमें से प्रकृति की सची जानकारी का सूरज उदय होने को है। उसके उदय होने पर ग्राजादी की हवा लगी कि ग्रादमी ने ग्रपनी ताकत को पहचाना ग्रीर सचाई की खोज में लगा।

ग्रव वह समय लद गया, जव किसी स्वतंत्र विचारक को नास्तिक कहकर इने-गिने धर्म के पुजारी उसे ग्राफत में डाल देते ग्रीर वस चले, तो उसे फाँसी पर लटकवा देते। ग्राज का समय स्वतंत्र विचारकों पर देशों को ग्रीभमान करने का है। ग्राज वह कुल की शान हैं, उनकी जगह-जगह कदर होती है। ग्रव वह दिन दूर नहीं, जव सव जगह ग्रंध-विश्वास ग्रीर मिथ्या-विश्वास उसी तरह तड़पता मिलेगा, जिस तरह कभी सत्य-विश्वास ग्राफत में पड़ा मिलता था।

# तृष्णानाश अपने लिए, समाज के लिए नहीं

त्राज की दुनिया ऐसे श्रादिमयों को जन्म दे चुकी है, जो यह सावित करके दिखा गये हैं कि इच्छाश्रों का कम करना, तृष्णा का नाश करना सिर्फ अपने लिए है। उससे श्रादमी में दुगुनी श्रीर चौगुनी काम करने की ताकत श्रानी चाहिए। श्रादमी श्रपने स्वार्थों को कम करके श्रपने कुटुम्ब को पालता है। माँ अपनी इच्छाश्रों को कम करके श्रीर तृष्णा को घटाकर श्रपने लिए कष्ट भेलती है। फिर वह श्रादमी श्रपनी इच्छाश्रों को मारने-वाला श्रीर तृष्णा को घटानेवाला कैसे समभा जा सकता है, जो

समाज का सारा काम छोड़कर पहाड़ की गुफा में तपस्या करने के लिए भाग जाता है ? वह तो स्वर्ग ग्रीर मोक्ष की तृष्णा में इतनी बुरी तरह फँसा है कि उसे दूसरी तरफ ग्राँख उठाने की फुरसत नहीं। नार्वे का 'नोवेल' नामक घनी न शादी करता है श्रीर न किसी श्रीर फंफट में फँसता है श्रीर करोड़ों रुपये की संपत्ति वह मनुष्य-समाज के लिए—िकसी एक देश ग्रीर कुल के लिए नहीं—इसलिए छोड़ जाता है कि उससे सत्य के खोजियों की मदद हो, जिससे वे निश्चिन्त होकर अपने काम में लग सकें। स्वार्थी वह समभा जायगा, जो "ना घर मेरा ना घर तेरा" या "जग में कोई नहीं अपना" यह कहकर कोने में बैठ जाता है, या वह समभा जायगा, जो ''सारी दुनिया में मेरा कुटुम्व हैं" यह कहकर काम में लग जाता है ? कोई भले ही ग्रच्छे कपड़े न पहने, एक पैसा न रखे, बुरे से बुरा खाना खाये और चाहे नंगा रहे, पर जब वह दुनिया से अलग रहकर दुनिया के लिए कुछ नहीं करता, तव वह किसी समय भले ही लोगों से पूजा पाता रहा हो, आज वह पूजा पाने की आशा न रखे। पशु-पक्षियों से ग्राज भी कोई नंगे रहने, भूखे मरने या श्रौर इसी तरह की प्रतिज्ञा ले बैठे, तो उससे पशु-पक्षी-समाज को कोई नुकसान नहीं हो सकता, क्योंकि उनमें हरएक ग्रपने पैर पर खड़ा रहना जानता है। पर ग्रगर मनुष्य-समाज में कोई ऐसा कर वैठे, तो वह मनुष्य-समाज को बहुत नुकसान पहुँचायेगा। अगर ऐसों की तादाद वढ़ने लगी, तो समाज सरकार की मदद से ऐसे ग्रादिमयों को वैसा काम करने से रोकने का हकदार है।

#### काय-क्लैश भी गुनाह

ग्राज का ग्रादमी ग्रच्छी तरह समभ गया है कि देह को, जो म्रादमी का घोड़ा है, तकलीफ देना गुनाह है। वह ऐसा घोड़ा है, जो खाने-पहनने की सब चीजें ऐसे ही ग्रपने-ग्राप जुटा लेता है, जिस तरह हाथी अपना चारा अपने-आप तोड़कर अपनी ही पीठ पर लादकर ले श्राता है। श्राज तपस्या का नाम काय-क्लेश हो गया, तपस्वी तमाशे की चीज वन गये हैं, हठी तपस्वी मुडिचरों का नाम पाते हैं। अब आदमी ने अच्छी तरह समभ लिया है कि तकलीफ में रहकर न वह इस लोक की सोच सकता है श्रीर न परलोक की, न वह अपने भले की सोच सकता है, न दूसरे के भले की ग्रीर श्रच्छे विचार तो वह किसी तरह कर ही नहीं सकता। जो भी अपने तन पर कष्ट भेलता है, वह कुछ पाना जरूर चाहता है। जब वह चीज उसके हाथ नहीं ग्राती, तो तन के कप्ट के साथ-साथ उसके मन का कष्ट वढ्ने लगता है, फिर भ्रात्मा कष्ट न माने, यह हो ही नहीं सकता। ग्रसल में तन का कष्ट ग्रात्मा फील लेता है, क्योंकि मन उस कष्ट का वोक आत्मा पर नहीं पड़ने देता, पर मन का कष्ट श्रात्मा का कष्ट है, उससे वह कैसे वच सकता है ? ग्राज के विज्ञान ग्रीर शोध ने ग्रादमी को यह सिखाया कि तन को मुनासिव यानी काफी सुख दिया जाय, तभी वह ठीक-ठीक सोच-विचार कर सकता है, अपना और दूसरों का भला कर सकता है, श्रौर श्रगर सचमुच परलोक जैसी कोई चीज है, तो उसको भी ग्रपनी मेहनत से जान सकता है। इसका नतीजा यह हुम्रा कि म्राज उसने मनुष्य-समाज की वहुत

तकलीफों को दूर कर दिया ग्रीर जो वची है, उसके दूर करने में लगा है।

### धर्म-विश्वासियों से ही विज्ञान का दुरुपयोग

जिनके मन से अभी परलोक का विश्वास नहीं हट पाया है, जो ग्रभी तक दान-पुण्य में विश्वास रखते हैं ग्रीर पूजा-पाठ को भला काम समभते हैं श्रीर रासलीलाश्रों से धर्म का उद्धार मानते हैं, वे ही उन ग्रादिमयों की उन खोजों का दुरुपयोग कर रहे हैं, जो ग्रादमी के कष्ट दूर करने के लिए सोची गयी थीं, न कि ग्रादमी को ऐयाश वनाने के लिए। घर में सबके लिए वना हुया हलवा ग्रगर एक ग्रादमी यह कहकर खा जाय कि उसने नमक छोड़ रखा है ग्रौर फिर वह बीमार पड़ जाय, तो इसमें हलवा वनानेवाले का क्या दोष ? ठीक इसी तरह भ्राज के वैज्ञानिकों की खोज का कोई दुरुपयोग कर बैठे, तो इसमें वैज्ञानिकों का क्या कसूर ? ग्राज के नये हथियारों का जो मनुष्य संहार के लिए उपयोग कर रहे हैं, वे सबके सब ग्रपने घामिक होने की डींग हाँकते हैं। धर्म का विश्वास ऐसा कराये वगैर नहीं रह सकता, क्योंकि हर धर्म ग्रपने ग्रलग देवता रखता है ग्रीर वह देवता दूसरे के किसी देवता से मिलते-जुलते नहीं होते। सवके सव देवता ग्रंपने भक्तों से कुछ ऐसी ग्राशा रखते हैं, जिनके पूरा कराने में एक धर्म और एक समाज को दूसरे धर्म और दूसरे समाज से टकराना पड़ता है। इसलिए भ्राज की विज्ञान की सचाइयों का इन धर्म-विश्वासियों की वजह से दुरुपयोग हो जाता है और विज्ञान वदनाम हो जाता है।

# विज्ञान मानव का मित्र, कुतर्क का शत्रु

ग्राज का ग्रादमी विज्ञान की मशाल लिये संत्य की खोज में लगा है। कोई ग्रादमी जव खोज में लगता है, तो कप्ट के लिए तैयार रहता है, कष्ट फेलता है ग्रीर जितना कष्ट फेलने के लिए तैयार मिलेगा, उसके प्रेम का उतना ही वड़ा दायरा मिलेगा। जव वह प्रेम में पड़कर ग्रीर कष्ट भेलकर सत्य की खोज में लगता है, तब इसके सिवा क्या चाहेगा कि वह उन्हें सुखी वनाये, जिन्हें वह प्रेम करता है। ग्रतः वैज्ञानिक सिर्फ इसलिए खोज में लगे हुए हैं कि वे श्रादमी को किस तरह पूरा सुखी बना दें। वैज्ञानिक यह नहीं मानते कि सूरजग्रहरा श्रीर चन्द्रग्रहरा के माने हैं कि कोई उन्हें निगल गया ग्रीर वह उन्हें इसलिए निगल गया कि ग्रादमी ने ग्रपने देवताग्रों की पूजा नहीं की। ग्राज का वैज्ञानिक यह नहीं मानता कि भूकम्प इसलिए ग्रा गया कि दुनिया के म्रादमी भूठ वोलने लगे थे, या कोई ज्वालामुखी इसलिए भड़क उठा कि उसके ग्रासपास के लोग ग्रत्याचार करने लगे थे। कोई 'इससे यह न समभे कि वैज्ञानिक भूठ ग्रौर ग्रत्याचार को ग्रच्छा समभता है। नहीं, वह भूठ श्रीर श्रत्याचार को वहुत बुरा समभता है, पर वह तो इस कुतर्क को भूठ श्रीर ग्रत्याचार मानता है कि श्रादमी के भूठ वोलने से भूकम्प श्राते श्रीर ग्रत्याचारी होने से ज्वालामुखी भड़क उठते हैं।

वैज्ञानिक ने प्रकृति से परे की सव ताकतों के वारे में यह समभ लिया है कि वे ग्रादमी का न कुछ विगाड़ सकती हैं ग्रीर न वना सकती हैं। दुनिया में कभी किसी देवता का राज्य न रहा, न ग्राज है ग्रौर न ग्रादमी किसीका दास है। ग्रगर ग्रादमी किसीका दास है, तो वह है मिथ्या-विश्वासों, ग्रन्ध-विश्वासों ग्रौर ग्रजानकारी का। उसी गुलामी से छुड़ाने का निश्चय ग्राज के वैज्ञानिक कर बैठे हैं ग्रौर उसे उस बन्धन से ग्राजाद करके रहेंगे। पाठशालाएँ ही ग्रव सत्येश्वर का मन्दिर हैं। परीक्षण-भवन ही यज्ञशाला है।

#### विज्ञान ने मानव को शक्ति दी

वैज्ञानिक ने उन दिनों का अन्त कर दिया, जव दुनिया यह समभती थी कि राजा में ईश्वर का ग्रंश रहता है यानी वह ग्रंशावतार है—वह इसलिए पैदा हुग्रा है कि ईश्वर का प्रतिनिधि वनकर वह ईश्वर की ग्राज्ञा का पालन करे। वैज्ञानिकों ने ग्रपनी मेहनत से ग्राज यह दिन ला दिया कि दुनिया यह समभ ले कि राजा जनता का अवतार है और वह भी अंशावतार। जिस तरह पहले प्रजा को दुःखी वनाने पर ईश्वर राजा को बीमार डाल देता था या यमदूत भेजकर ग्रपने यहाँ बुला लेता था, वैसे ही ग्राज जनता राजा को यह देखकर कि वह ग्रपना काम ठीकसे नहीं कर रहा है, गद्दी से उतार देती है, जरूरत हुई, तो जेलखाने भेज देती है ग्रीर ग्रगर उसने ग्रत्याचार किये हों, तो फाँसी के तख्ते पर चढ़ा देती हैं। जब इतनी वड़ी ताकत, जो कभी ईश्वर के हाथ में थी, वैज्ञानिकों ने जनता के हाथ सौंप दी, तो फिर उनसे किस बात की श्राशा नहीं की जा सकती ? पर उनके रास्ते में मिथ्या-विश्वास ग्रौर ग्रन्थ-विश्वास वड़ी भारी रुकावटें हैं। इस रुकावट के दूर करने में जनता जितना

उनका हाथ वँटायेगी, उतनी ही वे एक से एक वढ़कर ताकत जनता के हाथ सौंपते जायँगे। ग्रीर जल्दी या देर से वह दिन ला देंगे, जब दुनिया का कोई ग्रादमी न भीख माँगता मिलेगा, न किसीकी गुलामी करता मिलेगा।

# वह महँगा श्रोर यह सस्ता सौदा

इस लोक की राह चलकर ग्रादमी ने जो सौ-दो सौ वरस में पाया है, परलोक की राह चलकर वह हजारों वरस में भी उसे न पा सकता ग्रीर कहीं ग्रन्थ-विश्वास ग्रीर मिथ्या-विश्वास के नशे में चूर होकर सत्य-विश्वासियों को या सत्य के खोजियों को तलवार के घाट न उतारा होता, तो न जाने ग्राज दुनिया कहाँ की कहाँ पहुँच गयी होती। जिस तरह ग्राज पृथ्वी के लिए ग्राकाश-काल मिट गये हैं, वैसे ही ग्रव तक सौर-जगत् के कुछ भाग के लिए ग्राकाश-काल मिट गये होते, पृथ्वी ग्रीर मंगल ग्रादि दूसरे ग्रहों के वीच ग्राना-जाना शुरू हो गया होता।

ग्राज श्रमेरिका जैसे वैज्ञानिक देश में जो कभी-कभी काले लोग जीते-जी जला दिये जाते हैं, यह वैज्ञानिकों का काम नहीं। यह उन श्रन्ध-विश्वासियों का काम है, जो यहूदियों की तरह या दूसरे श्रीर धर्म-विश्वासियों की तरह यह समभे वैठे हैं कि ईश्वर ने उन्हींको दुनिया पर राज्य करने के लिए वनाया है श्रीर काले-पीले-लाल लोग उनकी सेवा के लिए गढ़े गये हैं। ये परलोक की राह चलनेवाले ही हैं, जो दुनिया को वढ़ते नहीं देख सकते। मुश्किल यह है कि एक तरह की परलोक राहवाला दूसरी तरह

की परलोक राहवाले का जानी दुश्मन बन वैठता है ग्रीर वैज्ञा-निकों का दुश्मन तो वह पैदा होने के दिन से ही होता है।

# इस लोक की राह अपनाकर देवता वनें

ग्रव वताइये, परलोक का रास्ता किस तरह सबके लिए एक हो सकता है? ग्रौर जब यह सबने ग्रपनी ग्राँखों देख लिया कि इस लोक का रास्ता एक है ग्रौर वह सबके सुख-शान्ति की वात सोचता है, तब उसे ग्रपनाने में ग्रानाकानी क्यों? ग्रव रही ग्रापसी लड़ाई, वह उस दिन खतम हो जायगी, जिस दिन विज्ञान यह बता देगा कि ग्रादमी को किसीने पैदा नहीं किया, वह खुद ही ग्रपना जोर लगाकर दुःख से भरी पशु-पक्षी की योनि में से निकलता हुग्रा ग्रादमी की योनि तक पहुँचा है। वह उसी दिन सुखी हो सकता है, जिस दिन वह ग्रपने में से सारा पशुपन दूर कर लेगा।

परलोक के देवी-देवता ग्रादमी की कल्पना की तसवीरें हैं। यह ग्रादमी ही है, जो देवता वनने की कोशिश में है ग्रीर एक दिन देवता वनकर रहेगा। इस लोक की राह ग्रपनाइये ग्रीर देवता वनिये।

turding is the color of the set of the color is the color of the color

grading was time

# : १० : सत्य ञ्रीर धर्म

जब हम बारह बरस के थे, तब क्लास के लड़कों में सवाल खड़ा हुआ, कि 'धर्म क्या है ?' सवाल उठानेवाला लड़का था ग्रार्य-समाजी । 'धर्म 'क्या है ?' इसका जवाव देनेवाला सबसे पहला लड़का था, सनातनी। उसने बताया, धर्म है, 'राम-नाम जपना'। उसके वाद दूसरे लड़के की वारी ग्रायी। उसने कहा, धर्म है, 'राधा-कृष्ण की भक्ति'। एक लड्का बोल वैठा, धर्म है, 'हनुमान-गढ़ी रोज शाम को जाना' । हनुमान-गढ़ी श्रतरीली नगर के वाहर एक छोटा टीला है, उस पर हनूमानजी का मन्दिर वना है। वहीं एक साधु रहते थे। हनुमान-भक्त रोज वहाँ जाया करते थे। वह लड़का इन भक्तों में से किसी एक काथा।

श्रव एक मुसलमान की वारी श्रायी। उसने कहा, धर्म है, 'क़ुरान का पढ़ना ग्रीर मसजिद में पाँचों वक्त नमाज के लिए जाना'। एक ईसाई वोला, धर्म है, 'वाइविल पढ़ना'। वह शायद इतवार को गिरजा-घर जाने की वात भी कहता, पर अतरीली में कोई गिरजा न था और शायद उसने अपनी उम्र में कोई गिरजा देखा भी न था।

अव हमारी वारी आयी। हम वड़े सिटपिटाये। न तो हमें

त्रपने किसी धर्म-ग्रन्थ का नाम याद था, न यही मानने को तैयार थे कि 'धर्म राम-नाम जपना है या राधा-कृष्ण जपना या किसी मन्दिर में जाना।' मन्दिर हम जरूर जाते थे, पर यह कहना हमें कुछ जैंचा नहीं कि मन्दिर जाना धर्म है। हमें समय की सूभ गयी। हमने सवाल करनेवाले से कहा, 'धर्म क्या है' इसका जवाब देना मुश्किल है। हम सोच-समभकर कल जवाब देंगे।

वह लड़का वोला, ठीक है, तुम कल जवाब देना; पर मैं बताये देता हूँ कि धर्म है, 'सत्यार्थ-प्रकाश पढ़ना, चारों वेदों को मानना ।'

हमारा मन उस दिन स्कूल में विलकुल न लगा। हम क्लास में सबसे ज्यादा होशियार थे। रेखागिएत में, उन दिनों की युक्लिड में तो हम इतने होशियार थे कि हमारे मास्टरजी ने उस वषय का क्लास को सबक देने के लिए हमें मास्टर बना रखा था, पर हम 'घर्म क्या है ?' इसका जवाब न दे सके। ११ बजे छुट्टी होते ही हम जल्दी-से-जल्दी घर पहुँच गये और सबसे पहला सबाल हमने ग्रपनी माँ से पूछा, 'धर्म क्या है ?'

स्कूल से ग्राते ही खाना माँगने की वात सुनने की श्रभ्यासी माँ चौंककर वोलीं, 'यह ग्राज तुभे खाना खाने से पहले धर्म की वात पूछने की क्यों जरूरत पड़ी ?'

हम जोश में थे। हार की शरम से खीभे थे। वोले, 'ग्रम्मा' यह हम पीछे वतायेंगे, पहले तुम वताग्रो, धर्म क्या है ?'

माँ ने ताड़ लिया, मामला नाजुक है। वोलीं, 'धर्म है सच वोलना।' हमें इस जवाव से तसल्ली और खुशी हुई, पर निराशा भी। हम तो समक्ष रहे थे कि हमें हमारी अम्मा कुरान, वाइविल, वेद, सत्यार्थ-प्रकाश जैसी कोई चीज धर्म के लक्षण में वतायेगी, पर उसने वताया 'धर्म है सच बोलना'। हम क्या करते? जो हमें वताया गया, उसे मान लिया। खाना खाने के बाद आज खेलक़द बन्द रहा। स्कूल का थोड़ा काम जरूर किया। स्कूल २ वजे पहुँचना चाहिए था, हम १-४५ वजे पहुँच गये। अभी तक क्लास के और लड़के न आये थे। क्लास में कुल नौ लड़के थे। थोड़ी देर में चार आ गये। पाँचवाँ था वही आर्यसमाजी लड़का। उसने आते ही पूछा, 'वताओ, धर्म क्या है?' हम बोले, 'सव लड़कों के आने पर वतायेंगे।' थोड़ी देर में बाकी तीन भी आ गये।

फिर हमने कहा, 'धर्म है, सच वोलना' यह सुनकर छहों लड़के हमारी तरफ हो गये ग्रौर वोले, 'विलकुल ठीक।' पर ग्रार्य-समाजी ग्रौर मुसलमान लड़का, दोनों एक साथ वोल उठे, 'वाह, सच वोलना भी कोई धर्म है? यह तो रोज की वात है। यह वताग्रो, तुम किस किताव या किस वेद को मानते हो?' हमारे जवाव देने से पहले हमारी तरफ के सब लड़के वोले, 'धर्म से ग्रौर किताव से क्या मतलव ? धर्म से ग्रौर काम से मतलव है। तुम दोनों वताग्रो, सच वोलना धर्म नहीं, तो क्या ग्रधम है?' ग्रुव वे दोनों वड़े चक्कर में पड़े। ग्रौर तो उन्हें कुछ सूभा नहीं; वोले, 'वेद सच्चा है ग्रौर धर्म है।' सुसलमान लड़का वोला, 'कुरान सच्चा है ग्रौर धर्म है।' हमारी तरफ से सब लड़के एकदम खिलखिलाकर हँस पड़े। वोले, 'सच्चा है, तभी तो धर्म है।'

दोनों लड़के यह जवाव सुनकर भेंप गये और चुप हो गये। मामला ग्राया-गया हुग्रा।

## धर्म सत्य श्रीर सत्य ही धर्म

वारह वर्ष की उम्र में वतायी हुई माँ की वह वात हमारे ग्रन्दर जड़ पकड़ गयी श्रोर वह ग्राज तक हमारे साथ है। सचमुच धर्म सत्य है ग्रीर सत्य ही धर्म है। धर्म की इस सीधी-सादी परिभाषा में सब कुछ समा सकता है। ईश्वर को ढूँढना है, तो सत्य को ग्रपनाये बिना वह हाथ ग्राने का नहीं। सत्य के विना किसी वात की खोज नहीं हो सकती। दुनिया में जितने वाद ग्रीर धर्म दिखाई देते हैं, सब सत्य की फिकर में रहते हैं। जब किसीको जरा-सी सचाई का पता लग जाता है, तब उसे बड़ी खुशी होती है। उसे खुशी हुई कि लोगों ने उसका ग्रादर करना शुरू किया।

श्राप वाजीगर का तमाशा देख रहे हैं। वह मुट्टी में एक रुपया लेकर उसके दो वना देता है श्रीर फिर तीन-चार-पाँच वना देता है। इसे सव लोग कहते हैं जादू, श्रीर तमाशा करनेवाले को कहते हैं, वाजीगर या जादूगर। जो जरा होशियार हैं श्रीर समसदार हैं, वे जादू को कहते हैं 'हाथ की सफाई'। हाथ की सफाई उन्होंने इस वास्ते नाम दिया कि वे यह खूव समस लेते हैं कि जादू जैसी कोई चीज नहीं श्रीर कोई ताकत ऐसी नहीं, जो एक रुपये के दो रुपये बना दे, जब तक कि एक रुपये जितनी चाँदी श्रीर वनाने के सारे साधन उसके पास न हों। उनसे भी ज्यादा श्रीर समसदार लोग हैं, जो बाजीगर की तरह एक रुपये के दो

रुपये वनाना जानते हैं श्रौर वे पूरे ईमानदार श्रौर सच्चे हैं, न किसीको घोखे में डालना चाहते हैं श्रौर न सचाई को वेढंगे कपड़े पहनाकर लोगों के लिए हँसी की चीज। वे साफ-साफ वता देते हैं कि वाजीगर किस तरह दूसरा रुपया छिपाकर रखता है श्रौर किस होशियारी श्रौर चालाकी से श्रपनी मुट्ठी में रख लेता है। इसलिए उसके लिए जादू श्रौर हाथ की सफाई सत्य नाम ले लेती हैं। श्रव सत्य के माने हो गये, किसी वात को ठीक-ठीक समक्ष लेना या किसी भेद की श्रसलियत तक पहुँच जाना।

#### देववाद सचाई के सामने फीका

जब तक सत्य परदे में छिपा रहता है, तव तक उसके हाथ की सफाई, जादूगरी, करामात, चमत्कार, करिश्मा, भूत, प्रेत, देव ग्रीर ईश्वर नाम रहते हैं ग्रीर जब तक ये नाम रहते हैं, तब तक दुनिया घोखे में ग्रा सकती है। वाजीगर सच का परदा हटाकर न तमाशा देखनेवालों का मन खुश कर सकता है, न ग्रपने पेट के लिए पैसा कमा सकता है। यह देववाद विलकुल कुछ लोगों की वाजीगरी या जादूगरी है। देववाद की तह में वैठे सत्य का पता चला ग्रीर देवपूजा खतम हुई। देवपूजा खतम हुई कि देवपुजारी के भूखों मरने की नौवत ग्रायी। वाजीगर की सचाई को ग्रगर सव लोग जान लें, तो फिर उसका कीन तमाशा देखे ग्रीर कीन पैसा दे?

यह देववाद ऐसा वाद है, जिसे सचाई की जरा जरूरत नहीं। सचाई के सामने यह विलकुल फीका पड़ जाता है ग्रीर ग्रपनी सारी चमक-दमक ऐसे खो वैठता है, जैसे सूरज के सामने चन्द्रमा। देववाद में अपनी चमक-दमक नहीं है। सत्य से मानी हुई चमक ही दमक है। फिर वह सत्य के सामने कैसे टिक सकता है? इसलिए वह हमेशा अपने भक्तों से यही चाहता है कि वे सब कुछ खोजें, लेकिन कभी सत्य की खोज में न लगें।

ग्रीर ग्राज जिसको धर्म नाम दे रखा है, वह देववाद ग्रीर उसीकी पूजा के क्रियाकांड के सिवा ग्रीर है ही क्या ? सत्य, ग्राहिसा ग्रादि पाँच व्रतरूपी धर्म तो ग्रव धर्म के नाम से पुकारा ही नहीं जाता। ग्रव तो धर्म है, ईश्वरवाद, व्रह्मवाद, देववाद, सर्वज्ञवाद, ग्राप्तवाद या एक शब्द में ग्रज्ञातवाद। जब धर्म ग्रीर देववाद एक ही चीज है, तव इन ग्रज्ञातवादी धार्मिकों से यह कैसे ग्राज्ञा की जा सकती है कि ये सच घटनाग्रों को जानने के लिए तैयार मिलेंगे ? सच घटनाग्रों की जानकारी तो ग्रज्ञातवादी धर्म की चमक-दमक खतम कर देगी।

# आज का धर्म वाद को वतानेवाला

घर्म के नाम पर खुले हुए स्कूल साफ कह रहे हैं कि उन्हें सचाई से कोई सरोकार नहीं, उन्हें तो अपने उस वाद से मतलव है, जिसके वे भक्त हैं और जिसका चमत्कार दिखाकर वे स्कूल के लिए पैसा इकट्ठा करते हैं। फिर घर्म के नाम पर कोई स्कूल खुला भी कहाँ है ? अगर हम घर्म की परिभाषा वही मान लें, जो हमारी माँ ने हमें वतायी थी और जो हमारे गले उतरायी है, तो घर्म के नाम पर खुले स्कूल घार्मिक स्कूल नहीं रह जाते। हिन्दू युनिविसिटी और मुस्लिम युनिविसिटी, दोनों में से कोई इस वात के लिए तैयार नहीं हो सकती कि वह अपने को 'धर्म-

युनिवर्सिटी' कहने लगे। 'थियो' के माने है धर्म। पर 'थियोसॉफी' एक ग्रपने किस्म का ग्रलग वाद है। थियोसॉफिकल कॉलेज ऐसा ही कॉलेज है, जैसे हिन्दू कॉलेज ग्रीर इस्लामी कॉलेज।

ग्राजकल का धर्म किसी वाद का वतानेवाला है। ग्रसल धर्म सत्य का दूसरा नाम है। यह वात पुरानी हो चली। इस-लिए ग्राज किसी धर्म के स्कूल में न सचा ग्रध्यापक टिक सकता है, न सचाई की खोज की जा सकती है ग्रौर न सचाई का पाठ दिया जा सकता है। हिन्दू ग्रौर मुस्लिम युनिवर्सिटियों में विज्ञान पढ़ाया जाता है सही, पर वह तभी तक वहाँ है, जब तक वह उन मान्यताग्रों को नहीं छोड़ता, जो हिन्दू ग्रौर इसलाम धर्म ग्रपनाये हुए हैं। ग्राज का धर्म यह नहीं चाहता कि कोई ग्रादमी पूरी ग्राजादी से विचार करे। ग्राजादी से सचाई तक पहुँचना धर्म में ग्रपराध माना गया है। वहाँ तो धर्म को ग्रुगों में स्थान दिया गया है। धर्म में सत्यवादियों पर प्रहार करना वहादुरी मानी गयी है ग्रौर ग्रसत्यवाद पर प्रहार करना कायरता।

# सत्य पर 'सिद्धान्तों' का दखल

धर्म में सत्य की जगह सिद्धान्तों ने ले ली है। इसलिए सिद्धान्त-विरुद्ध हर वात ग्रसत्य ठहरा दी गयी है यानी धर्म ने सत्य का नाम ग्रसत्य ग्रीर ग्रसत्य का नाम सत्य घर लिया है। ग्रव जो धर्म-ग्रन्थों में लिखा हुग्रा है, वह कितना ही ग्रसत्य क्यों न हो, सत्य है। ग्रीर धर्म-ग्रन्थों में लिखे सिद्धान्तों के विरुद्ध जो कुछ कहा जाय, वह कितना भी सत्य क्यों न हो, ग्रसत्य कहकर दुत्कार दिया जायगा ग्रीर कहनेवाले को नास्तिक पदवी दे दी जायगी। जिस तरह मेहतरों को गंदे काम करते-करते गंदी हवा में साँस लेने की ग्रादत हो जाती है ग्रीर उन्हें बुरा नहीं मालूम होता, वैसे ही ग्राजकल धर्म के स्कूलों में मिथ्यात्व की हवा में साँस लेने की ग्रध्यापकों को ग्रादत हो गयी है। उनको पता ही नहीं लगता कि उस हवा से भी कोई तकलीफ हो सकती है। वे यह सोच ही नहीं सकते कि जो धर्म किसी वाद पर निर्भर है, वह कभी सच्चा नहीं हो सकता। ग्रज्ञात चीजों के वारे में जो वात कही जायगी, वह ग्राये दिन वदलती रहेगी। जो नयी वदली वात से इनकार करेगा, वह सत्य से इनकार करेगा। उसके वारे में यही कहा जा सकता है कि वह सत्य का खोजी नहीं है।

धर्म जब पंथ का रूप लेता है ग्रीर वह रूप उसे लेना ही पड़ता है, तब वह सचाई से एकदम हट जाता है ग्रीर कल्पनाग्रों में निवास करने लगता है। उन कल्पनाग्रों को ही वह सिद्धान्त नाम से पुकारता है, वही सिद्धान्त सच्चे मालूम होते हैं। उन्हीं ग्रपने बनाये सिद्धान्तों से वह शासित होने लगता है। इस तरह सच्चे धर्म को ग्रसत्य धर्म में फँसाकर ग्रादमी ग्रपने लिए एक ग्राफत खड़ी कर लेता है। धर्म ने जहाँ पंथ का रूप बना लिया, वहाँ वह तर्क ग्रीर बुद्धि का दुश्मन बना ग्रीर ग्रन्थ-विश्वास का दोस्त बना। उस वक्त वह यह सोचना छोड़ देता है कि धर्म सत्य या सत्य की खोज के सिवा ग्रीर कुछ है ही नहीं।

धम के पीछे चिष्पियाँ क्यों ? धर्म अनेक नाम लेकर खुले-खुले कह रहा है कि वर्म नहीं रह गया। घर्म एक है और वह सत्य के सिवा और कुछ नहीं हो सकता, इस वात का इससे वढ़कर श्रीर क्या सबूत हो सकता है कि हर ग्रनपढ़ ग्रौर पढ़े-लिखे के मुंह से, फिर वह चाहे किसी धर्म का माननेवाला क्यों न हो, दूसरे धर्मवाले के लिए ग्रगर वह सच वोले, सत्य व्यवहार करे, तो यह मूँह से निकल जाता है कि "ग्रादमी है वड़ा धर्मात्मा"। एक धर्मवाला जब दूसरे धर्मवाले के लिए 'धर्मात्मा' शब्द का प्रयोग करता है, तो वह उसी वक्त करता है, जब दूसरे ग्रादमी ने धर्म को सच्चे अर्थों में निभाया होता है। आज तक कभी किसी हिन्दू ने किसी मुसलमान को 'हिन्दू धर्मात्मा' कहकर नहीं पुकारा। किसी मुसलमान ने किसी हिन्दू को 'मुसलमान ईमानदार' कहकर नहीं पुकारा । जब 'ईमानदार' ग्रीर 'धर्मात्मा' ऐसे शब्द हैं कि ग्रपने पीछे हिन्दू और मुसलमान वला वरदाश्त नहीं कर सकते, तव धर्म अपने साथ हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, जैन श्रादि चिप्पियों को कैसे वर्दाश्त कर सकता है ? जो भी धर्म के पहले हिन्दू, मुसलमान ग्रादि शब्द जोड़ता है, वह धर्म का कुछ बुरा ही करता है, भला नहीं। सत्य, प्रेम, ब्रह्मचर्य ग्रादि के पीछे कभी किसीने हिन्दू, मुसलमान शब्द नहीं जोड़े और न जुड़ सकते हैं। फिर धर्म, जो इन्हीं सत्य, ग्रहिंसा, श्रादि का एक नाम है, इसके पीछे हिन्दू-मुसलमान कैसे ठीक हो सकते हैं ?

# धर्म किसीसे टकराता नहीं

एक धर्म दूसरे धर्म से टकराकर यह साफ वता रहा है कि सव धर्म अपने साथ कोई अज्ञातवाद लेकर सचाई से दूर पड़ गये हैं और इसलिए ग्रापस में टकराते हैं। धर्म प्रकाश की तरह स्वच्छ है। जिस तरह प्रकाश प्रकाश से नहीं टकराता, वैसे ही धर्म धर्म से नहीं टकरायेगा। दो ईमानदार ग्रादमी कभी भगड़ा नहीं कर सकते। दो धर्मात्मा कभी नहीं लड़ेंगे। ग्रगर हिन्दू ग्रौर मुसलमान ईमानदार या धर्मात्मा होते, तो ग्रापस में कभी न लड़ते। गुरु नानक ग्रौर सन्त कवीर ने तो इन दोनों को वड़ी खरी-खरी सुनायी है ग्रौर सचमुच ये दोनों ही क्या, सभी धर्म-वाले उसी तरह की खरी-खरी वातें सुनने के योग्य हैं।

श्रज्ञातवादी वर्म, फिर उसका नाम कुछ भी क्यों न हो, वह किसीको ईमानदार नहीं रहने दे सकता। इसके माने यह हिंगज नहीं है कि किसी घर्म में ईमानदार श्रादमी हो ही नहीं सकते। ऐसा होता, तो दुनिया ईमानदारों से खाली हो गयी होती, क्योंकि हरएक श्रादमी किसी-न-किसी घर्म को जरूर श्रपनाये हुए है। श्रीर हरएक धर्म किसी-न-किसी श्रज्ञातवाद को श्रपनाये हुए है। इम तो यहाँ यह कहना चाहते हैं कि कोई श्रज्ञातवादी घर्म श्रपने श्रज्ञातवाद के बारे में कभी ईमानदार नहीं हो सकता। वह उस वारे में न कभी सच्चा हो सकता है श्रीर न श्राहंसक। उस श्रज्ञातवाद की खातिर वह चोरी कर लेगा श्रीर जरूरत हो, तो जारी पर उतारू हो जायगा।

# 'धर्म खतरे में' सफेद फूठ

'धर्म खतरे में है' यह ग्रावाज ऐसी ही भूठी है, जैसे कोई यह कहे कि 'प्रकाश ग्रंबेरे में है'। धर्म पर कभी खतरा नहीं ग्रा सकता, खतरे में ग्रंधर्म ही पड़ता है। धर्म का सम्बन्ध श्रात्मा से है, मन से हैं। खतरे की वहाँ तक पहुँच ही नहीं है। कुछ स्वार्थी लोग जब 'धर्म खतरे में हैं' यह श्रावाज उठाते हैं, तब उनका यही मतलब होता है कि उनके दोस्तों का स्वार्थ खतरे में है। हिन्दू, मुसलमान श्रादि धर्म भी खतरे में पड़ सकते हैं, क्योंकि वह धर्म नहीं रह गये, पंथ बन गये हैं। जब पंथपना खतरे में हो, तब यह समफना चाहिए कि धर्म प्रकट होने को है। जब सन् १६४७ में हिन्दू-मुस्लिम पंथ लड़ रहे थे, तब जगह-जगह धर्म का प्रकाश हुश्रा था श्रीर दस-वीस या सी-दो सी की जान बची थी। जो ईमानदार श्रादमी हैं, वे 'धर्म खतरे में हैं' की श्रावाज से कभी नहीं भड़कते। भड़कते हैं सिर्फ वे लोग, जो देववाद या श्रज्ञातवाद को ही धर्म समक्ते हुए हैं।

#### श्रज्ञातवादी धर्म की वलाएँ

ग्रज्ञातवादी घर्म के माननेवाले में ग्रपने ढंग की एक ग्रलग वात पैदा हो जाती है। उसे उसकी घर्म की किताव से कुछ भी पढ़कर वता दीजिये, वह उसे सच मान लेगा। वह यह जानने की कोशिश नहीं करेगा कि वैसी वात किताव में लिखी है या नहीं। उसमें एक दूसरा ऐव ग्रीर पैदा हो जाता है। ग्रगर उसकी घर्म की किताव का ग्रर्थ कोई दूसरे धर्मवाला ठीक-ठीक कर दे, तो वह उसे ठीक नहीं मानेगा। वह उस नाठीक ग्रर्थ को ठीक समभेगा, जो उसका धर्मवाला उसे वतायेगा।

कोई घर्मवाला जव यही मान वैठा कि उसकी घर्म-पुस्तक ईश्वर की या सर्वज्ञ की कही हुई है, तव उसे ग्रपने-ग्राप यह वात भूठ मालूम होने लगेगी कि कोई उसे यह कहे कि इस किताव में भी कोई ग्रसत्य बात है। क्योंकि उसकी यह वात ही ग्रसत्य हो जायगी कि ईश्वर कभी ग्रसत्य नहीं बोलता ग्रीर सर्वज्ञ कभी ग्रसत्य नहीं कहता। ग्रज्ञातवाद में सबसे बुरी वला यही है। यही वजह है कि धर्मवाले सचाई की ग्रोर नहीं बढ़ पाते।

# धर्मग्रंथ ईश्वरोक्त नहीं

जिस धर्मग्रन्थ को धर्मवाले ईश्वर का कहा या सर्वज्ञ का कहा कहते हैं, उसके वारे में वे कुछ सोचना ही नहीं चाहते। वे इतना भी नहीं सोचना चाहते कि वह किताव, जिसे वे ईश्वर या सर्वज्ञ की कही कह रहे हैं, कागज की है ग्रीर कागज ग्रादमी का बनाया है। वह स्याही से लिखी है ग्रीर स्याही ग्रादमी की बनायी है। उसे किसी ग्रादमी ने लिखा ग्रीर उसमें जो कुछ लिखा गया, वह किसी ग्रादमी के मुँह से निकला है। ग्राव वह ईश्वर या सर्वज्ञ का कहा हुग्रा कैसे हो सकता है? वे इतना भी नहीं सोचते कि जैसे उनकी किताव ईश्वर या सर्वज्ञ की कही है, वैसे वे उसे ईश्वर या सर्वज्ञ की कही मानने से कैसे इनकार कर सकते हैं, जिसमें उनकी किताव से उल्टी वातें लिखी हैं ग्रीर जिसे उस किताव के माननेवाले ईश्वर या सर्वज्ञ की कही कहते हैं।

ईश्वर या सर्वज्ञ किस भाषा में वोलते हैं, यह किसीको पता नहीं। ईश्वर या सर्वज्ञ के वारे में यह कहना कि वह सिर्फ एक ही भाषा जानता है, उसकी सर्वज्ञता पर दोष लगाना है। इसलिए हर भाषा में लिखा धर्मग्रन्थ ईश्वर का कहा हो सकता है। फिर जव सभी धर्मग्रन्थ ईश्वर के कहे हो गये, तो एक-

दूसरे से विपरीत होने की वजह यह सावित कर देगी कि वे न ईश्वर के हैं ग्रीर न सर्वज्ञ के ही । वे मामूली ग्रादमी के कहे हुए हैं। उनमें जो कुछ लिखा है, उसमें से वहुत-सी वातें ऐसी हो सकती हैं, जो उस समय के लिए सच हों, पर ग्राज की दुनिया में वह विलकुल सच नहीं।

जिन धर्मों ने सर्वज्ञ को माना है, उन्होंने किसी ग्रादमी को ही माना है। ग्रव वे श्रपने ग्रन्थों को किस बूते पर सर्वज्ञ का कहा कहते हैं? जो ग्रन्थ ग्राज सर्वज्ञ के कहे माने जाते हैं, उनमें से वहुत तो संस्कृत में हैं ग्रीर संस्कृतज्ञ उनके सर्वज्ञ भले ही हों, पर उन्होंने कोई वात संस्कृत में कही नहीं। वैसा करके वे करते भी क्या? क्योंकि जब वे थे, तब संस्कृत के जानकार उँगलियों पर गिने जाते थे। जिनसे उन्हें ग्रपनी वात कहनी थी, वे संस्कृत विलकुल न जानते थे। इसलिए संस्कृत का कोई ग्रन्थ सर्वज्ञ-वाक्य नहीं माना जा सकता।

प्राकृत ग्रीर पाली के ग्रन्थों में बहुत-से ऐसे हैं, जो गाथाग्रों में लिखे हैं यानी पद्य में ग्रीर यह भी साफ वात है कि सर्वज्ञ गाकर यानी गाथाएँ नहीं वोलते थे। उन्होंने जो कुछ कहा, वह गद्य में। इसलिए गाथाग्रों में लिखे सब ग्रन्थ सर्वज्ञ के कहे नहीं रह जाते।

वर्म ग्रन्थ गद्य में हैं नहीं। अगर यह मान लिया जाय कि कुछ हैं, तब यह सवाल खड़ा होता है कि वे कब लिखे गये? यह सबको स्वीकार है कि वे आमतौर से न सर्वज्ञ ने लिखे, न सर्वज्ञ के समय लिखे गये। अंदाजन पाँच सौ वर्ष वाद लिखे गये। यानी सुन-सुनकर ग्रीर याद से लिखे गये। इसी वास्ते वे 'श्रुति' ग्रीर 'स्मृति' नाम से पुकारे जाते हैं। तब वे किस तरह सर्वज्ञ-वाक्य हो सकते हैं?

ग्रब यह मानकर चिलये कि किसी-न-किसी तरह हमें सर्वज्ञ के वचन ज्यों-के-त्यों मिल गये हैं, पर जिसे ग्राप सर्वज्ञ कहते हैं, उसे सव सर्वज्ञ मान लें, यह जरूरी नहीं। शायद इसे ग्राप भी जरूरी नहीं समभेंगे। क्योंकि इससे यह बड़ी मुश्किल खड़ी हो जायगी कि हर काला ग्रक्षर सर्वज्ञ-वाक्य हो जायगा। फिर इसके सिवा हमारे पास क्या रह जाता है कि हम उन ग्रन्थों को तर्क ग्रीर बुद्धि की कसौटी पर कसें ग्रीर प्रत्यक्ष से मिलान करें, ग्रीर ग्रगर वे ठीक न उतरें, तो मान लें कि वे सर्वज्ञ के कहे नहीं हैं। ऐसा मान लेने से कि जो जिस किताव में लिखा है, ठीक है, सबके लिए मुश्किल हो जायगी ग्रीर एक किताव दूसरी किताव को भूठी सावित कर देगी।

#### वेचारा सर्वज्ञ-वाक्य का विश्वासी !

सर्वज्ञ-वाक्य सव ठीक होते हैं श्रीर जो घर्म -ग्रन्थों में लिखा है, वह सव सर्वज्ञ-वाक्य है, इस वात ने एक ऐसी अनोखी हालत पैदा कर दी है, जिस पर हँसी आये वगैर न रहेगी। मान लीजिये, एक आदमी अपने शादीशुदा लड़के को, जो मुद्दत से घर आने की नहीं सोच रहा, नाराज होकर यह लिखता है कि तुम बहुत नालायक हो कि इतने दिन हो गये और घर पर नहीं आते। तुम्हारे न आने से तुम्हारी पत्नी विधवा हो गयी। वह आदमी अपनी पत्नी के विधवा होने की खवर सुनकर रोने लगता है।

उसके दोस्त जव उससे पूछने ग्राते हैं कि वह क्यों रोता है, तव वह ग्रपने रोने का यह कारण वताता है कि उसकी पत्नी विघवा हो गयी। फिर उसके दोस्त उसे यह वताते और समभाते हैं कि उसके जीते जी उसकी पत्नी किस तरह विधवा हो सकती है ? यह सुनकर वह जवाव देता है कि "हाँ, यह तो मैं भी जानता हूँ कि मेरे जीते जी मेरी पत्नी विघवा नहीं हो सकती। पर मेरे वाप जो हमेशा सच वोलते हैं। वे उस जगह मौजूद हैं, जहाँ मेरी पत्नी रहती है। उनके हाथ की लिखावट मैं खूव अच्छी तरह पहचानता हूँ ग्रौर इस चिट्ठी पर मोहर भी उसी नगर की है, जहाँ मेरे पिताजी रहते हैं। फिर उसी चिट्ठी में लिखा है कि मेरी पत्नी विधवा हो गयी, तब मैं इसे भूठ कैसे कह सकता हूँ ? मेरे पास इसके सिवा क्या चारा है कि मैं यह कहूँ कि चूंकि ग्राप ग्रकल की वात कह रहे हैं, ऐसी वात कह रहे हैं, जो मेरी समभ में श्रार श्रकल में भी श्राती है, इसलिए श्राप उतने ही ठीक हैं, जितने मेरे वाप की लिखी चिट्ठी के शब्द। ग्रापकी वात बुद्धि-प्रमाए। इसलिए ठीक ग्रीर मेरी वात पिताजी की चिट्टी ग्रागम प्रमारा इसलिए ठीक। मेरे पिता चाहे सर्वज्ञ न हों, पर उस मामले की वह वात लिख रहे हैं, जिसके वे हर तरह से पूरे जानकार हैं ग्रीर इस तरह सर्वज्ञ हैं।"

उपर की वात पढ़कर पढ़नेवालों को जरूर हुँसी ग्रायेगी। पर हम उदाहरण देकर नहीं रह जायँगे। हमने इस तरह का मामला ग्रपनी ग्राँखों देखा है। हम यहाँ नाम नहीं देना चाहते। एक वड़े मशहूर वैरिस्टर थे। उन्होंने ग्रपने धर्म -ग्रन्थों का वहुत

ग्रच्छा ग्रध्ययन किया था ग्रीर उनका निचोड लेकर ग्रंग्रेजी में एक खासी मोटी किताव भी लिखी थी। उनके वर्म के श्रनुसार जमीन चपटी है, उसके चारों तरफ ग्रनेक सूरज-चन्द्रमा घूम रहे हैं, ग्रनगिनत दुनियाएँ हैं। पर हमारी इस जानी हुई दुनिया के दो सूरज ग्रीर दो चन्द्रमा हैं। वे वैरिस्टर साहव इस वात के ऐसे ही विश्वासी थे, जैसे हमारा ऊपर का जवान अपने वाप की वात का । क्योंकि वे ग्रपने धर्म -ग्रन्थों को सर्वज्ञ का कहा समभते थे। एक दिन एक ग्रादमी दो सूरज के वारे में उनसे वहस कर वैठा । उसने उनसे कहा, "इस वात में तर्क-शास्त्र की कहाँ जरूरत है, ग्राप नार्वे देश के ग्रोस्लो नगर में चलिये, मैं ग्रापको २४ घंटे नहीं, २४ दिन तक एक ही सूरज दिखा सकता हूँ, फिर दो सूरज कहाँ से आ गये ? अगर कोई दूसरा सूरज है, तो वह किंघर रास्ता काटकर निकल जाता है ? ग्रगर ग्राप सर्वज्ञ की वात सिद्ध करने के लिए यह भी कह दें कि वह रास्ता काटकर निकल जाता है, तो फिर ग्रापको इस सवाल का जवाब देना पड़ेगा कि दूसरे दिन ग्रॅंबेरा क्यों नहीं रहता ? क्योंकि श्रापका धर्म -शास्त्र यह कहता है कि एक दिन एक सूरज ग्राता है, दूसरे दिन दूसरा।"

उसकी यह दलील अकाट्य थी, पर वैरिस्टर साहव उसे कैसे मान लेते। ऐसा मानने से उनके धर्मग्रन्थों को वट्टा लगता और उनकी धर्म की सारी बुनियाद ढह जाती। शायद सबसे बुरी वात यह होती कि जिन श्रद्धालु सेठों ने उन्हें पण्डित मान रखा था, उनकी नजर में वे पण्डित न रह जाते। इसलिए उन्होंने उस ग्रादमी से यही कहा कि "हम ऐसा नहीं मानते, जब तक कि खुद वहाँ जाकर यह न देखें।" वस, उनके भक्त सेठ उछल पड़े ग्रीर तुरन्त उनके ग्रीस्लो जाने का इन्तजाम कर दिया गया। वे वहाँ गये ग्रीर ग्रपनी ग्रांखों एक ही सूरज को २४ घण्टे देख ग्राये।

श्रोस्लो के सूरज की बात श्राज स्कूल में पढ़नेवाला वच्चा-वच्चा जानता है, वे खुद भी जानते थे, पर सीवे-सीवे मान लेने से श्रोस्लो की सैर कैसे होती ? फिर श्रोस्लो में २४ घण्टे सूरज देखकर श्रीर वहाँ से लौटकर उन्होंने कहा क्या ? वही, जो उस जवान ने कहा था कि "श्रोस्लो का एक सूरज इसलिए ठीक कि हमने वह श्राँखों देखा, श्रीर धर्मग्रन्थ के दो सूरज इसलिए ठीक कि वह सर्वज्ञ ने श्रपनी श्राँखों देखे।" वस, ग्रन्थों को सर्वज्ञ-वाक्य मानने से समाज में इस तरह के श्रादिमयों के पैदा हो जाने का वहुत वड़ा खतरा वना रहता है।

#### श्रागम-प्रमाण का अर्थ

ग्रागम-प्रमाण पर हमने बहुत सोचा कि ग्राखिर यह वात वयों चल पड़ी ग्रीर समभदार से समभदार लोग क्यों इसे महत्त्व देते हैं? क्या इसमें कहीं कुछ सचाई है या कोरा घोखा है? बहुत सोचने पर हम इस नतीजे पर पहुँचे। मान लीजिये, हमारे वाप-दादों में से कोई एक लन्दन गया ग्रीर वहाँ से वह लन्दन के किसी गिरजे का सिवस्तर हाल लिख लाया ग्रीर वह ग्रन्थ हमारे पास है। लन्दन के वारे में ग्रीर खासकर उस गिरजे के वारे में लिखा हुग्रा हमारे लिए वह ग्रागम है ग्रीर फिर प्रमाण तो है ही। ग्रव ग्राज कोई ग्रादमी लन्दन देखकर ग्राता है ग्रीर हमें उस पर सन्देह है कि वह लन्दन गया नहीं, यों ही गप हाँकता है। ग्रव जब वह उस गिरजे की वात सुनाने लगे, जिसका कि जिक्र हमारे वाप-दादों के लिखे उस ग्रन्थ में है, तो हम उस ग्रादमी की वात सुनकर ग्रपने ग्रन्थ से मिलान करेंगे ग्रीर फिर भट समभ जायेंगे कि वह ग्रादमी सचमुच लन्दन गया है। क्योंकि अब उसकी वात आगम-प्रमाण होगी। क्योंकि वह जो कह रहा है, वही हमारे आगम में लिखा है। ग्रव ग्रीर ग्रागे चलिये। हमारे वाप-दादा गये थे सौ-दो सौ वरस पहले । तव से अब तक गिरजे में बहुत-से वदलाव हुए होंगे । उसकी सजावट तो एकदम बदल गयी होगी। इसलिए हमारा यह फर्ज होगा कि हम उस नये-नये गिरजा देखकर श्रानेवाले की वात सुनकर अपने आगम को आज की तारीख तक ठीक कर लें, जिससे हमारा ग्रागम-प्रमागा वना रहे। प्रमागा के माने हैं सच्चा या सच्चा ज्ञान । अव आगम हो गया सच्चा ज्ञान करानेवाला । इसीको वोलचाल में कहा जाता है 'ग्रागम प्रमारा है।'

# आगम को प्रमाण मानना भारी भूल

श्रागम-प्रमाण के बारे में एक बात श्रीर रह गयी। श्रागम सच्चा होता है, सच्चा बनाया जाता है श्रीर सच्चा बनाया जाता रहेगा। इसीको यों भी कहा जा सकता है कि श्रागम प्रमाण होता है, प्रमाण बनाया जाता है श्रीर प्रमाण बनाया जाता रहेगा। मेरे बाप-दादों का दो सौ बरस पहले लिखा लन्दन का हाल श्रागम-प्रमाण है दो सौ बरस पहले के लिए, श्राज के लिए नहीं। हाँ, बह श्राज भी प्रमाण हो सकता है, श्रगर उसे प्रमाण बनाया जाता रहा है यानी ठीक किया जाता रहा है ग्रीर ग्रागे भी प्रमारा रहेगा, अगर ठीक किया जाता रहा। ऋपभ नाम का वच्चा अगर वदलता रहा ग्रीर खाता-पीता रहा, तो वह जवान जरूर होगा, उसके दाढ़ी-मूँछ भी निकलेंगी, वहुत कुछ शकल भी वदलेगी, उसकी ग्रादतें भी वदलेंगी, फिर भी वह ऋषभ रहेगा। ग्रागे फिर ग्रीर वदलेगा, फिर भी ऋपभ रहेगा । वह वचपन से बुढ़ापे तक प्रमारा रहेगा, लेकिन ग्रगर किसी वजह वचपन में उसका खाना वन्द कर दिया जाय ग्रौर वह मर जाय ग्रौर उसे एक शीशे के वर्तन में स्प्रिट में ज्यों का त्यों रख दिया जाय, तो वह ऋपभ न तो उस साल के लिए प्रमारा है, जब वह पैदा हम्रा था या जव वह जीवित था, क्योंकि उस समय का भी सविस्तर हाल वह नहीं वता सकता। उस समय के लिए वह उतना ही प्रमाण होगा, जितना उस समय के वह कपड़े पहने है या जैसा वह उस समय का शरीर लिये हुए है। वाद के लिए वह किसी तरह प्रमागा नहीं माना जायगा। ठीक इसी तरह किसी धर्म के भी धर्म-ग्रन्य क्यों न हों, वह न उस समय के लिए प्रमाण हो सकते हैं, जिस समय वे कहे गये या लिखे गये थे ग्रीर ग्राज के लिए तो किसी भी तरह प्रमाएा नहीं हो सकते। जिस समय वे लिखे गये थे ग्रीर जिन रस्म-रिवाजों का उनमें जिक्र है, वे रस्म-रिवाज श्रव नहीं रहे, इसलिए वे प्रमाण नहीं । उस समय के रस्म-रिवाजों के बारे में वह जितना उनमें लिखा है, उससे ज्यादा वता नहीं सकते, इसलिए उस समय के लिए भी प्रमाण नहीं हैं। इसलिए ग्रागम को प्रमाण मानना वड़ी भारी भूल है। तर्कशास्त्र में जिसने ग्रागम-प्रमाण को माना, उसने वहुत वड़ी भूल की। यह भूल ग्रव ठीक हो जानी चाहिए।

# सत्य के लिए आगम की जरूरत नहीं

त्रागम वही प्रमाण माना जा सकता है, जो श्राये दिन प्रमाण बनाया जाता रहता है ग्रीर यह किसी ग्रागम के साथ नहीं हो रहा है। ग्रव रह गये ग्रटल सत्य, ऐसे सत्य, जिन्हें सारी दुनिया मानती है। उन सत्यों के लिए ग्रागम की जरूरत नहीं। ग्रागम तो एक तरह का कोश होता है यानी डिक्शनरी। कोश ग्रीर डिक्शनरी तभी देखी जाती है, जब किसी शब्द के माने मालूम न हों। ग्रटल सत्य या सबके जाने-माने सत्य के लिए ग्रागम की कहाँ जरूरत पड़ेगी? इसलिए भी सारे ग्रागम ग्रप्रमाण ही रह जाते हैं।

#### धर्म को सत्य पर कसिये

त्रागम को ही लोगों ने वर्म मान रखा है ग्रीर हम यह कह ही चुके कि ग्रागम ग्रप्रमाण है। इसलिए ग्रागम नामधारी वर्म ग्रप्रमाण हुग्रा। धर्म ग्रीर ग्रागम का जो ग्रंश ग्रटल सत्य या सवके माने-जाने सत्य को लिये है, उसके लिए न ग्रागम की जरूरत है, न धर्म की। उतना धर्म तो ग्रादमी के साथ एकमेक हो गया है, उसके लिए उसे किसी ग्रागम की जरूरत नहीं ग्रीर फिर गहराई से सोचने पर धर्म ग्रपने-ग्राप कहीं खड़ा हो नहीं रह सकता। कितावों में तो वह किसी भी तरह नहीं रह सकता। यह ग्रादमी में ही रह सकता है। इसलिए भी धर्म-ग्रन्थ

वेकार हो जाते हैं। ग्राग-पानी की तरह धर्म-ग्रन्थों का जो ग्रपना धर्म है, वह उनके ग्रपने काम का है, हमारे किसी काम का नहीं। जितना हमारे काम का है, उतने से फायदा उठाने में समाज को कोई हानि नहीं। समाज को हानि तो तभी पहुँचती है, जब धर्म-ग्रन्थों का बुद्धि ग्रौर तर्क से बड़ा मानकर सहारा लिया जाता है। जब ग्रौर जहाँ बुद्धि ग्रौर तर्क को ढीला डाला कि व्यक्ति ग्रौर समाज को हानि हुई। प्रचलित धर्म ग्रौर सत्य में यही ग्रन्तर है कि धर्म ग्राज की तारीख तक की बात नहीं कहता ग्रौर सत्य ग्राज तक की वात कहता है। इसलिए धर्म को सत्य ग्रौर परीक्षा की कसौटी पर कसे जाने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

. .

# सत्य और चमत्कार

चमत्कार ग्रपने-ग्राप में कुछ नहीं होते, उनका मोल मामूली घटना जितना होता है। एक चमत्कार दूसरे के लिए मामूली घटना से नीचे दरजे की वात हो सकती है। जिसके लिए जो जितना चमत्कार है, वह उतना ही ग्रजानकार है। ग्रजानकारी ग्रीर चमत्कार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। किसी चीज को देख जब एक ग्रादमी को ग्रचरज होता है, तब वह उसे 'चमत्कार' नाम दे देता है। जो जितना ग्रजानकार ग्रीर मूरख है, उतना ही चमत्कार उसके लिए दुनिया में रहता है। दूध-पीता बालक ग्रगर बोल सकता, तो ग्राये दिन सैकड़ों चमत्कारों का हाल सुनाता। क्योंकि वह दुनिया की सभी वातों से ग्रजानकार होता है।

#### चमत्कार श्रोर श्रचरज

चूल्हें में पड़कर जब रोटी फूलती है, तब बच्चे ही नहीं, बड़े-बड़े फड़क उठते हैं। अगर वे यह कहें कि यह आग का चमत्कार है, तो क्या भूठ कहते हैं? पर गहराई से सोचा जाय, तो वे सत्य के तिनक भी पास नहीं। आग में फुलाने की ताकत होती यानी आग फुलाने का चमत्कार दिखा सकती, तो वह लोहे के पतरे की बनी रोटी क्यों न फुला देती? पर वह ऐसा नहीं करती। इसलिए जो यह समभता है कि रोटी का फूलना आग का चमत्कार है, वह अपनी अजानकारी का प्रमाण देता है। ग्रचरज को सवने ग्रजानकारी का पुत्र माना है। ग्रचरज के विना कोई घटना चमत्कार नाम नहीं पा सकती। अव रही ग्रचरज की पहुँच। वह वच्चों तक सीमित नहीं, उसकी सीमा वहत वड़ी है। उसमें वड़े-से-वड़े विद्वान् समा जाते हैं। ग्रगर ऐसा न होता, तो वड़े-वड़े विद्वान् वाजीगरों का तमाशा देखने न ग्राते । कभी-कभी मालूमी वातें भी वड़े-वड़े विद्वानों ग्रीर वड़े-वड़े वैज्ञानिकों के लिए चमत्कार सावित हो सकती हैं। ग्रमेरिका में जव हिन्दुस्तान से कोई जलेवी वनानेवाला पहुँच गया, तो वहाँ के लोगों को यह चमत्कार ही मालूम हुग्रा कि ग्राटे की इतनी वारीक थैली में किस तरह रस भरकर एक पहिये जैसी चीज वना दी जाती है। वे वनानेवाले से जलेवी की मशीन दिखाने के लिए कहने लगे । जव उन्हें मालूम हुग्रा कि उसकी कोई मशीन नहीं होती श्रीर वह हाथ से वन जाती है, तव उनके ग्रचरज का ठिकाना न रहा । जव उन्होंने ग्रपनी ग्राँखों जलेवी वनते देख लिया, तव उनके मुँह से निकल गया, एकदम चमत्कार! यह है ग्रापका चमत्कार!!

#### चमत्कार और धर्म

धर्म-ग्रन्थ चमत्कारों से भरे पड़े हैं। धर्म का ग्रन्थश्रद्धालु कितना ही विद्वान् क्यों न हो, साधु-सन्तों ग्रीर महापुरुषों के चमत्कारों पर विश्वास करता है। उसे चमत्कारों पर विश्वास करने में ग्रानंद ग्राता है।

#### चमत्कार की तालीम

ग्राजकल हमारे वच्चों को चमत्कार की तालीम उस दिन से मिलने लगती है, जिस दिन वे पालने में होते हैं। यह इस वास्ते जरूरी है कि उन चमत्कारों के विना कोई ग्रादमी धर्म के पैगम्बरों पर ईमान ही नहीं ला सकता। जब तक उसे यह सावित करके न दिखा दिया जाय कि वह ग्रादमी नहीं, ईश्वर के भेजे हुए देवता या फरिश्ते थे ग्रीर जब वचपन से किसी दिमाग में इस तरह की वार्ते भर दी जायें, तब यह बड़ी वात नहीं कि बड़े होकर वह वालक चमत्कारों में ऐसे ही विश्वास करने लगें, जैसे दुनिया की ग्रीर वातों में।

साघु लोग चमत्कारी होते हैं, यह वात ग्राजकल हरएक ग्रपढ़ में जगह किये है। ग्रीरतों की तो कुछ न पूछिये। वे तो चमत्कारों में इतना ज्यादा विश्वास रखती हैं, जिसका ठिकाना नहीं। उनके इस विश्वास का यह नतीजा हुग्रा है कि हमारे बालक भिखमंगों से ऐसे डरने लगे हैं, जैसे ग्रंग्रेजी राज्य में पुलिस से डरते थे। यही हाल हमारी माँ-वहनों का है।

कोई साधु यानी भिखमंगा ग्रगर जरा चालाक है, तो किसी ऐसे घर से, जिस घर में कोई मदं न हो, ग्रौरतों से चमत्कार की वात कहकर जैवर उतरवाकर ले जा सकता है। हमारी बहन से एक भिखारी खाली हाथों से वाजरा गिराने का तमाशा दिखाकर चमत्कारी वन कुछ पैसे, कपड़े, पूरियाँ पा गया था। उसकी एक यह वजह थी कि उस वक्त हमारी बहन का तीन वरस का वचा वीमार था। हम बड़ी मुश्किल से ग्रपनी वहन के चमत्कार- सम्बन्धी ग्रन्थ-विश्वास को तोड़ पाये थे। चमत्कारों का जव सिलसिला चल पड़ता है, तो वह खतम नहीं होता। कभी कहीं चमत्कारों की वात छिड़ जाय, तो फिर शायद ही कोई ऐसा हो, जो ग्रपना चमत्कार न सुनाये। चमत्कार के वायु-मएडल में पले वालक मुश्किल से सत्य की खोज में लग सकते हैं।

ग्राज का कोई घर्म चमत्कारों से खाली नहीं। इतना ही क्यों, सब धर्म चमत्कार बताये बिना किसी दूसरे घर्मवाले पर ग्रपने घर्म का रंग नहीं चढ़ा सकते। इस तरह चमत्कार धर्म के महल की बुनियाद बन बैठा है। कौन यह नहीं जानता कि बुनियाद के हिलने से इमारत हिल जाया करती है। इस वास्ते कोई धर्मवाला यह नहीं चाहता कि चमत्कारों के खिलाफ ग्रावाज उठायी जाय।

चमत्कार सब धर्मों में समान रूप से पाये जाते हैं। जो जितना पुराना घर्म हो, वह उतना ही ज्यादा चमत्कारों से भरा मिलेगा।

#### चमत्कारों का गढ़ना

चमत्कार वड़ी श्रासानी से गढ़े जा सकते हैं। उनके गले में कल्पना-शक्ति पर ज्यादा जोर नहीं डालना पड़ता। श्राग गरम है। वह चीजों को जला दे, तो चमत्कारों की एक इमारत खड़ी हो जाय। श्राग के वारे में एक खास चमत्कार की वात सारी दुनिया में फैली है। जब भी कोई श्रादमी दहकते कोयले पर नंगे पाँव निकल जाता है, तो चमत्कारी मान लिया जाता है। उस चमत्कार को जब ज्यादा बढ़ाकर कहा जाता है, तो वह ऐसा

अप्राकृतिक हो जाता है कि सत्य से बहुत दूर पड़ जाता है। आग पर चलनेवाले चमत्कारी के बारे में कहा जाता है कि उसे कोई देवता सिद्ध है और वही देवता उसके पाँव नहीं जलने देता। यह बात विलकुल भूठ है, पर लाखों पढ़े और वे-पढ़े यह सुनते हैं और अचरज में पड़ जाते हैं। अपनी इस समभ को कि आग विना दवा डाले जलाना नहीं छोड़ सकती, एकदम दिमाग से निकालकर फेंक देते हैं। 'चमत्कारी', 'जादूगर' और 'वाजीगर' तीनों शब्दों का एक ही मतलव है। साधु की वाजीगरी 'चमत्कार' नाम से पुकारी जाती है और वाजीगर का दिखाया हुआ चमत्कार 'वाजीगरी' नाम पाता है। वही चमत्कार चुपके से किसीको दुःख पहुँचाने के काम में लाया जाय, तो 'जादूगरी' नाम ले वैठता है।

जैसे दहकती ग्राग पर चलना चमत्कार है, वैसे ही ग्रादमी का पानी पर पाँव-पाँव चलना चमत्कार नाम पाता है। पानी पर पाँव-पाँव चलने की बात वहुत साघुग्रों के बारे में कही जाती है।

हवा में उड़ने की वात कम रिवाज में नहीं है। इस वारे में भी लोगों का कहना है कि कितने ही साधु हवा में उड़ सकते हैं। धर्म-ग्रन्थों में जहाँ ऋद्धि-सिद्धियों का जिक्र है, वहाँ हवा में उड़ने की वात भी कही गयी है। मतलव यह कि चमकार ग्रीर करामातों की कोई गिनती नहीं हो सकती।

# चमत्कारों से हानि

चमत्कारों में विश्वास करने से मनुष्य-समाज को वहुत नुकसान हुए, पर सबसे बड़ा नुकसान यह हुआ कि चमत्कारों को ज्यों-का-त्यों सत्य मान लेने से मनुष्य-समाज का सच की ग्रसलियत तक पहुँचने का स्वभाव नष्ट होता जा रहा है। कच्ची उम्र के वच्चे पढ़ाई-लिखाई से भागकर देवी-देवताग्रों को मनाने में लग गये हैं। वे समभ वैठे हैं कि उन्हें सिद्ध कर लेने से जरा देर में पढ़ना-लिखना ग्रा जायगा, वे इतने वड़े विद्वान् वन जायंगे कि कोई उनका मुकावला न कर सकेगा।

हम दो-चार चमत्कारों का सही-सही ग्रर्थ समभाकर यह ग्रध्याय खतम करेंगे।

## मूर्ति की अधरता

एक वार हमने सुना कि एक मन्दिर में ऐसी मूर्ति है, जो ग्रथर है। वह इस वास्ते ग्रधर है कि उसे देवता थामे हैं। हम चमत्कारों में विश्वास नहीं करते। हमने इस तरह दलील करना शुरू की:

- १. जब उस मूर्ति को देवता थामे हैं, तो इसमें चमत्कार क्या हुग्रा ? ग्रगर मूर्ति ग्रपने-ग्राप ग्रघर होती, तब कोई चमत्कार हो सकता था।
- २. ग्रगर मूर्ति ग्रपने-ग्राप निराघार है, तब भी कोई चमत्कारी वात नहीं; क्योंकि सारे ग्रह निराघार घूम रहे हैं। ग्रीर वन्दूक से फेंकी गोली ग्रीर हाथ से फेंका ठीकरा वहुत देर न सही, थोड़ी देर निराघार रहता ही है। फिर निराघार रहने में चमत्कारीपन क्या है?
- वैज्ञानिकों का कहना है कि चुम्बक की मदद से ऐसा सम्भव है कि कोई चीज हवा में अघर थामी जा सके। यह

विज्ञान की एक सचाई है, इसे कोई भी कर सकता है। यह चमकार नहीं कहा जा सकता।

पर हम तो यह मानते हैं कि वह मूर्ति, जिसकी तुम वात कह रहे हो, न देवताओं के हाथ में थमी है, न ग्रहों की तरह निराधार है और न चुम्बक पत्थर से निराधार वनायी गयी है। हम ग्रगर ग्रांख से देख पायें, तो हम उसके निराधार होने की सारी पोल खोल दें।

होनहार की वात । हम अपनी वड़ी वहन समेत वहुत दिनों वाद उसी जगह जा पहुँचे, जहाँ अघर मूर्तिवाला मन्दिर था। हमने एक रुपया पुजारी को देकर उस मूर्ति की खुद जाँच की। वह अघर न पायी गयी। उसमें चुम्वक की कोई कारीगरी न थी। वह मूर्ति पीठ के पीछे दो-ढाई इंच लम्बे और इतने ही चौड़े आसन पर टिकी हुई थी। इसलिए कपड़े का टुकड़ा पलोथी के दायें-वायें घोंटुओं के नीचे होकर साफ निकल जाता था। अगर कोई आमने-सामने डोरे निकालने की कोशिश करता, तो अघर रहने के सारे चमत्कार की पोल खुल गयी होती। चमत्कार में विश्वास करनेवाले इस तरह की वात सोचने भी क्यों लगे?

# मृतिं जमीन पकड़ गयी

नगर का नाम तो याद नहीं रहा । उस नगर के मंदिर में एक मूर्ति जमीन पकड़ गयी । किसी तरह उठाये न उठी । उस नगर के लिए यह वात चमकार वन गयी । विज्ञान के लिए यह वात विलकुल मामूली है । दो चीजों के वीच में जब विलकुल हवा न रहे, तब बहुत मजबूती से चिपक जाती है । ग्रामने-

सामने से दो हाथी भी जोर लगाकर उन्हें अलग करना चाहें, तो नहीं कर सकते। हाँ, पहलू की तरफ से दिया हुआ मामूली घक्का उन दो चीजों को अलग कर देगा। यही हाल उस अचल मूर्ति का हुआ। जैसे ही एक तरफ से घक्का दिया गया, हवा अन्दर पहुँच गयी और मूर्ति के अचलपन का चमत्कार खतम हो गया। पर उस मूर्ति के मामले में एक और नया तमाज्ञा हुआ। मूर्ति का चमत्कार हटा, तो वह मूर्ति हटानेवाले से जा चिपका यानी अब मूर्ति हटानेवाला चमत्कारी वन वैठा। यह है अन्ध-विक्वास की तालीम का फल।

### मुर्गी का अएडा

एक जगह ग्रौर ऐसा ही चमत्कार देखने को मिला। वह चमत्कार यह था कि एक ग्रादमी वड़े ग्राहंसक मशहूर थे, इसलिए उन्हें यह ऋद्धि हासिल हो गयी थी कि वे ग्रगर मुर्गी के ग्रण्डे को ग्रपने हाथ से ऊँचा उछालकर मकान के पीछे के मैदान में फंक दें, तो न ग्रण्डा फ़टेगा ग्रौर न उसके ग्रन्दर रहनेवाले प्राणी को कोई चोट लगेगी। वे इस करामात की वजह से पुजने लगे। पर जब हमने इसकी ग्रच्छी तरह जाँच की, तो पता चला कि मुर्गी के हर ताजे ग्रण्डे में यह खासियत रहती है कि उसे कितना भी ऊँचा घास उमे मैदान पर फेंका जाय, तो वह हमेशा ग्रपनी नोंक के वल जमीन पर गिरेगा, पर न कभी फूटेगा, न ग्रन्दर कोई चोट खायेगा। यह विज्ञान की सीधी-सादी वात है। इसे मूरख फेंके, तव भी वही नतीजा होगा। हिंसावादी फेंके, तव भी वही नतीजा होगा । वस, इसकी सचाई जव तक ग्रॅंबेरे में है, तभी तक यह चमत्कार, नहीं तो मामूली घटना ।

# गांधीजी और चमत्कार

सन् १६२१ की वात है। असहयोग-भ्रान्दोलन जोरों पर था। अंग्रेजी सरकार का श्रासन हिल गया था। गांधीजी सारे देश में चमत्कारी पुरुष के नाम से मशहूर हो चुके थे। वह उन्हीं दिनों डाकगाड़ी से कलकत्ता जा रहे थे। मध्यप्रदेश के गोन्दिया स्टेशन पर डाकगाड़ी शायद म्राघ घण्टा ठहरती थी। इसलिए गोन्दियावालों ने स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर ही एक सभा का वन्दो-वस्त कर लिया। गाड़ी ग्राने पर सभा शुरू हो गयी। गांघीजी वोलने लगे। जव गाड़ी चलने में दो-एक मिनट वाकी रह गये, तव गांधीजी ने गाड़ी में जा बैठने की बात सोची। लोगों ने फौरन श्रावाज उठायी, 'रेल के इन्तजाम में कोई ऐसी गड़वड़ी हो गयी है कि गाड़ी ग्रभी जल्दी न चलेगी, ग्राप बोले जाइये।' गांधीजी सुभीते से बोलते रहे श्रीर जव वह बोलकर गाड़ी में जा बैठे, रेल का सब इन्तजाम ठीक हो गया ग्रीर गाड़ी चल दी। गाड़ी के गोन्दिया से छूटने से पहले-पहले गोन्दिया से नागपुर तक और इधर गोन्दिया से रायपुर तक यह खबर फैल गयी कि गांधीजी वड़े चमत्कारी हैं, उनके चमत्कार से गाड़ी रक गयी। उनके उस चमत्कार की बात का कभी किसी समभदार ग्रादमी ने खंडन नहीं किया, उल्टा मण्डन किया; क्योंकि उस वक्त हिन्दुस्तान के सारे समभदारों का स्वार्थ इस बात में था कि गांधीजी को ग्रवंतारी, चमत्कारी ग्रीर महाचमत्कारी सावित

किया जाय । हम गोंदिया स्टेशन पर मौजूद थे। यह सव कार्य-वाही स्टेशन के ग्रादिमयों ने जान-बूफकर की थी, वे सव गांधीजी का व्याख्यान जी भरकर सुनना चाहते थे ग्रौर यह भी चाहते थे कि वे गाड़ी रोकने के इलजाम से वचे रहें। पढ़नेवालों को यह याद रहे कि स्टेशन की रिपोर्ट में गाड़ी रुकने की वजह यह नहीं वतायी गयी कि गांधीजी के चमत्कार से गाड़ी रुक गयी। क्योंकि रेलवे-ग्रफसर इतने वेवकूफ न थे कि वे इस तरह के फाँसे में ग्रा जाते, उन्हें तो बुद्धि में जँचनेवाली ऐसी ही कुछ वजह वतायी गयी थी। जैसे सिग्नल का खराव हो जाना या इंजन का फोरवॉल्ब यानी ग्रगली नली विगड़ जाना। ये होते हैं चमत्कार ग्रौर यह है चमत्कारों का उपयोग।

# चमत्कारों से बच्चों के दिमाग न विगाड़ें

चमत्कारों की सचाई हर बच्चे को उसकी जन्मघुट्टी में पिलायी जाती है। ग्रगर ग्राप जरा गौर से देखें, तो ग्रापको मालूम हो जायगा कि कोई तीन-चार वर्ष का बच्चा जब स्टेशन पर रेलगाड़ी के देर तक खड़े रहने से ऊव उठे, तब वह रेलगाड़ी में मुक्का मार-मारकर चल-चल कहना गुरू कर देता है। ग्रगर कहीं उसके पहले, दूसरे, तीसरे मुक्के पर गाड़ी चल पड़े, तो चट उसके मुंह से निकल जायगा, "मेरे हुक्म से गाड़ी चल दी।" उघर उसकी मां के मुंह से निकल जायगा, "मेरा लाल वड़ा चमत्कारी है।" वच्चे को जितना इस बात में विश्वास है कि उसके हुक्म से गाड़ी चली, उतना ही उसकी मां को उसके चमत्कारी होने में विश्वास होता है। वह ग्रपने वालक को यों

ही चमत्कारी नहीं कह वैठती, उसे सचमुच उसका वालक चमत्कारी जैंचने लगता है, उसके मन में वैसी गुदगुदी पैदा होने लगती है, वह यह वात सोचने की हर तरह ग्रधिकारी है। ग्रगर कंस जैसे पापी की वहन देवकी कृष्ण जैसे चमत्कारी को जन्म दे सकती है, तो वह क्यों नहीं वैसे ही चमत्कारी को जन्म दे सकती है, तो वह क्यों नहीं वैसे ही चमत्कारी को जन्म दे सकती ? ग्रीर क्यों रेलगाड़ी उसके बालक के चमत्कार से न चले ? उस मां की पीढ़ियों की धार्मिक तालीम उसके सिर पर ग्रा सवार होती है। फिर वह यह सोचने का तिनक भी कष्ट नहीं उठाती कि रेल किन-किन कारणों से चला करती है ग्रीर यह कि रेल के चलने के काम में उसके वालक का मुक्का मारना किसी तरह का कारण नहीं हो सकता।

हमारे पढ़नेवाले ग्रगर हमारी वात ठीक-ठीक समक्त गये होंगे, तो वे ग्रासानी से खुद भी ग्रौर उदाहरण सोच निकाल सकते हैं। इसलिए हम इतने ही उदाहरणों पर सन्तोप करते हैं। ग्रन्त में यही कहना चाहते हैं कि वे ग्रपने वच्चों के वारे में इस वात का खयाल रखें कि उनके दिमाग इस तरह मैं ले न होने पायें कि वे चमत्कारों में विश्वास करके कार्य का ठीक-ठीक कारण खोजना छोड़ वैठें।

# चमत्कार मामूली घटनाएँ

चमत्कार में और मामूली घटना में कोई अन्तर नहीं होता। चमत्कार चमत्कारी के लिए वैसे ही मामूली घटना है, जैसे वाजीगरी के खेल बाजीगर के लिए। रेडियो के यंत्र, जो दिनभर घर-घर में गाते रहते हैं, किसी ऐसे गाँव में, जहाँ श्रव तक रेडियो न पहुँचा हो, चमत्कार की चीज समभे जायँगे। हो सकता है, कोई-कोई रेडियो के यंत्र को श्रचानक देखकर डर जायँ श्रीर यह समभें कि इसके श्रन्दर भूत-प्रेन बैठे गाना गा रहे हैं। क्योंकि भूत-प्रेतों के वारे में श्रक्सर जो कहानियां कही जाती हैं, उनमें यही वताया जाता है कि उनके घुँघहश्रों की छम-छम श्रावाज श्रीर गाना सुनायी देता है, पर वे दिखाई नहीं देते। दूसरी वात उनके वारे में यह वतायी जाती है कि वे छोटी-से-छोटी जगह में श्रा सकते हैं। जिन्नों को शीशों में उतारने की वात किसने नहीं सुनी? 'शीशे में उतारना' श्रव श्राम मुहावरा वन गया है। इसलिए जो रेडियो शहरवालों के लिए मामूली चीज है, वही गाँववालों के लिए चमत्कारी चीज हो सकता है।

#### समभदार भी चमत्कार के शिकार

चमत्कार मामूली घटनाएँ हैं, फिर भी वे पढ़े-लिखों में इतने गहरे घर कर गये हैं कि वे अपने दिल से निकालकर नहीं फेंक सकते। जब कोई हिन्दू अपने घम के चमत्कार फेंककर मुसलमान हो जाता है, तब वह इसलाम घम के चमत्कार अपना लेता है। यही हाल किसी मुसलमान का आर्यसमाजी होकर हो जाता है। आदमी चूंकि सर्वज्ञ नहीं है और बहुत अंशों में अजानकार है, इसलिए चमत्कारों में विश्वास करने में उसे आनन्द आता है।

एक वार का जिक्र है, सिक्खों के दूसरे गुरु गोविन्दिसह, जो हिन्दुओं में वड़े चमत्कारी मशहूर हो गये थे ग्रौर जिन्हें सैकड़ों मुसलमान भी चमत्कारी मानते थे, एक वार दिल्ली के वजीर के मेहमान हुए। वजीर ने वड़ी श्रद्धा के साथ उनसे पूछा, 'मैंने सुना है, ग्राप वड़े-बड़े करिश्मे यानी चमत्कार कर सकते हैं, कोई करिश्मा दिखाइये।' गुरुजी वोले, 'ग्राप वादशाह के वजीर होकर करिश्मों में विश्वास करते हैं! भला करिश्मे भी कोई चीज होते हैं? मैं न कोई चमत्कार-करिश्मा जानता हूँ ग्रौर न कर सकता हूँ।' वजीरसाहव वोले, 'सव पहुँचे हुए फकीरों का यही हाल होता है। वे कभी यह नहीं कहते कि वे कोई चमत्कार करना जानते हैं। उनके लिए वैसा कहना वाजिव भी है। पर हम मामूली ग्रल्लाह के वन्दे यह कैसे मान लें कि पहुँचे हुए फकीर चमल्कारी नहीं होते। ग्रगर ऐसा न होता, तो ताजवंद वादशाह नंगे, उघाड़े फकीरों के पाँव छूने न जाया करता। हुजूर, कोई करिश्मा तो दिखाइये।'

गुरुजी बोले, 'मैं करिश्मे या चमत्कार में विश्वास नहीं करता, न कोई चमत्कार ही करता हूँ ग्रौर न जानता ही हूँ। मैं ग्रापको भी यह सलाह देता हूँ कि ग्राप चमत्कारों में विश्वास करना छोड़ दें।'

गुरुजी के इस उपदेश से वजीरसाहव के अन्दर करिश्मा देखने की इच्छा और ज्यादा भड़की। वे हठ करने लगे, 'हुजूर कोई करिश्मा तो दिखाइये ही।' आखिर गुरुजी को सूभ गयी और उन्होंने अपनी जैव से एक अशर्फी निकालकर दिखाकर कहा, 'करिश्मा यानी चमत्कार यह है, इससे सैकड़ों काम हो सकते हैं। जिन्हें वड़े-से-वड़े चमत्कार नहीं कर सकते।'

वजीरसाहव बोले, 'हुजूर का फरमाना बजा है। वेशक यह करिश्मा है और इस करिश्मे से वादशाह लोग वड़े-वड़े काम निकालते हैं। पर फकीरों के पास तो यह करिश्मा नहीं होता। हुजूर, कोई करिश्मा दिखाइये। अगर आप करामाती न होते, तो लाखों आदमी इस तरह आपके पीछे न हो जाते। वड़ी इनायत होगी, कोई करिश्मा दिखाइये।'

गुरुजी ने थोड़ा विगड़कर श्रपने म्यान से तलवार खींची श्रीर उसे नंगा करके दिखाया श्रीर वोले, 'दूसरा करिश्मा यह है।' जवाव में वजीरसाहव वोले, 'वेशक यह वड़ा करिश्मा है, पर हुजूर यह चीज भी फकीरों के पास नहीं होती। कोई करिश्मा दिखाइये।'

गुरुजी ने उन्हें लाख समभाया, पर किसी तरह उनका विश्वास करिश्मे पर से न हट सका।

#### हम क्या करें ?

यह रहता है पढ़े-लिखों का हाल । वचपन में जो चीज गहरी घर कर जाती है, वह श्रासानी से नहीं निकल पाती । यही वजह हैं कि दुनिया के बड़े-से-बड़े सुधारक, बड़े-से-बड़े वैज्ञानिक चेहद जोर लगाकर भी दुनिया को यह नहीं सिखा पाये कि जब भी कोई श्रनोखी चीज देखों, तब उसके कार्य-कारण सोचो । श्रगर ठीक-ठीक न जान सकों, तो उस कार्य का गलत कारण तो न मान बैठो । जनता के मन का यह श्रज्ञान श्रीर कार्य-कारण को सोचे बिना किसी घटना को ऊटपटाँग तरीके से मान लेने की श्रादत उस बक्त तक न स्रूटेगी, जब तक बच्चों के संस्कार न बदले जायँगे; स्कूल श्रीर कॉलेज उन श्रादिमयों के हाथों से न छीन लिये जायँगे, जो देववादी धर्म के विश्वासी हैं। देव या ईश्वर न जाना गया, न जाना जाता है, न जाना जा सकता है। हमारी बुद्धि प्रकृति की सीमा का लोप नहीं कर सकती। बुद्धि यानी ज्ञान ही हमारी ग्रात्मा का स्वभाव है। ग्रव ज्ञान बुद्धि के सिवा कुछ भी नहीं है। वही ज्ञान-बुद्धि हमें कर्तव्य सिखाती है। कर्तव्य-पालन का सम्बन्ध परलोक से नहीं, इस लोक से है। हमें परलोकवासियों से न दोस्ती करने की जरूरत हैं श्रीर न उनके लिए मेहनत।

#### नानक की सूचक शिवा

गुरु नानक का यह खेल कितना श्रच्छा पाठ देता है!
एक वार वे गंगाजी नहाते वक्त श्रपने गाँव की तरफ मुँह करके
पानी उलीचने लगे। जब यह तमाशा करते देर हो गयी, तब
लोग पूछ बैठे कि 'गुरुजी यह श्राप क्या कर रहे हैं?' गुरुजी
वोले, 'श्रपने गाँव के खेतों को पानी दे रहा हूँ।' लोग वोले,
'महाराज, यह कैसे हो सकता है?' गुरुजी बोले, 'क्यों नहीं हो
सकता ? जब तुम यहाँ से सूरज को पानी दे सकते हो श्रोर श्रद्धा
के जिरये परलोकवासियों को खाना पहुँचा सकते हो, तो मेरा
पानी मेरे गाँव के खेतों तक क्यों नहीं पहुँचेगा ?'

सारांश, यह कहकर गुरुजी ने साफ वता दिया कि परलोक-वासियों के प्रति न हमारा कोई कर्तव्य है, न हम उनकी कोई सेवा करते हैं। यह इसी लोक के लोगों से प्रेम करके, मोहव्वत करके, दोस्ती का वर्ताव करके, उनकी खातिर मेहनत करके हम ग्रपने सारे कर्तव्य पालन कर सकते हैं। ग्रगर हमें सचमुच ईश्वर या परलोक के लिए किसी कर्तव्य-पालन की जरूरत है, तो वह इस लोक के कर्तव्य को पालने में समाया है। ईश्वर या परलोक के लिए ग्रलग कोई कर्तव्य नहीं रह जाता। हमें संतोष के साथ काम में लगे रहने के सिवा कुछ नहीं सीखना।

## सचा और महान् चंमत्कार !

चमत्कार हमारी कमर तोड़ देते हैं। हमें साहसी वनकर चमत्कारों की कमर तोड़नी होगी। चमत्कार हमसे हमारी समक्त ग्रीर हमारी प्रसन्नता छीन लेते हैं। हम चमत्कारों का कार्य-कारण भाव जानकर ग्रपनी समक्त ग्रीर ग्रपनी प्रसन्नता उन चमत्कारों से छीन लेंगे। फिर ग्रपने-ग्राप हमारे मन भलाई के लिए खुल जायँगे ग्रीर हमारा मस्तक सचाई को ग्रपनाने लगेगा। यही होगी पूरी ग्राजादी। हमारी यह ग्राजादी ही मनुष्य-समाज को सुखी वनायेगी, ग्राजाद करेगी। हम उसी ग्राजाद समाज की मदद पाकर सत्य की ग्रसलियत को समक्त लेंगे ग्रीर सत्य, जो ईश्वर के नाम से पुकारा जाता है, उसके दर्शन कर लेंगे। यही होगा सच्चा ग्रीर महान चमत्कार!

#### : १२ :

# सत्य श्रीर देवता

ग्रादमी की बुद्धि को चाहिए कि वह जीवन की मूल वात समभे । पर समाज के साथ मिलकर ग्रादमी की बुद्धि, समाज का सहारा पाकर जीवन की मूल वात छोड़ शाखाग्रों पर वन्दर की तरह दौड़ने लगी है । वह मूल को वैसे ही भूल गयी, जैसे वच्चे पेड़ की डाल पर बैठकर यह भूल जायँ कि डाल उन्हें सँभाले हुए है ग्रीर डाल काटने लगें। ग्रादमी ने भी जीवन की मूल वात छोड़ एक नहीं, सैकड़ों ऐसे काम निकाल लिये, जिनसे जीवन-मूल को एक बूँद पानी न मिला। पानी न दें तो न सही, वे काम उलटे जीवन-मूल काटते रहते हैं।

विज्ञानों में गिएति-विज्ञान सबसे सच्चा विज्ञान है। पर अगर कोई गिएति का जानकार नदी के किनारे रेत के कएों की गिनती लगाने वैठ जाय, तो विज्ञान की सचाई क्या करें ? वह उसी काम में जुट जायगी और समाज को उस कएा गिनने-वाले के लिए खाना जुटाना पड़ेगा। कहीं उसे यह कहने की सूफ गयी कि रेत के कएा गिनने से जीवन सफल होता है, ईश्वर के दर्शन होते हैं, देवता प्रसन्न होते हैं और मुक्ति मिल जाती है, तव तो न जाने वह अपने जैसे कितने साथी तैयार कर देगा। फिर उन सबके लिए भी समाज को खाना जुटाना पड़ेगा।

#### एकांगीपन धोखेवाजी

ग्रादमी की बुद्धि का यह स्वभाव वन गया है कि उसे किसी एक तरफ लगने में वेहद ग्रानन्द ग्राता है। बुद्धि किसी एक तरफ लगे तो लगे, पर वह ग्रपने साथ तन ग्रीर मन को ले लेती है। फिर ग्रादमी काम करना छोड़ देता है, मेल-मुहब्बत खो बैठता है, रेत के करण गिनने को ही सब कुछ समकता है। ग्रार उससे यह सवाल किया जाय कि भैंस के ग्रंडे का छिलका कितना मोटा होगा ग्रीर वह ग्रण्डा कितना लम्बा ग्रीर कितना गोल होगा, तो वह ग्रपने गिणत-विज्ञान के सहारे विलकुल ठीक जवाब दे देगा। उसने मुर्गी का ग्रण्डा देखा है, मुर्गी के वच्चे की लम्बाई-चौड़ाई ग्रीर उसका वजन जाना है। उसे सामने रखकर भैंस का ग्रण्डा तैयार करने में उसे कोई दिक्कत नहीं हो सकती।

जब हम छोटे थे, तब एक किताब में एक कहानी पढ़ी थी। उसमें किसी ग्रादमी ने किसी मूरख को एक तरवूज घोड़ी का ग्रण्डा वताकर सौ रुपये में वेचा था। फिर वह उस तरवूज नामी घोड़ी के ग्रण्डे को किनारे पर रख तालाब में नहाने लगा। जैसे ही एक खरगोश उस तरवूज के पास से भागा, वैसे ही तरवूज वेचनेवाले ने कहा, 'लो, तुम्हारे इस ग्रण्डे से घोड़ी का बच्चा निकलकर भाग गया।' वह मूरख उस घोड़ी के बच्चे को पकड़ने भागा ग्रीर उसके वापस ग्राने के पहले तरवूज वेचनेवाला तरवूज भी चट कर गया। उसके वापस ग्राने पर तरवूज के छिलके उसके हवाले कर दिये। जब वह मूरख घर पहुँचकर घोड़ी के ग्रंडे

की वात लोगों से कहने लगा और लोगों ने उसकी खिल्ली उड़ायी, तो क्या वह यह वात कि घोड़ी का अण्डा नहीं होता, आसानी से माना था ? अजी साहव, वह माना ही न था। कुछ यही हाल आजकल के उन विज्ञानों का है, जो हिसाव के जिये भैस का अण्डा तैयार कर लेते और फिर कहते हैं कि इस भैस के अण्डे को विज्ञान की कसौटी पर कस लीजिये, जब उसका नाप-तौल ठीक है, तो आप भैस के अण्डे के अस्तित्व से कैसे इनकार कर सकते हैं ?

जिसने थोड़ा-सा भी गिएत पढ़ा है, वह यह जानता है कि वृत्त यानी दायरा कितना ही छोटा-वड़ा क्यों न हो, उसकी परिधि यानी उसके मुहित और व्यास यानी कुतर में हमेशा एक ही अनुपात रहेगा। सीघे शब्दों में विलकुल गोल घेरे और बीचो-वीच की लकीर में एक-सी ही घटक-वढ़क होती है और लगभग एक-तीन का रिश्ता रहता है। गिएत की इस सचाई को लेकर दुनिया को कितनी ही लम्बी-चौड़ी मान लीजिये, आप एक कोठरी में वैठे-वैठे सारा हिसाव लगा सकते हैं और फिर आप दुनिया की लम्बाई-चौड़ाई दूसरे के सिर इस वजह से थोपना चाहें कि वह विज्ञान की कसौटी पर ठीक उतरती है, तो यह कोई बुद्धि-मानी न होगी, बहुत बड़ी घोखेवाजी होगी।

# देवता लड़ाई मिटाने में असमर्थ

मनुष्य-समाज जब अपना वचपन का जीवन विता रहा था, तव वह होशियार था, चालाक नहीं। वह भोला था, इसलिए अपने और सबके प्रति सच्चा था। वह काइयाँ नहीं था, जो ग्रपने ज्ञान से लोगों को घोखा देने की सोचता। उस समय उसने जो देवता वनाये, वे थे सूरज, चन्द्रमा, ग्राग, पानी, हवा वगरह। वे सीये-सीघे उसका काम करते, उसे सुख पहुँचाते ग्रीर दु:ख भी देते थे। मनुष्य-समाज की भोली उमर में तैयार किये देवता ग्रव कहीं नहीं रहे। लेकिन जब मनुष्य-समाज चालाक वना, तो उसने जो देवता तैयार किये, उनका मिटना मुश्किल हो गया। वे ग्राज मनुष्य-समाज के ऊपर सवारी किये हैं। ग्रनेक होने की वजह से वे मनुष्य-समाज के एक हिस्से को दूसरे हिस्से से भिड़ा देते ग्रीर खून-खरावी करा देते हैं।

उन देवताग्रों से तंग ग्राकर देश-देश में विद्वानों को यह सूभा कि ये वहुत देवता खतम होने चाहिए--उन्होंने ग्रपने-ग्रपने देश में सव देवताओं का एक सरदार माना और उसका नाम ग्रपनी-ग्रपनी वोली में ग्रलग-ग्रलग रख लिया। जैसे देवताग्रों के मन्दिर थे, वैसे ही देवतात्रों के सरदार का मकान वन गया। हरएक देश ने उन मकानों के ग्रपनी-ग्रपनी बोली में नाम रख लिये। यह वात तो वड़ी ग्रच्छी हुई कि देवताग्रों की भंभट मिटकर एक महादेवता ग्रा गया। पर उस महादेवता के लिए एक और नयी मुश्किल खड़ी हो गयी। वह एक होने पर भी श्रलग-श्रलग नाम होने से श्रनेक हो गया। इस श्रनेकता का यह नतीजा हुआ कि एक नामधारी महादेवता के भक्त दूसरे नामधारी महादेवता के भक्तों से लड़ने लगे। समभदार जिस लड़ाई को खतम करना चाहते थे, वह लड़ाई और वड़ा रूप ले वैठी । ऐसा क्यों हुग्रा ? इसकी वजह यह थी कि जो पहले लोगों ने ग्रपने देवताश्रों के गुएा मान रखे थे, वे सबके सव महादेवता को सींप दिये गये। वे गुएा ऐसे थे, जो पहले खानदानों में लड़ाई कराते थे। श्रव वे ही गुएा महादेवता के श्रनेक रूप हो जाने से देश-देशों में लड़ाई कराने लगे।

इस लड़ाई से तंग आकर आज बीसवीं सदी में फिर एक नया आन्दोलन उठा है कि ऐसी कोशिश की जाय कि महादेवता के अनेक नाम सब आदमी मान लें और महादेवता के तरह-तरह के मकान एक बराबर का आदर पाने लगें। पर यह आन्दोलन भी अन्त में हमें कहाँ ले जायगा, इस ओर बहुत कम लोगों का ध्यान गया है। इसलिए यह नया आन्दोलन भी आपसी लड़ाई मिटाने में असमर्थ रहे, तो अचरज नहीं।

## देवता, महादेवता सानव की कल्पना

इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि देवता श्रों को श्रादमी ने माना है, देवता श्रों ने खुद श्राकर श्रादमियों से श्रपने-श्रापकों कभी नहीं मनवाया। इस वात के मानने से भी कोई इनकार नहीं कर सकता कि श्रादमी ने कभी किसी देवता को नहीं देखा। उसने मेह को वरसते देख मेह के देवता को मान लिया श्रीर श्रपनी बुद्धि श्रीर विज्ञान के वल पर ऐसी ही एक शकल तैयार कर ली, जैसे वैज्ञानिक भेंस का श्रण्डा वना लेते हैं। मेह के देवता की तरह श्रांधी का देवता वन गया। इसी तरह श्रीर देवता तैयार हो गये। श्रव इन सब देवता श्रों का जो महादेवता वना, उसमें वस इतनी विश्लेषता रही कि छोटे-छोटे देवता श्रों में एक-एक ताकत थी, उसके हाथ में सारी ताकत श्रा गयी।

श्रादमी ने जिस तरह देवता नहीं देखे, उसी तरह महादेवता भी नहीं देखा। वह उसको कभी देख भी नहीं पायेगा। श्रगर देख पाये, तो ऐसे ही देख पायेगा, जैसे श्राज वह सपने देखता है। श्राज एक कृष्ण-भक्त भगवान् में वहुत तल्लीन होकर श्रपने सामने भगवान् को मुकुट वांधे श्रीर चार हाथ लिये देख सकता है। ठीक इसी तरह एक मुसलमान श्रल्लाह की भक्ति में हूवकर श्रपने श्रल्लाह को एक वड़े तख्त पर वड़ी साफ दाढ़ीवाले वड़े नूरानी चेहरे के साथ वैठा देख सकता है। यह महादेवता के दर्शन हुए या उस देवता के, जो हमने कल्पना से तैयार कर रखा है? वस महादेवता तक, इससे ज्यादा श्रादमी की पहुँच कभी नहीं हो सकती।

महादेवता को मानते हुए वह दिन कभी नहीं श्रा सकता, जब श्रापसी लड़ाई खतम हो जाय। क्योंकि हम देवता या महा-देवता को मानकर उससे कुछ माँगे वगैर नहीं रह सकते भीर इसके सिवा क्या माँग सकते हैं कि वह हमें सुख दे श्रीर हमारा दुःख मिटाये। सुख देना श्रीर दुःख मिटाना, दोनों एक ही वात है। हमारा सुख-दुःख दूसरों के सुख-दुःख पर निर्भर है। हममें से कोई भी सुखी नहीं हो सकता, जब तक वह किसी दूसरे को दुःख में न डाले। तब महादेवता से जब भी हम सुख माँगेंगे, तो किसीको दुःख में डालने की वात कहेंगे। फिर महादेवता इस दुनिया में किसीको दुःख में डालने के लिए खुद तो श्राता नहीं। वह तो हममें से ही किन्हीं एक-दो में ऐसी बुद्धि पैदा कर देता है श्रीर वही एक-दो दूसरों को दुःख पहुँचाकर हमें सुख देते हैं।

ग्रव वताइये, यह महादेवता किस तरह दुनिया की तकलीफें मिटा सकता है ग्रीर दुनिया के लोगों को सुख पहुँचा सकता है ?

### देवताओं का इतिहास अत्यन्त सामान्य

देवतायों का इतिहास यगर पढ़ा जाय, तो विलकुल ऐसा मालूम होगा, मानो हम किसी मामूली ग्रादमी का इतिहास पढ़ रहे हैं। हर देवता मामूली ग्रादमी की तरह ग्रादर का भूखा है, मान का प्यासा है, गुस्से का पुतला है, दूसरे देवता से वदला लेने के लिए ऐसे ही तैयार रहता है, जैसे इस लोक का मासूली श्रादमी। श्रादमियों में ऐसे श्रादमी मिल सकते हैं, जो दुश्मन को माफ कर दें, पर एक देवता दूसरे देवता के भक्तों को किसी तरह माफ नहीं कर सकता। किसी मौलवी से पूछ लीजिये, उनका ग्रल्लाह किसी भले-से-भले हिन्दू को कभी हमेशा के लिए जिन्नत में जगह नहीं देगा, जिसने कभी सपने में भी किसी मूरत या बुत की पूजा की है। इसी तरह हिन्दुग्रों का राम किसी मुसलमान को माफ नहीं करेगा। इसमें राम श्रीर श्रल्लाह का दोष नहीं, श्रादमी की श्रकल की वनावट का दोष है। श्रादमी जव-जव जीवन के मूल से हटकर इघर-उघर की वातें सोचने लग जाता है, तव उसकी बुद्धि घोखा खायेगी ही। ग्रगर ऐसा हुग्रा होता कि ग्रादमी ने पहले जीवन-मूल को ग्रच्छी तरह समभ लिया होता, उसके समभने से उसमें अपने-आप इन्सानी मोहव्वत जाग गयी होती, फिर वह मोहव्वत अपने-आप सारे इन्सानों में फैल जाती। सारी इन्सानी कौम मोहब्बत के एक रिश्ते में वांधकर अगर ग्रपनी बुद्धि को जीवन-मूल छोड़कर किसी दूसरी तरफ लगाती

श्रीर तव श्रनेक देवता गढ़ लेती, तो वे सव देवता एक ही किस्म के होते श्रीर श्रापस में मिलकर रह लेते। तव शायद महादेवता की जरूरत न रह जाती। श्रगर जरूरत पड़ती, तो ये सभी देवता एक महादेवता की खातिर श्रपना देवतापन श्रपने-श्राप छोड़ वेठते।

श्रनेक धर्मों, श्रनेक समाजों में बँटा इन्सान एक ईश्वर की वात नहीं सोच सकता। उसकी बुद्धि एक ईश्वर की कल्पना नहीं कर सकती। एक ईश्वर की कल्पना से पहले सब धर्मों को खतम होना पड़ेगा या खतम करना पड़ेगा। फिर जो धर्म बचेगा, वह सिवा सत्य के क्या होगा और सत्य नामवाला ईश्वर न हमसे प्रार्थना चाहेगा, न पूजा। वह हमसे चाहेगा ध्रापसी मेल, श्रापसी मोहव्वत श्रीर हमें सुख-सन्तोष से रहते हुए देखना।

. . .

## : १३:

# सत्य और सर्वज्ञता

### आदमी का छोटा-वड़ापन

श्रादमी की वनावट इस किस्म की है कि उसे न श्रघूरी कहा जा सकता है, न पूरी । जिस्म के लिहाज से वह श्रपने हाथ से साढ़े तीन गुना बड़ा है, दोनों हाथ फैलाकर खड़ा हो जाय, तो उँगली से उँगली तक की लम्बाई सिर से एड़ी तक की लम्बाई के वरावर होगी । लम्बे-से-लम्बे नौ फुट तक के श्रादमी हमने देखे हैं । श्रामतौर से छह फुट के होते हैं । इतने लम्बे-चौड़े श्रादमी में जो इन्द्रियाँ काम कर रही हैं, वे श्रौर उसका मन, दोनों मिलकर इस छोटे-से श्रादमी को बेहद लम्बा-चौड़ा बनाये है । उसकी इच्छाश्रों ने कल्पना के साथ मिलकर उसे इतना बड़ा बना दिया है कि तीन लोक उसके लिए कम पड़ते हैं । यही कारण है कि उसने ऐसी-ऐसी वातें सोच ली हैं, ऐसे-ऐसे देश रच डाले हैं, जो कहीं भी नहीं हैं । पर जब उसके दिमाग में हैं, तब सब जगह हैं ।

इस साढ़े तीन हाथवाले ग्रादमी की सबसे कमजोर इन्द्रिय है स्पर्शेन्द्रिय। पर इसे भी कमजोर कैसे कहा जाय? करोड़ों मील दूर सूरज की गर्मी ग्रौर लाखों मील दूर चन्द्रमा की चाँदनी की ठंढक यह स्पर्शेन्द्रिय जान लेती है। यहाँ यह कहना ठीक न रहेगा कि यह सूरज ग्रौर चन्द्रमा हैं, जो ग्रपनी गरम ग्रीर ठंढी किरएों ग्रादमी की देह तक मेजते हैं, ग्रीर तव वह गर्मी-सर्दी का ग्रनुभव करता है। क्योंकि ऐसा कहने से उसकी कान ग्रीर ग्रांख इन्द्रियाँ भी वैसी ही कमजोर रह जायँगी, जैसी स्पर्शेन्द्रिय। क्योंकि कानों तक भी ग्रावाज की लहरें ग्राती हैं ग्रीर ग्रांखों तक प्रकाश की लहरें। फिर पाँचों इन्द्रियाँ एक ही किस्म की हो जायँगी। इसलिए यही मानना ठीक रहेगा कि स्पर्शेन्द्रिय ऐसी इन्द्रिय है, जो देह के ग्रन्दर ही सीमित है। वह किसी चीज को छूकर ही यह वता सकती है कि वह गरम है या ठंढी, चिकनी है या खुरदरी, हल्की है या भारी, कड़ी है या मुलायम।

चखनेवाली इन्द्रिय इससे कुछ ज्यादा ताकतवाली है। हमारी देह के वहुत कम ऐसे हिस्से हैं, जो ठीक-ठीक यह वता सकें कि उनके सूई किस जगह चुभोयी गयी है, पर जीभ का कुछ हिस्सा ऐसा जरूर है, जो विलकुल ठीक जगह वता सकता है कि कहाँ नमक की डली या शहद की वूँद रखी गयी है.। इसके ग्रलावा स्पर्श इन्द्रिय की ग्रपेक्षा चलनेवाली इन्द्रिय ग्रादमी के कावू से ज्यादा वाहर है। इससे ज्यादा कावू से वाहर देखने ग्रीर सुननेवाली इन्द्रियाँ हैं। इनका कावू में न रहना ही ऐसी करामात है, जिसने इस छोटे-से ग्रादमी को वहुत वड़ा वना रखा है। वह वैठे-वैठे यह समभ लेता है कि वह फूल तक पहुँच गया, क्योंकि नाक के हारा वह उसकी गंघ ले सकता है। वैसे ही वह वैठे-वैठे तारों तक पहुँच सकता है, क्योंकि ग्रांखों के रास्ते वह उन्हें देख लेता है। इसी तरह वह वहुत दूर हुई दो चीजों की टक्कर की ग्रावाज कान के रास्ते दूर से सुन लेता है। ग्रव ग्रगर वह यह कहे कि

में सारी दुनिया में फैला हुआ हूँ, तो क्या गलत कहता है ? जहाँ उसका यह हाल है, वहाँ वह अपनी आँख अपने-आप नहीं देख • सकता, अपने अन्दर की आवाजें नहीं सुन सकता, अपने अंदर की खुशबू और बदबू नहीं सूँघ सकता, न अंदर की चीजों का स्वाद ले सकता और न छू सकता है। इस विचित्रता ने आदमी को वड़ी दुविधा में डाल दिया है।

न श्रादमी एक तरफ नजर डालता है, तो बहुत बड़ा मालूम होता है। दूसरी तरफ नजर डालता है, तो बहुत छोटा मालूम होता है। यानी वह बेहद छोटा श्रीर बेहद बड़ा है।

कभी यह सुनकर सवको अचरज मालूम होता है कि आदमी बहुत गहरे प्रकाश को नहीं देख सकता, पर विज्ञान के हर विद्यार्थी को मालूम है कि आदमी की आँखें प्रकाश की खास-खास लहरों को ही पकड़ सकती हैं। वहुत छोटी लहरें और वहुत लम्बी लहरें, दोनों ही आँख से परे हैं। यही हाल आवाजों का है। न आदमी बहुत जोर की आवाज सुन सकता है और न बहुत घीमी। धीमी आवाज के मामले में वह कुत्ते से बहुत पीछे है और रोशनी की कमजोर किरगों के मामले में उल्लू, चमगादड़, शेर, विल्ली, सभीसे कम। यही हाल गंघ का और चखने और छूने का है।

## मौत और अमृत की शोध

श्रादमी ने श्रपने-श्रापको सव पशुश्रों से वड़ा समभ रखा है, इसलिए उसे यह वरदाश्त नहीं कि जो श्रावाज कुत्ता सुन सके, उसे वह न सुन सके। जो काम उल्लू कर सके, उसे वह न

कर सके। वस, होड़ की इस ग्रादत ने ग्रादमी को खोज-वीन में लगा दिया। उसने ऐसी-ऐसी चीजें सोच निकालीं, जिनकी मदद से वह ग्रांख, कान, नाक के मामले में वहुत से ग्रीर प्राणियों से कहीं ग्रागे वढ़ गया। उसे यह भी मालूम है कि कुछ प्राग्री ऐसे हैं, जो जिस दिन से पैदा हुए हैं, ग्राज तक कभी मरे नहीं श्रीर इसलिए उसने श्रमृत ढूँढ़ने की कोशिश की, पर श्रभी तक वह सफल नहीं हो पाया। इस वीसवीं सदी की नयी शोध ने तो उसे कुछ हताश भी किया है। वह शोध यह है कि पहले प्राणी मरते ही न थे, पर न मरने में एक वहुत वड़ा नुकसान यह था कि उनका ज्ञान उतना ही रहता, जितना उनमें होता था। इसलिए उन ग्रमर प्राणियों ने मौत का ग्राविष्कार किया, तव वे कहीं ंज्ञान वढ़ा पाये। इस शोघ का यह नतीजा हुग्रा कि ग्रमृत की शोघ तो जारी है, पर उससे अब यह आशा नहीं रखी जाती कि उसे खाकर आदमी कभी मरेगा ही नहीं। जो प्राणी अमर हैं, वे सव एक कोटिवाले हैं। उनका यही काम है कि वे एक से दो हों और दो से चार हों, और इसी तरह बढ़ते रहें। आज भी श्रादमी की श्राँखों के सामने वटवृक्ष है, जो श्रपनी मीत मरता कभी नहीं देखा गया। वह ग्रपनी जड़ें ग्रपने जीते-जी पैदा करता श्रीर श्रागे वढ़ता रहता है। वटवृक्ष की ही किस्म की कुछ घास है, जो इसी तरह वढ़ती रहती है।

### कल्पना और इच्छा

श्रादमी की जानकारी जैसे-जैसे वढ़ती जाती है, वैसे-वैसे उसकी कल्पना ग्रोर इच्छा भी वढ़ती है। इसलिए जानकारी की दौड़ में वह जितना ग्रागे वढ़ता है, उतना ही उसे ऐसा मालूम होता है कि मानो उसे वहुत दौड़ना है। यह दौड़ कहाँ खतम होगी, इसका वह अन्दाज भी कैसे लगाये ? वृत्त का हाल ही इस किस्म का है कि जितने ग्रागे बढ़ेंगे, वृत्त उतना ही वड़ा होता चला जायगा। ग्रादमी का ज्ञान भी वृत्ताकार है। मशहूर वैज्ञानिक आइन्स्टाइन का कहना है कि जो चीज वृत्ताकार है, वह ग्रनंत नहीं हो सकती। पर हमारा ज्ञान हमें यह कहने के लिए मजबूर कर रहा है कि वृत्ताकार में फैलनेवाली चीज ही अनंत होती है। जिस तरह पानी की लहरें वृत्त में बढ़ती हुई दूर तक चली जाती हैं, वैसे ही प्रकाश की लहरें वृत्त में वढ़कर अनंत काल तक अनंत में फैलती रहेंगी। हम सिर्फ यह कहना चाहते हैं कि यह है ग्रादमी की कल्पना का हाल । उस कल्पना का, जो मामूली ज्ञान की वेटी है और वह मामूली ज्ञान खुद भी जगत के भंडार की एक बूँद के बरावर नहीं है।

ग्रादमी कल्पना के वल पर शेर से कुश्ती लड़ सकता है, हाथी को कन्धे पर विठा सकता है। किसके हाथी ग्रीर शेर, वह सारी पृथ्वी को कन्धे पर रखकर भाग सकता है। किसकी पृथ्वी, वह तीन लोक को ग्रापनी जेव में रख सकता है। उसे यह सोचने की जरूरत नहीं कि वह तीनों लोकों को जेव में रखकर खड़ा कहाँ होगा।

## ज्ञान से अज्ञान का चेत्र वड़ा

ग्रव सोचिये, ग्रगर ग्रादमी ग्रपनी कल्पनाग्रों को कागज पर लिख डाले—ऐसा कवि करते रहे हैं, करते हैं ग्रीर करते रहेंगे— तो वहं लिखा हुम्रा फिर मामूली म्रादिमयों में ऐसी भावना पैदा कर देगा कि जिन्होंने यह लिखा, वे सचमुच वैसे रहे होंगे। ग्रगर वे वैसे न रहे हों, तो उन्होंने वैसा कोई ग्रादमी तो जरूर देखा होगा। ग्रव वताइये, वे कहाँ गलती कर रहे हैं ? वड़े-वड़े ज्ञानियों की ग्रनुभवों के वाद यही राय है कि जैसे-जैसे ग्रादमी का ज्ञान वढ़ता है, वैसे-ही-वैसे ग्रज्ञान का क्षेत्र उनके ज्ञान के क्षेत्र से कई गुना वढ़ जाता है। यानी जो जितना ज्ञानी है, वह उससे कई गुना श्रज्ञानी है। दूसरे मानों में वड़ा ज्ञानी ग्रज्ञानी ज्यादा है ग्रौर ज्ञानी कम । उन्हीं श्रनुभिवयों के ग्राघार पर हम यह कह सकते हैं, ज्ञानी होने का इसके सिवा कोई ऋर्य नहीं हो सकता कि वह श्रपने श्रज्ञान को श्रज्ञानी की श्रपेक्षा खुव श्रन्छी तरह जानता है। हम कितने ग्रज्ञान हैं, यह जानने के लिए इतने ज्ञान की जरूरत है, जितना ज्ञान ग्रादमी उमरभर प्राप्त नहीं कर सकता। जहाँ यह कहा जा सकता है कि ज्ञान श्रमन्त है, वहाँ यह भी तो मानना पड़ेगा कि हर प्राणी श्रनन्त ज्ञानी नहीं हैं, श्रनन्त श्रज्ञानी हैं। तीन लोक श्राकाश के श्रन्दर हैं। पर उसके वाहर श्रलोकाकाश है श्रीर श्रलोका-काश लोकाकाश से श्रनन्त गुना बढ़ा है। इसलिए अज्ञान हमेशा त्रनंत गुना वड़ा रहेगा। ग्रगर किसीको ग्रनंत ज्ञानी मान लिया जाय, तो वह श्रनंतानंत श्रज्ञानी होगा।

# सर्वज्ञ का प्रश्न

ग्रव जरा उल्टे चिलये। जो ग्रनंत ग्रज्ञानी है, वह ग्रनंत ज्ञानी नहीं हो सकता। पर ऐसा भी नहीं कि वह विलकुल ज्ञानी ही नहो। हर श्रनंत श्रज्ञानी हुनियाभर के श्रादिमयों से

वड़ा ज्ञानी होगा। क्योंकि किसी ग्रादमी को ग्रपने ग्रनन्त ग्रज्ञान का ज्ञान हो ही नहीं सकता, जव तक कि वह दुनिया में जितना ज्ञान है, उस सबको हासिल न कर ले। ग्रव जरा ग्रीर नीचे चिलये। जो ग्रपने को बहुत ग्रज्ञानी समभता है, वह जरूर खासा पूरा ज्ञानी न रहेगा। इसी तरह नीचे-नीचे जाने पर एक वह ग्रवस्था ग्रा जायगी, जब ग्रादमी यह समभने लगेगा कि मैं विलकुल अज्ञानी नहीं हूँ। जो कहता है कि मैं विलकुल अज्ञानी नहीं हूँ, वह सर्वज्ञ नहीं तो क्या है ? इसलिए सर्वज्ञ के माननेवालों ्को जब ऐसे श्रादमी से पाला पड़ जाता है, जो यह कहता है कि सर्वज्ञ नहीं हो सकता, तव वे उससे सवाल पूछते हैं कि इसके तो यह माने हुए कि तुमने सब काल ग्रीर सव जगह देखकर यह वात कही है कि सर्वज्ञ नहीं हो सकता, इसलिए तुम ही सर्वज्ञ हुए। क्या इससे यह नतीजा नहीं निकलता कि सर्वज्ञ वही है, जो यह कहता है कि सर्वज्ञ नहीं हो सकता ?

ऊपर की दलीलें विलकुल ऐसी हैं, जैसे वाल की खाल उघेड़ी जा रही हो। पर हैं सीघी-सादी और विलकुल वैसी हैं, जैसे वड़े-वड़े दार्शनिक किया करते हैं और इन दलीलों में दार्शनिकों के लिए वहुत-कुछ मिलेगा। इन्हें छोड़िये, अब जरा सीघे-सादे ढंग से चलिये।

# सर्वज्ञता की दलीलें

आदमी के दिमाग ने सर्वज्ञ की वात सोची क्यों ? इसमें एक कारण तो यह हो सकता है कि उसे कुछ आदमी कम ज्ञानी मिले, कुछ ज्यादा ज्ञानी मिले, कुछ वहुत ज्यादा ज्ञानी मिले। इसलिए उसने सोच डाला कि कुछ सव ज्ञानी भी होने चाहिए ग्रीर मेहनत से हो सकते हैं। पर उसकी यह सूफ इतनी ही वेतुकी है, जितना एक ग्रादमी यह देखकर सोचे कि एक प्रालू दो माशे का होता है, एक पाँच माशे का, एक दस तोले का, एक चालीस तोले का; इसलिए एक इतना वड़ा भी हो सकता है, जितनी वड़ी हमारी पृथ्वी। जरूरत सिर्फ इस वात की है कि खूब खाद चाहिए ग्रीर उसके उगने के लिए वहुत वड़ी जमीन। ग्रव ग्रगर सर्वज्ञ के लिए ठपरवाली सूफ ठीक है, तो वड़े ग्रालू के लिए नीचेवाली सूफ क्यों ठीक नहीं? फिर वह ग्रालू वहीं क्यों एकेगा? वह भी ग्रपने ग्रालू को ग्रनन्ताकाश तक ले जा सकता है ग्रीर उसे रोकेगा कान?

दूसरा कारए। यह हो सकता है कि संसार अनंताकाश में फैला है और यह अनंताकाश चीजों से भरा है। चीज का ही दूसरा नाम ज्ञेय है। ज्ञेय के माने है ज्ञान का विषय, इसलिए हर चीज को ज्ञान का विषय होना जरूरी है, इसलिए सर्वज्ञ होना चाहिए। नहीं तो वह ज्ञेय ही नहीं रह जायगी।

यह दलील भी वड़ी पोच है। ग्रनंताकाश है, ग्रनंत जीव हैं, सब जीव ज्ञानी हैं, फिर कोई चीज ज्ञान का विषय होने से वची कहाँ, जिसके लिए सर्वज्ञ की जरूरत पड़ गयी ? चींटी की देह चींटी के ज्ञान का विषय वनी है, इसलिए वह ज्ञेय हैं। उसे ज्ञेय वनने के लिए किसी सर्वज्ञ की जरूरत नहीं। यही हाल दुनिया की ग्रीर सब चीजों का हो सकता है। जो चीज जहाँ है, वहाँ प्राग्री मौजूद है। वह चीज उन प्राग्रियों के ज्ञान का विषय वन सकती है। ग्रव रह गया ज्ञान खुद, उसे सबने ज्ञान का विषय माना ही है, ग्रव सर्वज्ञ की कहाँ जरूरत रह गयी?

तीसरा ग्रीर ग्रसली कारए यह हो सकता है ग्रीर शायद यही रहा हो कि जव ईश्वर जैसे सर्वज्ञ ग्रीर सर्वशक्तिमान् के हाथ से कर्तापने का राज्य छीना गया, तव उन दिनों की जनता घवरा उठी होगी। उसे जरूरत हुई होगी कि फिर यह राज्य किसीके सिपुर्द किया जाय । वस, वह ईश्वरीय राज्य किसीके सिर थोप दिया गया श्रीर वह सर्वज्ञ श्रीर सर्वज्ञिन्त-मान् वन गया। हमने नानी की कहानियों में सुना था कि ऐसे राजाओं की राजगद्दी भरने के लिए पहले यह तरीका था कि जिसे कोई ग्रौलाद न होती थी, वह राजा हुक्म निकालता था कि जो कोई अमुक दिन सुवह होने के पहले-पहले नगरी में दाखिल होगा, वही राजा वना दिया जायगा। उसी सिल-सिले में यह भी सुना था कि एक घसेरा ग्राया ग्रौर वह राजा वना दिया गया और दूसरे दिन ही उसे सचमुच वह ताकत हासिल हो गयी, जो राजा को हासिल थी। नानी की कहानी छोड़िये। त्राच वीसवीं सदी में वच्चासक्का अफगानिस्तान के वादशाह को गद्दी से उतारफर खुद वादशाह वन गया ग्रीर कुछ दिनों राज्य कर गया । इसे भी छोड़िये । अव आये दिन राजावाले देश राजाग्रों को खतम कर रहे हैं ग्रीर उनकी जगह सभापित के नाम से किसीको वैठा देते हैं। उसे वह ताकत हासिल हो जाती है, जो राजा को होती है। सव लोग उससे वैसे ही डरने लगते हैं, जैसे राजा से डरते हों।

महात्मा गांची तो यहाँ तक कह गये थे कि किसी मेहतरानी की लडकी को क्यों न गवर्नर और गवर्नर-जनरल वनाया जाय। ग्राज जव ग्रादमी ग्रपनी ग्राँखों यह तमाशे देख रहा है---ग्रादमी हमेशा से परलोक के मामले में उसी ढंग से सोचता श्राया है, जिस ढंग से इस लोक में हो रहा है-इसलिए ग्रगर उसने ईव़वर को गद्दी से उतारकर वह गद्दी किसी श्रादमी को सांप दी, तो वह सर्वज्ञ श्रीर सर्वशक्तिमान् क्यों न हो गया ? श्रादमी जिसे सर्वज्ञ ग्रीर सर्वशक्तिमान् कहे, वही सर्वज्ञ ग्रीर सर्वशक्तिमान्। किसने पत्थर को देवता वनते नहीं देखा। ग्रव वह पत्थर का देवता देवता का कौन-कीन नाटक खेल सकता है, यह भी ग्रादमी की ग्रकल ग्रच्छी तरह जानती है। वह ईश्वर वना हुगा ग्रादमी सर्वज्ञता श्रीर सर्वशक्तिमत्ता का कितना नाटक खेल सकता है, यह वात भी श्रादमी की श्रकल से परे नहीं है। पर श्रादमी जिस तरह भूठे सपने देखकर हँसता ग्रीर रोता है ग्रीर ग्रपने-ग्रापको सच्ची दुनिया में मान लेता है-जिस तरह वह नाटक-सिनेमा देखकर नकली दुनिया में हँस-रो लेता है, ग्रीर यही समभ लेता है कि वह सच्ची दुनिया में रह रहा है—वैसे ही वह सर्वज्ञता ग्रीर सर्वशक्तिमत्ता का नाटक देखकर अपनी तवीयत खुश कर लेता है। वह यही समभ लेता है कि वह सचमुच सर्वज्ञ ग्रीर सर्वशक्तिमान के दर्शन कर रहा है। जैसे वह सपने में सपने की चीजों की परीक्षा नहीं करता, नाटक-सिनेमा में नाटक की परीक्षा नहीं करता, वैसे ही वह वर्म के खेलों में सर्वज्ञ ग्रीर सर्वशक्तिमान की परीक्षा की भंभट में नहीं पड़ता। सर्वज्ञ के मानने की यही ग्रसली जरूरत थी।

# सत्य एक कसौटी या वरमा

सत्य एक कसौटी है। वह खुद खोटे-खरे सोने पर न इल्जाम लगाती ग्रीर न सराहना करती है। हाँ, ग्रादमी उस पर सोना कसने लगे, तो वह साफ वोल उठेगी कि यह सोना खोटा है ग्रौर यह खरा। सत्य एक ग्राग है। वह सूखे को ही नहीं जलाती, उसमें गीले को भी जलाने की ताकत है। वह लकड़ी ही नहीं, लोहे को भी भस्म कर सकती है। पर वह ग्राग किसीको भस्म करने की नहीं सोचती, ग्रौर न किसीको तपाकर चमकाने या काला करने की सोचती है। हाँ, ग्रादमी जिस नीयत से यानी भस्म करने या परखने की नीयत से जिस चीज को ग्राग में रखेगा, वह भस्म कर लेगी या परख लेगी। ग्रव उससे सर्वज्ञता परखवाइये या सर्वशक्तिमत्ता। उसके लिए सव एक है।

सत्य एक वरमा है, जो सोने की डली में ग्रंदर तक सूराख़ करके यह वता सकता है कि यह डला कहाँ तक सोना है। पर सत्य का यह वरमा भी ग्रपने-ग्राप कुछ नहीं करता। ग्रादमी चाहे, तो उससे परीक्षा करा ले। वह सत्य का वरमा जव सर्वज्ञता के डले में भ्रन्दर तक छेद करता जाता है, तो ग्रादमी चट समक लेता है कि सर्वज्ञता कितने गहरे तक गयी है ग्रीर कहाँ से ग्रज्ञान गुरू हो जाता है। सत्य को कुछ लोगों ने जो परमेश्वर नाम दे डाला है, वह ठीक ही है। पर मुश्किल यही है कि सत्य ग्रीर सर्वज्ञता, दोनों एक ग्रादमी में नहीं रह सकते। ज्ञायद इस वजह से कि दोनों ही ईश्वर हैं या शायद इस वजह से कि उनमें कोई एक प्रकाश है ग्रीर कोई एक ग्रंधेरा।

#### सच्चे और ज्ञानी की नजर अपने अज्ञान पर

द्निया में एक वड़ी मुश्किल है। जो फलदार दरस्त होते हैं, जनकी डालियाँ भुकी होती हैं, फल गिरे कि डालियाँ ऊपर उठीं। वह न उठना चाहें, तो भी उठना पड़ता है। प्रकृति वनी ही इस तरह की है। ठीक इसी तरह जो ज्ञानी हैं, वह विनम्र होते हैं, सच्चे होते हैं। जब भी उनसे पूछा जाय, वे ग्रपने को ज्ञानी कम ग्रौर ग्रज्ञानी ज्यादा वताते हैं। यह भूठ नहीं होता, इसमें विनम्रता होती है, सरलता होती है। सच्चे ग्रादमी की विनम्रता भूठी नहीं होती, दिखावे की चीज नहीं होती। वात सिर्फ इतनी होती है कि ज्ञानी श्रीर सच्चे श्रादमी की नजर हमेशा श्रपने श्रज्ञान की तरफ रहती है। ऐसा न हो, तो वह ग्रागे वढ़ कैसे पाये? इसलिए वह सीघे-सादे शब्दों में अपने को अज्ञानी कह देता है। मालूम होता है, सत्य ग्रौर ज्ञान साथ-साथ रह सकते हैं, पर सत्य ग्रीर सर्वज्ञता साथ-साथ नहीं रह सकती ग्रीर जहाँ तक हमारी अकल जाती है, हम यही समभते हैं कि कभी किसी आदमी ने अपने को सर्वज्ञ न कहा होगा। दूसरों ने भले ही उसे सर्वज्ञ श्रीर महा-सर्वज्ञ के नाम से पुकारना शुरू कर दिया होगा।

सर्वज्ञ श्रीर भगवान्, ये दोनों शब्द ग्राज भी प्रचार में हैं। भगवन् श्रीर भगवान् कहकर वोलने का रिवाज है। "ग्राप सव कुछ जानते हैं" यानी श्राप सर्वज्ञ हैं—यह मुहावरा घर-घर में फैला है श्रीर यह व्यावहारिक सत्य है। सर्वज्ञ व्यावहारिक कसीटी पर ठीक उत्तर सकता है, सत्य या निश्चय की कसीटी पर नहीं।

# सत्य श्रोर सुख-दुःख

# दुःख जीवन का जरूरी गुग

घर्म का उपदेशक वोलना गुरू करने पर कहता है, "सव सुख चाहते हैं, दु:ख से वचना चाहते हैं" पर शायद ही किसीने यह सोचा हो कि सुख-दु:ख ऐसे मिले हैं, जैसे दूध-पानी। सुख विना दु:ख के हासिल नहीं होता।

जिसे देखो, दु:ख से भागना चाहता है। लोगों ने ईश्वर के नाम गिनाते हुए एक नाम वताया, 'दु:ख-मेटनहार।' रोज मंदिर में यह विनती सुनी जा सकती है:

''सुख देना दुःख मेटना, यही तुम्हारी वान । मो गरीव की वीनती, सुन लेना मगवान् ॥''

हमने छुटपन में यह विनती खूव गायी है। ग्रगर भगवान् ने सचमुच हमारी विनती सुन ली होती ग्रीर हमारा दु:ख मेट दिया होता, तो ग्रांज ये पंक्तियाँ लिखने के लिए हम जीवित न रहते। 'दु:ख-दर्द से परे हो गया' यह एक मुहावरा है, जिसका मतलव है 'मर गया'। दु:ख-दर्द का न रहना मीत है। पत्थर को दु:ख-दर्द नहीं होता, क्योंकि उसमें जान नहीं होती। दु:ख-दर्द जान के साथ लगा है। वह जीवन का जरूरी गुएा है। उसके मेटने-मिटाने की सोचना जीवन मिटाने की सोचना है।

## दर्दः वेदना

संस्कृत में 'दर्द' के लिए शब्द है 'वेदना'। वेदना शब्द 'विद्' यातु से वना है, जिसका ग्रर्थ है जानकारी। वेदना दो तरह की है: एक ग्रनुकूल, दूसरी प्रतिकूल। इन्हींका नाम 'साता' ग्रीर 'ग्रसाता' है। ग्रनुकूल वेदना का नाम सुख ग्रीर प्रतिकूल वेदना का नाम दुःख। ग्रव सुख-दुःख दोनों एक तरह की जानकारी रह गये। कीन ऐसा होगा, जो यह चाहे कि उसकी जानकारी उससे छीन ली जाय? दुःख मिटने का इसके सिवा क्या ग्रर्थ है कि दुःख की जानकारी मिट जाय। क्योंकि दुःख-दर्द ग्रपने तन की तकलीफ से ही नहीं होता, दूसरों का दुःख देख ग्रीर ज्यादा होता है। एक किव कह वैठा:

''दर्दें दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को। वर्ना तास्रत के लिए कुछ कम न ये करोवियाँ।।''

उस शायर के हवाले से यह कहा जा सकता है कि श्रादमी दर्द के लिए पैदा हुआ है।

#### दुःख का महस्त्र

वचा पैदा होते ही रोता है, नहीं तो दाई ठंढे पानी का छींटा देकर रुलाती है। न रोने के माने हैं, पैदा होने का ज्ञान न होना। अब दु:ख-दर्द जीवन की जानकारी का दूसरा नाम रह जाता है। वच्चा रोता क्यों है? सिर्फ इसलिए कि उसे भूख की तकलीफ होती है। उसका रोना सिवा इसके कुछ भी नहीं कि वह रोकर बता दे कि वह भूखा है। अगर बच्चा भूख की तकलीफ

लिये पैदा न हो, तो क्या वह कुछ दिन भी जी सकता है ? इसे छोड़िये। ग्रगर उसकी माँ को उसके पैदा होने की तकलीफ न हो, तो वचा कहीं उतरकर मर जाय। वच्चे के पैदा होने की तकलीफ प्रकृति की ऊँचे दरजे की देन है। इस तकलीफ ग्रौर दुःख को ग्रगर कोई मूरख मिटाने की सोचने लगे, तो यही समभना चाहिए कि वह दुनिया से उठ जाने की बात सोच रहा है।

लकवा एक बीमारी है। उसे पक्षाघात भी कहते हैं। उस वीमारी में श्रादमी का श्रंग सुन्न पड़ जाता है। उसका वह श्रंग दु:ख-सुख मानना छोड़ देता है। हमने किसीको नहीं देखा कि उस वोमारी के होने पर उसने खुश होकर मिठाई वाँटी हो या . उसके कुटुम्वियों ने खुशी मनायी हो । क्या यह उसके ग्रीर उसके कुटुम्वियों के लिए खुशी का मौका न था कि ग्राधी देह का सुख-दुःख मिट गया । हमने ऐसे वीमार को एक वार श्रपनी श्राँखों देखा है। उसकी पत्नी से वातचीत की। उस बीमार का पाँव पास रखी ग्रुँगीठी की ग्राग से जलने लगा। न उसे पता लगा, न हमें। जव मांस की गंध ग्रायी, तव इधर-उधर नजर डालने पर पता चला कि मरीज का पाँव जल रहा है। ग्रव समभ में ग्रा गया होगा कि दुख-दर्द ग्रादमी को जीते रहने ग्रीर सही-सलामत रखने के लिए कितना जरूरी है ? इस जरूरी चीज को मिटाने के लिए न जाने ग्रादमी ने कितने देवता तैयार कर लिये, कितनी देवियाँ बना लीं, कितनी प्रार्थनाएँ रच डालीं। इस तरह वह ग्रंघ-विश्वास के जाल में फँस गया, जिससे निकलना मुश्किल हो रहा है।

# दुःख एक अलामे

जिस तरह ग्राम के ग्रचार को वरसों बनाये रखने के लिए तेल जरूरी है, वैसे ही दु:ख-दर्द ग्रादमी को सी-सवा सी वरस जीते रखने के लिए जरूरी है। दु:ख-दर्द की वात लेकर किसी दार्शनिक ने एक कथा गढ़ डाली, जिसका भाव है, ईश्वर ने पहले ग्रादमी वेदः ख-दर्द का पैदा किया। उसे कोई तकलीफ न होती थी। नतीजा यह हुग्रा कि ग्रादमी की नस्ल दुनिया के पर्दे से खतम होने लगी। एक ग्रादमी ईश्वर के पास पहुँचा ग्रीर दु:ख-दर्द माँगकर लाया । तभी तो ग्राज दुनिया में इतने ग्रादमी जीवित हैं। दु:ख-दर्द का भाव समभाने के लिए कथा सुन्दर है। सचमुच देह का दुःख देह वनाये रखने के लिए जरूरी है। जव तक दु:ख-दर्द देह को वनाये रखने के लिए जरूरी वना रहेगा, तव तक यह इतना दुःखदायी नहीं हो सकता कि ग्रादमी सह न सके। ग्रादमी ने इञ्जन में भाप की एक नली रखी है, जिससे वह ज्यादा भाप निकाल देता है, इञ्जनका वायलर फटने से वच जाता है। प्रकृति ने ग्रादमी को ऐसा वनाया है कि जव तकलीफ ज्यादा होती है ग्रौर इन्द्रियाँ उसे नहीं सह सकतीं, तव उसमें मूच्छी या वेहोशी श्रा जाती ग्रीर तकलीफ कम हो जाती है। रहा थोड़ा दु:ख। वह बेहद जरूरी है। वह दुःख न होता, तो वह कुछ करने की न सोचता। दुःख ग्रसल में ग्रलार्म का काम करता है। ग्रलार्म सुनकर श्रादमी समभ जाता है कि उसके जागने या काम करने का समय हो गया ग्रीर उठ बैठता है। मान लीजिये, एक बच्चे को मच्छर ने काट खाया। ग्रव ग्रगरमच्छर के काटने से उसे दुःख न हो, तो वह क्यों

रोये ? जब वह न रोयेगा, तो उसकी माँ को कैसे पता चलेगा कि उसे मच्छर काट रहा है ग्रीर माँ को पता न लगेगा, तो वच्चा मलेरिया-जबर से कैसे बचेगा ? वह ग्रपनी जान खो देगा। ग्रव बताइये कीन ऐसा वेबकूफ होगा, जो यह चाहेगा कि उसके बच्चे को दुःख न हुग्रा करे। दुःख-दर्द यह बताता है कि क्या नहीं होना चाहिए। बच्चा रोकर माँ को बताना चाहता है कि उसे मच्छर काट रहा है ग्रीर यह उसे नहीं काटना चाहिए। वताइये, इसमें क्या बुराई है ?

श्रव दूसरी मिसाल लीजिये। वच्चा जितनी जोर से रोता है, जतनी जोर से श्रादमी नहीं रोता। वच्चे को वाहरी तकलीफ ज्यादा होती है। प्रकृति का यह प्रवन्घ वड़े मार्के का है। क्योंकि वच्चे को अपनी तकलीफ दूर करने के लिए दूसरों की जरूरत पड़ती है। श्रव श्रगर वह जोर-जोर से न रोये, तो उसको दूसरों की मदद कैसे मिले श्रीर जव तक तकलीफ ज्यादा न हो, तव तक वह जोर से कैसे रोये? तकलीफ में जोर से रोना उसके लिए जरूरी है।

वच्चे को वाहरी तकलीफ होती है, भीतरी नहीं। ग्रादमी की तरह उसके मन के सितार का दु:खरूपी तार वहुत देर तक भन्नाता नहीं रहता। शायद वह विलकुल नहीं भन्नाता। जरा पुचकारने पर वच्चा रोना वन्द कर देता है, हँसने लगता है। उसे दूसरे की मदद की जरूरत थी, वह मिल गयी। वच्चों को वचपन की तकलीफें याद नहीं रहतीं। उन्हें वह याद करने की कोशिश करे, तो भी याद नहीं कर सकता। सचमुच वच्चे को

रोते देख ग्रादमी जितना दुःख मानता है, उसका सीवाँ हिस्सा वच्चे को दुःख नहीं होता। ऐसा क्यों होता है ? यह हम ग्रागे समभायेंगे। दुःख-सुख का सारा भेद इसीमें है। वच्चा हमारी नजरों में वहुत दुःखी है, ग्रपने लिए नहीं। ग्रसल में नासमभों की वाहरी तकलीफ वहुत होती है। ऐसा नहों, तो दूसरों में दया कैसे पैदा हो ग्रांर क्यों दूसरे उनकी मदद को दींड़ें?

# दुःख-दर्द श्रोर तन-मन

समभ पैदा होने पर वाहरी तकलीफ कम हो जाती है, भीतरी वढ़ने लगती है। सवको मालूम है, वच्चा जहाँ समभदार हुग्रा, वहाँ इस योग्य हो जाता है कि हँसी ग्रौर गुस्से के भावों को ग्रलग-ग्रलग पहचान सके। ग्रव तकलीफ का केन्द्र वाहर से उठ ग्रन्दर पहुँच जाता है। ग्रगर कोई गुस्सा होकर वच्चे को थप्पड़ दिखाये या ग्राहिस्ता मारे, तव भी वह दुःख मानेगा ग्रीर रो देगा, ग्रीर ग्रगर हँसकर कोई उसे जोर से थप्पड़ मार दे, तव वह रोने की जगह हँस देगा। ग्रव वह दुःख-सुख मन से मानता है, देह से नहीं। वस, जैसे-जैसे ग्रादमी में बुद्ध-चेतना वढ़ती जाती है, वैसे-वैसे दुःख-सहन का ग्रभ्यास होता जाता है।

# दुःख मिटाने के लिए प्रार्थना क्यों ?

दूसरों की तकलीफ को ग्रादमी तकलीफ मान सकता है, यच्चा नहीं। दूसरों की तकलीफ का ग्रमुभव भी होता है। जब दु:ख का केंद्र तन से हटकर मन-मस्तक में जाकर जगह ले लेता है, तब ग्रादमी के हाथ में यह ताकत ग्रा जाती है कि वह दु:ख को चाहे जितना घटा-वड़ा ले। वड़ाने की हद है, घटाने की हद नहीं। ग्रादमी दुःख को घटाकर सुख में वदल सकता है। यही कारण है कि एक तरफ ग्रादमी का सिर कटता रहता है ग्रीर दूसरी तरफ हँसता रहता है। किसने नहीं सुना कि कुछ ग्रादमी फाँसी का हुक्म सुनकर फाँसी पाने तक कई सेर वढ़ जाते हैं। सिपाही ग्रपने तन की वड़ी-से-वड़ी चीरफाड़ ग्रपनी ग्राँखों देख सकते हैं ग्रीर हँसते रह सकते हैं। ग्रपना सिर ग्रपने-ग्राप काटकर दे डालने की वात देखी नहीं, सुनी है; पर भूठ नहीं हो सकती। ग्रादमी के लिए यह मुश्कल काम है, ग्रसम्भव नहीं।

ग्रव यह वताइये, इस दुःख के दूर करने ग्रौर मिटाने के लिए देवी-देवताग्रों से प्रार्थना किसलिए ग्रौर ईश्वर की खुशामद किसलिए ? छोटी-मोटी तकलीफ वड़े काम की चीज है। ग्रगर वह देवी-देवता या ईश्वर से मिटवा लेंगे, तो मिट जायँगे। रही देह की वड़ी-वड़ी तकलीफें, उनके लिए प्रकृति में प्रवंध है, वेहोशी ग्रा जाती है। ग्रव रही मानसिक तकलीफें, उसकी कुंजी बुद्धि ग्रौर ग्रात्म-चेतना के हाथ में है, फिर किसीकी मदद की क्या जरूरत?

# श्रादमी श्रपनी वुद्धि से दुःख बढ़ाता है

दु:ख-दर्द उन्हींको वहुत होता है, जो देह में निवास करते हैं। यह देह का दु:ख-दर्द उन ग्रादिमयों के क्यों कम नहीं होता, जिनमें बुद्धि ग्रायी है? बुद्धि तो इसलिए है कि दु:ख को कम करे। ग्रसल में ग्रादिमी बुद्धि से दु:ख वढ़ाने का काम लेता है, कसूर उसका है। वह दु:ख वढ़ाने का कसूर करके देवी-देवताग्रों का जाल रच ले, तो क्या यह सत्य की वेइज्जती करना नहीं है? दूसरे शब्दों में श्रादमी के श्रन्दर दो वक्स हैं। एक में सुख भरा है, दूसरे में दु:ख। दोनों के ताले वन्द हैं। दोनों कुंजियाँ श्रादमी के हाथ में हैं। वह श्राजाद है, चाहे सुख का वक्स खोल ले, चाहे दु:ख का। श्रव श्रगर वह वार-वार दु:ख का वक्स खोले, तो इसे कोई क्या करे ? दु:ख-सुख के वारे में जब श्रादमी इतना श्राजाद है, तब यह श्रच्छा नहीं मालूम होता कि वह उन चीजों को हाथ फैलाकर दूसरे से माँगे।

## सुख से दुःख ज्यादा जरूरी

ग्रगर ग्रादमी से दु:ख-दर्द छीन लिया जाय, तो वह फिर किसीको प्यार न करे। मौत की उसे कोई जानकारी न रहे। फिर श्रादमी क्या रह जायगा, यह कहना मुश्किल है। जिसे देखो, दु:ख मेटने की वात सोचता है। सुख मेटने की कोई नहीं सोचता। ग्रगर वह जरा सोचे, तो मालूम हो जाय कि वह सुख पाने की कभी सोच नहीं सकता, ग्रगर दुःख उसको सुख पाने की वात न सुभाये। दुःख उसके वड़े काम की चीज है। दुःख उसको सुख की तरफ ढकेलता है। ग्रगर उसे भूख का दुःख न हो, तो वह खाने की वात न सोच सके। सुख से कहीं ज्यादा दु:ख जरूरी है। सुख संसार से उठ जाय, तो ग्रादमी का कुछ न विगड़े। दुःख खुद ग्रादमी से सुख जैसी कोई ग्रीर चीज तैयार करवा ले, लेकिन ग्रगर दुःख मिट जाय, तो श्रादमी कहीं का न रह जाय। भूख का दुःख न हो, तो क्यों खाये? जव न खाये, तव क्यों न मरे ? जव मर गया, तव सुख कांन भोगे ? इसलिए मुख मेटने-मिटाने की प्रार्थना समभ में त्राती है, दुःव

मेटने-मिटवाने की नहीं। ग्रव रही सुख मेटने की प्रार्थना। सो सुख मेटने-मिटानेवाले दुनिया में वहुत हैं। दुनिया में हो ही क्या रहा है ? हर प्राणी दूसरे के सुख मेटने में लगा है, इसलिए प्रार्थना की क्या जरूरत है ?

# द्सरों के दुःख के लिए भी प्रार्थना कहाँ ?

सवाल हो सकता है, यह हुई ग्रपने दु:ख-दर्द की वात, पर दूसरों का दु:ख देखकर जो हमें दु:ख होता है, वह कैसे मिटे? उसके लिए प्रार्थना की जरूरत रह जाती है। जहाँ तक हम समभते हैं, दूसरों का दु:ख-दर्द मिटाने के लिए कोई प्रार्थना करता नहीं। लोग कहेंगे, हर माँ ग्रपने वेटे का दुःख दूर करने के लिए प्रार्थना करती देखी गयी है, इस खुली वात से कैसे इनकार किया जा सकता है ? हम भी इस खुली वात से कहाँ इनकार करते हैं, पर कहना यह चाहते हैं कि हरएक माँ को ग्रपने वेटे को दुःखी देखकर खुद दुःख होता है ग्रीर वह वेटे का दुःख दूर होने की प्रार्थना करके अपना दुःखं दूर करना चाहती है। ऐसी माताएँ मिल सकती हैं, जो धर्म-गुरु के कहने पर अपने वच्चे का दु:ख मिटाने के लिए दूसरे वच्चे की जान ले लें। तव यह नहीं कहा जा सकता कि दूसरों के दु:ख मिटाने के लिए प्रार्थना की जरूरत है।

## सामाजिक विपत्ति में भी प्रार्थना नासमभी

भूकंप में सैकड़ों ग्रादमी मर जाते हैं। यही हाल ग्राग लग जाने, रेल लड़ जाने, विजली गिर जाने से या वाड़ ग्रा जाने से होता है। क्या इसके लिए भी प्रार्थना नहीं करनी चाहिए? इस सवाल का जवाव देने के पहले हम यह कहेंगे कि जव कभी ऐसी दुर्घटनाएँ होती हैं, तब नासमभ ही प्रार्थना में लगते हैं। समभदार तो एकदम उन लोगों की मदद के लिए दीड़ते हैं, जो दु:ख में विरे होते हैं, वे जहाँ तक वने, उन्हें ग्राफत से निकाल-कर उनका दुःख दूर करते हैं। इससे हटकर यह मान लीजिये, सारे समाज ने एक ग्रादमी का रूप ले लिया है, तव भूकम्प जैसी वड़ी दुर्घटनाएँ समाजरूपी एक ग्रादमी के लिहाज से इतनी छोटी रह जाती हैं, जितनी एक ग्रादमी के पाँव में मामूली चोट। ऐसे मीकों पर श्रादिमयों में दुःख सहने का या दुःख को सुख में वदलने का वेहद वल ग्रा जाता है। हमने विहार के भूकम्प का हाल अपनी आँखों देखा। वहाँ के लोगों का कहना था कि लोगों ने हँस-हँसकर जानें दीं। जो अचानक मरे, मर गये; जो वच रहे, उनमें न जाने कहाँ से इतना वल ग्रा गया कि उस वल को पाकर रोने की जगह हँसने लगे। ऐसा ही अनुभव किसी फारसी कवि को हुआ। उसने लिखा, "मिलकर मरने में वड़ा ग्रानंद ग्राता है।" श्रानंद को छोड़िये, श्राइये दुसरी तरफ विचार करें।

## भविष्य न जान पाना प्राकृतिक प्रवंध

ग्रगर ग्राज कोई ऐसा इश्तहार निकाल कि वह ऐसी ग्रांरत से शादी करना चाहता है, जिसे वह रोज सा जूते मारा करेगा, जब उसके जी में ग्रायेगा, उसका हाथ काटकर फेंक देगा, उसके पाँव काटकर फेंक देगा, उसका सिर काटकर फेंक देगा या जो जी में ग्रायेगा करेगा, तो क्या दुनिया में ऐसी ग्रांरत मिल सकती है, जो उससे शादी करने को तैयार हो जाय ? ग्रगर वही ऊपर वतायी शर्तों में से कोई शर्त न वताकर सिर्फ शादी करने का इश्तहार दे और शादी हो जाय और वाद में वैसा ही वर्ताव करने लगे, जैसा वह चाहता है, तो उसकी ग्रौरत वया करेगी? चुपचाप वर्दाश्त कर लेगी; मार डालेगा तो मर जायगी। ठीक इसी तरह अगर आदमी से यह कहा जाता कि देखो जी, हम तुम्हें दुनिया में भेजते हैं, पर यह वताये देते हैं कि जब हमारे जी में आयेगा, हम तुम्हारे ऊपर बिजली गिरा देंगे, तुम्हें जमीन में दफन कर देंगे, तुम्हें पानी में वहा देंगे, तो क्या कोई भी ग्रादमी दुनिया में ग्राना पसन्द करता ? पर चूँ कि दुनिया में ग्राने के पहले ऐसी कोई शर्त नहीं होती, इसलिए सव ग्राते हैं ग्रीर ऐसी तकलीफें श्राराम से सह लेते हैं। दूसरे ऐसी तकलीफ देखकर भी दुनिया से भागना नहीं चाहते। रेल-दुर्घटना से बचे श्रादमी दूसरे क्षरा दूसरी रेल में बैठकर चल देते हैं। कोई एक ऐसा न निकला, जो रेल में न वैठकर पैदल जाने की वात सोचे। प्रकृति ने म्रागे की बात न जानने का इन्तजाम सोच-समभकर किया है। न जाने स्रादमी भविष्य जानने की बला में क्यों फँसना चाहता है ? भविष्य कोई जान नहीं सकता। पर ग्रादमी की भविष्य जानने की कमजोरी से हर कोई फायदा उठाना चाहता है। देवी-देवता श्रों की तरह सगुन, ज्योतिष, पाँसे, रमल ग्रौर न जाने क्या-क्या वलाएँ चल पड़ी हैं। भविष्य जानकर प्रकृति के प्रवन्ध में ऐसी वाघा डालना है, जैसे देवी-देवताग्रों से दुःख मेटने की प्रार्थना करके नयी वला मोल लेने की सोचना।

ग्रव यह समक्त में ग्रा गया होगा कि प्रकृति ने क्यों ऐसा

इन्तजाम किया कि हम ग्रागे की तो क्या, कल की वात भी न जान सकें ?

भविष्य जान लेने से क्या हाल होता है, इस पर एक कहानी प्रसिद्ध है, जिसमें एक साधु एक लड़के का भाग्य ब्रह्मा से जान लेते हैं। ब्रह्मा लड़के के भाग्य में लिख जाते हैं कि यह रोज हिरए। वेचकर रोजी कमायेगा। साधुजी ने लड़के को एक तरकीव वतायी और रोज हिरए। उसके जाल में आने लगा। अन्त में ब्रह्मा उससे तंग आ गये और भविष्य न वताने की शर्त पर लड़के का भाग्य वदल दिया। उस कथा से नतीजे यह निकलते हैं कि:

१. भविष्य जानने की जरूरत नहीं। २. भविष्य जानकर प्रकृति का काम एक दिन नहीं चल सकता। ३. पुरुपार्थ भाग्य से बहुत बलवान् होता है। वह भाग्य को बदल सकता है।

## दुःख-सुख पहले जानने की चीज नहीं

दु:ख-सुख ऐसी चीज नहीं, जिसके पहले जानने की जरूरत हो। ग्रादमी जरा भी सोचे, तो उसकी समभ में यह बात ग्रा सकती है कि प्रकृति के दु:ख-सुख छोड़ जो दु:ख-सुख हैं, वे ऐसे नहीं, जो सहे न जा सकें, पर ऐसे भी नहीं हैं, जो किसी सुख की सूचना देते हों, फिर क्यों ग्राते हैं ? उसकी एक वजह है, ग्रादमी बहुत से सुख तो दूसरों को दु:ख पहुँचाकर मोल ले लेता है। यह किसे नहीं मालूम कि जब कोई ग्रादमी किसीकी जान लेता है, तब उसे कई रात नींद नहीं ग्राती। इसे छोड़िये, इसका हरएक को ग्रमुभव नहीं, पर इस बात का सबको ग्रमुभव है कि मां ग्रपने बच्चे को पीटकर तुरत रोने लगती है। इससे यह नतीजा निकलता है कि दुनिया में जो दूसरे वड़े-वड़े दु:ख हैं, वे भी किसी ग्रीर के नहीं, हमारे ही पैदा किये हुए हैं। इसके लिए भी यह नहीं कहा जा सकता कि दु:ख किसी देवी-देवता के नाराज होने से या किसी महादेवता से विगड़ वैठने से किसी देश या उसके किसी हिस्से पर ग्रा पड़ते हैं।

# दुःख डरने की नहीं, समभाने की चीज

दुःख विलकुल डरने की चीज नहीं। दुख समभने की चीज है। जब वह समभ में ग्रा जायगा, तो उसे मिटाने के लिए किसीकी प्रार्थना न करनी पड़ेगी, यह एक वड़ी सचाई है। जैसे ही ग्राप ग्रपने-ग्रापको दुःखरिहत ग्रवस्था में ले जायँगे, वैसे ही पहली ग्राफत ग्राप पर यह ग्रायेगी कि ग्राप प्रकृति के सारे नियम तोड़ डालेंगे। दुःख ऐसी चीज है, जो ग्रापसे ऐसी भूल कभी नहीं होने देता। दुःख के विना कोई सत्य को पहचान नहीं सकता। कोई उन कायदों का जानकार नहीं हो सकता, जिन कायदों से उसका जीवन चल रहा है।

त्रादमी के दुःखी होने का कारण है, उसकी यह दुविघा कि वह उस काम में लगे या न लगे, जो उसकी भलाई के लिए वेहद जरूरी है। यह दुःख वेशक ऐसा है, जिसे मिटाने की जरूरत है। पर इसके लिए किसी प्रार्थना की जरूरत नहीं, किसी देवी-देवता की जरूरत नहीं, इसके लिए समभने की जरूरत है।

ग्रादमी में जब दुःख की चेतना ग्रा जाती है यानी यह कि मन दुःख का केन्द्र हो जाता है, तब उसमें नयी वात पैदा होती है श्रीर वह यह कि ग्रपनी भूलों में ग्रन्तर पैदा करने लगता है। ग्रपनी भूल को भूल नहीं मानता, दूसरों की भूलों को भूल समभता
है। यही हाल उसका उन बुराइयों के साथ होता है, जो वह
दूसरों के साथ करता है। उसका कोई बुरा कर दे, तो वहुत
कम दुःख मानता है या विलकुल नहीं मानता। भलाई के वारे
में उसका यही हाल है। ग्रीरों से ग्रपने लिए वह भलाई की
जितनी ग्राशा रखता है, उतनी ग्राशा ग्रीरों को ग्रपने से नहीं
रखने देता। यह एक ऐसी बुराई है, जो ग्रादमी को ऐसी
मालूम होती है कि वह उसे खुद दूर नहीं कर सकता ग्रीर इसी
ग्रजानकारी की वजह से वह कभी-कभी दूसरों को सुख पहुँचाने
के वहाने दुःख पहुँचाने लगता है। इसका नतीजा होता है,
ग्रादमियों के जीते रहने की ताकत का कम हो जाना। उसका
ग्रसर खुद उस पर पड़े विना नहीं रहता, इस तरह वह ग्रपने
ग्रीर सवके लिए दुःख पैदा कर देता है।

# दुःख के बराबर दोस्त नहीं

ग्रगर जीवन उस रस्सी के समान है, जिस पर ग्रादमी नट वनकर चलता है, तो दुःख ग्रादमी के हाथ में एक वाँस है, जो उसके समतोल को वनाये रखता है, उसे गिरने नहीं देता, ग्रागे वढ़ने में मदद करता है। ग्रगर जीवन एक ग्रॅंबेरी गली है, तो दुःख ग्रादमी के हाथ में लाठी है, जो उसे रास्ता टटोलने में मदद देती है। ग्रादमी का इघर-उघर न गिरना ग्रीर न भटकना ही सुख है, इसलिए दुःख के माने हैं, ग्रादमी को सुख से न भागने देना। क्या दुःख के वरावर कोई दूसरा दोस्त हो सकता है? किसीने ठीक कहा है: "विषत वरावर सुख नहीं, जो थोड़े दिन होय। इप्ट, मित्र श्ररु वन्धुजन, जान पड़ें सब कोय।।" श्रादमी चाहे या न चाहे, दुःख हमेशा उसके साथ है श्रीर हमेशा उसका दोस्त है श्रीर दोस्त के नाते वह उसे जीवन के सच्चे रास्ते की तरफ ढकेलता रहता है, उसे इघर-उघर नहीं भटकने देता। दुःख श्रादमी को उस जगह ले जाना चाहता है, जहाँ कोई वाधा नहीं है, जहाँ कोई बुराई नहीं है, जहाँ भलाई ही भलाई है। वह भलाई ऐसी है, जो दिन-दूनी श्रीर रात-चौगुनी बढ़ती है; क्योंकि उसका श्रादि-श्रन्त नहीं।

दु:ख जीवन का एक सत्य है।

#### : १४ :

# सत्य श्रीर रीति-रिवाज

#### सहज विश्वास

विलकुल छोटे वच्चे का पता नहीं, पर वड़े वच्चे से लेकर वूढ़े तक सब एक खास कमजोरी लिये हैं। यह कमजोरी सत्य को सहन नहीं। यह कमजोरी इतनी फैल गयी है कि सत्य की लाख मेहनत करने पर कम नहीं हो पाती। रिजका नामक एक घास होती है। जानवरों के लिए उसे वोते हैं। उसे एक तरफ से काटें, तो दूसरी तरफ वढ़ने लगती है। यह कमजोरी इसी घास की तरह एक तरफ कटती और दूसरी तरफ उग जाती है। इस कमजोरी का नाम है, सहज-विश्वास। रीति-रिवाज इस सहज विश्वास की सन्तान हैं।

## सत्य और वहम

न कभी सहज-विश्वास ग्रादमी को छोड़ सकेगा ग्रांर न रीति-रिवाज। सत्य की यह कोशिश नहीं कि रीति-रिवाज खतम हों। रीति-रिवाज के वढ़ने से सत्य का कोई नुकसान नहीं। सत्य को धक्का पहुँचता है उस समय, जब रीति-रिवाज को यह कहकर ग्रपनाया जाता है कि ग्रगर ये न किये जायँ, तो कोई ऐसी ग्राफत कुटुम्च या समाज पर ग्रा जायगी, जो हटाये न हट सकेगी। सत्य इस वहम को दूर कर देना चाहता है। वहम श्रॅंघेरा है, सत्य प्रकाश है। दोनों एक जगह नहीं रह सकते। सत्य जीवन में प्रसन्नता लाता है, वहम उस प्रसन्नता का रस चूस लेता है। फिर जो कुछ श्रादमी के हाथ पड़ता है, वह छूँछ होती है। गन्ने की खोई श्रोर वादाम की खल की तरह उस छूँछ में मिठास श्रोर चिकनाई रहती तो है, पर इतनी नहीं जिससे श्रादमी पूरा-पूरा लाभ उठा सके। श्रगर उसे वह खोई श्रोर खल विलकुल न मिली होती, तो कुछ बुरा तो होता, पर इतना बुरा न होता जितना खोई श्रोर खल मिल जाने से होता है। क्योंकि उनके मिलने से उसे मिठास श्रोर चिकनाई का स्वाद श्राता है, तवीयत नहीं भर पाती, तृष्णा जाग उठती है। वह उसे पहले से ज्यादा दुवला कर देती है। सत्य की कोशिश है, उसके सहज-विश्वास को ठीक करे श्रोर रीति-रिवाजों की पूरी मिठास श्रोर पूरी चिकनाई श्रादमी को मिलने दे।

जब रीति शुरू होती है, तब उसे 'रीति' नहीं कहा जाता। वह किसी रीति की जगह लेती है, इसलिए रीति कहा जाता है। रीति के माने हैं किसी काम के ढंग को बहुतों का अपना लेना और बहुत दिनों तक अपनाये रखना। जो ढंग ग्राज निकला है, उसे रीति-रिवाज कैसे कहा जा सकता है? नये ढंग को एकदम रीति-रिवाज नाम क्यों दिया जाने लगा? इस सवाल का जवाव सीघा है। संगठित समाज में कोई ढंग कानून के जरिये एक दिन में जारी किया जा सकता है। जिस तरह पहले ग्राम तौर से लम्बे लिफाफे चलते थे, फिर एकदम चौकोर चल पड़े। तब चौकोर लिफाफों के बारे में यह कह देना बेजा नहीं कि ग्राज से

चौकोर लिफाफों का रिवाज हो गया। रीति-रिवाज के माने वदल गये। रीति-रिवाज जिस वक्त गुरू हुए थे, उस वक्त समाज संगठित न था, या था तो इतना संगठित न था कि अपने हुनम से काम करने के किसी ढंग को एकदम वदल सके। होता यह था कि किसीने एक ढंग अपनाया, तो उसे समाज में फैलने में समय लगता था, दिनों में ढंग रीति-रिवाज नाम पाता था।

किसी देश का समाज, श्राजकल कुछ वातों को छोड़, जिनका सरकारी कातून से सम्बन्ध है, किसी वात में सारा-का-सारा एक रीति-रिवाज में वँधा मिलेगा। हर देश का समाज श्रनेक टुकड़ों में वँटा है। चार वर्णों की वात पहले से चली ग्रा रही है, उनमें तो समाज वँटा है ही, पर उन चार में से हरएक चार-चार ग्रीर ग्राठ-ग्राठ में वँटा है। ग्राज जितनी जातियाँ हैं, सबके ग्रलग-ग्रलग रिवाज हैं यानी सबके रहन-सहन के ग्रलग-ग्रलग ढंग हैं। समाजी मामलों को छोड़ दें ग्रीर सिर्फ सरकारी मामलों को लिया जाय, तो उसके भी ढंग सब जगह एक-से नहीं हैं। हर प्रान्त ग्रपने ढंगों के लिए स्वाधीन है। कुछ वातों में एक ही प्रान्त का हरएक जिला ग्रपने ढंग के लिए स्वाधीन है। यही हाल तहसील-तालुकों, परगनों ग्रीर गाँवों का है।

## रीति-रिवाजों की भिन्नता

समाजी श्रीर सरकारी कामों का श्रलग-श्रलग ढंग यह सावित करता है कि हर जगह के रीति-रिवाज श्रलग-श्रलग हैं। श्रलग-श्रलग यों हैं कि हर जगह का हवा-पानी श्रलग-श्रलग है। एक ढंग दूसरी जगह ठीक नहीं वैठ सकता। राजस्थान में, जहाँ रेत के टीले हैं ग्रीर दूर-दूर तक रेत फैली है, काम करने के जो ढंग सोचे जायँगे, वे पंजाव में नहीं सोचे जा सकते। पंजाव में पाँच वड़ी ग्रीर कई छोटी निदयाँ बहती हैं। यही हाल उत्तर प्रदेश का है। वहाँ भी निदयों की कमी नहीं। पंजाव ग्रौर उत्तर प्रदेश में काम करने के ढंग विलकुल ग्रलग रहेंगे, राजस्थान के ढंग विलकुल ग्रलग रहेंगे। ग्रव राजस्थान के ढंग पंजाव या उत्तर प्रदेश के ढंगों से मेल न खायें श्रीर राजस्थान के श्रादमी श्रपने सहज-विश्वास को लेकर पंजाव और उत्तर प्रदेशवालों से फगड़ बैठें या समभें कि वह उनके विपरीत ढंगों को श्रपनाकर कोई श्रनीति कर रहे हैं, तो यह कितनी बुरी वात होगी? पर हो रहा है ऐसा ही। सत्य इस ग्रापसी भगड़े को मिटा देना चाहता है। उसे भगड़ा मिटाने का नुस्ला बड़ा ग्रच्छा ग्राता है, पर लोग उस नुस्खे के इस्तेमाल में वड़ी गड़वड़ी कर जाते हैं। नुस्खा उस कागज के परचे को कहा जाता है, जिस पर कोई हकीम कुछ दवाई लिख देता है कि वह दवा किस तरह तैयार की जायगी और किस तरह काम में लायी जायगी। अब अगर कोई ग्रादमी नुस्खे के कागज को ही दवा समभकर खाले, तो इसमें हकीम का क्या दोष ? ठीक इसी तरह सत्य एक रिवाज के ढंग को वदलता है ग्रीर उसकी ग्रसलियत समभा देता है, पर लोग उसी ढंग को ग्रपना लेते हैं ग्रीर ग्रपने सहज-विश्वास को उसके साथ नत्थी कर देते हैं। वही ढंग नया होने पर पुराने ढंग की तरह मिठास ग्रीर चिकनाई खो बैठता है।

## रीति-रिवाजों की श्रमलियत

सत्य इस वात पर जोर नहीं देता कि रीति-रिवाज वदल डालो। उसका जोर इस वात पर है कि रीति-रिवाज की अति- ित्वाज की ग्रस- ित्यत जान लो। यह ठीक है, जैसे ही आदमी को किसी रिवाज की असिलयत का पता चला, वैसे ही वह उसे छोड़ वैठेगा। क्योंकि वहुत कम रिवाज ऐसे हैं, जिनकी असिलयत आज कायम रह गयी है। उदाहरण के लिए अगर कोई रिवाज उस वक्त बना था, जिस वक्त हमारे देश में रेल न थी, तो वह रिवाज आज कैसे रह सकेगा, अगर उसकी असिलयत को लोग समक जायें? सत्य जवरदस्ती नहीं करता। सत्य वल देता है, जगाता है, मस्तक को विचार की आजादी देता है, ज्ञान को साफ करता है और सच्चा ढंग सोचने, उस पर अमल करने की हिम्मत देता है।

सारे रीति-रिवाज जन्म, विवाह और मौत के चारों तरफ घूमते हैं। अगर इन तीनों को ठीक-ठीक समक्ष लिया जाय, तो रीति-रिवाजों के पीछे रहनेवाले जिस सहज-विश्वास ने मिथ्या और अन्व-विश्वास का रूप ले लिया है, वह ठीक हो जाय। फिर रीति-रिवाज, जो आदमी पर सवारी गाँठे है, आदमी की सवारी में आ जायें और जीवन-यात्रा में गति और प्रसन्नता आ जाय।

#### जन्म की रीति

जन्म इससे ज्यादा कुछ नहीं कि वह ग्रादमी, जो ग्रभी तक वीज की तरह जमीन के ग्रन्दर से वाहर निकलने के लिए जोर

लगा रहा था, ग्रंकुर के रूप में वाहर निकल ग्राया। पेड़ का जमीन से रिक्ता वना रहता है। यानी उसकी जड़ ग्रंकुर निकलने के वाद से बड़े होने तक जमीन के अन्दर रहती है। आदमी के मामले में ऐसा नहीं होता। श्रादमी या उसी जैसे प्राग्री श्रपनी मां से एकदम सम्वन्ध छोड़ देते हैं, पर उन्हें भी ग्रागे बढ़ने के लिए, भोजन पाने की खातिर माँ से सम्वन्य जोड़ना पड़ता है। इसलिए किसी ग्रंश में ग्रादमी पेड़ से मिलता है। वहुत पेड़ ऐसे हैं, जो ग्रपने फूल ग्रीर फल गिरा देते हैं, पर उनके फल-फूल गिराने को जन्म नाम नहीं दिया जाता, क्योंकि वे गिरकर वढ़ते नहीं । पेड़ के अंकुर को 'जन्म' नाम दिया जाता है, क्योंकि वह बढ़ता है। पेड़ों से लेकर ग्रादमी तक सबके जन्मों पर नजर डाली जाय, तो मालूम होगा कि प्रकृति ने उनकी कोमलता को ध्यान में रखकर उन्हें वचाये रखने के लिए काफी प्रवन्ध किया है। वाहरी ग्राफतों से वचाने के लिए सब प्रारिएयों में ऐसी भावना पैदा कर दी है, जिसकी वजह से वह उन कोमल देहघारियों को कम-से-कम सताने की सोचते हैं। सत्य चाहता है, प्रकृति के उन कोमल देहवारियों की रक्षा करने में मदद की जाय और ग्रादमी इस वारे में ग्रपने सहज-विश्वास को मैला न होने दे। जन्म के कोमलपन को ध्यान में रखकर जो कुछ किया जाय, ठीक है ग्रीर जो किया जायगा, वह सत्य होगा।

## विवाह की रीति

विवाह इसके सिवा कुछ नहीं कि प्राणी के अन्दर जो एक विशेषता है कि वह अपने पीछे अपने जैसे प्राणी छोड़ जाता है,

उसे वनाये रखे; सृष्टि-रचना को सुख से चलने में प्रकृति की मदद करे। विवाह ऐसी रस्म है, जो ग्रादमी की ग्रपनी सुभ है, क्योंकि ग्रीर प्राणियों में विवाह जैसी रस्म नहीं पायी जाती। ग्रादमी पशुग्रों को पालता है ग्रौर जो पशु पूरी तरह श्राजाद नहीं हैं, उनके गर्भाधान का प्रवन्य करता है। उस गर्भाधान को 'विवाह' नाम दिया जा सकता है। वैदिक काल के शुरू-शुरू में या मानव-समाज के वचपन में 'विवाह' नाम की कोई चीज न थी। विवाह का सम्वन्घ गुलामी से है। विवाह ग्रादमी की दासता की निशानी है, ग्रादमी के पतन का चिन्ह है। जैसे-जैसे श्रादमी समाज के वन्धनों में ज्यादा-ज्यादा जकड़ता गया, वैसे-वैसे विवाह के कायदे सख्त होते गये ग्रीर ग्रादमी का वासना पर से काबू हटता गया। श्राज भी जिन्हें जंगली जाति के नाम से पुकारा जाता है, वे वासना के लिहाज से शहरी जातियों से वहुत ग्रच्छे हैं। मनुष्य-समाज ग्रपनी ग्राजादी खोकर जव सामाजिक वन्धन में फँसा, तब भी वह इतना आजाद था कि उसे किसी तरह के विवाह की जरूरत न थी, उसकी वासनाएँ काबू में थीं, पर समाज के साथ रहकर खाने-पीने का सुभीता हो जाने से वह अपनी वासना का संतुलन खो बैठा।

समाज को उसके वन्धन सख्त करने पड़े। सबसे पहले समाज ने ग्रादमी को वाँघने के लिए उससे यह ग्राजादी छीनी कि वह गर्भाधान के मामले में पूरा स्वाधीन न होगा। ग्राज के पालतू पशु भी कहाँ ग्राजाद हैं? गर्भाधान का रिवाज वड़कर विवाह नाम ले वैठा। यह है विवाह की ग्रसंलियत। गर्भाधान नामी विवाह ग्राज 'सुहागरात' के नाम से मीलूद है। गर्भाधान के उस वक्त के रिवाज, जब उसका, 'संस्कार' नाम था, कभी के नष्ट हो गये। सुहागरात की रीतियाँ ग्रव वे नहीं रहीं। सुहागरात खतम हो रही है। यह खतम हुई कि गर्भाधान नामी विवाह एकदम खतम। गर्भाधान-संस्कार उन दिनों ज्यादा जोर पकड़ गया था, जब दो-दो, तीन-तीन वरस के लड़के-लड़कियों की शादी चल पड़ी थी। उस वक्त इसकी जरूरत थी। ग्रचरज नहीं, सौ-दो सौ, पाँच-सौ वरस में, ग्रगर मनुष्य-समाज इतना समभदार हो जाय कि वह ग्रपनी वासनाग्रों पर काबू रख सके ग्रौर इतना ग्राजाद हो जाय कि वह दुनिया-भर से ग्रपना नाता जोड़ ले ग्रौर मेल-मुहन्वत से रहने लगे, तो विवाह की रस्म खतम हो जाय।

हमारा खयाल है, मनुष्य-समाज जिस जंगलीपन से निकलकर श्राज की सभ्यता तक पहुँचा है, एक दिन पूरा सभ्य होक र उसी जंगलीपन को श्रपना लेगा, जहाँ से वह चला था। यह एक श्रलग विषय है, पर इतना साफ कर देना जरूरी है कि मनुष्य जव फिर जंगली वनेगा, तव वह जंगली न होगा, वहुत संस्कृत श्रीर सभ्य होगा, उसका श्रात्मा मँ सकर साफ हो चुका होगा। वह जिस जंगलीपन को मूर्खतावश श्रपनाये था, नुकसान कर रहा था, श्रागे वढ़ने से रुका था, श्रव उसी जंगलीपन को सोच-समस्कर श्रपनायेगा श्रीर मेल-मोहव्वत के साथ दूसरे चक्र की तैयारी करेगा। उस चक्र की श्रगली मंजिलें क्या होंगी, उनके वारे में कुछ कहना वेकार है। हमारे काम की इतनी वात है कि विवाह की असलियत सिर्फ इतनी है कि मनुष्य जैसा प्राग्री अपने पीछे, अपने जैसे और अपने से उन्नत प्राग्री छोड़ सके। वस, इतनी वात को ध्यान में रखकर हमें विवाह करने के ढंग अपनाने चाहिए।

#### मौत की रीति

मौत का मतलव है, शरीर का वेकार हो जाना। मनुष्य-समाज जब बालक था, तब किसीके मर जाने पर न रोता था, न उस मरे श्रादमी के बारे में कुछ सोचता था। वंदर में श्रपने छोटे बच्चे के लिए मोह है, मादा श्रपने मरे बच्चे के खल्लड़ को छह-छह महीने गले से लगाये फिरती है, पर बड़े बन्दरों की मौत हो जाने पर बन्दर-समाज मरे बन्दर के लिए न रोता है, न कुछ श्रीर करने की सोचता है। कई किताबों में हमने पढ़ा है कि कहीं-कहीं कुछ खास तरह के बन्दर किसीके मर जाने का शोक मानते हैं। हो सकता है, यह बात ठीक हो, पर शोक मनानेवाले बन्दर उस मरे बन्दर के बारे में श्रीर ज्यादा नहीं सोच सकते।

मनुष्य-समाज में मुर्दों को दफन करने, जलाने का रिवाज वहुत पीछे चला। कुछ रिवाज ऐसे हैं, जो पहले थे, पीछे वन्द हो गये, फिर चल पड़े, फिर वन्द हो गये। कुछ रिवाज ऐसे हैं जो कहीं-कहीं वन्द हो गये, कहीं-कहीं जारी हैं। वे रिवाज ये हैं: मुर्दों को वहा देना, मुर्दों को जलाकर वहा देना, मुर्दों को जानवरों को खिला देना। वहा देने का रिवाज जलाने ग्रीर दफन करने के पहले का है। इसे ग्रादमी ने प्रकृति से सीखा।

डूवने पर ग्रादमी मरकर ऊपर तैरने लगता था। उसे जानवर खा जाते थे। वहा देने का रिवाज, मुर्दे के प्रति मोह होने से, जँचा नहीं। उसे दफन करने ग्रीर जलाने का रिवाज ग्रपना लिया गया । जलाने के रिवाज के वाद ग्रीर नये तजर्वे हुए । उन तजर्वी के वल पर उसने गर्भवती ग्रीरतों, जहर खाये हुए,साँप के काटे को, जलाने की जगह, वहाने का रिवाज गुरू किया। जानवरों को खिलाने का रिवाज पारसियों को छोड़ ग्रीर कहीं नहीं रह गया। उनमें यह रिवाज किन मनोभावों को लेकर मीजूद है, उन्हें हम यहाँ नहीं लिखना चाहते । यहाँ सिर्फ इतना कहना चाहते हैं कि मरने के वाद ग्रादमी का जिस्म मिट्टी हो जाता है, उस जिस्म में भ्रौर मिट्टी में कोई भ्रन्तर नहीं करना चाहिए। यह ग्रन्तर रहेगा ही कि ग्रादमी के देह की मिट्टी सड़ने लगती है, त्रादमियों में वीमारी पैदा करती है, पर यह वात तो गाय, भैंस, कुत्ते, विल्ली की देह के साथ भी है। ग्रादमी जिस तरह कुत्ते, विल्लियों की देह के लिए सोचता है, वैसे ही श्रादमी की देह के लिए सोचे। सत्य चाहता है, ग्रादमी मुर्दे की देह को मिट्टी समभे। ऐसा समभकर उसे फेंकने या ठिकाने लगाने के तरीके सोचे । उसके साथ वेमतलव की भावना जोड़कर, तरह-तरह की वेतुकी वातें सोचकर, श्रपना मन गँदला न करे। सहज-विश्वास को अन्ध-विश्वास और मिथ्या-विश्वास के जाल में न फँसाये।

# सुल्म प्रस्ति के लिए चक्रच्यूह

"सत्य ग्रीर सुख-दु:ख" ग्रध्याय में कहा जा चुका है, दु:ख कोई बुरी चीज नहीं। दुनिया के कम दुख-दर्द ऐसे हैं, जिनसे वचने की जरूरत है। बहुत तो ग्रादमी को सुख पहुँचाने के लिए हैं। वच्चा पैदा होने से पहले जो दर्द माँ को होता है, वह उन्हीं-को ज्यादा तकलीफ देता है, जो तन्दुरुस्त नहीं होतीं। जिनका जीवन प्राकृतिक होता है, उन्हें वहुत मामूली तकलीफ होती है। इस मामूली ग्रौर प्राकृतिक तकलीफ को लेकर समाज में सैकड़ों वहम खड़े हो गये हैं। जहाँ जरा तकलीफ हुई कि घरवाले दींड़े किसी ग्रोभा के पास ग्रीर लगे उससे भाड़-फूँक की प्रार्थना करने। ग्रगर वह सास की प्यारी हुई, तो वह भी उतारा उतारती है, देवताग्रों के नाम पर उठावा उठाकर रखती है, ग्रगर कहीं वह पहलीटी गर्भवाली हुई, तो न जाने क्या-क्या तूफान खड़े हो जाते हैं । वहुत तकलीफ होने पर दवा-दारू कम चलते हैं, मन्तर-जन्तर ज्यादा । हम जव छोटे थे, तव मोहल्ले में ग्राये दिन भाड़-फूंंक का तमाशा देखने को मिलता था। एक वार एक ग्रीरत को वेहद तक-लीफ थी, उसके लिए एक पण्डित ने यह किया:

एक काँसे की थाली मँगायी, थोड़ा गेरू मँगाया ग्रीर उस गेरू को पानी में घोला। गेरू के रङ्ग से थाली में एक चक्रव्यूह वनाया ग्रीर थाली में थोड़ा पानी डालकर उस ग्रीरत को पिला दिया जिसे दर्द हो रहा था। पीने के कुछ देर बाद दर्द कम हुग्रा ग्रीर थोड़ी देर में उसे वच्चा हो गया।

चक्रव्यूह वनाना हमने सीख लिया। ग्रांर एक-से ज्यादा वार हमें भी इस काम के लिए बुलाया गया ग्रीर सफलता मिली। जब हम कुछ वड़े हुए ग्रीर जन्त्र-मन्त्र से हमारा विश्वास उठ गया, तव हमने उस काम को छोड़ दिया। तीस वरस की उमर में हमें किसी वैद्यक की किताव में यह लिखा मिला कि कांसे की याली में गेरू पिला देने से दर्द कम हो जाता है, वच्चा पैदा होने में ग्रासानी होती है। रहा चक्रव्यूह, उसके वारे में समाज ने यह विश्वास फैला रखा कि उसके देखने से वच्चा पैदा होने में ग्रासानी होती है। यह मिथ्या-विश्वास ग्रीर दवा मिलकर कभी-कभी कुछ काम कर जाते हैं, कभी-कभी विलकुल नहीं।

चक्रव्यूह के मिथ्या-विश्वास से समाज को यह नुकसान हुग्रा कि गेरू, जो दवा थी, उसकी तरफ से लोगों की नजर हटकर चक्र-व्यूह की तरफ चली गयी ग्रौर गेरू की शोध एकदम पीछे पड़ गयी। ग्रगर चक्रव्यूह का मिथ्या-विश्वास न होता, तो गेरू पर वैज्ञानिक खोज-वीन की जाती ग्रौर उस खोज-वीन से, हो सकता है, समाज को नफा पहुँचा होता।

मलेरिया बुखार में पीपल के पत्ते पर गेरू से कोई जन्तर लिखकर बुखार उतारने का रिवाज ग्राज तक मीजूद है। कोई-कोई नासमक्त जन्तर को महत्त्व देकर गेरू की वजाय केशर से जन्तर लिख देते हैं। ग्रगर मिथ्या-विश्वास को महत्त्व न मिला होता, तो इस तरह की भूलें कभी न होतीं।

मिथ्या-विश्वास की मदद से ऐसे मीके पर दाइयाँ खूव फायदा उठाती हैं, ग्रीर ऐसे मौके पर घर के सभी लोग घवराये होते हैं ग्रीर वह सब करने के लिए तैयार होते हैं, जो उन्हें करने के लिए कहा जाय। दाई की, जो बच्चा जनाने के काम की मुखिया होती है, वात कैसे टाली जा सकती है ? उस वक्त जो उतारा, उठावा वताया जाता है, किया जाता है। वच्चा पैदा करने का काम औरतें ही नहीं, सारे पशु करते हैं। पशुग्रों के वच्चे जंगल में होते हैं ग्रीर ग्रादमी के वच्चे से कई गुना तन्दुरुस्त होते हैं। कई जंगली जातियाँ ऐसी हैं, जिनके वच्चे भी जंगल में पैदा होते हैं, वे भी शहरी वच्चों से ज्यादा तन्द्रुस्त होते हैं।

#### जंतर-मंतर का मिथ्या-विश्वास

जन्म के रीति-रिवाजों के वारे में ग्रव ज्यादा कहने की जरूरत नहीं, सिर्फ : इतना समफ लेना काफी है कि हर जंतर-मंतर के पीछे कोई-न-कोई विज्ञान की सचाई छिपी रहती है। जितनी सचाई होती है उतना फायदा होता है, जितना उसके साथ मिथ्या-विश्वास रहता है जतना नुकसान होता है। उस नुकसान से न व्यक्ति वचता है, न समाज।

इसी सिलसिले में एक ग्रापवीती सुनिये।

सन् १६२३ में नागपुर में भंडा-सत्याग्रह जोरों से चल रहा था। स्वयंसेवकों का एक डिपो खुला था। वहाँ किसी स्वयंसेवक को विच्छू ने डंक मार दिया। किसीने कह दिया, 'हम विच्छू का मंत्र जानते हैं।' हमारे पास खवर पहुँची। हम मंत्र नहीं जानते थे, पर स्वयंसेवकों के सरदार होने के नाते हम उनके साथ चल दिये, जो हमें बुलाने ग्राया था। डिपो में पहुँचकर हम विच्छू काटे स्वयंसेवक को उसी तरह भाड़-फूँक करने लगे, जैसे मंत्र-वादी करते हैं। हमने कई वार विच्छू का जहर उतारते मंत्र-वादियों को देखा था। हमें ग्राये ग्रावा मिनट न हुग्रा था कि एक मंत्रवादी ग्रा पहुँचे। जैसे ही लोगों ने उनके ग्राने की खवर

दी, हमने छुट्टी ली । वह काम उस मंत्रवादी के सिपुर्द कर दिया । जब हम जाने लगे, तो वे वोले, 'ग्राप ठीक कर रहे थे, मेरी क्या जरूरत थी?' हम हैरान हुए, क्योंकि हम मंत्र जानते न थे। हमने भाड़-फूंक का काम उनके सिपूर्द किया ग्रीर स्वयं खड़े-खड़े देखने लगे। थोड़ी देर में जहर उतर गया। हम उस मंत्रवादी के साथ-साथ बाहर ग्राये ग्रौर वोले, 'हम मंत्र नहीं जानते, ग्रापने कैसे कहा ठीक कर रहे थे?' वे भले ग्रादमी थे। वोले, 'मंत्र कुछ नहीं होता; वात यह है कि जव विच्छू डंक मारता है, तव उसके जहर चढ़ने को, कोई दवा भले रोक सके, मंत्र हरगिज नहीं रोक सकता, न मंत्र जहर उतार सकता है। जहर को पूरी तरह चढ़ने देना ही होगा। मंत्रवादी ग्रपनी इस कमजोरी से वचने के लिए किसी-न-किसी तरह इतनी देर जरूर कर देते हैं कि वह उस वक्त पहुँचें जव जहर पूरा चढ़ चुका हो। उनके लिए उतारने का काम रह जाता है। उतारने के लिए यह करना पड़ता है कि पहले उस श्रादमी का ध्यान श्रपनी तरफ करना होता है, जिसे विच्छू ने काटा हो । फिर ग्रपने मन में कुछ गुनगुनाकर उससे कहना होता है, जिस जगह काटा है। उसे दिल के खिलाफ भटका दो, जिससे दिल का खून जोर मारकर नीचे की तरफ़ जाने की जल्दी करे। उस फटके का नतीजा होता है कि तकलीफ या जहर नीचे उतरना शुरू हो जाता है। दस-पाँच बार इस तरह करने से तकलीफ उस जगह तक ग्रा जाती है, जहाँ विच्छू ने डक मारा होता है। उस तकलीफ को भिटाने के लिए मंत्रवादी गरम नमक

से संकने की सलाह दे देता है। 'वताइये मंत्र क्या रहा?'
मंत्रवादी जहर न उतारता, तो जहर ग्रपने-ग्राप नीचे उतरता।
हाँ, थोड़ी देर लगती। प्रकृति ने हर प्राणी में दिल के खिलाफ
हाथ-पाँव भटकने का प्रवंध कर रखा है। ग्राप देख सकते हैं,
जैसे ही वच्चे के हाथ में कोई वर्र डंक मार दे, वैसे ही वह वच्चा
एकदम हाथ भटकना गुरू कर देता है। यही है वच्चे का ग्रपना
इलाज ग्राप करना।

मंत्रवादी पैसे कमाने की खातिर लोगों में मन्त्र-श्रद्धा जगाते रहते हैं, उसकी वैज्ञानिकता को छिपाये रखते हैं। यह वात छिपी नहीं कि हर मन्त्रवादी जब किसीको मन्त्र सिखाता है, तब उसकी शर्त होती है कि वह उस मन्त्र को किसीको न बताये। इसी सिलसिले में एक और सुन लीजिये।

फीरोजावाद में एक ग्रादमी था। वह हम पर वड़ी श्रद्धा रखता था, हमें गुरु मानता था। एक दिन हम मन्त्रों के खिलाफ वोल रहे थे। वह ग्रादमी मौजूद था। जब हम ग्रपनी कह चुके ग्रीर सब चले गये, वह वड़ी श्रद्धा के साथ वोला, 'महाराज, ग्रापकी वात मैंने सुन ली, पर मैं खुद मंत्र जानता हूँ, उसका चमत्कार मैं ग्रापको दिखा सकता हूँ।' हमने कहा, 'दिखाग्रो, उसने मन्त्र पढ़ना गुरू किया ग्रीर ग्रपनी जाँघ में एक जगह सुई चुभा दी।' वोला, 'देखिये, यह है कि नहीं मन्त्र का चमत्कार, मेरे खून नहीं निकला।' हम वोले, 'क्या तुम हमारे कहने से मन्त्र पढ़े विना सुई चुभा सकते हो ?' वह वोला 'जरूर।' हमने कहा, 'चुभाग्रो'। उसने वैसा ही किया ग्रीर खून नहीं निकला। यह तमाशा देखकर वह एकदम भिवत में ग्राकर हमारे पाँव पर गिर पड़ा, वोला, 'ठीक है, मन्त्र कुछ नहीं होते' ग्रौर पूछ वैठा, 'फिर यह मामला क्या है ? खून क्यों नहीं निकलता ?' हमने उसे वताया, 'जब तुम ग्रपने हाथ से खाल को खींच लेते हो, तो खून की नसें नीचे रह जाती हैं ग्रौर सुई उस जगह जाती है जहाँ नसें नहीं हैं, फिर खून कहाँ से निकलेगा ?'

यह वात हमने इसलिए लिख दी कि रीति-रिवाज ग्रीर मन्त्र के पीछे श्रद्धा के घटाटोप में विज्ञान का ग्रंश छिप जाता है ग्रीर इससे बहुत नुकसान होता है। इससे वचना हरएक का कृाम है।

विवाह की रस्में इसी तरह की हैं। किसी रस्म में कोई जरूरत छिपी है, किसीमें कोई वैज्ञानिकता और कुछ ऐसी रस्में हैं, जिनमें दोनों में से एक नहीं। ऐसी रस्में लोगों ने पैसा कमाने के लिए गढ़ ली हैं। आदमी के विश्वास की कमजोरी से आदमी खूव फायदा उठा रहा है।

# 'आरते' की रस्म जरूरत के लिए

विवाह में 'ग्रारते' की रस्म को ले लीजिये। यह रस्म मंदिरों में खूव चलती है। इसमें होता यह है कि थाली में चीजों के साथ-साथ एक जलता दीपक रहता है। उसको थाली समेत दो तीन वार उस ग्रादमी के दायें-वायें करते हैं, जिसका ग्रारता करना होता है। इस रस्म की तह में जरूरत छिपी है। ग्रव यह रस्म विलकुल वेकार है। जरूरत यह है कि जितने पुराने मंदिर हैं, उनकी वेदियाँ ऐसी जगह वनी हैं, जहाँ करीव-करीव चौवीसों घंटे ग्रॅंबेरा रहता है। पुजारी दिये की रोशनी में मूर्ति का प्रृंगार करता है। उसे कभी-कभी ग्रपने प्रृंगार को जाँचने के लिए दीपक को ग्राँख के सामने से हटाकर दायें-वायें करना होता है। ऐसा किये वगैर वह मूर्ति के दोनों तरफ के प्रृंगार की पूरी जाँच नहीं कर सकता। विवाह-शादियों में ग्राम तौर से रस्में रात को होती हैं ग्रीर दूल्हे-दुलहन को सजाने का काम भी उसी वक्त होता है। ग्रारते की रस्म हमेशा सजाने के वाद की जाती है। जव यह रस्म चली थी, तव वह रस्म न थी, कलाकार की जरूरत थी। ग्रव वह रस्म है ग्रीर सिवा नुकसान के उससे कोई फायदा नहीं। ग्रव दिन में खुले मैदान में ग्रारता किया जाता है ग्रीर उसी तरह दिया जलाकर किया जाता है, जिस तरह ग्रॅंबेरे में या रात में।

रस्मों के सिलसिले का सिलसिला ऐसा है कि उसके लिए एक ग्रलग किताब की जरूरत है, पर दो-एक रस्मों का जिक्र करके हम पढ़नेवालों में ऐसी भावना जगा देना चाहते हैं कि वे ग्रपने-ग्राप ही रस्मों की परख कर सकें।

## 'धूरा पूजने' का रिवाज

विवाह के अवसर पर कूड़ी यानी घूरा पूजने का रिवाज है। वह भी एक जरूरत है। गाँव में शायद आज भी उसकी जरूरत हो। शहरों में वह विलकुल वेकार चीज है। कूड़ी या घूरा उस जगह का नाम है, जहां मुहल्लेभर का कूड़ा जमा रहता है। उसे पूजने का रिवाज है। पूजा के और काम छोड़कर असली काम यह होता है कि वहां एक जलता दिया रखा जाता है। यह दिया ही असली जरूरत है। यह दसलिए होता है कि रात

के वक्त वाहर से आये वराती यह जान लें कि यहाँ कूड़ा पड़ा है और भूल से अपने पाँव उस पर न रखें। दिन में दिये की जरूरत नहीं। पर अगर घूरे की पूजा दिन में हुई, तब भी दिया रखा जायगा। दिया रखना कभी जरूरी और अक्लमंदी का काम था, आज गैरजरूरी और वेवकूफी का काम है।

# विवाह में श्रृङ्गार की रस्म

यों तो श्रृंगार रोज ही सब करते हैं, पर विवाह के अवसर पर वह रस्म के तौर पर किया जाता है। आजकल वह इतना भद्दा मालूम होता है कि शहर में रहनेवालों की ग्रांखें उसे देखना पसन्द नहीं करतीं। जिस तरह मेंहदी रचाना, काजल लगाना, रोली से चेहरे को रँगना, हाथ में कलावा वाँघना ग्रादि कुछ रस्में जरूरत से हैं, कुछ में वैज्ञानिकता छिपी है, कुछ लोभ की ईजाद हैं, कुछ में यह तीनों मौजूद हैं। काजल को ले लीजिये। उसमें वैज्ञानिकता तो यह है कि वह दवा है, आँखों को रोशनी देता है। उसके लगाने की वात वैद्यक के हर ग्रन्थ में मिल सकती है। जरूरत यह है कि वह प्रुंगार का अंग वन गया है और काली आँखें खूवसूरती को और बढ़ा देती हैं। यह दूसरी बात है कि काजल वेबकूफी से लगाकर खूबसूरती को बद्धने की जगह घटा दिया जाय। काजल के वजाय सुरमा ज्यादा ठीक रहेगा, क्योंकि वह सलाई से लगाया जाती है। वह उतनी ही लगता है, जितना जरूरी होता है। लोभ की ईजाद यों है कि काजल लगानेवाली को कुछ पैसे मिलते हैं। इसलिए वह दिन में लगाया जाने लगा। जरूरत के लिए दवा के तौर पर काजल रात को लगाया जाता

है। काजल लगाकर सो जाना जरूरी है, तभी वह फायदा करता है। पर रस्म से ग्रीर फायदे से क्या लेना-देना ? रस्म के माने हैं ऐसे काम, जहाँ ग्रक्ल को दखल न हो। ग्रव रह गया इस रस्म का घोखा। काली ग्रांखें तन्दुरुस्ती की पहचान हैं। पूरे तन्दुरुस्त ग्रादमी की ग्रांखें कम काली होंगी। वीमार ग्रादमी की ग्रांखें ग्रपना कालापन एकदम खो वैठती हैं। काजल इसलिए भी लगाया जाता है कि लोगों को घोखा दिया जा सके भ्रीर वीमार श्रांखों को तन्दुरुस्त श्रांखों का रूप दिया जा सके। इस सिलसिले में पढ़नेवालों के मन में कुछ ग्रीर सवाल उठ सकते हैं। पर अगर वे जरा कोशिश करें, तो अपने सवाल का जवाव खुद सोच सकते हैं। उदाहरए। के लिए क्छ आँखें नीली होती हैं, कुछ पीली । पर हिन्दुस्तान में वैसी आँखें वहुत कम मिलती हैं। उन ग्रांंखों के पलक काले होते हैं। वह भी काली ग्रच्छी लगती हैं। हिन्दुस्तानी ग्राँखों को वैसी ग्रादत है, इसलिए छन श्रांखों को काजल सुन्दर वना देता है।

## समभदारों पर नासमभों का शासन

रीति-रिवाजों ने हमारी अनल को एकदम पीछे डाल दिया है। कुछ नासमक आदिमयों के हाथों में ऐसी सत्ता दे दी गयी है कि वे समक्तदारों पर शासन करने लगते हैं। रीति-रिवाज के मामले में विरादरी के अपढ़ और मूर्ख लोग, रस्मों की याददाश्त के वल पर किसी पर रोव जमा वैठते हैं। कभी-कभी इन रस्मों को लेकर तरह-तरह के कगड़े खड़े हो जाते हैं। कई रस्में ऐसी हैं, जो

घर-घर में ग्रलग-ग्रलग तरह मनायी जाती हैं। उस वक्त तो वड़ी मुश्किल हो जाती है, जब किसी विवाह में एक ही रस्म लड़के- वाले के यहाँ एक तरह मनायी जाती हो ग्रौर लड़कीवाले के यहाँ दूसरी तरह। दोनों में जो जोरदार होता है, उसीकी रस्म चलती है। ग्रगर दोनों बरावर के हुए, तो या तो दोनों रस्में होती हैं या दोनों की कोई खिचड़ी तैयार कर ली जाती है।

# रसमें हम पर हावी न हों

विवाह की अनिगनत रस्में हैं। उन सव पर यहाँ लिखा नहीं जा सकता। इतना ही याद रखना काफी है कि रस्में हमारे उपर अधिकार न जमा पायें, उन पर हमारा अधिकार रहे। वे जरूरत के लिहाज से बदलती रहें। इसमें शक नहीं कि रस्में बदलती रहती हैं, बदलती रही हैं और बदलती रहेंगी। पर क्या ही अच्छा हो, अगर उन रस्मों को हम सोच-सममकर बदलें। सोच-सममकर बदलें। सोच-सममकर बदलें। सोच-सममकर बदलें। सोच-सममकर बदलें। अपने-आप बदली रस्में हमारे काम में अड़चन बनी रहेंगी।

# दाह-क्रिया की रस्में

सन् १६०३ का जिक है। हमारे एक दोस्त के बूढ़े वाप की मीत हुई। उसका वाप इतना बूढ़ा था कि शोक मनाने की जरूरत न थी। उघर हमारा दोस्त रस्मों के मामले में इतना उदार था कि किसी भी रस्म को ग्रपनाने के लिए तैयार। ये दो बातें मिलकर एक ग्रजव रूप ने वैठीं। मुदें की रथी वनाने से जलाने तक कदम-कदम पर रस्मों का सवाल उठा। हमारे दोस्त के वाप की रथी ने जाने में जितने ग्रादमी शामिल थे, उनमें एक भी

ऐसा न था, जिसकी उमर ३०-३५ से ऊपर हो। हमारे दोस्त के घर में कोई बुढ़िया न थी। कोई ऐसा न था, जो किसी खास रसम पर जोर देता। नतीजा यह हुआ कि जो रसम ज़िसने वतायी, हमारे दोस्त ने की ग्रौर करीव-करीव सव निभ गयी। भ्रव मुर्दे को चिता पर रखने की घड़ी भ्रायी। यहाँ मुक्किल पड़ी। हमने कहा, 'हमारे यहाँ मुर्दे को चिता पर पट लिटाया जाता है यानी पेट के बल।' कुछ लोग बोले, 'नहीं, चित लिटाने की रस्म है। यह सुनकर हमारा दोस्त हँस पड़ा ग्रीर वोला, 'भाई, श्रव मेरे वाप तुम सवके वाप, तुम जैसा चाहो करो।' रस्म पर चल पड़ी बहस। हमारी दलील थी कि पेट के वल लिटाने में बुद्धिमानी है, सूभ-बूभ है, वैज्ञानिकता है ग्रीर है शिष्टता; चित लिटाने में हमें कोई ऐसी वात नजर नहीं त्राती। पेट के चल लिटाने में सूभ-वूम यह है कि पेट की तरफ का हिस्सा मुलायम है, जल्दी ग्राग पकड़ेगा ग्रीर श्रादमी का चेहरा, जो ग्राग में जलने से बुरा रूप लेगा, लोगों की नजरों में न या सकेगा। शिष्टता यह है कि वह ग्रंग सब नीचे रहते हैं, जिन्हें श्राम तीर से छिपाये रखने का रिवाज है। वैज्ञानिकता यह है कि मुर्दा ग्राग लगने पर जो ऊपर की तरफ उठता है, ग्रव नीचे की तरफ जायगा; ग्रीर चिता के विगड़ने का डर न रहेगा ग्रीर टांगों का घुटनों से नीचे का भाग ऊपर को न उठेगा ग्रीर वह ग्रपने-ग्राप भ्राग में जा पड़ेगा। इसलिए यह रस्म ठीक है, पर इस रस्म-वाले हम ग्रकेले थे ग्रौर वाकी सव थे चित लिटाने की रस्म-वाले । हम हार गये । ग्राखिर यह तय हुग्रा कि पहले पट लिटाया जाय ग्रीर फिर चित । वैसा ही किया गया।

# मुर्दों के उपयोग की वात

मुर्दे की मिट्टी को ठिकाने लगाने की रस्में अनिगत हैं। नयी-नयी रस्में भी चल पड़ी हैं। कलकत्ता में मुर्दे को इंजन में जलाने की रस्म है। कहीं-कहीं विजली से जलाने की रस्म है, पर अभी तक मुर्दे से इतना मोह नहीं छूटा कि उसका कुछ उपयोग कर लिया जाय, जिस तरह गाय-भैंसों का। इस मामले में सुधार होने में सैकड़ों वरस लगेंगे। जो सुधार अब तक हुए हैं, उन सबमें जरूरत के लिहाज से लोग काफी आगे वढ़े हैं, पर मोह के लिहाज से वहीं-के-वहीं हैं। सुना था, लड़ाई के मौके पर किसी डॉक्टर को मुर्दों के उपयोग की वात सुभी थी, पर उसे वैसा करने से रोक दिया गया। उसे यह डर दिखाया गया कि अगर ऐसा किया गया, तो इस उपयोग के खातिर आदमी ऐसे ही मारे जाने लगेंगे, जैसे पशु-पक्षी। मुर्दों का उपयोग न हो सका।

# कपाल-क्रिया की रस्म वैज्ञानिक

इसी सिलसिले में 'कपाल-क्रिया' नामक रस्म का थोड़ा जिक्र कर देना ठीक होगा। इस रस्म में यह होता है कि जब मुर्दा काफी जल चुका होता है, तब बाँस से उसकी खोपड़ी फोड़ देते हैं। इसकी तह में सूम-बूम है, जरूरत भी है। उस बक्त इसकी बहुत ज्यादा जरूरत है, जब चिता के ग्रासपास ग्रीरतें या बच्चे हों। गर्भवती ग्रीरत को जलाने का रिवाज नहीं है। वजह यह है कि कभी-कभी गर्मी पाकर पेट से बच्चा निकलकर चिता से दूर जा पड़ता है। उससे लोगों के घबरा जाने का डर रहता है। ठीक इसी तरह ग्रादमी की खोपड़ी के ग्रंदर का मेजा कभी-कभी इतना गर्म हो जाता है कि वह खोपड़ी को ग्रावाज के साथ तोड़ता है ग्रीर उसके दुकड़ों को दूर तक फेंकता है, इसलिए खोपड़ी को जान-बूभकर तोड़ दिया जाता है, ताकि भाप निकलने के लिए रास्ता वन जाय ग्रीर खोपड़ी के इधर-उघर छिटकने का डर न रहे। इसीका नाम 'कपाल-क्रिया' है।

#### रीति-रिवाज श्रंध-विश्वास न वर्ने

रस्म-रिवाजों को अपनी सीमा से वाहर नहीं जाने देना चाहिए। होना तो यह चाहिए कि समय-समय पर रस्म-रिवाजों की जाँच-पड़ताल होती रहे, उनमें कमी-बेशी होती रहे। वे कभी ऐसे न वन पायें, जो हमारे मन पर अन्व-विश्वास वनकर जमे रहें।

. . .

State of the first first of the second of the

# अनुभव, सत्य, ईश्वर सब एक

# सभ्यता श्रीर संस्कृति परिस्थितियों की देन

बहुत दिन की बात नहीं, जब एक पत्र में पढ़ा था, दो लड़िक्यां भेड़ियों के भुण्ड से पायी गयीं। उनका रहन-सहन भेड़ियों जैसा था। वे मादरजाद नंगा रहना पसन्द करती थीं। लड़की होते हुए दस-दस यादमी उन्हें काबू में न ला सकते थे। ग्रादमी की सूरत से भागती थीं। कुत्तों के साथ खेलना पसन्द करती थीं। वरसों में, वड़ी मेहनत से उन्हें ग्रादमी की तरह वैठना, हाँ-ना कहना सिखाया गया था। वे बीस-वीस वरस की होकर मर गयीं।

इन लड़िक्यों के जीवन से वहुत वड़ा सवक लिया जा सकता है। जो लोग यह शोर मचाते हैं कि श्रादमी के श्रन्दर श्रलग कोई ऐसी ताकत है, जो उसे बुराई से रोकती है, उनके पास इन लड़िक्यों के वारे में कहने के लिए क्या है? इन लड़िक्यों को क्यों नहीं उस ताकत ने बुराई से बचाया? क्यों वे श्रादमियों की तरह श्रादमी की हर श्रादत से श्रलग रहीं? क्या यह इस वात का सबूत नहीं है कि श्रादमी की सारी सभ्यता श्रीर संस्कृति परिस्थितियों की देन है।

सवाल का यह जवाव देकर जवाव से वचना है कि 'ईश्वर

ने उनके वारे में ऐसा ही चाहा था, या कि उन्होंने पहले जन्म में कर्म ही ऐसे किये थे।' इस जवाब से विलकुल अपढ़ लोगों की तसल्ली हो सकती है, पढ़े-लिखे और समभदारों की नहीं।

कोशिश करने पर भी हम यह नहीं समक्त पाये कि पढ़े-लिखे समक्तार ग्रादमी इस जवाब से कि "ईश्वर ने ऐसा चाहा" या "भाग्य में ऐसा लिखा था" किस तरह ग्रपना मन समका लेते हैं। जहाँ वृद्धि की पहुँच न हो, वहाँ ऐसा मान लिया जाय, तो बुरी बात नहीं। पर जहाँ बुद्धि की राह खुली है, वहाँ ऐसा मान वैठना ठीक नहीं।

## श्रादमी ही अपना वनाने-विगाइनेवाला

गौर से देखने पर फौरन पता चल सकता है कि ग्रादमी वुराई से किस तरह बचता है ग्रीर क्यों भलाई की तरफ दीड़ता है। हमारा मामूली ग्रनुभव बतायेगा कि वुराई-भलाई में भेद करने के लिए ग्रादमी को किसी दूसरे की जरूरत नहीं। यह ठीक है कि दूसरों से उसे फायदा पहुँचता है, पर वह भी उसके ग्रपने ग्रनुभव के बल पर। यह किसने नहीं देखा कि दुनिया में नेकी के लिए मशहूर ग्रादमी किसी-किसीको नेक बनाने की जगह बुरा बना देते हैं। क्या यह इस बात का सबूत नहीं कि ग्रादमी ग्रपना बनानेवाला ग्रीर ग्रपना बिगाड़नेवाला ग्राप ही है शादमी ग्रसल में पैदाइश से किन्हीं बातों में बहुत कमजोर है ग्रीर यह कमजोरी भी प्रकृति से उसे भले के लिए मिली है।

कमजोरी आगे वढ़ने के लिए

वीज का ग्रंकुर वहुत मुलायम होता है। हम ग्रांखवाले जल्दवाजी में उस अंकुर को भले ही कमजोर कह डालें; लेकिन जमीन में दवा पड़ा वीज अपने वढ़ने की कोशिश उस कमजोर ग्रंकुर के विना नहीं कर सकता। जहाँ वीज मौजूद है, वहाँ वल लगाने की जरूरत नहीं। वहाँ रास्ता निकालने की जरूरत है। श्रादमी कमजोरी को बुरा कहता है, पर उससे खूव फायदा उठाता है। सैकड़ों ग्रादिमयों के वीच से ग्रपने वाहुवल से निकल जानेवाला डाकू जेलखाने में इतना सीघा-सादा वन जाता है, मानो उसमें वल ही न हो। जव वह जैलखाने से भागने की सोचता है, तव तो इतना कमजोर दिखाई देने लगता है, मानो वह उठ-वैठ नहीं सकता। वही न उठ-वैठ सकनेवाला डाक्न जेल का ताला तोड़ दीवार पर इस तरह क्रूदकर जा बैठता है कि वंदर देखे, तो दाँतों तले उँगली दवा ले।

किसे नहीं मालूम, जब बच्चा पैदा होता है तब उसकी खोपड़ी के वीच में हड्डी नहीं होती। यह कमजोरी नहीं, यह है प्रकृति का कोपड़ी के लिए वढ़ने का प्रवन्ध । ग्रांख खोलकर देखने पर जीवन से ग्रनेक उदाहरए। खोजकर निकाले जा सकते हैं, जो सावित कर देंगे कि जिसको जो कमजोरी मिली है, वह आगे वढ़ने के लिए है। ग्राम तौर से ग्रादमी की ताकत की एक हद है, पर वे दो लड़कियाँ भेड़ियों के साथ रहकर इंतनी ताकतवर वन गयी थीं, जितना गामा पहलवान डेढ़ सी रुपये रोज का खाना खाकर भी न वन पाया। क्या प्रकृति का यह इन्तजाम इस

वात का सबूत नहीं कि ग्रादमी ग्रपने में हर तरह पूरा है। वह ग्रपना ईश्वर भी है ग्रीर भाग्य भी है। उसका ग्रनुभव उसका ग्रन्तरात्मा है।

## एक अनुभव से अनेक अनुभव

वालक ग्राग में उँगली जलाकर समफ जाता है कि ग्राग में उँगली देना बुरा है, उससे बचना भला। ग्राग से उँगली जला-कर वह ग्रपने ज्ञान की एक खिड़की खोल लेता है, जिसमें एक-साथ ग्रनेक ग्रनुभव चले ग्राते हैं। उँगली जलाकर वह इतना ही समफ लेता कि ग्राग में उँगली देना बुरा है, यह भी समफ लेता है कि माँ ठीक कहती थी कि ग्राग में डालने से उँगली जलेगी ग्रीर तकलीफ होगी। इसलिए उसे माँ पर श्रद्धा हो जाती है ग्रीर माँ की वतायी सारी वातों पर पूरा विश्वास हो जाता है। यही हाल ग्रपने भाई के वारे में होता है। ग्रव सोचिये, ग्रकेले एक ग्रनुभव से कितने ग्रनुभव संग में मिल गये। ग्रगर ऐसा न होता, तो ग्रादमी का वच्चा जानवरों के वच्चे से इतनी जल्दी समफदार न वन पाता।

# श्रनुभव श्रादमी का जीवन-साथी

ग्रनुभव ग्रादमी का ऐसा साथी है, जो उमरभर उसका साथ नहीं छोड़ता। उस ग्रनुभव को ईश्वर या भाग्य नाम दे दिया जाय, तो वह ग्रीरों के लिए भले ही ज्यादा काम का सावित न हो, उसके ग्रपने लिए वह सचमुच, हर तरह सर्वज्ञ ग्रीर सर्व-शिक्तमान् सावित होगा। उसका श्रपना ग्रनुभव एक ऐसी शक्ति है, जिससे वह हूबहू वातें कर सकता है ग्रीर जो ग्रनुभव उसने ग्रौरों से सुने हैं या कितावों से जाने हैं, उन्हें ग्रपने ग्रनुभव की कसीटी पर कसकर ग्रपना सकता है या विलगा सकता है। दूसरों के ग्रनुभव को वह उधार की पूँजी समभता है। उस उधार को वह तभी चुका समभता है, जब वैसे ग्रनुभव खुद कर लेता है।

#### 'संवर' ज्ञान की विशेषता का फल

हम ऊपर कह आये हैं कि एक धनुभव के साथ-साथ वच्चे को ग्रनेक ग्रनुभव संग में मिलते हैं। इसका यह मतलव हुआ कि आदमी के पास ज्ञान की अपनी पूँजी कम और परायी पूँजी वहुत है। परायी पूँजी चुका देने का नाम ही मुक्ति है। परायी पूँजी को ग्रपनी पूँजी समभना ही वन्घ है। परायी पूँजी से श्रपने मन का भाव कम करते रहना, 'निर्जरा' यानी छुटकारा है। पर पूँजी, जो विना माँगे श्रपने-श्राप चली श्राती है, उसीका नाम 'ग्रास्रव' है। कभी-कभी दूसरे के ग्रनुभवों को स्वीकार नहीं करना, फिर वह चाहे कितने ऊँचे दर्जे का क्यों न हो, यही 'संवर' है यानी परायी पूँजी को न लेने की कोशिश। यह काम जरा मुश्किल है। छोटे बच्चे से लेकर वड़ी उम्र के ग्रादमी तक 'संवर' नहीं करते। 'ग्रास्रव' में वेहद ग्रानन्द श्राता है, इसलिए 'संवर' को जी नहीं चाहता । 'संवर' संयम का दूसरा नाम है श्रीर संयम ज्ञान की विशेषता का परिगाम है।

## सारे गुण अनुभवों की देन

ग्रास्त्रव, वन्य, संवर, निर्जरा यह ऐसी कियाएँ हैं, जो वड़ी व्याख्या चाहती हैं। इन पर कितावें लिखी जा सकती हैं। पर यही इस वात का सबूत है कि ग्रादमी स्वयं ग्रपना मालिक है। जैसे-जैसे वह अनुभवी होता जाता है, वैसे-वैसे उसमें वे सव गुरा ग्रा जाते हैं, जिनके वारे में लोगों ने यह समभ रखा है कि वे ईश्वर या ईश्वर की भिवत से मिलते हैं, भाग्य या पुण्य के प्रताप से मिलते हैं, तप या काया को क्लेश देने से मिलते हैं। सारे गुरा अनुभव की देन हैं। वचा खाते-खाते अपना खाना श्रपनी माँ के मुँह में दे देता है। परोपकार का यह गुए। उसने ग्रपने ग्रनुभव नामी ईश्वर से पाया है। ग्रगर कोई सच नहीं वोलता या हिंसा करता है या और कोई इन्सानी व्रत तोड़ता है, तो यही समभना चाहिए कि उसका अनुभव अभी अघूरा है। ग्रगर सच वोलना सिखाना ईश्वर के हाथ होता, तो सव ग्रादिमयों को पलक मारते सच वोलना श्रा जाता, श्रादमी जानदार न रह-कर काठ की पुतली वन जाता। समभः में नहीं स्राता, कुछ, लोगों को क्यों यह डर है कि ईश्वर के हाथ डाले विना दुनिया का न कोई काम हो सकता है, नः ग्रादमी किसी तरह की भलाई. सोच सकता है।

श्रनुमव श्रादमी के पास ऐसी चीज है, जो उसे एक क्षिण ठाली न बैठने देगा, न नीचे गिरने देगी। सवाल हो सकता है, ग्रगर यह वात है, तो दुनिया में बुरे श्रादमी क्यों मिलते हैं?

किसीको सोच-समभकर युरा कहना इतना श्रासान नहीं, जितना विना सोचे-समभे कह वैठना। हर श्रादमी की उन्नति की कसीटी श्रलन हैं। उदाहरण के लिए एक श्रादमी इसीमें श्रपनी उन्नति सममता है कि वह विजली के वल्व की तरह चमके। दूसरा ग्रपनी उन्नित इसमें मानता है कि वह वैटरी की तरह कोने में वैठा-वैठा वल्व को चमकाता रहे। उस मां को लीजिये, जिसने ऐसा पुत्र जन्मा, जो दुनिया में मशहूर हो गया। ऐसी संगिनी को लीजिये, जिसने ग्रपने पित को दुनिया में चमका दिया। ऐसे गुरु को लीजिये, जिसने ग्रपने शिष्य को सारे मनुष्य-समाज से पुजवा दिया। ग्रव यह समकता मुश्किल है कि कीन किसको उन्नत समकता है। वह सोना उत्तम कहा जाय, जो कलश वनकर मन्दिर की चोटी पर से चमकता है, लाखों ग्रादिमयों से पूजा पाता है ग्रीर उनकी ग्रांखों को सुख देता है, या वह सोना उन्नत समका जाय जो भस्म होकर मरते हुए क्षय के रोगी में प्रांग फूँकता है? किसीको बुरा कह वैठना ग्रीर वात है ग्रीर ध्यान से यह देखना कि वह ग्रपने ग्रनुभव के ग्राधार पर किस तरह ग्रागे वढ़ रहा है, दूसरी वात है।

वाल्मीकि डाकू था। दुनिया की नजर उसके डाके डालने पर थी। वह हर डाके से क्या अनुभव ले रहा था और किस तरह आगे वढ़ रहा था, इसका किसीको पता न था। अगर वह लूट-मार और हिंसा के जिरये उदारता और अहिंसा का पाठ न सीख रहा होता, तो क्या एक सच्चे अनुभवी के मामूली उपदेश से वाल्मीकि साधु वन गया होता?

## ्र अनुभव आगे बढ़ाता है

ग्रनुभव ग्रागे वढ़ाता है। ग्रनुभव का यह काम नहीं कि वह प्राग्गि को गलत या टेढ़े रास्ते चलने से रोके या सीघे रास्ते पर चलने की प्रेरणा करे। वह एक ही काम जानता है, ग्रागे वहाना । मान लीजिये, एक यादमी किसी गाँव जाना चाहता है। उस गाँव का एक रास्ता है। कुछ दूर चलकर वह रास्ता फटकर दो हो जाता है। वायों तरफ के रास्ते पर उसे पेड़ लगे मिलते हैं, दायों योर के रास्ते पर ऐसा कोई याराम नहीं। वह पेड़वाले रास्ते पर हो लेता है। यागे चलकर वह रास्ता वन्द मिलता है। अब अनुभव उसकी मदद करता है, निराश होने से रोकता है, लौटाता है। उसे फिर यागे को ढकेलता है। दुराहे तक लाकर उसे गाँव की तरफ ले जाता है ग्रीर गाँव पहुँचा देता है। दूसरी वार जब वह यादमी गाँव की तरफ चलता है, तो यनुभव वैसी मूल नहीं होने देता।

## 👉 इराई की दवा भी श्रनुभव 🕾

किसी बुराई से वचने के लिए ईश्वर की प्रार्थना की जरूरत नहीं। ईश्वर की प्रार्थना ने कभी किसीको बुराई से नहीं वचाया। चोरी एक बुराई है। हम जेल में रहे। हमने सैकड़ों चोरों को देखा है और चोर ईश्वर-प्रार्थना के जितने पक्के मिले, उतने और नहीं। अफरीदी पठान, जो श्रादमी की जान लेना खेल समभते हैं, नमाज पढ़ने में कभी नहीं चूकते। फिर यह कैसे मान लिया गया कि चोरी की लत ईश्वर या प्रार्थना से छूट जाती है? यह ठीक है, वहुत ग्रादमी ग्रपने ग्रनुभव या ग्रपने सुने ग्रनुभव के वल पर यह कहेंगे, हमारी चोरी की लत ईश्वर-प्रार्थना से छूट गयी, कई दूसरे ग्रादमियों ने सुना कि जनकी लत ईश्वर-प्रार्थना से छूट गयी, तव हम यह कहेंगे कि वे ग्रपने चोरी-जीवन के इतिहास पर एक नजर डाल जाया। उनको पता चलेगा

कि यह ईवनर की प्रार्थना नहीं है, जिसने उनकी चोरी छुड़ाई, विल्क वे अनुभव हैं, जो चोरी करते-करते हुए। कहाँ कोई ऐसी चोरी हुई हो, जिससे उनमें समभा जागी हो और उससे कहणा उत्पन्न हुई हो और उन्होंने चोरी छोड़ दी हो। जिस तरह यह कहने का रिवाज है कि आपकी कृपा से यह काम हो गया, वैसे ही यह कहने का रिवाज है कि ईश्वर की प्रार्थना या कृपा से यह काम हो गया। कार्य के गलत कारण वताने का रिवाज मुद्दत से चला आ रहा है। एक विद्वान ने एक कुत्ते की कहानी के जरिये समभाया था कि किस तरह कुत्ता गाड़ी के नीचे चलकर यह समभ रहा था कि वह गाड़ी खींच रहा है।

## आदमी को ईमानदार समभाना काफी

विश्वास से विश्वास ग्रीर ग्रविश्वास से ग्रविश्वास पैदा होता है, यह वात हमने ग्रनुभव से सीखी है। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा हो, जो इसे ठीक न समभता हो, पर व्यवहार में इसका ग्रमल वहुत कम है। मालिक मजदूर पर विश्वास नहीं करता, उसका काम देखने के लिए एक मेट रखता है। ग्राहक दूकानदार पर विश्वास नहीं करता, उसकी तीली चीज को फिर तौलता है। यह ग्रविश्वास यहाँ तक फैल गया है कि परीक्षा देनेवालों को यह ग्रविश्वार मिल गया है कि वह कुछ फीस देकर ग्रपनी उत्तर-पुस्तिका की फिर से जाँच करवा सकते हैं। कई विद्यार्थी दुवारा जाँच में पास होते मिले हैं। जब शिक्षा जैसी पवित्र संस्था का विश्वास के वारे में यह हाल है, तब ग्रीरों का क्या कहना!

इस ग्रविश्वास ने जिस तरह मजदूरों पर ग्रोवरसीयर रखने का रिवाज डाला भ्रौर परीक्षा देनेवालों पर निगरानी रखनेवाले तैनात किये, वैसे ही ग्रादमी के चरित्र की देख-भाल के लिए देवताथों का पहरा वठाया, ईश्वर को तैनात किया। हम नहीं मानते कि ऐसा करके ग्रादमी ने ग्रपनी ग्रावरू वढ़ायी है। कहानियों के जिये जो ऊँचे दरजे का साहित्य दिया जाता है, उनमें हमें पढ़ने को मिलेगा कि किसी पादरी के यहाँ चोर ग्राता है, उसके चाँदी के वर्तन चुरा ले जाता है। पुलिस जव उसे पकड़ती है, तो चाँदी के वर्तन उसके पास निकलते हैं। वे वर्तन पहचाने जाते हैं। चोर पादरी के पास लाया जाता है और पादरी उसको चोर न वताकर भला ग्रादमी वताता है ग्रीर कहता है कि ये वर्तन उसने उस भादमी को दिये थे, उसने चोरी नहीं की। फिर उसी कहानी में हमें वताया जाता है कि उस चोर ने चोरी करना छोड़ दिया। ऐसी वातें कहानी में ही पढ़ने को नहीं मिलतीं, व्यवहार में भी देखने को मिलती हैं। तव क्या इसके ग्राधार पर यह नतीजा नहीं निकाला जा सकता कि ब्रादमी को भला वनने के लिए उसे ईश्वर से डराना या नरक का डर दिखाना इतना जरूरी नहीं, जितना उसे ईमानदार समभना श्रीर उस पर विश्वास करना ?

दुनिया के कई मुल्कों की सरकारें श्रपने जेलखानों में चोर-डाकुश्रों को घर्म की तालीम के जिरये नरक का डर दिखा-दिखा-कर श्रीर ईश्वर-प्रार्थना का पाठ दे-देकर कभी चोरी न छुड़ा सकीं। श्रपनी श्रसफलता से पाठ लेकर उन्होंने श्रपना ढंग बदला। श्रव वे चोर-डाकुग्रों को काम सिखाती हैं, उनकी दिक्कतों को समभने की कोशिश करती हैं, उन्हें नौकरी दिलवाने का प्रयत्न करती हैं, पुलिस-निगरानी की शतें ढीली करती हैं या दिलकुल वद कर देती हैं। उन पर विश्वास करती हैं। जनता को उन पर विश्वास करने की सलाह देती हैं। इस सवका कुछ ग्रच्छा नतीजा हुग्रा है, ग्रागे ग्रीर ग्रच्छा होगा।

नरक-स्वर्ग, देवी-देवताओं ग्रौर ईरवर की मान्यता ने, हो सकता है, मनुष्य-जीवन के वाल्य-काल में कोई भला किया हो, पर ग्राज इससे वहुत वड़ा नुकसान हो रहा है, ग्रागे की वढ़वारी रकी हुई है। ऐसा मालूम होता है कि सारी दुनिया एक ऐसे ज्वालामुखी पर जा पहुँची है, जो वहुत जल्द भड़क उठने को है ग्रीर जिससे सारी दुनिया भस्म हो जायगी।

सवाल उठ सकता है, देवी-देवताग्रों पर विश्वास न करने-वालों की तादाद पश्चिम के कई मुल्कों में तेजी के साथ वढ़ रही है, फिर वहाँ इस तरह की बुराइयाँ क्यों मौजूद हैं ?

इस सवाल का जवाव यह है कि वहाँ इस तरह के कुछ लोग पैदा हो गये हैं, जो सचमुच देवी-देवताओं को छोड़ अपने पर विश्वास करने लगे हैं, पर वे तादाद में इतने थोड़े हैं कि जँगलियों पर गिनने लायक हैं। एक तरफ उनकी गिनती इतनी कम है, दूसरी तरफ सख्त मुकावला, फिर भी उन मुल्कों में पूर्व के मुल्कों से कम तादाद में भले आदमी नहीं, भले आदमियों की गिनती वहाँ कुछ ज्यादा ही है।

पर हम इस काम के लिए पूरव-पिश्चम के भगड़े में क्यों

पड़ें ? ग्रपने धर्म-ग्रन्थों पर ही नजर क्यों न डालें ? उन धर्म-ग्रन्थों के ग्राघार पर जिन कथाग्रों की रचना की गयी, उनमें जव भी कोई त्रादमी बुरे रास्ते से भलाई के रास्ते पर लाया गया है, तव विश्वास के वल पर ही लाया गया है। विश्वास से मतलव यहाँ ईरवर ग्रीर देवता के विश्वास से नहीं, उस विश्वास से है, जिसका नाम ग्रात्म-विश्वास है। ईश्वर ग्रीर देवता के विश्वास की ग्रसफलता तो हम जैल के कैदियों पर दिखा चुके । यहाँ हम ग्रादमी पर ग्रादमी के विश्वास की वात कह रहे हैं ग्रीर इसी वात का जिक्र कर रहे हैं। पुराएों में ईश्वर है, यह ठीक है। पुरागों में पुरागा के विश्वास की भी वात है, पर उस तरह का विश्वास लिखनेवालों में था। उसे वे छोड़ कैसे सकते थे। ग्रगर ईश्वर-विश्वास सव कुछ होता, तो कथा लिखने की जरूरत न थी। कयाग्रों की रचना सिर्फ इसलिए हुई कि ग्रादमी श्रादमी पर विश्वास करना सीखे। श्रीर जव-जव, जहाँ-जहाँ, म्रादमी का विश्वास किया गया है, सफलता मिली। पुरागों में जो सफलता दिखाई गयी है, वह ग्रादमी पर ग्रादमी के विश्वास की है।

#### अनुभव से आत्मा परमात्मा के रूप में

श्रादमी के श्रनुभवों का भंडार गहरा है, इसकी थाह नहीं ली जा सकती। यह भंडार जवरदस्त शक्ति है। वह शक्ति कागजों में छिपी नहीं, लोगों के दिल में वैठी है। जो भलाई श्राज दुनिया में हो रही है, वह सब उसी श्रनुभव की देन है। वह श्रनुभव श्रपने-श्रापमें न चेतन है, न जानदार। पर चेतन के साथ मिलकर वह चेतन को ईश्वर में वदल देता है। श्रात्मा को परमात्मा बनाने की योग्यता उसी अनुभव में है। अनुभव में ग्रपने-ग्राप न कोई बुद्धि है, न शक्ति; न इच्छा है, न उसका कोई लक्ष्य । वह तो ग्रात्मा के साथ मिलकर या ग्रादमी के दिमाग में वैठकर वहुत बड़ा रूप ले लेता है। वही सब-कुछ है, वह बुरे-से-बुरे ग्रादमी में किसी मौके पर भलाई करने के लिए जोर की इच्छा पैदा कर देता है। इसी ईश्वर को हमें जगाना है। पर इस ईरंवर के जगाने की वात श्रादमी से न कोई कहता है, न सुभाता है। जिस ईश्वर के दर्शनों की वात उससे कही जाती है या जिसकी प्रार्थना करने को उसे उकसाया जाता है, वह ईश्वर सर्वज्ञ ग्रौर सर्वशक्तिमान् होने पर भी वीतराग वताया जाता है। भला उस वीतरागी को क्या पड़ी, जो ग्रादमी से राग करे ग्रौर उसके भले बनने की वात सोचे ? उस सर्वशक्तिमान् को इस वात की क्या जरूरत कि वह एक मामूली श्रादमी की प्रार्थना सुने, जब कि वह ग्रपनी ग्राँखों यह देख रहा हो कि जिस वन्त एक ग्रादमी उससे प्रार्थना कर रहा है, उस वक्त ग्रनगिनत दुनिया प्रलय का मुकावला कर रही है। ठीक यही होगा कि ग्रादमी को उसके ग्रपने ग्रनुभवों पर छोड़ा जाय ग्रौर पुराने ग्रनुभवों की मदद से वह ग्रपने नये ग्रनुभवों की जाँच करे ग्रीर भलाई में लगे।

## सद्दुद्धि ईश्वर से नहीं, अनुभवों से

भलाई इसीमें है कि कुछ दिनों के लिए यह भुला दिया जाय कि कोई ईश्वर हममें कभी सद्बुद्धि जगाये। जो सद्बुद्धि हममें आयेगी, वह हमारे अनुभवों की दी हुई होगी, वही हमारे साथ रह सकेगी। दान में मिली सद्बुद्धि का क्या भरोसा ? रहे रहे, न रहे। जिन्होंने ग्रपने ऊपर भरोसा करना सीखा, वे कभी टोटे में नहीं रहे। जिन्होंने ईश्वर पर भरोसा करना सीखा, वे हमेशा टोटे में रहे। जिन सन्तों ग्रीर महन्तों का नाम लेकर दुनिया को ई्ड्वर पर भरोसा करना सिखाया जाता है, वे ई्ड्वर पर भले ही भरोसा करते हों, पर दुनियादारी के किसी काम में उन्होंने कभी ईश्वर पर भरोसा नहीं किया। उन्हें इस दुनिया में जो सफलता हासिल हुई, वह अपनी मेहनत और अपने अनुभवों से। यही कारण है कि दो महापुरुषों के ग्रंथ कभी एक-से न मिलेंगे। जिन वातों में एक-से मिलेंगे, वे वातें ऐसी हैं, जिनके लिए वर्मग्रन्थों के देखने की जरूरत नहीं। जैसे सच वोलना, किसी को न सताना, पवित्र रहना ग्रादि । पर जिन वातों के लिए धर्मग्रन्थ देखने की जरूरत पड़ती है-जैसे चोटी रखना, दाड़ी रखना, धोती पहनना, पाजामा पहनना-उनमें, ग्रलग-ग्रलग मिलेंगी। यही सबूत है कि वे महापुरुष ईश्वर के नहीं, अपने भरोसे पर रहे। ईश्वर तो उनके साथ ऐसे ही नत्थी था, जैसे हमारी ग्रांत के साथ छोटी ग्रांत, जो हमें कोई फायदा नहीं देती, पर कभी-कभी वीमार जरूर पटक देती है। इसलिए डॉक्टर श्रादमी का पेट चीरकर ग्रांत निकालकर उस छोटी ग्रांत को काट देते हैं ग्रीर ग्रादमी को हमेशा के लिए उस वीमारी से ग्राजाद कर देते हैं, जिसे 'ग्रपेंडिसाइटिस' कहते हैं ग्रीर उस छोटी ग्रांत का नाम है भ्रपेंडिक्स । ईव्वर श्रपेंडिक्स की तरह हम सबके साथ है। वैसे ही महापुरुषों के साथ था।

## त्रपना त्रनुभव ही ईरवर

कवीर ईश्वर-भक्त थे। पर क्या कभी उन्होंने कपड़ा बुनना छोड़ा? कभी ईश्वर से राजा बनाने की प्रार्थना की ? कभी ईश्वर से यह चाहा कि वह देवता के रूप में ग्राकर उनका बुना थान ले जाया करे ? या आगे कभी वीमार हों, तो वह किसी रूप में आकर उनकी गाड़ पर वैठ उनका थान बुन दिया करे ? अव यदि कवीर को भी ईश्वर पर भरोसा करने-वाला मान लिया जाय, तो यही कहना होगा कि हम ग्रपनी ग्रक्ल का दिवाला पीट वैठे हैं। कवीर जैसे सन्तों का ही कहना है कि ईश्वर उनकी मदद करता है, जो अपनी मदद अपने-आप करते हैं। वह ईश्वर ग्रपने ग्रनुभव के सिवा कोई दूसरा नहीं हो सकता। कीन अपनी आँखों नहीं देखता कि उसका अनुभव हमेशा उसकी मदद करता है। छोटे वच्चे का यह ग्रंनुभव कि ग्राग जलाती है, चट मदद के लिए ग्रा कूदता है। जव वच्चे की तरफ उसकी तीन-चार वरस की वहन आग की जलती लकड़ी लाती है, वह फौरन वड़ी तेजी और फुर्ती के साथ वचने की कोशिश करता है। यह उससे ईश्वर नहीं कराता। अगर वह कराता होता, तो इससे पहले उसने आग में हाथ न दिया होता और अपनी उँगली न जलायी होती। ग्रगर वह ऐसा न करता, तो उसे ग्रनुभवनामी ईश्वर न मिलता । सव सन्त-महन्त ग्रीर सारे महापुरुष ग्रपने पर भरोसा करनेवाले ग्रीर ग्रपने ग्रनुभवों की कदर करते रहे हैं।

सत्य हमारे ग्रनुभवों का भंडार है। गांधीजी सत्य को ईश्वर कहते थे। पता नहीं, कव ईश्वर की प्रार्थना करते थे, पर कहा करते थे कि वे करते हैं। करते होंगे। सैकड़ों-हजारों को ईक्वर-प्रार्थना सिखा जरूर गये और उन सीखनेवालों में कुछ ही वचे, जो सुस्त न वन गये हों ग्रौर दुनियाभर की बुराइयों में न लग गये हों, जव कि गांघीजी खुद उसी ईश्वर के नाम पर बुराइयों से वचते रहे। उनसे जव भी पूछा गया, ईश्वर क्या है, तो उन्होंने कहा, ईश्वर सत्य है ग्रीर ग्रव हम यह कहते हैं कि सत्य श्रनुभवों का भंडार है। गांधीजी का मांस खाना ईश्वर ने नहीं छुड़ाया, गांघीजी की चोरी ईश्वर ने नहीं छुड़ायी, गांघीजी का विषय-भोग ईश्वर ने कम न किया, उसे छुड़ाया उस सत्य ने या उस अनुभव के भंडार ने, जो उनके पास मौजूद था । मांस खाकर वे पछताये, उन्हें श्रपनी मां की याद ग्रायी । वे उस माँ को घोखा देना नहीं चाहते थे, जिसने अपनी जान जोखम में डालकर उन्हें जन्म दिया ग्रौर मुनियों जैसी तपस्या कर उन्हें पाला-पोसा था। यही था वह ग्रनुभव, जो ईश्वर वन-कर भ्राया श्रीर उसने उनका हाथ पकड़ लिया श्रीर कहा कि मांस खाकर तुम पतित हो रहे हो, क्योंकि ग्रपनी माँ के विश्वास को लितया रहे हो। यही हाल उनका चोरी छोड़ने में हुग्रा ग्रीर यही विषय-भोगों पर काबू पाने का। ग्रगर वे ईश्वर पर भरोसा करते होते, तो सचमुच त्रर्रावद घोष की तरह कोई नयी पांडिचेरी ढूँड़ लेते या तपस्वियों की तरह कहीं हिमालय की गुफा में वैठ-कर निर्वाग प्राप्त करते। पर उन्होंने तो चरखा काता, ग्रपने हाथ से रोटियाँ वनायीं, माड़ू लगायी, टट्टी उठायी ग्रीर इस तरह अपने अनुभवरूपी ईश्वर के लिए हमेशा खुराक जुटाते रहे। वस, उनका ईश्वर या तो अनुभव था और अनुभव नहीं, कुछ और था, तो वह अपेंडिक्स वना हुआ रहा होगा।

## सर्वच्यापी क्या और कैसे करेगा ?

सिद्धांतवादी ग्रीर दार्शिनिक ईश्वर पर जितना जोर देते हैं, उतना शायद दूसरे नहीं। उनका कहना है, ईश्वर कभी पैदा नहीं हुग्रा, न कभी मरता है। हमेशा से है, हमेशा तक रहेगा। यह सब बात तो ग्रनुभव के लिए भी कही जा सकती है। पर जब वे यह कहते हैं कि वह ग्रपनी ग्रलग कोई सत्ता लिये है ग्रीर दुनिया को बनाता है, दुनिया की सुध लेता है—यहाँ तक कि हरएक ग्रादमी को ग्रलग-ग्रलग खाना खिलाता है, जब वे पैदा होते हैं, उनकी खोपड़ी की पट्टी पर इस तरह हाल लिख देता है, जिस तरह जेलखाने में कैदी की छाती पर लटकनेवाली पट्टी पर यह लिखा रहता है कि वह क्या जुर्म करके जेलखाने ग्राया है—ये सब ऐसी वातें हैं, जिन्हें सुनकर हर ग्रादमी का ग्रनुभव काँप उठता है।

सिद्धान्ती ग्रौर दार्शनिक ईश्वर को सर्व-शक्तिमान् ग्रौर कुछ लोग सर्वव्यापी भी मानते हैं। तव तो ग्रौर भी मुश्किल हो जाती है कि ऐसे सर्वव्यापी ग्रौर सर्व-शक्तिमान् से क्या मदद माँगी जाय, किस तरह माँगी जाय, उसे कैसे खुश किया जाय, उसे किस चीज की जरूरत है, उसे भेट में क्या दिया जाय? फिर क्या वह सचमुच हमारी मदद कर सकता है? ग्रगर करेगा, तो कैसे करेगा? जव वह सर्वव्यापी है, तो हिल-डुल न सकेगा। आ़िखर वह क्या और कैंसे करेगा ? इस सोच में पड़कर ये सिद्धान्ती और दार्शनिक किस तरह अपनी तसल्ली करते होंगे ?

## ईश्वर को मानना अपने को धोखे में डालना

ईश्वर को लेकर आदमी ने अपने-आपको घोखे में डाल दिया है। धतूरा ग्रादमी खुद ही खाता है। धतूरे का दूसरा नाम है 'कनक'। कनक याने सोना। ग्रादमी घतूरा खाकर सव जगह सोना देखने लगता है। खूव हँसता है ग्रौर उस सोने को, जिसे वह देखता है, उठाता है ग्रीर उठाये जाता है। वहाँ लेना-देना क्या है ? काल्पनिक सोना ग्रौर काल्पनिक उठाना। उसका ग्रन्त भी कैसे ग्रा सकता है ? ठीक इसी तरह ग्रादमी ने ईश्वर के मामले में ग्रपने को वहुत घोखे में डाल रखा है। रही प्रकृति ! वह एक शीशा है। उस पर श्रादमी नजर डालेगा, तो उसे वहाँ श्रादमी ही मिलेगा श्रीर वह वैसा ही मिलेगा, जैसा देखनेवाला होगा। यही हाल ईश्वर का है। जैसा आदमी प्रकृति के शीशे में ईश्वर को देखने के लिए दीड़ता है, उसी ढंग का ईश्वर उसे वहाँ मिल जाता है । वह विलक्ल उसकी छाया है । पर जिस तरह छोटा वचा अपनी छाया को छाया न पहचानकर दूसरा वालक समभता है ग्रौर घर के रिवाज के श्रनुसार उसे नमस्कार करता, पुचकारता या खिलौने देता है, वैसे ही ग्रादमी प्रकृति के दर्पण में ग्रपनी छाया को ईश्वर समभकर ग्रपने धर्म के रिवाजों के श्रनुसार दंडवत करता है, मिठाई चढ़ाता है, प्रार्थना वोलता है ग्रीर न जाने क्या-क्या करता है। इस परछाई को सिद्धान्तवादी

ग्रीर दार्शनिकों ने ग्रपने ग्रन्थों के वल पर ग्रटल वना दिया है— ग्रचल वना दिया है।

अव रहे उसके गुरा और रूप। ये हरएक के अलग-अलग होंगे, क्योंकि हरएक की बुद्धि अलग-अलग, हरएक की कल्पना-शक्ति अलग-अलग । जैसा जिसके मन् में आया, उसने वैसा रूप गढ़ दिया। यह न सोचा कि अगर उसे अनंत कह दिया जायगा, तो फिर उससे काम कैसे लिया जायगा ? पर उन्हें यह कहना था कि वह कभी पैदा नहीं हुग्रा। इसलिए ग्रनादि कहना ही उनके लिए ठीक था । पर मुक्किल यह ग्रा पड़ी कि जब वह पैदा नहीं हुग्रा, तो उसे किसी चीज की जरूरत नहीं ग्रौर कोई उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकता श्रीर न कोई उसका भला कर सकता है ग्रीर हमारे खयाल में न वह किसीका भला-बुरा कर सकता है। अब वह क्या रह जाता है, यह जानें दार्शनिक ग्रीर सिद्धान्तशास्त्री! या वेद जानें, जो इस कोशिश में लगे हैं कि उस अनादि-ग्रनंत को कुछ गीत गाकर खुशं कर लेंगे। मानो वह पूजा-प्रतिष्ठा का भूखा है और खुश होकर उन्हें कुछ दे देगा।

यह पूजा-प्रतिष्ठा का ग्रादमी, जो कल्पना का धतूरा खाये है, इसके सिवा ग्रीर सोच भी क्या सकता था? हम नहीं समभते कि इस नशे की ग्रादत डालकर दुनिया का ग्राज क्या भला हो रहा है। वड़े-बड़े समभदार ग्रादमी शराव के बारे में कह बैठते हैं कि उसे पीकर चित्त एकाग्र हो जाता है ग्रीर वड़ा ग्रच्छा लिखा जा सकता है। पर वे यह नहीं सोचते कि जो ऊँचे दर्जे के ग्रन्थ ग्रीर ऊँचे दर्जे का साहित्य ग्राज ग्रमर वना है ग्रीर

ग्रादमी में इज्जत पा रहा है, उसमें से कितना शरावियों का ्लिखा है। शरावियों का लिखा या तो फुलफड़ी की तरह ग्रपनी चमक दिखाकर खतम हो जाता है या शराव-पसन्दों की तसल्ली करता रहता है या उम्र पाकर नष्ट हो जाता है। पर जो शराव न पीकर लिखा गया है, वह क्या काम कर रहा है, उस पर उनकी नजर नहीं जाती। यही हाल दार्शनिकों ग्रीर सिद्धान्त-शास्त्रियों का है। उनका कहना है, ईश्वर का ध्यान करके चित्त एकाग्र हो जाता है। यह वताना जरा मुश्किल काम है। ईश्वर की भक्ति में लिखा हुग्रा साहित्य सव धर्मों का, सव-का-सव इकट्टा कर लिया जाय, तो उसका निची इहमारे खयाल में मुक्तिल से एक फार्म की पुस्तक वन सक़ेगा और उसे भी ग्रगर छोटा किया जाय, तो वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् ग्रीर सर्व-व्यापकता में समा जायगा। सर्वशक्तिमान् की कुछ भी कहे जाइये, उस पर सव लागू हो सकता है। इसमें सोचने-समभने की जरूरत कहाँ ? धतूरा खाया ग्रादमी क्या उस सोने को कभी उठा पायेगा, जिसे वह देख रहा है ? इसी तरह कल्पना के घतूरे के नशे में चूर को कभी ईश्वर मिल पायेगा ?

श्रादमी को श्रव यही चाहिए कि वह ईश्वर को खुश करने की वात छोड़ श्रपने पर विश्वास करे। श्रपने श्रनुभवों से फायदा उठाकर दूसरों की भलाई में इसलिए लगे कि दूसरों की भलाई में उसकी भलाई है।

#### : 20:

## सत्य क्या कहता है ?

सत्य श्रादमी का गुरा है। हमेशा से उसके साथ है, हमेशा तक वना रहेगा।

सत्य ग्रादमी से ग्रलग होकर कुछ भी नहीं। उसके साथ रहकर सव-कुछ है। गुरा के गुराी से ग्रलग होने की कल्पना की जा सकती है, ग्रलग किया नहीं जा सकता।

### हमेशा साथ रहनेवाले की खोज क्यों ?

सत्य जव हमेशा से साथ है, तव उसकी खोज क्यों ? ग्रौर इतना भी पता क्यों नहीं कि वह क्या है ?

ग्रादमी ग्रपनी ग्रांख नहीं देख सकता। वह जन्म से साथ है, मरने तक साथ रहेगी। उसे देखने के लिए दर्पण की जरूरत पड़ती है।

सत्य हमेशा से साथ है, मगर दिखाई नहीं देता, तो घवराने की वात नहीं। उसकी सुनो, उसे देखने की घुन में न लगो। वह तुम्हें दिखाई देने के लिए इतना ही उत्सुक है, जितने तुम उसे देखने के लिए।

सत्य गुरा है, गुरा में समभ ग्रौर जान नहीं होती। गुरा ग्रपने-ग्राप कुछ नहीं कर सकता। सत्य गुरा की हैसियत से कुछ नहीं चाह सकता। सत्य तुम्हारे साथ एकमेक होने से तुम्हारी भलाई ऐसे ही चाहने लगता है, जैसे तुम अपना भला चाहते हो।

सत्य तुम्हारा साथी बनकर तुम्हारी भलाई के लिए ऐसे ही तड़पता है, जैसे तुम तड़पते हो। उसके लिए मुक्किल यही है कि वह यह चाहता है कि तुम्हें दिखाई दे जाय, पर इस विषय में वह कुछ नहीं कर सकता। उसके ग्रीर तुम्हारे वीच जो पर्दा है, उसे तुम ही तोड़ोगे, कोई दूसरा नहीं। लोहे के ग्रन्दर की चमक जिस तरह तुम्हारे माँभने से तुम्हें दिखाई देती है, उसी तरह सत्य को माँभने से सत्य की चमक दिखाई देगी।

सत्य यही चाहता है कि तुम अपनी आँख खुली रखो। दोनों कान खड़े रखो, और अपनी सारी इन्द्रियों को सचेत वनाये रखो।

तुम कहोगे, हम तो ग्रपने ग्रांख-कान हमेशा खुले रखते हैं, ग्रव ग्रीर किस तरह खोलें ?

सवाल ठीक है, पर इसका जवाव तुम्हारे पास है। देखो, जव तुम छोटे थे, तव भी तुम्हारी ग्रांखें खुली थीं, कान चौकन्ने थे। पर उन दिनों इन खुली ग्रांखों ग्रीर इन चौकन्ने कानों से जो देखते-सुनते थे, क्या ग्राज भी उसी तरह देखते-सुनते हो ?

तुम जब छोटे थे, फूल को देखते थे, खुश होते थे। उसे तोड़ते थे। उसे मुंह में रख लेते थे। जरा वड़े हुए, उसे मसलकर फेंकने लगे। जरा ग्रीर वड़े हुए, पेड़ के सारे फूलों को लकड़ी मार-मारकर गिराने लगे। यह भी देखना देखना था।

अव तुम वड़े हो। अव भी फूलों को देखते हो, अव भी

खुश होते हो । अगर तुम बहुत सममदार हो, तो उसे नहीं तोड़ते, क्योंकि उसकी खुशबू तुम्हारी नाक तक और फिर तुम तक अपने-आप पहुँच जाती है । अगर तुम इतने सममदार नहीं और अपने मन पर काबू नहीं, तो तुम पेड़ पर से एक-दो फ़ुल तोड़ लेते हो । उसे न मसलते हो, न मुँह में रखते हो, न फेंकते हो, रूमाल में रखकर सूँघते हो । यह भी एक देखना है ।

दोनों देखने में ग्रन्तर है। पहले देखने से दूसरे देखने तक पहुँचने में तुमने सत्य के ऊपर से कई पदों को रगड़ डाला है ग्रौर यह देखकर तुम्हारे ग्रन्दर का सत्य वहुत खुश हो रहा है। सत्य यही चाहता है कि ग्रौर ग्रांखें खोलो, ग्रौर भी कानों को चौकन्ना करो, ग्रीर भी सारी इन्द्रियों में चेतना लाग्रो ग्रौर मन पर धीरे-धीरे काबू पाते जाग्रो।

दुनिया में सत्य से वढ़कर तुम्हें चाहनेवाला कोई दूसरा नहीं है। माँ-वाप भी नहीं। ग्रगर ग्रलग कोई ईश्वर है, तो वह भी नहीं। जैसा ईश्वर लोगों ने मान रखा है, वह तुम्हें कभी इतना प्यार नहीं कर सकता, जितना सत्य। इसका कारए है।

सत्य तुम्हें कितना प्यार करता है, इस वात को समभाने के लिए सत्यभक्तों ने वड़ी-वड़ी कहानियाँ लिख डाली हैं ग्रीर सीता-राम की कथा, ऐसी ही एक है।

जैसे सीता वनवास में साथ रहने के लिए मचल उठी, वैसे ही सत्य एक क्षरा के लिए ग्रलग नहीं रहना चाहता।

सीता की जो लगन किवयों ने राम के लिए दिखाई है, अगर उसे हम एक वूँद पा लें, तो सत्य की लगन तुम्हारे साथ रहने ग्रीर तुम्हारे देखने की सागर जितनी समभी जायगी। ग्रव तुम ग्रन्दाजा लगाग्रो कि सत्य का प्रेम तुम्हारे लिए कितना है। ऐसा क्यों है?

जो ईश्वर, जो राम तुम्हारे अन्दर है, वही तो सत्य है। अब अगर तुम चोर हो, तो वह चोर है। अगर तुम हिंसक हो, तो वह हिंसक है। तुम जो हो, वही वह है।

राम राजकुमार थे, सीता राजकुमारी थी। राम वनवासी थे, सीता वनवासिनी थी। सीता महल में सोलह शृंगार करके भी रहती, तो वनवासिनी तो कहलाती ही, उससे भी ज्यादा कहलाती, वियोगिनी। वियोगिनी न वनकर उसने वनवासिनी वनना ठीक समभा। राम विजयी हुए, वह अपने-आप विजयन्ती कहलाने लगी। राम राजा हुए, वह रानी वन गयी।

सत्य एक शक्ति है श्रीर शक्ति के नाते वह सीता है। सत्य को पहचाने हुए तुम शक्तिघारी हो। शक्तिघारी के नाते तुम राम हो।

तुम्हारी वढ़वारी में सत्य की वढ़वारी है। राम के राजा होने में सीता के रानी वनने की वात छिपी है। फिर कीन हो सकता है, जो सत्य से ज्यादा तुम्हें प्यार करेगा।

सीता की यह इच्छा कि राम विजयी हों, ग्रयोध्या के राजा वनें, यदि एक ग्राना मानी जाय, तो सत्य की यह इच्छा कि तुम भगवान् वनों, लाख ग्रीर करोड़ रुपयों से भी कहीं ज्यादा कही जायगी।

## सत्य के सामने आना ही भगवान वनना

सत्य से रूबरू होना यानी सत्य के ग्रामने-सामने ग्राना ही तो भगवान् वनना है। इससे ग्राप सत्य की तड़प का ग्रन्दाजा लगा सकते हैं।

सत्य न अपने-आप को माँक सकता है, न माँकता है। वह तो तड़पनाभर जानता है और चौवीसों घंटे तड़पता रहता है। तुम उस तड़पन का अनुभव नहीं करते। जब तुम अनुभव करने लगोगे, तो अपने सारे अनुभवों से मदद लेना सीख लोगे। और दूसरों के अनुभवों की रेगमाल बनाकर उस मैल को माँक डालोगे, जो सत्य पर मुद्दतों से चढ़ा है और आये दिन चढ़ता रहता है।

दाँत रोज माँभने पड़ते हैं। मुँह रोज घोना पड़ता है। ग्राँखों में सुमी रोज ग्राँजना पड़ता है। तव कहीं दाँत, मुँह ग्रीर ग्राँखें साफ रहती हैं। यही हाल सत्य का है। उसके ऊपर रोज धूल चढ़ती रहती है, उसे तो रोज साफ करते रहना ही चाहिए ग्रीर पुराने मैल को माँभने के लिए भी कुछ वक्त निकालना चाहिए।

वालकपन की आँख से जवानी की आँख कम देखती है, पर ज्यादा ठीक देखती है। जवानी की आँख से बुढ़ापे की आँख और भी कम देखती है, पर बहुत ज्यादा ठीक देखती है। और अनुभवों से हुई अंघी आँख विलकुल न देखकर बहुत ज्यादा देखती है। यही हाल मनुष्य-समाज की बचपन की आँख का और आज की आँख का है। मनुष्य-समाज वचपन में बहुत देखता था, पर कुछ-का-कुछ देखता था। ग्राज वह कम देखता है, पर पहले से ठीक देखता है।

#### सत्य की सीख

सत्य यह चाहता है कि तुम वाहर किसी ताकत को ढूँढ़कर टोटे में रहोगे। तुम्हारा नफा इसीमें है कि मेरे ऊपर लगी काई माँभ डालो, मेरे ऊपर एक मिनट भी घूल न रहने दो। पर तुम हो कि उसकी न सुनकर ताकत के लिए न जाने कहाँ कहाँ भागे फिरते हो। तुम्हारी यह हालत देखकर सत्य घवरा उठता है।

सत्य यह चाहता है कि जो कुछ ग्रांख देखती है या जो कान सुनते हैं, वह वही नहीं होता जो दिखाई या सुनाई देता है। ग्रांख को वही दिखाई देता है, जो मन ने सोच रखा होता है। ग्रादमी देखते समय यह कहता है कि मैं किताब का पन्ना देख रहा हूँ, लेकिन उसका मन न जाने क्या देख रहा होता है। यही कारण है कि पन्ने पर लिखे किसी खास शब्द को देखने के लिए कितनी ही बार निगाह डालनी पड़ती है। तब पन्ना देखने की वात कैसे ठीक मानी जा सकती है?

सत्य यह चाहता है कि तुम श्रांख, नाक की न सुनकर मन की सुनो, पर वहीं न रुक जाग्रो।

सत्य यह चाहता है कि मन की सोची वातों को ज्यों-का-त्यों न मान लो। उसे अनुभव की कसाँटी पर कसो। अगर वह कसाँटी पर ठीक न उतरे, तो उसे ऐसी ही रही समभ लो, जैसे आँख का देखा और कान का सुना। सत्य चाहता है कि कार्य-कारण के मामले में सतर्क रहो। किसी कार्य का ऐसा कारण न मानो, जिस कारण से उस

तरह का कार्य तुम खुद न कर सको।

ग्रगर तुम उस कारण से वैसा कार्य नहीं कर सकते, तो यह
देखों कि उस कारण से वैसा कार्य कोई कर सकता है या नहीं।

ग्रगर ऐसा भी न हो, तो यह देखों कि क्या तुम्हारे ग्रनुभवों का भंडार इस वात में कुछ भी मदद देता है कि उस कारण
से इस तरह का कार्य हो सकता है।

अगर ऐसा भी न हो और तुम्हारा अनुभव-भंडार इसमें जरा भी मदद न करे, तब दूसरों के उन अनुभवों से मदद लो, जिनको तुमने अपने अनुभवों की कसौटी पर कसकर ठीक मान लिया है। अगर उन अनुभवों की मदद से यह वात समक में आ जाय कि हाँ, उस कारण से वैसा कार्य हो सकता है, तब मान लो। अगर न हो सकता हो, तो न मानो।

दूसरों के अनुभवों के आधार पर माना हुआ कार्य-कारण ऐसा नहीं है, जो यों ही पड़ा रहने दिया जाय। हाँ, यह ठीक है कि जैसे और खोटी बातें सत्य पर घूल छा जाने का काम करती हैं, वैसे यह बात घूल तो नहीं फैलायेगी, पर माँभने में सहायक नहीं हो सकती, किसी काम नहीं आ सकती।

्र सत्य यह चाहता है कि कोई कार्य-कारण जिसे तुमते खुद नहीं किया श्रीर तुम्हारे पास पड़ा है, कभी भी वीच के पर्दे को न तोड़ सकेगा श्रीर कभी मुक्तमें श्रीर तुममें मेल न होने देगा। सत्य यह चाहता है कि जब तुम यह देखों कि कोई ग्रादमी या ग्रीरत यह शोर मचा रही है कि कोई मुफे मार रहा है, जब कि वहाँ कोई ग्रादमी नहीं है, तब एकदम कोई बात तय न कर बैठों ग्रीर न किसीकी तय की हुई बात को मान बैठों। ग्रापने ग्रानुभवों का भंडार टटोलों ग्रीर देखों, किन-किन हालतों में ग्रादमी ऐसी बेतुकी बातें बकने लगता है। ऐसा करने पर तुम्हारे ग्रानुभव उस घटना के कई कारण बता सकते हैं। फिर देखों कि उनमें से कीनसा ठीक बैठता है। जो ठीक बैठे, उसीके ग्रानुसार उस ग्रादमी को समभाग्रों या उसका उपचार करों।

सत्य यह कहता है कि जव-जव तुम ग्रपने ग्रनुभवों के वल पर किसी ग्रगले ग्रनुभव के लिए जान दे देते हो, तव-तव तुम मुभे ग्रपने बहुत करीव पाते हो। यही कारण है कि तुम्हें जल्दी सफलता मिलती है ग्रीर ग्रगर मौत भी हो जाती है, तो ग्रपने साथियों के लिए ऐसी चीज छोड़ जाते हो, जिसके कारण वह तुम्हें मरने नहीं देते।

लेकिन, श्रगर तुम दूसरों के श्रनुभव पर श्रपनी जान खतरे में डालते हो, तो मैं तुमसे वहुत दूर जा पड़ता हूँ। ऐसे वक्त तुम्हारी मीत हो जाय, तो तुम कोई चीज श्रपने पीछे नहीं छोड़ सकते। श्रगर कोई चीज छोड़ ही गये, तो वह ऐसी नहीं होगी, जिससे कोई फायदा उठा सके। क्योंकि वह वही चीज हो सकती है, जो जानवरों में ज्यादा मिलती है श्रीर श्रादिमयों में कम।

सत्य यह नहीं चाहता कि कोई ग्रादमी दूसरों के ग्रनुभवों

की खातिर शेर जैसी वहादुरी दिखाकर ग्रपनी जान दे दे। क्योंकि इससे उसका कोई भला न होगा, उसके ग्रन्दर रहनेवाले सत्य को कोई फायदा न पहुँच सकेगा।

सत्य यह नहीं चाहता कि कोई आदमी दूसरों के अनुभव के लिए हद से ज्यादा उदार वन जाय । क्योंकि उस उदारता से उसके अन्दर रहनेवाले सत्य को कोई लाभ न पहुँचैगा।

### कार्य-कारण भाव पर जोर

सत्य यह चाहता है कि तुम किसीकी बात को सिर्फ इस वजह से न मान लो कि वह श्रादमी बहुत बड़ा विद्वान् है।

किसीकी वात को इस वजह से न मान लो कि वह वहुत वड़ा त्यागी है।

इस वजह से न मान लो कि वह किसी पुराने शास्त्र में लिखी है।

किसी वात को किसी ऐसी वजह से न मानो, जो उसका कारण न हो।

जो वात मानो, वह कारण की वजह से मानो। वात वात की खातिर मानी गयी हो। वात की योग्यता वात के ग्रन्दर हो, न कि किसी दूसरे के ग्रन्दर, न कि उसके पुराने या नयेपन में।

जो बात सौ बार परीक्षा करने पर निन्यानवे बार ठीक निकले, उसको भी मत मानो । उसकी फिर परीक्षा करो । जब तक वह सौ-में-सौ बार ठीक न निकले, तब तक वह सत्य नहीं मानी जा-सकती।

### परीचा की जरूरत

सत्य यह चाहता है कि जब तक तुम्हारा अपना अनुभव किसी वात को ठीक-ठीक न बता दे, तब तक उसे अपने अन्दर एक ऐसे खाने में डाल रखो, जो तुम्हारे और मेरे बीच आड़े न आने पाये। तुम्हारी सारी जानकारी मेरे ऊपर धूल का काम करती है—अगर वह तुम्हारे अनुभवों पर ठीक नहीं उतरती। फिर भी तुम उसे ठीक समभे हुए हो।

इसीका नाम ग्रन्य-विश्वास है। इसीका नाम मिथ्या-विश्वास है। यही वह जवर्दस्त पर्दा है, जिसे दूर करने के लिए सत्य तड़प-तड़पकर मीन रहते इशारा करता है।

सत्य यह चाहता है कि तुम ग्रपने भीतरी जीवन की पूरी-पूरी पहचान करो, जिसके वल पर तुम उन सचाइयों का प्रकाश कर सको, जो तुमने प्राप्त की हैं।

उसका कहना है कि तुम्हें प्रकृति से एक ही ग्रीजार मिला है, जिससे तुम चीजों की परीक्षा कर सकते हो ग्रीर उसका नाम है 'बुद्धि'।

बुद्धि ऐसा ग्रीजार है कि सिवा सत्य के ग्रीर किसी पर नहीं घिसा जा सकता। ग्रीरों पर घिसने से वह कुन्द हो जाता है ग्रीर मिथ्या-बुद्धि नाम से पुकारा जाता है। मिथ्या-बुद्धि कभी-कभी ग्रन्तरात्मा वनकर तुम्हारे सामने खड़ी होगी, पर ग्रगर तुमने भीतरी जीवन को ग्रन्छी तरह समक्ष लिया, तो फिर तुम्हारे सामने बुद्धि जब भी ग्रायेगी, तब मिथ्यात्व का जामा उतारकर ग्रायेगी।

उसका कहना है कि कभी ऐसी भूल न करना कि धर्म-ग्रन्थों पर ग्रपनी बुद्धि कसने लगो। धर्म-ग्रन्थ तो बुद्धि पर कसे जाते हैं।

उसका कहना है कि धर्म-ग्रन्थ वुद्धि की देन हैं ग्रौर वह वुद्धि सद्बुद्धि भी हो सकती है ग्रौर मिथ्या-बुद्धि भी। तब उन्हें हर वक्त बुद्धि की कसौटी पर कसे जाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

## स्वार्थियों के कारण बुद्धि का महत्त्व कम नहीं

गिएत एक ऐसी सचाई है, जिसमें रत्तीभर भूल नहीं होती। लेकिन ग्रगर कोई किसान किसी साहूकार के वारे में यह कहने लंगे कि "देख लिया जी गिएत, वह तो विलकुल भूठी विद्या है, क्योंकि हमारे साहकार ने हिसाव लगाकर जितना सूद हमारे नाम निकाला था, वह अदालत में भूठा सावित हुआ।" गरिएत के वारे में ऐसी राय उसी किसान की हो सकती है, जो गिएत को नहीं जानता, या जिसे किसी साहूकार ने घोले का गिएत तैयार करके लूट लिया हो। सत्य का कहना है कि ठीक इसी तरह जो वुद्धि की खिल्ली उड़ाते हैं, वे वहीं लोग हैं जो वुद्धिमान नहीं ग्रीर जिन्होंने किसी बुद्धिमान से घोखा खाया है। बुद्धिमानों ने धर्म-ग्रन्थों के ग्रपने मतलव के लिए कुछ के कुछ ग्रर्थ लगाकर वुद्धि की कदर उठा दी है। पर जिस तरह मूर्खी की नजर में गिएत की वेकदरी हो जाने से गिएत ने अपनी सचाई नहीं खोयी, वैसे ही कुछ स्वार्थियों की नजरों में बुद्धि की हँसी उड़ जाने से बुद्धि का महत्त्व नहीं जा सकता।

सत्य का कहना है, यह कैसे हो सकता है कि जिस बुद्धि से हम

दुनिया के सब कामों की जाँच करते हैं, फिर वे काम चाहे घर के हों, कुटुम्ब के हों, ज्यापार के हों, राजनीति के हों, विज्ञान के हों, कला के हों या किसी किस्म के हों, पर नहीं कर सकते, तो घर्म की जाँच भी नहीं कर सकते। अब सिवा इसके क्या कहा जा सकता है कि घर्म मुर्खता की देन है, इसलिए बुद्धि पर नहीं कसा जा सकता ग्रोर ग्रगर वह बुद्धि की देन हैं, तो सिवा बुद्धि के उसे कीन परखेगा?

## सत्य, अन्तरात्मा, बुद्धिः, तीनों एक

सत्य का कहना है कि अन्तरात्मा और बुद्धि दो चीजें नहीं हैं, इनमें गुरा-गुरा सम्बन्ध है। अगर अन्तरात्मा बुद्धि-रहित है, तो वह अच्छी-बुरी कैसी भी सलाह नहीं दे सकता। अगर सलाह देता है, तो वह समभदार और बुद्धिमान है।

सत्य कहता है, लोगों का यह कहना गलत है कि ईश्वर बुद्धि से समक्ष में नहीं ग्रा सकता, लेकिन ग्रन्तरात्मा से समक्ष में ग्रा सकता है। ग्रन्तरात्मा ग्रीर बुद्धि एक चीज है। ग्रगर कुछ मूर्खों की नजर में वे दो चीज हैं, तो वह हैं तो एक की ही। जो बात हमारा ग्रन्तरात्मा जानेगा, वह बुद्धि तक पहुँचे विना कैंसे रहेगी ? इसलिए ऐसा कभी नहीं हो सकता कि ग्रन्तरात्मा ग्रीर बुद्धि दो चीज हों।

सत्य का कहना है, मैं ग्रात्मा से ग्रलग होकर कोई चीज नहीं हूँ । मैं ग्रात्मा से ग्रलग हो ही नहीं सकता । में ग्रार ग्रात्मा एकमेक हैं । कहने ग्रीर समफने के लिए हम दो हो सकते हैं । वैसे ही अन्तरात्मा, बुद्धि, समक्त, विश्वास, ज्ञान, आत्मा, सत्य यह सव एक ही चीज हैं, नाम के लिए अलग-अलग हैं।

प्रकाश का जो रंग है, वह है। पर वह हरे शीशे में हरा, लाल शीशे में लाल ग्रौर नीले शीशे में नीला दिखाई देता है। ठीक इसी तरह 'में' यानी सत्य ग्रपना प्रकाश लिये है। मेरे ऊपर धूल जमी है। उस धूल में होकर मेरा प्रकाश जो वाहर निकलता है ग्रौर जिस प्रकाश से ग्रादमी सारा काम चलाता है, इसीका नाम बुद्धि है। बुद्धि एक चन्द्रमा है, जिसे मुक्त सत्य-सूरज से चमक मिलती है। उसकी चमक ग्रौर मेरी चमक में ग्रन्तर होगा ही। जैसे-जैसे ग्रन्थ-विश्वास पर से मिथ्या-विश्वास के वादल हटते जायँगे, वैसे-वैसे बुद्धि की चमक वढ़ती जायगी। एक दिन ऐसा हो सकता है कि 'बुद्धि' ग्रौर 'में' सत्य एक वन जाऊँ। ग्रादमी का जन्म इसी वात की कोशिश करने के लिए हुग्रा है।

सत्य का कहना है, बुद्धि मेरी है, उसकी मेरी तरह से कद्र करो, इस विषय में कभी घोखा न खाग्रो । ग्रगर तुम इस घोखे से बचे रहे, तो बहुत जल्दी ग्रपने ग्रंदर की सचाइयाँ जान लोगे ग्रीर मेरे दर्शन पा सकोगे। मैं तुम्हें समक्त लूँगा, तुम मुके समक लोगे।

## छोटा वड़े से ज्यादा बुद्धिमान्

सत्य का कहना है, यह वात विलकुल गलत है कि छोटा वच्चा बुद्धिमान नहीं होता। वड़े-वड़े ज्ञानियों में ग्रोर वालक में कोई अन्तर नहीं। चींटी ग्रीर हाथी में कोई अन्तर नहीं। देह के छोटे-वड़े का ग्रंतर है। ध्यान से देखा जाय, तो चींटी जितना वोभ उठाकर ले जाती है, हाथी उसी अनुपात से नहीं ले जा सकता। यही हाल दूध-पीते बच्चे का है। जितनी छोटी उसे देह मिली है, जितने छोटे काम उसके सिपुर्द हैं, उन सबसे काम लेने के लिए जितनी बुद्धि उसके पास है, वह कहीं ज्यादा है उन ज्ञानियों की बुद्धि से, जिन्हें वहुत वड़ी देह और वहुत वड़ा काम मिला है।

सत्य का कहना है, दूध-पीते वालक को न घोखा देकर हिन्दू हिन्दू वना सकते हैं, न मुसलमान मुसलमान, न ईसाई ईसाई। वड़ा ग्रादमी वहकाया जा सकता है, दूध-पीते वालक को वहकाना मुक्किल ही नहीं, ग्रसम्भव है। वर्मवाले दुनिया को वहका सकते हैं कि ग्राग में सीतादेवी वैठकर नहीं जलीं, ग्राग ठंढी हो गयी थी; पर दूध-पीते वालक को नहीं वहका सकते, जिसने ग्रपनी उँगली ग्राग में डालकर बुद्धि के वल से यह पहचान लिया है कि ग्राग गरम होती है ग्रीर वह ग्रादमी की देह को जला देती है।

सत्य का कहना है, यह कहकर कि जो सच्चा होता है उसे ग्राग नहीं जलाती, सीतादेवी को घोखा दिया जा सकता है। वे घोखे में ग्राकर ग्राग में घुस सकती हैं, पर किसी वच्चे को यह कहकर घोखा नहीं दिया जा सकता कि जो सच्चा होता है, वह ग्राग में नहीं जलता। वालक को ग्रच्छी तरह मालूम है कि वह विलकुल सच्चा है ग्रीर उसने सच्चे वालक की हैसियत से ही ग्रपनी उँगली ग्राग में दी थी ग्रीर वह जलने लगी थी। उस वालक का ज्ञान सब धर्मशास्त्रियों से कहीं सच्चा ज्ञान है, वयोंकि उसका अनुभव है कि सच्चे आदमी की उँगली को भी आग जला देती है। फिर उसकी देह क्यों नहीं जला देगी ?

सत्य का कहना है, ग्राग का काम जलाना है। पर हाँ, ग्राग जैसी चमकती चीजें ग्रीर भी हो सकती हैं, जो ठण्ढी होकर भी ग्राग जैसी समसी जायँ। उनमें बैठकर सच्चे ग्रीर भूठे, दोनों ही जलने से वच सकते हैं। ग्राज भी यह तमाशा किसने नहीं देखा कि दहकते कोयलों पर भूठे ग्रीर सच्चे, सभी नंगे पाँव निकल जाते हैं। यह भी किसने नहीं सुना कि दूध का जला छाछ फूँक-फूँककर पीता है। छाछ को गरम दूध समभकर ग्रगर कोई ग्रपनी उँगली डाल दे, तो वह जलेगी नहीं। लोग भले ही यह समभें ग्रीर यह कहा करें कि उस ग्रादमी ने गरम दूध में उँगली डाली थी ग्रीर वह जली नहीं, क्योंकि वह सच्चा ग्रादमी था।

## बुद्धि आड़े समय की साथिन

सत्य का कहना है कि बुद्धि के सिवा श्रीर कौन है, जो हर वक्त तुम्हारे साथ रह सकता है श्रीर श्राड़े वक्त तुम्हारे काम श्रा सकता है।

जो तुम्हें बुद्धि से काम न लेने की वात कहते हैं, वे खुद बुद्धि से काम ले रहे हैं। फिर वे कैसे हकदार हो सकते हैं कि यह कहें कि तुम बुद्धि से काम नहीं ले सकते।

सत्य का कहना है कि मुक्ते पहचानने के लिए या मेरे ऊपर से घूल को हटाने के लिए जितनी बुद्धि की जरूरत है, उतनी सबको मिली हुई है—फिर चाहे बच्चा हो या बड़ा, पढ़ा-लिखा हो या बेपढ़ा, जंगली हो या शहरी। हाँ, भूठ बोलने के लिए ग्रीर सत्य को ग्रसत्य का रूप देने के लिए, लोगों को लूटने ग्रीर लोगों का विनाश करने के लिए, ग्राविष्कारों को सोचने के लिए खास बुद्धि की जरूरत होती है। यह किसीसे छिपा नहीं है कि छोटे-छोटे वच्चे ग्रपनी मां के सामने जब किसी भगड़े का फैसला कराने के लिए पहुँचते हैं, तो वकीलों की जरूरत नहीं होती। लेकिन जब एक डाकू यह सावित करना चाहता है कि उसने डाका डालकर भी डाका नहीं डाला, तब होशियार से होशियार वकील को ग्रपने साथ लेकर ग्रदालत के सामने पहुँचता है।

सत्य का कहना है, भूठ वोलने में बुद्धि पर जितना जोर पड़ता है, उतना सत्य वोलने में नहीं। भूठ वोलने में वोलनेवाले को डर लगता है। दुःख होता है। सच वोलने में ग्रादमी निर्भीक रहता है ग्रीर ग्रानन्द मानता है।

सत्य का कहना है कि जैसे ही ग्रादमी बुद्धि के इशारों से वेपर्वाह हुग्रा कि वह ऐसी चीजों को मान बैठता है, जिसमें कार्य-कारण का कोई मेल नहीं होता। उसीको सत्य मान बैठता है ग्रीर फिर उसके ऊपर ऐसी इमारत खड़ी कर लेता है, जो वेतुकी ग्रीर वेमेल होती है। ग्रव उसे मजबूर होकर भूठ को सत्य कहने के लिए वड़ी-वड़ी कोशिश करनी पड़ती है, फिर भी उसमें एक नहीं, श्रनेक भूलें रह जाती हैं। यह किसीसे छिपा नहीं है कि भूठ को सच सावित करने के लिए हर वकील को रातों जागना पड़ता है। ग्रापर वह सत्य को पहचानने में इतना वक्त लगाता, तो कहीं-का-कहीं पहुँच जाता, पर पैसों की खातिर वह इस काम में लगता है ग्रीर बुद्धि का उपयोग करता है।

सत्य का कहना है, यह किसे मालूम नहीं कि श्रादमी की परछाई कई कारणों से कभी-कभी श्रादमी से कई गुना लंबी हो जाती है, कई गुना मोटी हो जाती है। श्रादमी नहीं काँपता, पर परछाई काँपने लग जाती है, श्रादमी टेढ़ा नहीं होता, परछाई टेढ़ी हो जाती है। ठीक इसी तरह बुद्धि मुभ-सत्य की परछाई है, पर धर्मशास्त्री वकीलों की तरह मिथ्या-विश्वासों को सिद्ध करने के लिए उसको मुभसे लंबी, चौड़ी, भारी, मोटी, सावित बना देता है। सचाई को समभने के लिए परछाई जितनी है, उतनी काफी है। हाँ, वह कानूनों को नहीं समभती, सिद्धान्तों को नहीं समभ सकती, इलहामों को नहीं समभ सकती श्रीर ईश्वर श्रीर सर्वज्ञ के नाम से कही हुई वातों को नहीं समभ सकती। उनके समभने के लिए मिथ्या-बुद्धि की जरूरत होती है।

सत्य का कहना है, मिथ्या-विश्वास के साथ मिथ्या-बुद्धि ही रह सकती है और मिथ्या-बुद्धि के जो काम होंगे, वे मिथ्या काम ही हो सकते हैं।

## जीवन का उद्देश्य अपने को पहचानना

सत्य का कहना है, श्रादमी के जीवन का उद्देश्य श्रादमी के साथ श्राया है। उसे वाहर ढूँढने की कहाँ जरूरत है? उसके जीवन का उद्देश्य इसके सिवा क्या हो सकता है कि वह श्रपने को पहचाने! श्रपने को पहचाने उसके लिए मुक्किल नहीं हो सकता, न होना चाहिए श्रीर न है। श्रादमी को किसी ऐसे काम के लिए पैदा होने का कोई मतलव नहीं, जिसे वह श्रासानी से श्रपने जीवन में न कर सके। श्रार श्रादमी से कोई काम नहीं

हो पाता, तो वह उसके लिए पैदा ही नहीं हुआ। आदमी खुद जो मशीन तैयार करता है, वह उस काम को आसानी से कर लेती है, जिसके लिए बनी है। अगर किसी काम के करने में मुश्किल हो, तो यही समभना चाहिए कि मशीन को वह काम दिया गया है, जिसके लिए वह नहीं बनी है। प्रकृति का बना आदमी कभी ऐसा नहीं हो सकता कि वह अपने को आसानी से पहचान सके। क्योंकि वह इसी काम के लिए पैदा हुआ है।

ग्रव वह ग्रगर ग्रासानी से नहीं पहचानता, तो वह सिर्फ इस वजह से कि पैदा होने के दिन से उसके दिमाग में यह ठूँस दिया जाता है कि उसके जीवन का उद्देश्य ग्रीर भी कुछ है, सिर्फ ग्रपने को पहचानना नहीं है। बड़े होते-होते वह विलक्षल यह विश्वास करने लगता है कि 'में सव-कुछ कर सकता हूँ, मगर ग्रपने को नहीं पहचान सकता। ग्रपने को पहचानने के लिए जितनी बुद्धि की जरूरत है, उतनी मुफ्ते नहीं मिली। उतनी बुद्धि हासिल करने के लिए वह उमर काफी नहीं, जो मुफ्ते मिली है।' उसकी यह समफ मिथ्या-विश्वास कहलाती है।

सन्य का कहना है कि यह बुद्धि का रोना रोनेवाले मिथ्या-विश्वासी उन लोगों पर क्यों नहीं नजर डालते, जिन्होंने दुनिया की कोई विद्या नहीं पढ़ी थी, पर ऐसी-ऐसी सचाइयाँ कह गये जिन्हें ग्राज वे नहीं समभ सकते, जो ग्रपने-ग्रापको बुद्धिमान कहते हैं। फिर वे कम बुद्धि का रोना क्यों रोते हैं? यहाँ वे यह घोखा न खायें कि जिसे वड़े-वड़े बुद्धिमान नहीं समभ सकते, जिसे वह कम बुद्धिमान कैसे समभ सकते हैं? वात यह है कि ये वड़े-वड़े

बुद्धिमान् मिथ्या-बुद्धि लिये हैं। ये उस सचाई में वह ढूँढना चाहते हैं, जिसे इन्होंने ग्रपने मस्तक में भर लिया है। यानी यह कि ईश्वर कान में आकर कह जाता है या अन्तरात्मा अपने-आप वोलने लगता है या इसी तरह की श्रीर दूसरी वार्ते। इन सचा-इयों में से उन्हें यह चीज कैसे हाथ लग सकती है ? इस चीज के लिए तो वही बुद्धि चाहिए, जो सचाई की इच्छुक हो-फिर वह चाहे कितनी कम क्यों न हो। रेत में पड़े मिश्री के करण को उठाने के लिए जितनी बुद्धि चाहिए, वह चींटी के पास मिल सकती है, हायी के पास नहीं। बुद्धि हाथी जितनी वढ़कर रेत में पड़े मिश्री के करा को उठाने में ग्रसमर्थ ही रहेगी। पर चींटी वनी बुद्धि को कुछ भी मुश्किल न होगी। ऊँची-से-ऊँची दीवार पर चढ़ ज़ाना चींटी के लिए खेल है, पर हाथी के लिए ग्रसंभव। चींटी वनी बुद्धि सत्य की ऊँचाइयों को पहुँच सकती है, पर हाथी वनी बुद्धि खड़ी-खड़ी टापती रहेगी। बुद्धि की तारीफ में 'कुशाग्र' लफ्ज काम में ग्राता है। वह साफ वता रहा है कि बुद्धि पैनी श्रौर छोटी ही श्रच्छी, क्योंकि 'कुश' यानी घास का श्रगला हिस्सा वहुत ही वारीक ग्रौर छोटा होता है।

सत्य का कहना है, कम बुद्धिवालों को विलक्ल नहीं घवराना चाहिए। सत्य उन्हींकी समक्त में श्रायेगा। पर एक शर्त है कि उन्हें श्रपनी बुद्धि पर से मिथ्या-विश्वास श्रीर श्रन्थ-विश्वास की चर्वी निकाल फेंकनी होगी।

# सर्वोदय तथा भूदान-सााहत्य

(विनोवा)		( जे॰ सी॰ कुमारम्मा )		
Age of the second	रु०न०पैसे		रु १० वसे	
गीता-प्रवचन	2 0	गाँव-ग्रान्दोलन क्यों ?	२-५०	
शिक्षण-विचार <sub>ं</sub>	१५०	गांघी धर्य-विचार	8 0	
कार्यकर्ता-पाथेय	0-40	स्थायी समाज-व्यवस्था		
त्रिवेशी	040	(माग २ रा)	2 0	
विनोबा-प्रवचन (संकलन)	0-64	यूरोप: गांघीवादी दृष्टि से	०-७५	
साहित्यिकों से	0-40	वतंमान ग्रायिक परिस्थिति	2-40	
भूदान-गंगा (छह खण्डों		स्त्रियां श्रीर ग्रामोद्योग	०–२५	
में) प्रत्येक	१-५०	श्रम-मीमांसा घीर मन्य		
ज्ञानदेव-चिन्तनिका	0-134	प्रवन्व	०- ७५	
जनकान्ति की दिशा में	०२५	ग्रामी के सुधार की योजना	(प्रेस में)	
मगवान् के दरवार में	033	खून से सना पैसा	०७५	
गौव-गाँव में स्वराज्य	59-0	राजस्व और हमारी दरिवता	240	
सर्वोदय के यावार	0-74	्दादा धर्माधिकारी)		
एक बनो भीर नेक बनो	०१३	सर्वोदय-दर्शन	3 0	
गांव के लिए आरोग्य-योजन	ा०-१३	मानवीय क्रान्ति	०२५	
व्यापारियों का श्रावाहन	०१३	साम्ययोग की राह पर	०२५	
हिंसा का मुकावला.	39-0	क्रान्ति का भग्ना कदम	०२५	
चुनाव	0:-23	( ग्रन्य लेखक )		
ग्रामदान	004	नक्षत्रों की छाया में	१५०	
भ्रम्बर चरला	59-0	मूदान गंगोत्री	र््५०	
(घीरेन्द्र मजूमदार)	)	भूदान-ग्रारोहण	०-५०	
शासनमुक्त समाज की धोर	040	धम-दान	०२५	
नयी-तालीम	०५०	भूदान-यज्ञ : क्या श्रीर क्यों	3 5 0	
ग्रामराज	0-74	नये शंक्र	०-२५	
प्राजादी का खतरा	0-40	सफाई: विज्ञान श्रीर फला	064	
(श्रीकृष्णदास जाजू)		सुन्दरपुर की पाठशाला	०७५	
सम्पत्तिदान-यज्ञ	0-40	गोसेवा की विचारधारा	040	
व्यवहार-शुद्धि	0~35	विनोवा के साथ	₹ o	
चरता-संघ का इतिहास	3-40	पावन प्रसंग	0-40	
चरखा-संघ का नव-संस्करण	ग १५०	छात्रों के बीच	038	

( 2 )						
( २ )						
20.00						
ह०न०पैसे ह०न०पैसे						
सर्वोदय का इतिहास ०२५ ग्राठवा सर्वोदय-सम्मेलन १०						
सर्वोदय-संयोजन १० भूदान का लेखा (शांकड़ों में) ०२५						
गांची : राजनैतिक स्रघ्ययन ०५० सत्याग्रही शक्ति ०३१						
सामाजिक क्रान्ति श्रीर सर्वोदय-भजनावलि ०२५						
ुभूदान ः ०∼३१ क्रान्ति की पुकार ँ ँ०∸१६						
गाँव का गोकुल ०२५) सामूहिक पद-यात्रा ०२५						
व्याज-वट्टा ०२५ साम्ययोग का रेखाचित्र ०१३						
भूदान-दापिका ०-१३ राज्यव्यवस्था : सर्वोदय-						
पूर्व-त्रुनियादी ०५० हिन्द से १-५०						
राजनीति से लोकनीति की भूमि-कान्ति की महानदी ०७५						
ग्रोर ०५० मजदूरी से ०१३						
नवभारत ४ ० साम्हिक प्रार्थना ०१३						
सत्संग ०५० सन्त विनोवा की ग्रानन्द-						
क्रान्ति की राह पर १० यात्राः । संश-५०						
ताई की कहानियाँ ०२५ ग्राम-स्वावलम्बन की ग्रोर ०२५						
न्नाज का धर्म o५० जीवन परिवर्तन o२५						
क्रान्ति की ग्रोर १० पावन प्रकाश ०२५						
सर्वोदय पद-यात्रा १ ०						
[ ENGILISH PUBLICATIONS ]						
Rs.N.P. Rs.N.P.						
The Economics of Peace 10-0 ( J.C.KUMARAPPA )						
Swaraj-Shastra 1-0 Why the Village						
Progress of a Pilgrimage 350 Movement? 350						
Swaraj-Shastra  1-0 Why the Village Progress of a Pilgrimage 3-50 Bhoodan as seen by the West  0-38  Non-Violent Economy West  0-38  Franchy of Permanence3-0						
Bhoodan to Gramdan 038 Economy of Permanence3 0						
Bhoodan-Yaina Gandhian Economy and						
(Navajiyan) 150 Other Essays 2 0						
M. K. Gandhi  Planning for Sarvodaya  1-0  Swaraj for the Masser  The Ideology of  OTherefore Rural  Plan for Rural  Development  Swaraj for the Masser						
The Idealogy of Swarai for the Masser						
Charkha 1 0 The Cow in our Econo.						
Charking 1 0 110 00 111 out 200101						